वे सदा युवा रहेंगे

ग्रीगोरी बकलानोव

वे सदा युवा रहेंगे

ग्रीगोरी बकलानोव

परिकल्पना प्रकाशन
लखनऊ

ISBN: 81-87425-64-4

मूल्य : रु. 60.00 (पेपरबैक)
रु 120.00 (सजिल्द)

प्रथम संस्करण : जनवरी 2006

परिकल्पना प्रकाशन
द्वारा, जनचेतना, डी-68, निरालानगर,
लखनऊ–226 020 द्वारा प्रकाशित

क्रिएटिव प्रिन्टर्स 628/S-8, शक्तिनगर, लखनऊ द्वारा मुद्रित

आवरण : रामबाबू

VE SADA YUVA RAHENGE : Collection

दो शब्द

"वे सदा युवा रहेंगे" उन्नीसवर्षीय सोवियत नौजवानों की मर्मांतक गाथा है, उन युवकों की गाथा जो जीवन में पहले कदम रखते ही रणक्षेत्र में उतर पड़े–यौवन का अदम्य उत्साह और न्याय में गहरी आस्था लिये अपनी प्यारी जन्मभूमि की रक्षा करने। इन उन्नीसवर्षीय नवयुवकों में ग्रीगोरी बकलानोव भी थे।

ग्रीगोरी बकलानोव का जन्म 1923 में हुआ। रूस में अक्टूबर क्रान्ति हुए तब पाँच साल ही बीते थे। छोटी उम्र में ही ग्रीगोरी माता-पिता के स्नेह से वंचित हो गये, मौसी ने उन्हें पाला-पोसा। उनके बचपन के वर्ष वे वर्ष थे, जब देश विदेशी हस्तेक्षेप और गृहयुद्ध (1918-1922) के घाव भर रहा था। ये नये समाजवादी समाज के निर्माण के वर्ष थे। देश भर में फैले इस विराट निर्माण कार्य में सारी जनता अपूर्व उत्साह से भाग ले रही थी। पुराने कारखानों, फैक्टरियों को फिर से चालू किया जा रहा था, नये-नये विशाल कारख़ाने खड़े हो रहे थे, बिजलीघर बन रहे थे, सामूहिक और राजकीय फ़ार्म संगठित किये जा रहे थे। नयी पीढ़ी के लालन-पालन और शिक्षा-दीक्षा की ओर बहुत ध्यान दिया जा रहा था : किंडरगार्टन, स्कूल और विश्वविद्यालय बन रहे थे, जिनके द्वार सभी बच्चों, युवाजनों के लिए खुले थे। देश दिन दूनी, रात चौगुनी उन्नति कर रहा था, अपने देश की उपलब्धियाँ, अपने साझे श्रम के सुपरिणाम देखकर सोवियत लोगों का सीना गर्व से फूल उठता था। इन वर्षों में ग्रीगोरी बकलानोव माध्यमिक विद्यालय में शिक्षा पा रहे थे, अपने सभी समवयस्कों की ही भाँति उनके हृदय में भी अथाह देशप्रेम हिलोरें ले रहा था।

जून 1941 में सोवियत जनता के रचनात्मक कार्य का सिलसिला टूट गया। हिटलरी जर्मनी ने सोवियत देश पर विश्वासघातपूर्ण आक्रमण किया और महान देशभाक्तिपूर्ण युद्ध छिड़ा। फ़सिस्ट हमलावरों से अपनी जन्मभूमि की रक्षा करने सारी सोवियत जनता उठ खड़ी हुई। चार वर्ष तक चले महायुद्ध में दो करोड़ प्राणों की आहुति देकर सोवियत लोगों ने अपने देश को दासता की बेड़ियों में जकड़े जाने से बचाया। मई 1945 में महान जनता ने फ़ासिज्म पर, दुप्टता के इस विकराल रूप पर न्यायसंगत विजय पायी।

ग्रीगोरी बकलानोव भी जून 1941 में स्कूल की पढ़ाई पूरी करके तुरन्त ही रण भूमि में चले गये। अपनी पीढ़ी के दूसरे सभी लोगों की ही भाँति सभी कठोर परीक्षाओं से भी गुजरे। उनकी कक्षा के 18 छात्र युद्ध में गये और उनमें से अकेले बकलानोव

ही लौटे, वह बस गम्भीर रूप से घायल ही हुए थे।

युद्ध के पश्चात ग्रीगोरी बकलानोव ने अपनी शिक्षा आगे जारी रखी। साहित्य संस्थान में दाखिला लिया और 1950 में उसकी पढ़ाई पूरी की। अपनी लेखन प्रतिभा को निखारने-सँवारने के लिए उन्होंने अथक परिश्रम किया और 1959 में "एक चप्पा जमीन" के प्रकाशन के साथ एक लेखक के नाते मान्यता पायी।

अपने सृजन-कार्य के तीस से अधिक वर्षों में ग्रीगोरी बकलानोव ने विभिन्न विधाओं में जीवन के नाना पक्षों को अपने लेखन की विषयवस्तु बनाया है, तो भी वह युद्ध सम्बन्धी उपन्यासों के लेखक के रूप में ही अधिक जाने जाते हैं। 1957-1965 में इस विषय पर उनके एक के बाद एक चार छोटे-बड़े उपन्यास छपे। फिर समसामयिक जीवन के चित्रण को समर्पित दो पुस्तकें निकलीं और तदुपरान्त युद्ध से सम्बन्धित उपन्यासिका "वे सदा युवा रहेंगे"।

क्या कारण है कि यह विषय ग्रीगोरी बकलानोव को इतना उद्विग्न और व्यथित करता है? निस्सन्देह, इसका एक कारण युद्ध की ज्वाला में झुलसी उनकी जवानी है। इस ज्वाला की तपिश जिस किसी ने सही है और जिसमें लेखन-प्रतिभा है वह इसके बारे में लिखे बिना नहीं रह सकता। मोर्चे पर, रणक्षेत्र में एक सैनिक अपनी खन्दक में से जो कुछ देखता है, सहता और अनुभव करता है वह सब लेखक से सच्चे चित्रण की माँग करता है। यह आवश्यकता एक अदम्य इच्छा बनकर लेखक के हृदय में बस जाती है।

दूसरी ओर, व्यक्ति के नैतिक मूल्यांकन के लिए विश्वसनीय मापदण्ड पा लेने की लेखक की अभिलाषा भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। अपने पात्रों को कठिन, अत्यन्त कठिन, कल्पनातीत कठिन परिस्थितियों में रखकर बकलानोव उनके नैतिक स्वरूप के ऐसे गहन लक्षण उजागर करने में सफल हो पाते हैं, जिन्हें सामान्य परिस्थितियों में देखना और आँकना कठिन, या, शायद, असम्भव ही होता है।

अन्ततः युद्ध से सम्बन्धित घटनाएँ बकलानोव के लिए हमारे युग के प्रमुख प्रश्न—संसार के भाग्य के प्रति मनुष्य के उत्तरदायित्व के प्रश्न का उत्तर खोजने का एक साधन है, माध्यम है।

प्रस्तुत उपन्यासिका का कथानक बिल्कुल सीधा-सादा है : नवदीक्षित लेफ़्टिनेण्ट वोलोद्या त्रेत्याकोव मोर्चे पर पहुँचता है और पहली लड़ाई में ही घायल हो जाता है; इलाज के लिए उसे सैनिक अस्पताल में भेजा जाता है जहाँ प्रेम की लौ कुछ क्षण के लिए उसके जीवन को आलोकित करती है; ठीक होकर वह अपनी युनिट में लौटता है और फिर से घायल हो जाता है; दूसरे घायल सैनिकों के साथ वह अस्पताल जा रहा होता है कि अचानक आगे बढ़ गयी सोवियत सेना के चण्डावल से बचे रह गये एक शत्रु दल से उनका सामना हो जाता है, यह मुठभेड़ जवान लेफ़्टिनेण्ट के जीवन की आखिरी मुठभेड़ सिद्ध होती है।

जवान लेफ्टिनेण्ट, प्लाटून या कम्पनी का कमाण्डर लेफ्टिनेण्ट—कितनी महान और मार्मिक थी युद्ध में इनकी भूमिका। उन्नीस वर्षीय ये लेफ्टिनेण्ट अपने जवानों के साथ [illegible] की सारी मुसीबतें झेलते थे—उनके साथ लम्बे पैदल मार्च करते, ख[illegible] खोदते, उनके साथ रूखा-सूखा खाते और अधूरी नींद लेते, ठण्ड सहते। और जब धावा बोलना होता तो लेफ्टिनेण्ट ही सबसे पहले आगे बढ़ते, खेत रहे मशीनगन चालक का स्थान लेफ्टिनेण्ट लेते, शत्रु से घिर जाने पर चारों दिशाओं में रक्षा का प्रबन्ध लेफ्टिनेण्ट ही करते।

कितना भारी उत्तरदायित्व था इन लेफ्टिनेण्ट के कन्धों पर—मुठभेड़ का, लड़ाई का क्या अन्त होता है इसके लिए सबसे पहले उत्तरदायी था लेफ्टिनेण्ट, उसकी प्लाटून किस दशा में है इसके लिए उत्तरदायी था लेफ्टिनेण्ट और उसे सौंपे गये सैनिकों के, जिनमें कई तो उम्र में उसके पिता के बराबर हो सकते थे, जीवन का उत्तरदायित्व भी लेफ्टिनेण्ट पर ही था। लेफ्टिनेण्ट ही यह फैसला करता था कि किसको जोखिम भरी टोह के लिए भेजना है, प्लाटून को यदि पीछे हटना है तो उसे आड़ देने के लिए किसे तैनात करना है, किस तरह कम से कम जवान खोकर लक्ष्य पाना है।

वोलोद्या त्रेत्याकोव के रूप में लेखक ने ऐसे ही एक साहसी, चरित्रवान, अपने नागरिक कर्त्तव्य और सैनिक अफ़सर की मर्यादा के प्रति निष्ठावान नवयुवक को चित्रित किया है।

शत्रु से पहली मुठभेड़, प्रेम का पहला कोमल स्पर्श और वीरगति—यह सब तो युद्ध की कहानियों में न जाने कितनी बार आ चुका है। किन्तु फिर भी हर बार जब हम एक सच्चा, निश्छल, प्रामणिक वर्णन पाते हैं तो वह हमारे अन्तरतम को छू जाता है, क्योंकि वह प्रत्येक मनुष्य के भाग्य की, उसकी अनुभूतियों की अद्वितियता हमें दिखाता है।

अपने नायक के साथ असाधारण सामीप्य की बदौलत ही लेखक उन वर्षों के वातावरण का इतना भावप्रवण चित्रण कर पाया है, किन्तु साथ ही लेखक का आज का, जब कि युद्ध की घटनाएँ जीवन के अधिक व्यापक पटल का अंश बन चुकी हैं, विश्वबोध भी इसमें गुँथा हुआ है—यह एकात्म्य ही, जिसे पाने में लेखक विरले ही सफल हो पाते हैं, इस उपन्यासिका की सफलता का एक रहस्य है।

एक ओर सच्चा, प्रामणिक चित्रण तथा दूसरी ओर सामान्यीकरण—इनका समाहार ही उपन्यासिका को उसकी आन्तरिक शक्ति निर्धारित करता है। पाठक को यह देखकर आश्चर्य होता है कि लेखक ने मोर्चे के जीवन के ब्योरों का कितना सटीक और बेलाग चित्रण किया है। मनोवैज्ञानिक चित्रण से सम्बन्धित बारीकियों

की प्रस्तुति तो विशेषत : प्रभावित करती है। इसी कि बदौलत पाठक को यह अहसास होने लगता है कि वह सब कुछ अपनी आँखों देख रहा है, लेफ्टिनेण्ट त्रेत्याकोव के साथ वहाँ मौजूद है। इसके साथ ही लेखक ने ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से उत्पन्न विचारों और विवेचनों की नींव पर ही उपन्यासिका का भवन बड़ी सावधानी से खड़ा किया है।

भले ही कहीं-कहीं उसने अपने आज के विचार तत्कालीन वोलोद्या त्रेत्याकोव में रोप दिये हैं (इस बात का सहारा लेकर कि वह इतिहासविद बनना चाहता था और चिन्तन-मनन की ओर उसका रुझान था) नायक के साथ लेखक का भावनात्मक सामीप्य और हम पाठकों के लिए इन विचारों की स्वाभाविकता भी इस प्रत्यारोपण को उचित ठहराती है। "पर यहाँ, अस्पताल में एक ही विचार सताता रहता था : क्या सचमुच एक दिन पता चलेगा कि यह न भी हो सकता था?"

किसे सताता है यह प्रश्न? वोलोद्या त्रेत्याकोव या ग्रीगोरी बकलानोव को? या फिर हमें ही? आज भी तो हमारा मन यह मानने को तैयार नहीं होता कि हमारे दो करोड़ स्वजनों को प्राण न्योछावर करने पड़े—क्यों हुआ ऐसा? कैसे हुआ?

उपन्यासिका के ताने-बाने में एक और सूत्र भी गुँथा हुआ है—वोलोद्या त्रेत्याकोव के प्रेम का सूत्र। स्कूल की देहरी से सीधे मौत के बवण्डर में कूदे तरुण लेफ्टिनेण्ट इस पावन स्रोत का एक हल्का स्पर्श मात्र ही तो अनुभव कर सके थे, और कितने ही इस स्पर्श तक से वंचित रह गये थे।

सत्य के प्रति निष्ठावान बकलानोव ने हर तरह के चरित्रों का चित्रण किया है, ऐसे लोगों का भी जिनकी कायरता और स्वार्थ उन पर हावी हो गये। हाँ, ऐसे लोग भी थे। परन्तु फिर भी अपने इतने अल्प जीवन काल में ही त्रेत्याकोव को कितने अच्छे-अच्छे लोग मिले। अस्पताल के वार्ड के उसके पड़ोसी और बैटरी के उसके साथी-सभी अपने स्वभाव और आत्मीयता में बेजोड़ हैं। इन लोगों से ही मोर्चे का वह भाईचारा बनता है, जो अपनी शक्ति त्रेत्याकोव में संचारित करता है और जवान लेफ़्टिनेण्ट साहस और उत्तरदायित्व की भावना से स्वयं संपुष्ट होता है।

यही कारण है कि लेखक एक लेफ़्टिनेंट की बात करते हुए सभी की बात करता है, इसी लिए अपनी उपन्यासिका का शीर्षक उसने "वह सदा युवा रहेगा" नहीं, "वे सदा युवा रहेंगे" रखा। बकलानोव ने एक बार कहा था : "वस्तुतः, जो कुछ भी मैंने लिखा है और आगे जो लिखने की मुझे उम्मीद है वह सब मेरी पीढ़ी के बारे में, जिस काल में वह रही है और रह रही है, उस काल के बारे में एक विशाल पुस्तक है।" वास्तव में ऐसा ही है।

हमारे सामने बीते दिनों की एक कहानी है। त्रेत्याकोव के जीवन की घटनाएँ, चण्डावल में स्थित छोटे से नगर के चित्र, अस्पताल में अफ़सरों की बातचीत और

लड़ाई में सैनिक का व्यवहार—यह सब बीते दिनों को जिलाता है।

किन्तु साथ ही यह आज के दिनों की कहानी है। तब बच गये सैनिक आज उन दिनों को किस रूप में देखते हैं, खेत रहे अपने साथियों के सम्मुख अपने दोष, अपने उत्तरदायित्व का अहसास उन्हें कैसे कचोटता है—यही बताती है यह आज की कहानी।

"तारा बुझ सकता है, पर उसका आकर्षण क्षेत्र बना रहता है," अस्पताल में त्रेत्याकोव ये शब्द सुनता है। उस पीढ़ी ने ऐसे ही आकर्षण क्षेत्र की रचना की और उसकी परिधि में ही ले जाती है हमें यह उपन्यासिका।

अनातोली बोचारोव

उनका बड़ा सौभाग्य है,
जो इस दुनिया को क्षणों में
निर्णायक देख सके!

एफ़. त्युत्चेव

नालबन्द फ़ौजी बूटों में
बिता दिया हमने जीवन ही।

सी. ओर्लोव

अध्याय 1

जीवित लोग खन्दक के किनारे खड़े थे और वह नीचे बैठा था। उस पर ऐसी कोई चीज नहीं बची थी जो जीवित लोगों की एक विशिष्ट पहचान होती है। वह कौन था? सोवियत सिपाही या जर्मन? यह फ़ैसला करना असम्भव था। उसके दाँत अभी भी चुस्त और मजबूत लग रहे थे।

बेलचे की नोक किसी चीज से टकरायी। मिट्टी साफ करने पर हरी परत से ढका बकसुआ निकला जिस पर तारा बना हुआ था। सभी लोगों ने उसे बड़ी सावधानी से हाथ में लेकर देखा। इसी से यह पता चला कि यह व्यक्ति सोवियत नागरिक ही था और शायद अफसर था।

बारिश शुरू हो गयी। वह उन फौजी क़मीजों पर टप-टप पड़ रही थी जिन्हें अभिनेता शूटिंग शुरू होने से पहले पहन-पहनकर घिस रहे थे। इस स्थान पर लड़ाई हुए तीस बरस से ऊपर हो चुके थे, तब इनमें से बहुतों का जन्म तक नहीं हुआ था और वह इन वर्षों के दौरान इसी तरह खन्दक में पड़ा रहा। वसन्त की बाढ़ और बरसात का पानी रिस-रिसकर जमीन की गहराइयों में उसके पास पहुँचता जहाँ से पेड़-पौधों की जड़ें उसे चूस लेतीं और फिर से आकाश में बादल तैरने लगते। आज बारिश उसे नहला रही थी। काली मिट्टी के निशान छोड़ती बूँदें आँखों के अँधेरे गढ्ढों से ढुलक रही थीं, उघड़ी हंसलियों, गीली पसलियों पर से पानी बह रहा था। वह उस स्थान से रेत और मिट्टी को बहाकर ले जा रहा था जहाँ कभी जिन्दा इन्सान साँस लेते थे, दिल धड़कता था। बारिश से धुले मजबूत दाँतों पर जीवन्त चमक आ गयी।

"बरसाती से इसे ढक दो," फ़िल्म निर्देशक ने कहा। वह यहाँ अपने शूटिंग दल

के साथ विगत युद्ध के बारे में फिल्म बनाने आया था। खाइयाँ उसी स्थान पर खोदी जा रही थीं जहाँ की जमीनी रेतीली, घास-पात से ढँकी, धँसी पुरानी खन्दकोंवाली थीं।

मजदूरों ने फोजी बरसाती तान दी और उस पर बारिश ऐसे टप-टप करने लगी मानो वह और तेज हो गयी हो। यह चमकते सूरज के साथ गर्मियों की बारिश थी, जमीन से भाप उठ रही थी। ऐसी वर्षा के बाद हर जीवित चीज़ तेजी से पनप उठती है।

रात में सारा आकाश टिमटिमाते तारों से ढक गया। तीस साल पहले की तरह वह आज की रात भी खन्दक में बैठा था और अगस्त के आकाश से तारे टूट-टूटकर चमकीले निशान छोड़ते हुए उसके ऊपर गिर रहे थे। फिर सुबह सूर्योदय हुआ। सूर्य उन नगरों के पीछे से उदित हुआ, जो उस समय नहीं थे, उन स्तेपियों के पीछे से उदित हुआ जहाँ तब सिर्फ जंगल ही जंगल था। और वह सदा की तरह प्राणियों को उष्मा प्रदान कर रहा था।

अध्याय 2

कुप्यान्स्क में रेल की पटरियों पर इंजन चीख रहे थे, यत्र-तत्र गोलों से छलनी, पक्के पम्पघर पर लटका सूरज कालिख और धुंए को चीरता हुआ चमक रहा था। इन स्थानों से मोर्चा इतनी दूर चला गया था कि वहाँ से गोलाबारी की आवाज भी नहीं सुनाई देती थी। सिर्फ सोवियत बमवर्षक, उनके शोर से दबी धरती पर सब कुछ कँपाते हुए, पश्चिम की दिशा में उड़ रहे थे। उधर इंजनों की सीटी से बिना आवाज किये भाप निकल रही थी, पटरियों पर गड़ियाँ लुढ़क रही थीं। विमानों का शोर थम जाने के बाद त्रेत्याकोव ने कान लगाकर सुनने की लाख कोशिश की पर उसे वहाँ से बमवर्षा के धमाके न सुनाई दिये।

सैनिक विद्यालय से घर और फिर घर से सारे देश पार की यात्रा के वे दिन रेल की अविराम दौड़ती पटरी की तरह एक श्रृंखला में ढल गये थे। और अब वह लेफ्टिनेंट के फीतोंवाला सैनिक ग्रेटकोट गिट्टी पर एक किनारे रखकर साइडिंग की पटरी पर बैठा रूखा-सूखा खाना खा रहा था। शरत् का सूर्य चमक रहा था, हवा उसके बढ़े हुए बालों को सहला रही थी। सन् इकतालीस के दिसम्बर में उसकी लट नाई की मशीन के नीचे आकर फर्श पर पड़ी; ऐसी ही घुँघराली, काली, भूरी, सुनहरी, कड़ी, मुलायम लटों के बीच जा गिरी और उन सबको झाड़ू से एक ढेर में सरका दिया गया था। तब से अब तक वह एक बार भी न बढ़ पाये थे। सिर्फ परिचय पत्र के लिए खिंचवाये गये छोटे-से फोटो में ही उसकी युद्धपूर्व तरुणाई शेष बची थी। जिसे अब उसकी माँ आँख की पुतली की तरह सम्भालकर रखती है।

डिब्बों के बफर आपस में टकराकर शोर कर रहे थे, जले कोयले की दमघोंटू गन्ध आ रही थी, भाप फुफकार रही थी। यकायक पटरियों पर फुदकते लोग किसी ओर दौड़ पड़ते। सारे स्टेशन पर शायद वही अकेला था जिसे कहीं जाने की जल्दी न थी। आज उसे दो बार राशन-केन्द्र पर 'क्यू' में खड़ा होना पड़ा। एक बार जब उसकी बारी आ गयी और उसने अपना राशन-कार्ड बढ़ाया तो उससे कहा गया कि कुछ पैसे भी देने होंगे। युद्धकाल में तो वह भूल ही गया कि खरीद-फरोख्त क्या होती है और उसके पास पैसे थे भी नहीं। मोर्चे पर तो जरूरत की सभी चीजें बाँटी जाती थीं, या हमले के दौरान यूँ ही पड़ी मिल जाती थीं। फिर पीछे हटते समय तो जितना चाहो उठा ले जाओ। पर उस वक्त सिपाही को अपना बोझ भी भारी लगता है। और बाद में जब वे लम्बे अर्से तक रक्षापाँत में बैठे थे, विशेषकर जब वह सैनिक विद्यालय में था, जहाँ पृष्ठ-प्रदेश में कैडेटों के लिए निर्धारित राशन मिलता था जिससे पेट नहीं भरता था, उसे बार-बार याद आता कि कैसे वे एक बार ध्वस्त दूध फैक्टरी के पास से गुजरे थे, और सभी अपने-अपने डिब्बों में कन्डेंस्ड दूध भरने लगे जिसके शहद जैसे चिपचिपे तार उनके पीछे-पीछे खिंचे से आ रहे थे। पर तब बहुत गर्मी थी, उनके होंठ धूल से सने थे और यह मीठा दूध गले में अटक रहा था। या उसे गायों के रम्भाते झुण्ड याद आ जाते जिन्हें मोर्चे से दूर हाँककर ले जाया जा रहा था, लोग धूलभरी सड़कों पर ही उन्हें दूह लेते थे...

त्रेत्याकोव को पंप-घर के पीछे जाकर अपने किटबैग से सैनिक विद्यालय में दिये गये, मुहर लगे तौलिये को निकालना पड़ा। वह इसे पूरा खोल भी न पाया था कि कई लोग सामान देखते ही आ धमके। इन सभी मर्दों को उम्र के लिहाज से तो फौज में होना चाहिए था। पर युद्ध से कन्नी काटनेवाले ये लोग हड़बड़ाये और चौकन्ने थे, खींचातानी भी कर रहे थे और बीच-बीच में चारों ओर नजरें भी दौड़ा लेते थे ताकि खतरे की स्थित में उड़न-छू हो जायें। मोल-भाव किये बिना, घृणा के साथ उसने आधे दाम पर ही उसे बेच दिया और जाकर दूसरी बार लाइन में लग गया। लेफ्टिनेंटों, कैप्टनों, सीनियर लेफ्टिनेण्टों की कतार धीरे-धीरे खिड़की की ओर बढ़ रही थी। कुछ लोग बिल्कुल नयी वर्दी में थे जो अभी मुस भी न पायी थी, तो कुछेक अस्पतालों से लौटते समय किसी की पुरानी सूती वर्दी पहने थे। वह व्यक्ति जिसे कभी स्टोर से यह नयी, केरोसीन की गन्ध छोड़ती वर्दी मिली होगी, शायद अब कब्र में सोया पड़ा था और उसकी धुली, पर पैबन्द लगी वर्दी दोबारा सेना में इस्तेमाल की जा रही थी।

मोर्चे की ओर जानेवाली सड़क पर यह लम्बी कतार राशन-केन्द्र की खिड़की के सामने से गुजर रही थी। हरेक यहाँ अपना सिर झुकाता था—कोई भौहें चढ़ाकर तो कोई चापलूसी की मुस्कान के साथ।

"अगला!" भीतर से कोई आवाज लगाता।

कौतूहलवश त्रेत्याकोव ने भी निचली खिड़की में झाँका। बोरियों, खुली पेटियों, बंडलों के बीच, इस सारी दौलत के बीच झुकते तख्तों पर क्रोम लेदर के दो जोड़ी बूट चल-फिर रहे थे। पिंडलियों तक कसे, हल्की-सी धूल से ढके बूट चमचमा रहे थे। उनके सोल पतले चमड़े के थे, ऐसे बूट पहनकर कीचड़ में नहीं सिर्फ तख्तों पर चला जा सकता है।

पिछवाड़े के सैनिक के आटे से ढके, सुनहरे रोयोंवाले दबंग हाथों ने झटके के साथ राशन-कार्ड खींच लिया और एक-साथ सब कुछ खिड़की पर रख दिया : टिनबन्द मछली का एक डिब्बा, चीनी, रोटी, बैकफैट, हल्के तम्बाकू का आधा पैकेट। और चिल्लाया : "अगला!"

और 'अगला' जल्दी मचा रहा था, सिर के ऊपर से अपना कार्ड बढ़ा रहा था।

अब कुछ निर्जन-सा स्थान ढूँढ़कर त्रेत्याकोव ने अपना किटबैग खोला और रेल की पटरी पर बैठ गया। किटबैग को अपने सामने मेज की तरह रखकर वह रूखा-सूखा खाना खाते हुए दूर से स्टेशन की भाग दौड़ को देख रहा था। उसके मन में चैन और शान्ति का राज था, मानो जो कुछ उसकी आँखों के सामने था—यह कालिखभरा दूसरा दिन, पटरियों पर चीखते ये इंजन, और पम्प-घर के ऊपर लटका सूरज—यह सब उसे आखिरी बार देखने को मिल रहा था।

उसके पीछे से खिसकती गिट्टी पर किच-किच करती एक औरत गुजरी। कुछ आगे जाकर वह रुक गयी :

"लेफ्टिनेण्ट! सिगरेट पिला दे!"

कहा तो उसने चुनौतीभरे स्वर में पर उसकी आँखें भूखी थीं, चमक रही थीं।

भूखे आदमी के लिए पानी या सिगरेट माँगना ज्यादा आसान है।

"बैठ जा," उसने सहजता से कहा और मन ही मन खुद पर हँस दिया। वह किटबैग बन्द करने ही वाला था, जान-बूझकर उसने और रोटी नहीं काटी ताकी मोर्चे तक बची रहे। मोर्चे का यह नियम सही है : खाना पेट भरने तक नहीं बल्कि तब तक खाते हैं जब तक और खाने के लिए कुछ बाकी न रहे।

औरत झट से उसके पास जंग लगी पटरी पर बैठ गयी, उसने अपने दुबले घुटनों पर स्कर्ट का किनारा खींचा, और जब वह उसके लिए डबल-रोटी और बेकफैट काट रहा था तो वह उसकी ओर देखने की कोशिश कर रही थी। वह बिना अन्दरकालरवाली फौजी कमीज, सिविलियन स्कर्ट पहने थी, जो बगल में पिन से बन्द दी। उसके पैरों में सूखे और चटके जर्मन बूट थे जिनकी चपटी नोंकें ऊपर की ओर मुड़ी थीं। वह मुँह मोड़कर खा रही थी और त्रेत्याकोव देख रहा था कि जब वह कौर निगलती तो उसकी पीठ और दुबले कन्धे काँपते। उसने डबल रोटी और बैकफैट का एक-एक

टुकड़ा और काटा। औरत ने उसकी ओर प्रश्नवाचक दृष्टि डाली। वह उसकी नजर के अर्थ को भाँपकर शर्म से लाल हो गया : उसके रूखे कपोल, जिन पर तीन साल से धूप मानो ताँबा चढ़ाती आ रही थी, भूरे हो गये। समझभरी मुस्कान से औरत के पतले होंठों के कोनों पर झुर्रियाँ-सी पड़ गयीं। अब उसने बेधड़क अपने साँवले, सफेद नाखूनोंवाले हाथ को बढ़ाकर चिकनी उँगलियों में रोटी थाम ली।

रेल के डिब्बे के नीचे से निकला एक मरियल कुत्ता दूर से ही उन्हें देखता हुआ कूँ-कूँ कर रहा था, उसके मुँह से लार टपक रही थी। कहीं-कहीं उभरी पसलियों पर बाल जड़ समेत उखड़े हुए थे। औरत पत्थर उठाने को झुकी तो कुत्ता कें-कें करता दुम दबाकर भाग गया। ट्रेन के अगले सिरे से पीछे तक इस्पाती गड़गड़ाहट दौड़ गयी, डिब्बे हिले और पटरियों पर लुढ़कने लगे। चारों ओर से पटरियों को फाँदते हुए, नीले ग्रेटकोट पहने मिलिशियामैन डिब्बों की ओर दौड़ पड़े, पायदानों पर उछलकर चढ़ने लगे, चलती गाड़ी में खुले मालडिब्बों की ऊँची दीवारों पर चढ़कर अन्दर कूदने लगे।

"शिकारी," औरत ने कहा। "चल पड़े लोगों को अपने फँदे में फँसाने।" फिर लेफ्टिनेण्ट की ओर गहरी दृष्टि डालकर बोली : "फौजी स्कूल से आ रहे हो?"

"उहूँ।"

"तेरे बाल तो भूरे हैं और भौंहें काली... पहली बार उधर जा रहे हो?"

त्रेत्याकोव व्यंग्यपूर्वक मुस्कराया और बोला :

"आखिरी बार!"

"तू ऐसे मजाक न कर! देख, मेरा भाई छापामार था..."

और वह अपने भाई के बारे में बताने लगी, कैसे वह भी शुरू में अफसर था, कैसे वह घेराबन्दी से निकलकर घर आया था, कैसे वह छापेमारों के साथ चला गया और कैसे उसने वीरगति पायी। उसके बताने के ढंग से लग रहा था कि वह पहली बार यह किस्सा नही सुना रही थी, हो सकता है वह झूठ बोल रही हो। वह ऐसे बहुत-से किस्से सुन चुका था।

थोड़ी दूर पर इंजन की टंकी में पानी भरा जा रहा था, खम्भे जैसी मोटी धार लोहे के पाइप से उसकी टंकी में गिर रही थी। स्टीम इंजन की भाप फुफकार रही थी।

"मैं भी छापामारों की सन्देशवाहिका थी!" वह चिल्लाकर बोली। त्रेत्याकोव ने सिर हिलाया। "अब भला कौन इसका सबूत देगा!"

इंजन की चिमनी के पीछे लगी पतली-सी नली से भाप ऐसे शोर करती फूट रही थी मानो डण्डे से टीन की चादर को पीटा जा रहा हो। इस वजह से कुछ नहीं सुनायी दे रहा था।

"चलो, पानी पी लें?" औरत उसके कान में चिल्लायी।

"कहाँ?"

"वहाँ नल है!"

उसने अपना किटबैग उठाकर कहा :

"चलो, चलते हैं!"

"और फिर सिगरेट पियेंगे, ठीक है?" उसके पीछे-पीछे दौड़ते हुए वह पहले से ही इसका फैसला कर लेना चाहती थी।

नल के पास ही ख्याल आया कि ग्रेटकोट तो वहीं रह गया। उसने तत्परता से कहा :

"मैं ले आती हूँ।"

और अपने छोटे बूटों में पटरियों को लाँघती हुई दौड़ पड़ी। लायेगी या नहीं? पर उसके पीछे दौड़ना भी शर्म की बात थी। दूर से शंटिंग इंजन का धक्का खाकर एक माल डिब्बा पटरी पर लुढ़कता आ रहा था। कुछ देर के लिए वह इस डिब्बे के पीछे ओझल हो गयी।

औरत ग्रेटकोट को ले आयी। वह बड़े गर्व के साथ ग्रेटकोट हाथों में उठाये, किश्तीनुमा टोपी सिर पर टिकाये लौटी। उन्होंने बारी-बारी से, हँसते-खिलखिलाते एक दूसरे पर छींटे डालते हुए नल से जी भरकर पानी पिया। हत्थे को दबाये हुए वह देख रहा था कि वह कैसे आँख मूँदकर, बर्फीली धारा को मुँह से काट-काटकर पी रही है। उसके बाल पानी के छींटों से चमक रहे थे और धूप में उसकी आँखें हल्के भूरे रंग की, चमकीली लग रही थीं। त्रेत्याकोव को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उसकी उम्र शायद उतनी ही होगी जितनी कि उसकी अपनी थी। पर शुरू में वह अधेड़ और उदास-सी लगी—बहुत भूखी थी न।

लड़की ने नल की धार से अपने बूट धोये। बूट धोते-धोते वह उसकी ओर देखे भी जा रही थी। धुले बूट चमकने लगे। उसने हाथों से स्कर्ट पर पड़े छींटों को झाड़ा और उसे स्टेशन के बाहर छोड़ने चल पड़ी। त्रेत्याकोव ने कन्धे पर अपना किटबैग टाँग लिया। लड़की उसका ओवरकोट उठाये साथ-साथ चलने लगी। मानो उसकी बहिन उसे विदा करने जा रही हो, या वह उसकी प्रेयसी हो। जब वे आपस में विदा लेने लगे तो पता चला कि उन्हें एक ही दिशा में जाना है।

उसने सड़क पर एक फौजी ट्रक को रोका और लड़की को ऊपर चढ़ने में मदद दी। पहिये पर एक बूट टिकाकर वह दूसरे पैर को ऊँचे बोर्ड के कारण ट्रक में नहीं डाल पा रही थी। तंग स्कर्ट इसमें बाधा डाल रही थी। वह चिल्लाकर बोली :

"मुँह दूसरी ओर मोड़ ले!"

और जब ऊपर से ट्रक के तख्तों पर एड़ियों की ठक-ठक सुनायी दी, वह एक ही छलाँग में ट्रक के अन्दर आ गया।

धूल के सफेद बादल में ओझल होती सड़क पीछे छूटती जा रही थी। त्रेत्याकोव

ने ओवरकोट को खोलकर दोनों पर डाल लिया। ठण्डी हवा की मार से बचने के लिए वे उससे सिरों को ढँके हुए और पागलों की तरह एक दूसरे का चुम्बन करने लगे।

"रुक जाओ!" वह कह रही थी।

उसका दिल धकधक धड़क रहा था, छाती से बाहर निकलने को आतुर हो रहा था। ट्रक हिचकोले खा रहा था, उनके दाँत आपस में टकरा रहे थे।

"एक दिन के लिए ही सही..."

उन्हें मालूम था कि इसके अलावा उनकी किस्मत में और कुछ नहीं बदा था, कुछ नहीं, फिर कभी नहीं, इसीलिए तो वे एक दूसरे से अलग नहीं हो पा रहे थे। उनका ट्रक सैनिक युवतियों के प्लाटून के पास से गुजर रहा था। एक के बाद एक उनकी पाँतें पीछे छूटती जा रही थीं। बगल में सार्जेंट-मेजर कुछ बड़बड़ाता चला जा रहा था पर आवाज सुनाई नहीं दे रही थी। उसके बार-बार खुलते मुँह में धूल घुस रही थी। फिर सारे दृश्य को धूल भरे सफेद बादल ने ढक दिया।

गाँव के छोर पर वह लड़की ट्रक से कूद गयी और हाथ हिलाते हुए सदा के लिए विलीन हो गयी। सिर्फ उसकी आवाज गूँज रही थी :

"ओवरकोट मत खो देना!"

शीघ्र ही वह भी उतर गया, दोराहे पर ट्रक दूसरी ओर मुड़ रही थी। वह सड़क के किनारे बैठकर सिगरेट फूँकता हुआ अपनी दिशा की ओर जानेवाले किसी वाहन की प्रतीक्षा करने लगा। उसे अफसोस था कि वह रुका क्यों नहीं। कम से कम उसका नाम तो पूछ ही सकता था। पर नाम में क्या धरा है?

युवतियों का प्लाटून, जिसे वे पीछे छोड़ आये थे, धूलभरी सड़क पर मार्च करता पास आ रहा था।

"प्ला ऽऽ आ ऽऽ टून..."—पाँतों को आगे जाने देते हुए सार्जेंट-मेजर एक जगह कदमताल करता हुआ आदेश देने लगा। "हाल्ट!"

कदमों की ताल टूटकर रुक गयी। लड़कियों के चेहरे धूप के कारण ताँबई की लालिमा लिये हुए थे, बालो में धूल भरी थी।

"बायें घूम!"

पिंडलियों पर जोर डालकर उल्टे पैर चलते हुए सार्जेंट-मेजर ने बुलन्द आवाज में कमाण्ड दी :

"सावधान!"

लड़कियों की कमीजें बगल से जेबों तक पसीने से तर थीं। सड़क के उस पार हवा शरत्कालीन झुरमुट की पत्तियाँ झाड़ रही थी।

"विसर्जन..."

और चुटकी लेकर बोला कि जो काम करना है जाकर कर लो। हँसती, फौजी

बूटों में फुदकती लड़कियाँ सड़क के उस पार दौड़ पड़ीं, दौड़ते-दौड़ते कन्धों से कारबाइनें उतार रही थीं। अपने काम से सन्तुष्ट सार्जेंट-मेजर त्रेत्याकोव के पास आया और सैल्यूट मारकर, अफसर के साथ अफसर की तरह, उसके पास सड़क के किनारे बैठ गया। उसकी टोपी के नीचे से भूरी कनपटी और गाल पर पसीने की चमकीली धारा बह रही थी।

"सिगनलरों को हाँककर ले जा रहा हूँ।" और धूल व धूप से सूजी आँख मारकर बोला, "इससे बुरी पोस्टिंग की कोई सोच भी नहीं सकता।"

उन्होंने तम्बाकू को कागज में लपेटकर एक-एक सिगरेट बना ली। सड़क के उस पार, झुरमुट से आवाजें सुनायी दे रही थीं। धीरे-धीरे प्लाटून इकट्ठी होने लगा। किश्तीनुमा टोपियाँ पहने, फौजी कमीजों में फीते लगे कन्धों पर कारबाइनें लटकाये लड़कियाँ झुरमुट से निकल रही थीं। किसी के हाथ में फूल थे तो किसी के हाथ में पतझड़ की रंगबिरंगी पत्तियों का गुच्छा। वे कन्धे की सीध में पाँत बाँधकर खड़ी हो गयीं। सार्जेंट-मेजर ने कमाण्ड दी :

"आगे चल! गाना गा!"

जवाब में उसे हँसी सुनायी दी। उसने दूर से इशारा किया : देखा कैसी जनता से पाला पड़ा है मेरा।

मोटर के इन्तजार में सड़क के किनारे बैठा त्रेत्याकोव धूल में शान से कदम बढ़ाती फौजी लड़कियों की पाँत को देखता रहा।

अध्याय 3

ज्यों-ज्यों मोर्चा पास आता जा रहा था, त्यों-त्यों चारों ओर विशाल युद्ध के चिन्ह स्पष्ट होते जा रहे थे। मृतकों को दफनानेवाले दल यहाँ के मैदानों में अपना काम करके जा चुके थे, ट्राफी टीमें भी युद्ध के काम आ सकनेवाली सभी चीजों को इकट्ठा करके ले गयी थीं; आस-पास के निवासी भी बीते युद्ध के दौरान छोड़ी गयी उन चीजों को अपने-अपने घर ले जा रहे थे जो काम आ सकती थीं। जली, ध्वस्त फौजी मशीनें मैदानों में पड़ी जंग खा रही थीं। और सबके ऊपर—मौत के सन्नाटे के ऊपर—जमीन पर बारिश को निचोड़ चुके शरत्कालीन आकाश की नीलिमा और चुभती निर्मलता व्याप्त थी।

और पास ही कच्ची सड़क पर भारी फौजी बूटों में इफैंट्री मार्च कर रही थी, फौलादी कुन्दों से टकराते खाने के डिब्बों की खड़-खड़ सुनायी दे रही है। ग्रेटकोटों के पल्ले पतले, गेटरों में लिपटे पैरों पर फड़-फड़ कर रहे थे। सभी कदों और उम्रों के सैनिक जो सुसज्जित और बोझ से लदे थे उनका स्थान लेने जा रहे थे जो यहाँ

खेत रहे। और नवयुवक, जिन्होंने जीवन में अभी कुछ नहीं देखा था, ग्रेटकोटों के कालरों से घिरी गर्दनें उचकाकर, मौत के शाश्वत रहस्य के समक्ष जीवितों के दर्दभरे कौतूहल और भीरुता के साथ चारों ओर नजरें दौड़ा रहे थे जहाँ कुछ समय पहले रणभूमि थी। वे उस ओर जा रहे थे, जहाँ से अस्ताचलगामी सूर्य की लालिमा फैल रही थी, लगता था मानो कोई वहाँ रुक-रुककर इंजन की भट्ठी के कपाट खोल रहा था। धूँ-धूँ करती आवाज सुनायी दे रही थी, रुक-रुककर हवा काँप जाती थी। त्रेत्याकोव को आश्चर्य और शर्म के साथ यह बेचैनी महसूस हो रही थी। सड़क के बिल्कुल पास जले जर्मन टैंक को देखकर वह रुक गया। टैंक किसी नये ढंग का था, उनसे बड़ा जो उसने उत्तर-पश्चिमी मोर्चे पर देखे थे। बख्तर में पिघले किनारोंवाला नीला छेद था : शायद गोला सबकैलिबर का था, वह किसी मुलायम चीज की तरह बख्तर को भेदता चला गया था। पर इस टैंक का बख्तर तो मजबूत और पहले से मोटा था।

सोवियत सेना के भूरे ग्रेटकोटों के काली मिट्टी में दबे चिथड़े हवा में फड़फड़ा रहे थे। जहाँ-तहाँ बिखरे गड्ढों और टैंक के ट्रैकों की लीक में भरे पानी में ठण्डे, चमकीले आकाश और सूर्यास्त की दमकती, स्वच्छ लालिमा के प्रतिबिम्ब पर कँपकँपी दौड़ रही थी। यह सब देखकर त्रेत्याकोव घबरा रहा था, तरह-तरह के विचार मन में आ रहे थे, पहली बार की तरह... आठ महीने वह मोर्चे से दूर रहा था, अब आदी नहीं रहा, फिर से अभ्यस्त होना पड़ेगा।

पिछली रात उसने जर्मनों द्वारा जलाये गये गाँव के छोर पर मिले एक हमराही के साथ बितायी थी। उसका हमराही जवानी को पार कर चुका था जिसके बाल लाल-से थे, पिचके चेहरे पर शेव बनाने के लिए कुछ था ही नहीं, कलाइयाँ झाइयों और सफेद बालों से ढकी थीं।

अपना परिचय देते हुए उसने कहा :

"सीनियर लेफ्टिनेण्ट तरानोव!" और सैल्यूट मारकर टोपी के पालिशदार छज्जे से ऐसे झटके के साथ हाथ खींचा मानो वह जल गया हो। चाल-ढाल से तो वह नियमित सेना का अफसर लगता था। उसकी वर्दी बिल्कुल चुस्त थी। वह ऊनी कपड़े की हरी-सी कमीज और नीले रंग की बिरजिस पहने हुए था जिसका रंग मेजपोश पर पड़ी स्याही जैसा था। उसके फौजी बूट क्रोम कमड़े के बूटों की तरह सिले थे। उसके हाथ पर गहरे रंग का अफसर-कट ग्रेटकोट टँगा था। हाथ पर लटका हुआ भी वह बड़ा चुस्त लग रहा था : कमर कसी हुई, छाती फूली हुई, कन्धों पर लगे फीते लकड़ी की पट्टियों की तरह कड़े, पीछे की तरफ नीचे से कमर तक खुला हुआ। ऐसा ग्रेटकोट परेड, घुड़सवारी के लिए ही उचित था पर उसे ओढ़कर रात बिताना असम्भव था—चाहे जिस ओर से तानो फिर भी हवा लगती, तारे दीखते और

अब इसी ग्रेटकोट के साथ युद्ध के तीसरे वर्ष में सीनियर लेफ्टिनेण्ट तरानोव रिजर्व रेजिमेण्ट से मोर्चे पर जा रहा था।

"खुद समझते हैं कि इस वक्त भाग लेने की कितनी आतुरता थी।"—उसने कहा और चुस्ती से आँखों में झाँकते हुए, सौहार्द से हाथ मिलाया।

रात बिताने के लिए घर तरानोव ने खुद चुना, और वह भी बड़ा अच्छा। घर की मालिकिन कोई चालीस बरस की स्थूलकाय उक्राइनी थी, उसके काले बाल सपाट सँवरे हुए थे, रंग गेहुआँ था। वह अफसरों को देखकर बड़ी खुश हुई—कम से कम अब सैनिकों की पूरी टुकड़ी उसके घर में घुसकर रात नहीं बितायेगी। और शीघ्र ही तरानोव तौलिए को ऐप्रन की तरह लपेटकर रसोई में खाने का प्रबन्ध करने में उसे मदद दे रहा था। वह डिब्बाबन्द खाने के टिन खोल रहा था औरत के पीछे से कोई तीन साल का बालक मेज पर नजर डालने के लिए उचक रहा था। खाने की खुशबू उसे यहाँ खींच लायी थी।

"आफत है मेरी, जा सो जा!" मालिकिन उस पर चिल्लायी, और मानो गुस्से में, मेज पर से अमरीकन 'लंचन-मीट' का एक टुकड़ा उठाकर उसके हाथ पर रख दिया। और खुद उसने हीन भाव से तरानोव की ओर एक सहमी हुई दृष्टि डाली।

सड़क के उस पार ड्राइवरों के पास जाकर त्रेत्याकोव तेल के लैम्प में पेट्रोल भरवा लाया, उसने उसमें मुट्ठी भर नमक डाल दिया ताकि पेट्रोल फट न जाये। जब वह लौटा तो मेज पर तीन लोग बैठे थे।

"लेफ्टिनेण्ट, देख तो मालिकिन ने हमसे किसको छिपा रखा था!" सफेद होंठों के पीछे से सोने के दाँत चमकाते हुए तरानोव ने बड़े जोश के साथ उसका स्वागत किया। वह आँख मारकर नजरों से इशारा कर रहा था।

मालिकिन के पास उसकी कोई सत्रह बरस की बेटी बैठी थी। वह भी मोटी-सी, सुन्दर पर काली पलकें झुकाकर ऐसे बैठी थी, मानो देवदासी हो। जब त्रेत्याकोव उसके पास बैठ रहा था तो उसने कौतूहलवश पलकें उठायीं। उसकी आँखें गहरी नीली थीं। उसी ने मौन भंग किया :

"हम धमाके से तो नहीं उड़ जाएँगे?"

"नहीं, नहीं!" त्रेत्याकोव उसे शान्त कराने लगा। "मोर्चे पर आजमायी चीज है। पेट्रोल में नमक डाल दो तो वह कभी नहीं फटेगा।

उनकी नजरें टकरायीं और वह अटक गया। लड़की सौजन्यता से मुस्करायी :

"मैं तो इतनी डरपोक हूँ, हर चीज से डरती हूँ..."

उधर उसकी माँ जैसे आँखों से उसकी रखवाली कर रही थी और बतियाये जा रही थी, बतियाये जा रही थी। शब्द तो ऐसे फूट रहे थे जैसे मशीनगन से गोलियाँ।

"उधर जर्मन आये और इधर मैं आपरेशन के बाद बिस्तर पर पड़ी थी! हे भगवान!

ओक्साना चौदह साल की और वह छोटा-सा था... करूँ तो क्या करूँ?"

"तुम्हारा नाम ओक्साना है?"—त्रेत्याकोव ने लड़की से धीमे-से पूछा।

"हाँ, ओक्साना। और आपका?"

"वोलोद्या।"

मेज के नीचे से लड़की ने अपना गुदगुदा, गर्म और नम हाथ बढ़ाया। त्रेत्याकोव का दिल एक बार तो धड़कना भूलकर फिर बेतहाशा धुक-धुक करने लगा।

"ओक्साना!" उठते हुए मालिकिन ने आवाज दी। उसने उसास ली, लेफ्टिनेण्ट की ओर देखकर मुस्करायी और अनिच्छा से माँ के पीछे-पीछे चली गयी।

"लेफ्टिनेण्ट, मौका मत छोड़ना!" तरानोव फुसफुसाया। वे दोनों मेज पर बैठे प्रतीक्षा कर रहे थे। किवाड़ के पीछे से मालिकिन की दबी-दबी आवाज सुनायी दे रही थी। वह जल्दी-जल्दी कुछ बोल रही थी पर एक भी शब्द समझ में नहीं आ रहा था।

"मोर्चे पर जा रहे हैं।"

उसने आँख मारी और झट से गिलास भर दिये। उन्हें खाली करने के बाद दोनों ने बारी-बारी से लैम्प की लौ से सिगरेट सुलगा लीं।

"हो सकता है आज आखिरी बार ऐसे बैठे हैं, क्या पता कल मारे जायें, क्यों?" और जोर से आवाज दी :

"कतेरीना वसील्येवना! कात्या! भई, हमको अकेला छोड़कर कहाँ चली गयीं? अच्छी बात नहीं है। हम भी तो बुरा मान सकते हैं।"

किवाड़ के पीछे से आती आवाजें बन्द हो गयीं। फिर अकेली मालिकिन बाहर निकली, उसके होंठों पर मुस्कान खेल रही थी।

"और ओक्साना कहाँ है?" तरानोव ने चिन्तित स्वर में पूछा।

"सोने चली गयी।" मालिकिन उसके पास बैठ गयी, उसकी गदरायी बाँह तरानोव के कन्धे को छू रही थी। "अगर आप डाक्टर होते तो..."

"क्यों? कोई बीमारी है क्या?" तरानोव ने पूछा।

"नहीं, बीमारी तो नहीं है। लोगों को सड़कें बनाने के लिए भेजा जाता है। अगर आप डाक्टर होते तो लड़की को इस काम से मुक्त करने का सर्टिफिकेट दे सकते थे।"

"अरे, हम डाक्टर ही तो हैं!" तरानोव ने आँख मार-मारकर उस दरवाजे की ओर इशारा कर रहा था जहाँ ओक्साना थी।

"आप तो मजाक कर रहे हैं।" उसने अपना हाथ उसकी ओर झटका। तरानोव ने उसका हाथ पकड़कर अपनी ओर खींचा। "डाक्टरों के कन्धों पर ऐसे फीते नहीं होते।"

"डाक्टर के कन्धों पर कैसे होते हैं?"

"छोटे-से, नन्हें-से, और दूसरे हाथ की उँगली की उसने उसके कन्धे पर, उसके फीते पर फेरा, "नन्हे से, बहुत छोटे-से..."

"बड़े नहीं होते?" तरानोव के सोने के दाँत चमक रहे थे, अन्दर से सफेद-से निचले होंठ पर एक सूखा छाला दिखायी पड़ रहा था।

अब बातचीत नजरों से ही रही थी। त्रेत्याकोव ने उठकर कहा कि सिगरेट पीने जा रहा है। बरामदे के अँधेरे में उसने अपना ग्रेटकोट और किटबैग टटोला। बाहर का दरवाजा बन्द करते समय उसे तरानोव की दबी आवाज और औरत की हँसी सुनायी दी।

बाड़ के बचे खम्भे से पीठ टिकाकर वह आँगन में सिगरेट पीने लगा। निःसन्देह यह औरत खुद को पेश करके बेटी को छिपा रही है। शायद, जब जर्मन यहाँ थे तब भी वह यही करती होगी, खुद को पेश करके बेटी की ओर से ध्यान हटाती रही होगी और यह है कि खुश हो गया, कहता है : "मोर्चे पर जा रहे हैं..."

पश्चिम में तोपखाने की कौंध से, बिना किसी आवाज के आकाश काँप रहा था। वर्षा से धुले आकाश में नवचन्द्र की नीली हँसिया जले खण्डहर के ऊपर लटकी हुई थी। आँगन में झुलसे पेड़ की छाया फैली थी। पड़ोस से धुआँयंध आ रही थी : वहाँ कभी खिड़कियों के सामने रोपे गये सेब के पेड़, अब कोयला बनकर, राख के ढेर पर पड़ी चिमनी को घेरे खड़े थे।

सड़क के उस पारवाले घर के आँगन से मोटरों के पास खटर-पटर करते ड्राइवरों की आवाजें सुनाई दे रही थीं। त्रेत्याकोव उसी ओर चल पड़ा। घर में लोग फर्श पर ही सोये पड़े थे। वह जर्जर सीढ़ी से भूसे की कोठरी पर चढ़ गया। उसने टटोलकर भूसे का, धूल की गन्धभरा ढेर जमा किया और ग्रेटकोट को सिर तक ओढ़कर उस पर लेट गया। मोर्चे पर पहुँचने की इच्छा बलवती हो रही थी—बस जल्दी से वहाँ पहुँच जाये। नींद में डूबते-उतराते उसे नीचे से ड्राइवरों की आवाजें, छत के ऊपर कहीं ऊँचाई पर उड़ते विमान की गुजार सुनाई दे रही थी।

अगले दिन सीनियर लेफ्टिनेण्ट तरानोव से उसकी भेंट आर्टिलरी ब्रिगेड के हेडक्वार्टर में हुई। सूर्योदय के समय कोई छः किलोमीटर की दूरी पैदल पार करके त्रेत्याकोव वहाँ जल्दी पहुँच गया, क्लर्क अपनी-अपनी मेजों पर अभी बैठ ही रहे थे। नाश्ते के बाद, अफसरों के आने तक उनका मन कुछ करने को नहीं हो रहा था, वे कामकाजी मुद्रा में दराजें खोल-बन्द कर रहे थे।

इन्फैंट्री रेजिमेण्टों और बटालियनों को दी गयी बैटरियों और बटालियनों में बँटी आर्टिलरी ब्रिगेड की रेजिमेण्टें मोर्चे पर दूर-दूर तक बिखरी हुई थीं और उसका मुख्यालय मोर्चे से चार किलोमीटर दूर एक गाँव में था। तोपखाने के दूरस्थ धमाके

झोंपड़ी की नीची छत के तले छायी शान्ति और आलस्य को झकझोर रहे थे। जब उधर से हवा बहती तो मशीनगनों की आवाज भी सुनायी दे जाती, पर खिड़की के शीशे से टकराती ततैये की आवाज कहीं अधिक स्पष्ट सुनाई दे रही थी। बाहर की ओर खुली खिड़की के शीशे पर नीचे से ऊपर की ओर पँख फड़फड़ाता ततैया रेंग रहा था, और एक क्लर्क बाहर झुका हुआ भय से उसे कुचलने के लिए घात लगा रहा था।

आँगन से रसोई का धुआँ आ रहा था : वहाँ चेरी के पेड़ों की छाया में घर की मालिकिन लकड़ी की नाँद में कपड़े धो रही थी। घास पर पैंटों और फौजी कमीजों का ढेर पड़ा था, पैर लपेटने की पट्टियों से भरा देग उबल रहा था। क्लर्क फेतिसोव, जो जवान था पर सिर गंजा होने लगा था, नाँद के चारों ओर ऐसे घूम रहा था मानो खूँटे से बन्धा हो। कभी घुटने से तोड़कर टहनी को आग में डाल देता, कभी देग चला देता, पर उसकी आँखें घर की मालिकिन की शमीज की काट में डोलती छातियों, कन्धों तक खुले और साबुन के झाग में खेलते हाथों पर टिकी थीं। खिड़की से उसे तरह-तरह की सलाहें दी जा रही थीं। और सिर्फ हेडक्लर्क कलीस्त्रातोव काम शुरू करने की तैयारी करते हुए तिनके को आर-पार डालकर अपने सिगरेट-होल्डर को साफ कर रहा था। उसने जैसे डामर में लिपटा, निकोटिन से भूरा, गीला तिनका बाहर खींचा, घिन से उसे सूँघा और सिर हिला दिया।

खिड़की पर खड़े क्लर्क ने आखिर ततैये को कुचल डाला। सन्तोष के साथ उसने अपनी उँगलियाँ दीवार की सफेदी से पोंछी, जेब से सेब निकाला और जोर से उसमें दाँत गड़ा दिये—दाँतों पर रस उफन आया।

"हाँ, तो सेमिओश्किन, भेदिया तुम्हारे लिए कौन सी घड़ी लाया?" कलीस्त्रातोव ने पूछा। और खुद कन्धे पर सिर झुकाकर सावधानी से, सिगरेट-होल्डर से तिनके को खींच रहा था, ताकि टूट न जाय वह उसे बिल्कुल साफ करना चाहता था।

खिड़की के दासे पर सेमिओश्किन ने पैंट रगड़ी :

"डोक्सू!"

"उनके मजे हैं... इन भेदियों के।" कलीस्त्रातोव ने साफ सिगरेट-होल्डर को रोशनी की तरफ करके उसके छेद में देखा। "आगे-आगे चलते हैं, सब उनका है। और क्या चाहिए उन्हें?..."

क्लर्क त्रेत्याकोव को देख तक नहीं रहे थे। ऐसे सैंकड़ों लेफ्टिनेण्ट ट्रेनिंग स्कूल से मोर्चे पर जाते समय उनके हेडक्वार्टर से गुजरते हैं। कुछ तो ऐसे भी होते हैं कि वर्दी अभी घिस न पायी कि लिस्ट में से उनका नाम काटती हुई, हर तरह के भत्ते से उन्हें वंचित करती हुई, जिनकी अब उन्हें जरूरत नहीं पड़ेगी, मृत्यु सूचना वापस रवाना हो जाती है।

और इसमें खुद वह दोषी था कि क्लर्क उसको अनदेखा कर रहे थे, उसे अपना कसूर मालूम था। नाश्ते से पहले ब्रिगेड का गुप्तचर अधिकारी मुख्यालय में आया था—मेजों के पीछे से क्लर्क उछलकर खड़े हो गये। पता नहीं कहाँ से अपने आप कागज मेज पर आ गये, कोने में रखे टाइपराइटर के सामने चश्मा लगाये एक क्लर्क प्रकट हो गया जो अब तक वहाँ था ही नहीं, मानो वह मेज के नीचे बैठा था। की-बोर्ड पर नजर दौड़ाते हुए वह एक उँगली से टाइप कर रहा था : ठक... ठक... अक्षर देर तक रिबन से चिपके रह जाते थे।

किसी कारण से त्रेत्याकोव बिग्रेड के गुप्तचर अधिकारी को पसन्द आ गया : "कलीस्त्रातोव, कह देना कि मैं इस लेफ्टिनेण्ट को ले रहा हूँ! वहाँ, मेरे पास प्लाटून कमाण्डर की हैसियत से रहेगा।" और खुश होने या धन्यवाद देने के बजाय त्रेत्याकोव ने कहा कि उसे बैटरी पर भेजा जाये। इस क्षण से क्लर्कों ने मानो मिलकर उसकी ओर ध्यान न देने का फैसला ही कर लिया। अब झुण्ड बनाकर वे सेमिओश्किन की मेज पर पड़ी घड़ी को देख रहे थे। चश्मेवाला क्लर्क भी, शायद जो यहाँ के वरिष्ठताक्रम में सबसे निचले स्थान पर था, टाइप छोड़कर घड़ी को देखने के लिए उठनेवाला था, तो उससे कहा गया :

"टाइप कर, यहाँ धरा ही क्या है देखने को..."

कलीस्त्रातोव ने चाकू से घड़ी का ढकना खोल दिया, उसका पेण्डुलम धड़क रहा था।

"ये-वे-ली-सी..."—हिज्जे करके कलीस्त्रातोव ने विदेशी लिपि में लिखे अक्षरों को पढ़ा। लार सुड़ककर, बालों को झटकते हुए वह गम्भीरता से बोला : "येवेल्स! यह क्या होता है?"

"ये ज्वैल्स रूबी से भी बढ़िया होते हैं," सेमिओश्किन ने जरा हाँकी और सेब का जायका लेते हुए बोला : "सोलह ज्वैल्स की है!"

"'येवेल्स'...भेदियों की तो चाँदी ही चाँदी है।"

कोई हँस के बोला :

"पर उनके पास वह टिकती नहीं।"

अनावश्यक भटकाव से बचने के लिए त्रेत्याकोव रेजिमेण्ट से आने-वाले सन्देशवाहक की प्रतीक्षा में बाहर आँगन में निकल आया। मालिकिन ने चूल्हे से देग को उतारकर नांद में उलट दिया, खौलते साबुन के पानी में गेटरों के ढेर से उठती भाप ने उसके मुँह को ढक दिया। पास ही घास पर लगे फ़ौजी कमीजों के ढेर पर पैर पसारे कोई दो बरस का बच्चा बैठा हुआ था। वह अपनी मुट्ठियों से मुँह में टमाटर दबाये उसका रस चूस रहा था। उसकी कमीज टमाटर के बीजों और रस से सनी थी। 'शायद, अवैध सन्तान है', त्रेत्याकोव ने अनुमान लगाया। आज वह बहुत जल्दी

उठा था, इसलिए सुबह की धूप में दूर से सुनाई दे रही तोपों की धम-धम से उसे नींद आ रही थी। उल्टे चमड़े की बूटों की नोकें जिन पर उसने ग्रीज मल दिया था, धूल में जंग की तरह भूरी हो गयी थीं। उन्हें घास से साफ करने के इरादे से उसने घनी घासवाली जगह भी चुन ली थी, पर इतने में दूर से आता सन्देशवाहक दिखाई पड़ा।

कन्धे पर कारबाइन लटकाये, सिर उठाये, मुख्यालय की ओर जाते टेलीफोन के तारों को देखता हुआ सैनिक तेज, किन्तु ढुलमुल चाल से चला आ रहा था। लकड़ी की जालीदार बाड़ से छनती धूप उस पर फिसल रही थी। कुछ रुककर त्रेत्याकोव ने उसके पीछे-पीछे मुख्यालय में प्रवेश किया। सन्देश देकर हरकारा दरवाजे के पास खड़ा होकर पानी पीने लगा। पानी पीकर उसने टीन के मग से बाकी पानी को झटक दिया और बाल्टी के पास उसे औंधा रख दिया। उसने यहीं, दरवाजे के पास उकड़ूँ बैठकर सिर से किश्तीनुमा टोपी उतारकर उससे चेहरे का पसीना पोंछ डाला, कन्धों पर लगे पतले फीते बुलबुलों की तरह फूल गये थे।

हेडक्लर्क विश्वसनीयता के लिए आँखों से दूर रखकर भौंहें सिकोड़कर सन्देश गम्भीर स्वर में पढ़ने लगा, सन्देशवाहक ने दीवार से बन्दूक टिकायी, उँगली से उसे चेताया कि गिरे नहीं और कागज में तम्बाकू लपेटकर सिगरेट बनाने लगा।

"तीन सौ सोलहवीं से हो?" त्रेत्याकोव ने पूछा।

सन्देशवाहक ने कागज के किनारे को जीभ से गीला किया, बैठे-बैठे सद्भाव से आँख मारी। सिगरेट सुलगाकर उसने कश खींचा और धुएँ से आँख मिचमिचाते पूछा :

"कामरेड लेफ्टिनेण्ट, क्या आप ही को साथ ले जाना है मुझे?"

धूप से झुलसी उसकी भौहें धूल जमने से सफेद हो गयी थीं, तमतमाया चेहरा ऐसे लग रहा था मानो अभी-अभी धोया गया हो। कनपटियों पर उगे बाल गीले, चिपके हुए थे। एक-साथ कई कश खींचकर सन्देशवाहक घटिया तम्बाकू के धुएँ में विलीन हो गया। अचानक वह हड़बड़ाकर चौंक गया :

"बिल्कुल ही भूल गया... मानो याददाश्त खो बैठा..।" और उठकर कमीज की जेब खोलने लगा। उसने धूल धूसरित कपड़ा निकाला और अपनी हथेली पर रखकर बिछाया—उसमें "साहस के लिए" चाँदी का मेडल लिपटा था।

क्लर्क इकट्ठे होकर मेडल के साथ भेजे गये पुर्जे को पढ़ने लगे, उसे वैसे ही देख रहे थे जैसे कुछ देर पहले घड़ी को। वह लाल चीकट रिबनवाला पुराने ढंग का मेडल था। चाँदी मानो आग के धुएँ से काली पड़ गयी थी, बीचों-बीच एक गड्ढा और छेद था। मुलायम धातु को बींधती गोली तिरछी निकल गयी थी, इसलिए पीछे लिखा नम्बर नहीं पढ़ा जा सकता था।

"यह कौन सुनत्सोव है?" स्टाफ के लोगों के बारे में अपनी जानकारी पर गर्व करते हुए हेडक्लर्क कलीस्त्रातोव ने पूछा :

"यह वही तो नहीं है जो गुल्केविची में हमारे यहाँ नयी भरती में आया था?"

"मुझे नहीं मालूम," सन्देशवाहक ने सौजन्यता से मुस्कराकर कहा और तह की गयी किश्तीनुमा टोपी से एक बार फिर अपना चेहरा और गर्दन पोंछ ली। वह थोड़ा दम मार लेने का मौका पाकर खुश था, फिर से धूप में सफर करने से पहले वह ठण्डा हो रहा था। जो पानी उसने पिया था वह अब पसीना बनकर बह रहा था। "मुझे हुक्म मिला है कि हेडक्वार्टर तक इसे पहुँचा दूँ।"

"पर वह मारा कैसे गया?"

"कैसे? शायद निरीक्षण चौकी पर था। भेदिया जो था।"

"टेलीफोनवाला था। यहाँ लिखा तो है : सिगनलमैन।"

"क्या सिगनलमैन था? तो ठीक है, संचार का..." सैनिक खुशी से मान गया। "मतलब संचार की व्यवस्था कर रहा था..."

पता नहीं क्यों हेडक्लर्क की भौंहें सिकुड़ गयीं, उसने क्लर्कों से मेडल लेकर साथ भेजा गया कागज नत्थी कर दिया। जब वह तिजोरी का चरमराता ढक्कन खोल रहा था, तो वह पुरोहित की तरह गम्भीर लग रहा था मानो पूजा कर रहा हो। चाँदी का मेडल लोहे की पेंदी पर गिरकर टन बजा, और तिजोरी का ढक्कन चूँ-चूँ चरमराता बन्द हो गया।

शीघ्र ही सन्देशवाहक के पीछे-पीछे त्रेत्याकोव रेजिमेण्ट के पास जा रहा था। वे एक गली में मुड़ गये। सामने से नाश्ते के बाद, एक बाड़ से दूसरी बाड़ तक पूरी सड़क को घेरे अफसर आ रहे थे। सूरज बगल से चमक रहा था, धूल पर फिसलती उनकी परछाइयाँ बाड़ को छू रही थीं। जो लोग पास थे उनकी छाया तो बाड़ की उस ओर पड़ रही थी।

उनमें से वरिष्ठ अफसर एक मेजर था, वह आत्मविश्वास के साथ कुछ बता रहा था और कतार के दायें छोर पर चलता एक अफसर उसकी ओर मुड़कर मुस्कराता हुआ बातें कर रहा था। त्रेत्याकोव को बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह सीनियर लेफ्टिनेण्ट तरानोव था, उसके जर्जर होंठों के अन्दर से सोने का दाँत चमका। पर अपनी चाल-ढाल और चुस्ती से वह अफसरों की कतार में ऐसे घुल-मिल गया मानो वह सदा से यहीं था।

अध्याय 4

उसी रात त्रेत्याकोव तोपों को मोर्चे पर ले जा रहा था। उनकी पूरी बटालियन को कहीं बायीं तरफ भेजा जा रहा था। शाम के झुटपुटे में बैटरी कमाण्डर कैप्टन पोवीसेन्को आया और नक्शे पर नाखून टिकाकर बोला :

"यह तंग घाटी देख रहे हो? टीला देख रहे हो? इसके पिछले ढलान पर तोपें तैनात कर देना।" सिगरेट के धुएँ से एकदम काले पड़े उसके मजबूत नाखून ने एक रेखा खींच दी। "समझ गये? मेरी निरीक्षण चौकी प्लस एक सौ बत्तीस पाइंट सात टीले पर होगी। बैटरी तैनात करके मेरे यहाँ तक टेलीफोन का तार बिछा देना।"

उसने फिर पूछा :

"समझ गये?"

"समझ गया।" त्रेत्याकोव ने कहा। नक्शे पर तो सब कुछ साफ था।पास में ट्रैक्टर शोर मचा रहा था, उसकी एग्जास्ट नली से शाम के झुटपुटे में चमकती चिनगारियाँ छूट रही थीं। मार्च की स्थिति में खोलों से ढकी तोपें ट्रैक्टरों से जोड़ दी गयी थी पर तोपची उन पर न जाने क्या लादे जा रहे, पता नहीं क्या लादे जा रहे थे। बैटरी के सामान से लदे ट्रेलर के पास सार्जेंट-मेजर भाग-दौड़ कर रहा था। पोवीसेन्को उस ओर थोड़ी देर तक घूरकर देखता रहा और उधर ही चला गया।

तिरपाल की छतवाले ट्रेलर में फायर प्लाटून का कमाण्डर जावगोरोदनी अँधेरे मखड़ा दर्द से ऐंठ रहा था। वे उसको चिकित्सा बटालियन में भेजना चाहते थे, पर मोर्चे प बीमार होनेवाला चाहे-अनचाहे अपने को ढोंगी महसूस करने लगता है। यहाँ ो आदमी या तो घायल होता है या मारा जाता है, और मोर्चे पर क्या बीमारी हो सकती है? अब तुम जिन्दा हो और एक घण्टे बाद मारे गये, क्या फर्क पड़ता है स्वस्थ मारे गये या बीमार? और जावगोरोदनी दर्द पर काबू पाने का प्रयास कर रहा था। अन्ततः सार्जेंट-मेजर को आजमायी दवा याद आ गयी। उसने आधे गिलास मिट्टी के तेल में नमक मिलाया और पीने को कहा। "शुरू में कुछ जलन होगी फिर धीरे-धीरे दर्द चला जाएगा।"

ट्रेलर के पीछेवाले बोर्ड के पास जाकर पोवीसेन्को अँधेरे में अन्दर झाँका।

"क्यों, पड़ा कुछ फर्क?"

सार्जेंट-मेजर ने भी मुँह अन्दर करके पूछा :"जलन हो रही है? जलन हो रही है क्या?" वह इस दवा और बीमारी के लिए अपने के जिम्मेदार महसूस कर रहा था।

"कुछ कम हुआ है," पूरी शक्ति बटोरकर जावगोरोदनी कराहा। और बिछे ग्रेटकोटों पर घुटने बदले—वह लेट नहीं सकता था।

"दवा अचूक है," सार्जेंट-मेजर ने आशा बँधायी। "जलन होगी, थोड़ी जलन के

बाद दर्द शान्त हो जायेगा।''

और उसने अपनी छाती पर पेटी के बकसुए तक हाथ फेरा, जहाँ से दर्द को चला जाना था।

घटा की तरह सलेटी आकाश बोझिल लग रहा था। कोयले की तरह काले, फटे-फटे बादल तैर रहे थे। वर्षा से पहले की शान्ति छा गयी। तोप-गाड़ियों में जुते ट्रैक्टर खेत के पास की जंगल की पट्टी में खड़े थे। दायीं ओर मकई के खेत के उस पार से मशीनगनों की दबी-दबी ढक-ढक सुनाई दे रही थीं, जमीन के ऊपर गोलियों के रेखाएँ अधिकाधिक चमक रही थीं।

''हाँ तो।'' बैटरी कमाण्डर ने कुछ सोचकर, रूखे, कटे-फटे होंठ चबाकर कहा। ''तुम्हारा संचालन प्लाटून मैं अपने साथ ले जा रहा हूँ। जरूरत पड़ने पर उपप्लाटून कमाण्डर पाराव्यान तुम्हारे साथ रहेगा। समझ गये न? तो फिर काम मे लग जाओ।''

और सैल्यूट का जवाब देकर अपनी बरसाती खड़खड़ाती चला गया।

वे अँधेरे का इन्तजार करके चल पड़े। ट्रैक्टरों ने गरजकर तोपों को खींचना शुरू कर दिया। वे अपनी लोहे की पेटियों के नीचे झाड़ियों को कुचलते, जंगल से बाहर निकलते समय नन्हे पौधों को दबाते जा रहे थे। बैटरी के पीछे-पीछे भुरभुरी जमीन पर गहरी रेखा छूटती जा रही थी।

वे बत्तियाँ जलाये बिना जा रहे थे। ऊपर काला आकाश, पैरों के नीचे और सामने धूलभरी सफेद-सी सड़क दिखाई दे रही थी। बारिश होने लगी। तोपों के भारी पहियों और रबड़ के टायरों पर काली मिट्टी के मन-मन के लौंदे लिपटने लगे।

मोर्चा उनकी दायीं ओर चला आ रहा था, उसी से त्रेत्याकोव दिशा निर्धारण कर रहा था, वहाँ रुक-रुककर भभूके कुछ ऊँचा उठते और बारिश से घुटकर बुझ जाते। हर बार उनकी धूमिल, हिलती रोशनी में त्रेत्याकोव गीली बरसातियों में तोपों के पीछे-पीछे चलते तोपचियों को देखता। हर बार हरेक तोप पर सिकुड़कर बैठे ऊँघते दो-चार लोग जरूर नजर आते, ऊपर से बारिश हो रही थी।

''पाराव्यान! जाओ इनको तोपों से उतार दो! हिचकोले खाकर ऊपर से गिर पड़ेंगे और उनींदी हालत में कुचले जा सकते हैं।''

सुन्दर और चुस्त उपप्लाटून-कमाण्डर पाराव्यान उसकी ओर भीगी मुड़ी पलकों के नीचे से अपनी काली-काली आँखों से देखता आदेश पूरा करने चल पड़ता।

''चाहते हो कि लोग कुचले जायें? कितनी बार कहूँ!''

त्रेत्याकोव को मालूम था कि जब तक वे चलते रहेंगे तब तक उसे यह बात दोहरानी पड़ेगी। वह भी सिपाही रह चुका है और उसे भी इसी तरह उतार दिया जाता था। वह दूसरी तरफ से जाकर कमाण्डर की नजर बचाकर फिर तोप पर चढ़ जाता क्योंकि बड़ी नींद आती और बैठे-बैठे सोना तो चलते-चलते सोने से बेहतर है। पर

अब कोई और दूसरा नहीं जिसे मन ही मन कोसा जा सके बल्कि वह स्वयं कमाण्डर था और अपने अधीन लोगों के लिए जिम्मेदार था, इसीलिए वह उनींदे जवानों को उतारने का आदेश दे रहा था। और पाराव्यान अनिच्छा से उसका हुक्म पूरा करने जाता।

पाराव्यान के अलावा इनमें से वह न किसी का चेहरा जानता था न ही नाम। वह उन्हें ले जा रहा था, वे उसके पीछे-पीछे चल रहे थे। उसे अपने निर्देशन प्लाटून तक में अभी किसी को जानने का मौका नहीं मिला था। दोपहर के खाने से पहले की बात है, गुप्तचर सैक्शन के कमाण्डर चबारोव को जिसने मारे गये प्लाटून कमाण्डर का कार्यभार सम्भाल रखा था, मुख्यालय में बुलाकर उसको यानी लेफ्टिनेण्ट त्रेत्याकोव को कमान सौंपने का आदेश दिया गया। अनुभवी सैनिक चबारोव ने उन्नीस वर्षीय इस लेफ्टिनेण्ट पर नजर डाली जिसे कमाण्ड करने के लिए भेजा गया था और बिना कुछ कहे उसे जवानों के पास ले गया।

सारा प्लाटून सिवाय उन सैनिकों के जो इस समय निरिक्षण चौकी पर थे, मकान के पीछे बमवर्षा से छिपने के लिए खाइयाँ खोद रहा था, अपने लिए नहीं, बटालियन के हेडक्वार्टर के लिए। कुदालियाँ कटे बालोंवाले सिरों, गीली बगलों, जोर लगाने के कारण पिचकते पेटों के ऊपर जाकर बेतरतीब नीचे जमीन पर पड़ रही थी। धूप से पथरायी जमीन में धँसकर कुदाल धातु का निशान छोड़ती और फिर चाँदी की छड़-सी चमकती ऊपर उठ जाती।

हालाँकि पूरी गर्मी बीत चुकी थी फिर भी सैनिकों के शरीर सफेद थे। सिर्फ चेहरे, गर्दनें और हाथों की कलाइयाँ ही धूप से काली पड़ी थीं। ये सब जवान लड़के थे जिनमें अभी शक्ति का संचार शुरू हुआ ही था। युद्ध के दौरान वे सेना मे बड़े हुए। सिर्फ दो-तीन लोग ही अधेड़ उम्र के थे—शरीर सूखे, परिश्रम कारण मांसपेशियाँ खिंची हुई और खाल लटकने लगी थी। पर उनमें से एक व्यक्ति विशेष रूप से अलग नजर आ रहा था। वह पहलवान की तरह मजबूत और कमर से गले तक घने काले बालों से ढका था। जब वह कुदाल उठाता तो खाल के नीचे पसलियाँ नहीं, बल्कि पसलियों के बीच मांसपेशियाँ उभरतीं।

जब त्रेत्याकोव पसीने से तरबतर इन लोगों पर नजर दौड़ा रहा था उसे बहुतों पर पुराने घावों के निशान दिखाई दिये, वे चमकीली त्वचा से ढके थे। उसने स्वयं को उनकी नजर से भी देखा, जो उसके सामने कमर तक नंगे, कड़ी मेहनत कर रहे थे। जबकि वह तो अभी-अभी सैनिक स्कूल से निकला, सिर पर कलगी की तरह किश्तीनुमा टोपी लगाये, मैगजीन से बाहर गिरे कारतूस जैसा नया, चमचमाता खड़ा था। चबारोव ने भी यों ही इस हालत में उसका प्लाटून से परिचय नहीं कराया। और वह उनको भला समझायेगा कि खुद यह सब कुछ भुगत चुका है, युद्ध को अपनी

आँखों से देख चुका है।

बाद में, जब खाने की छुट्टी का समय आ गया तभी चबारोव ने प्लाटून को बन्दूकों और खाने के डिब्बों के साथ कतार में खड़ा किया और उसे अपने हाथ से कागज पर घसीटी नाम की सूची थमा दी। और खुद जाकर दायीं ओर खड़ा हो गया। नाटा और गठीला, चुस्त चबारोव। उसके चौड़े जबड़े और धूप से तपे कत्थई चेहरे पर मंगोल खून की साफ झलक थी, मानो यह कह रहा था कि अनुशासन का वह आदर करता है पर उसका, नये प्लाटून कमाण्डर का अभी से आदर करने में जल्दी नहीं करेगा। प्लाटून ठीक सामने खड़ी थी और त्रेत्याकोव के हाथ में कागज पर नामों की फेहरिस्त थी।

"जेजेलाश्वीली!" उसने आवाज दी। उसे आश्चर्य हुआ कि दो बार 'जे' की क्या जरूरत थी, जबकि एक ही काफी था। और उसने सोचा कि शायद यह वही है जो गले तक घने बालों से ढका है।

"मैं उपस्थित हूँ!"

लाइन में से गोरा लड़का निकला, उसके गालों पर गाजर जैसी लाली थी, आँखें ललौंहीं, हँसमुख थीं। यह लो जेजेलाश्वीली। और उस पहलवान का नाम नसरुल्लायेव निकला। उसने लाइन में खड़े जितने लोगों के नाम पुकारे उनमें से एक भी नाम मेल नहीं खा रहा था। इसलिए शुरू में उसके लिए सूची अलग थी और प्लाटून अलग।

उसका यह प्लाटून बैटरी कमाण्डर निरीक्षण चौकी बनवाने के लिए अपने साथ ले गया था, और वह ट्रेलर में लेटे जावगोरोदनी की तोपों और तोपचियों को ले जा रहा था। उसे स्वयं यह ठीक से मालूम नहीं था कि वह उन्हें कहाँ ले जा रहा है। तीन बजे तक तोपों को अपनी पोजीशनों पर तैनात हो जाना था पर वे अभी यासेनेवका तक नहीं पहुँचे थे। "वहाँ यासेनेवका, याब्लोनेवका नाम का गाँव होगा," बैटरी कमाण्डर ने नक्शे के घिसे मोड़ पर नाम पढ़ने की कोशिश करते हुए कहा था : "खैर खुद देख लेना... वहाँ से दायीं, दायीं ओर चलते जाना..." पर वे एक घण्टा चले, दो घण्टा चले परन्तु कोई गाँव नहीं दिखाई दे रहा था, हालाँकि अग्रिम मोर्चे पर रात का भीगा पर्दा उठाते, बारिश में कड़कती बिजली के धूमिल प्रकाश में त्रेत्याकोव ने उसे ढूँढ़ने के लाख प्रयास किये। और इस विचार से भयभीत होकर कि वह उन्हें गलत जगह ले जा रहा है, रास्ते से भटक गया है, बदनामी के भय से वह वही कर रहा था जो कर सकता था यानी अपनी भावनाओं को प्रकट नहीं होने दे रहा था, उसमें आत्मविश्वास जितना कम होता जाता वह उतने ही विश्वास से डग भरता जा रहा था।

अन्ततः सामने कुछ काला-काला अस्पष्ट-सा दिखाई देने लगा। कहीं फिर

बिजली कड़की और उसकी रोशनी में त्रेत्याकोव उकडूँ बैठ गया। उस काले आकाश की पृष्ठभूमि में लम्बी, नीची कई कोठरियाँ-सी दिखाई दीं, उनके पीछे कुछ ऊँची-ऊँची चीजें भी थीं। शायद ये पोपलर के वृक्ष थे... बिजली कड़की और बुझ गयी ओर घने अँधेरे ने सब कुछ ढक दिया।

खुशी-खुशी अपनी चाल तेज करके गीली काली मिट्टी पर फिसलता हुआ वह सबसे आगे वाले ट्रेक्टर से आगे निकल गया। उसने ट्रैक्टर-चालक को हाथ से इशारा किया : चले चलो मेरे पीछे-पीछे। उसकी आवाज चिल्लाने पर भी ट्रैक्टर-चालक को न सुनाई देती।

वह जो उसे दूर से कोठरियाँ नजर आ रही थीं नजदीक पहुँचने पर 122 मि. मी. की तोपों की बैटरी निकली। सड़क के एक किनारे पर बैलगाड़ियों की तरह कीचड़ में फँसी लम्बी नालवाली तोपें ट्रैक्टरों के साथ एक के पीछे एक खड़ी थीं। और वहाँ से कोई व्यक्ति बरसाती ओढ़े उसकी ओर आ रहा था। पास आकर उसने सैल्यूट मारा, बरसाती की हुड से बून्दें झाड़कर त्रेत्याकोव से गीला, ठण्डा हाथ मिलाया :

"इंजन बन्द कर दो!"

"क्यों बन्द कर दें?"

"देखते नहीं आगे क्या है?"

अभी कुछ साफ नहीं दिखाई दे रहा था, पर वह सिर्फ यह समझ गया था कि यह गाँव नहीं था, इसका अर्थ यह है कि वे कहीं दूसरी जगह जा पहुँचे हैं। त्रेत्याकोव ने पूछा :

"पर यहाँ तो यासेनेवका होना चाहिए, यासेनेवका...। यासेनेवका क्या अभी दूर है?"

व्यक्ति का चेहरा, हुड के नीचे से अस्पष्ट-सा दिखाई पड़ रहा था, वह बूढ़ा, झुर्रीदार लगा। पर उसकी छाती पर जहाँ बरसाती खुल गयी थी, ग्रेटकोट के ऊपर से कसी सैनिक पेटियों के बकसुए मुस्तैदी से चमक रहे थे। नक्शों के केस की पतली पेटी उन्हें तिरछी पार कर रही थी, और वर्षा में भीगी दूरबीन भी लटकी हुई थी।

"कोई पाँच किलोमीटर होगा।"

"पाँच कैसे? चार किलोमीटर था, और हम दो घण्टे से चल रहे हैं..."

"हो सकता है, चार ही हो," उसने उदासीनतापूर्वक हाथ झाड़कर कहा। "प्लाटून कमाण्डर हो? और मैं भी तुम जैसा मूर्खानन्द—प्लाटून कमाण्डर हूँ। तुम्हारे पास एक सौ बावन मी. मी. की हाविट्जर तोपें हैं? क्या फर्क पड़ता है, मेरी भी ऐसी ही हैं। ट्रैक्टर के साथ पन्द्रह टन! और आगे ऐसा पुल है कि कदम रखते ही ढह जायेगा।"

वे दोनो पुल को देखने चल पड़े। दोनों बैटरियों के जवान उनके पीछे हो लिये।

पुल पर बिछे गीले, फिसलन भरे लट्ठों पर चलते हुए वे पुल के बीच तक पहुँचे गये। नीचे कोई संकरी घाटी थी या किसी सूखी नदी का पाट, ऊपर से तो कुछ दिखाई ही नहीं पड़ रहा था।

"और यासेनेवका उस तरफ है?"

"क्या, यासेनेवका? यासेनेवका, यासेनेवका... तुम्हारे नक्शे में यह पुल है? और मेरे नक्शे में भी नहीं है।" नक्शे का केस खोलकर प्लाटून कमाण्डर सेलुलाइड पर चट-चट नाखून मारने लगा, जिसके नीचे से धुँधला-सा नक्शा दिखाई पड़ रहा था, और ग्रेटकोट की आस्तीन से बारिश की टपटपाती बूँदों को झाड़ रहा था। "नक्शे में वह नहीं है, पर देखो, वह यहाँ खड़ा है!"

और इसे सिद्ध करने के लिए लट्ठों पर एड़ी मार रहा था। एक बार तो वह कूद भी पड़ा। और चारों ओर दोनों बैटरियों के जवान खड़े थे।

"नक्शे में नहीं है तो इसका अर्थ यह है कि वह इस स्थान पर भी नहीं होना चाहिए। जहाँ तक वह मौजूद है तो उसे नक्शे में भी दिखाओ। मैं ठीक समझता हूँ?"

वह ठीक ही समझ रहा था : नक्शे में नहीं दिखाया गया है तो इसका मतलब है वह लड़ाई लड़ने को बाध्य नहीं है।

ढलान पर उगी ऊँची घास से घुटने भिगोते हुए त्रेत्याकोव दौड़ता हुआ पुल के नीचे पहुँच गया। पुल लट्ठों पर टिका था जो ऊपर से शिकंजों में जड़े थे। पुल उसे भरोसेमन्द नहीं लगा।

सैनिक स्कूल में सिखाया गया था कि पुलों की वाहन क्षमता किस प्रकार गणना करके मालूम की जा सकती है। मेजर वाल्युश्कोव उन्हें सिविल इंजीनियरिंग पढ़ाया करते थे। अब तो शैतान ही इसकी गणना करे जब कुछ दिखाई ही नहीं दे रहा है। और प्लाटून कमाण्डर की आवाज से उसके कान फटे जा रहे थे : वह उसके पीछे-पीछे चिपका-सा चल रहा था और पुल की हर टेक पर घूँसा मार रहा था :

"ये रहीं! देखो तो! भला वे इतना बोझ सह पायेंगी?" और उसने नाखून गड़ाने की कोशिश की : "ये तो सारी गली हुई हैं..."

मानो त्रेत्याकोव को इस बात का विश्वास दिलाना इस समय युद्ध से भी अधिक महत्त्व की बात थी।

सहसा कहीं बिजली कौंधी। धुँधला प्रकाश घाटी में भर गया और उसके ऊपर पुल तैरता-सा लगा। पुल लट्ठों से पहा था, लोग वर्षा में भीग रहे थे और वे दोनों नीचे घास में खड़े थे। पत्थरों के बीच एक ट्रक का पंजर पड़ा था, टीन के डिब्बे की तरह पिचके, गीले केबिन पर बारिश के थपेड़े पड़ रहे थे। 'क्यों मुझे समझाये जा रहा है?' त्रेत्याकोव को क्रोध आ रहा था। इस व्यक्ति के प्रति उसकी हिचकिचाहट

के कारण त्रेत्याकोव के मन में तीव्र घृणा भर गयी, वह ऊपर चढ़ गया।

पहली तोप के पास जाकर उसने पूछा :

"ट्रैक्टर-चालक कहाँ है?"

जवान इधर-उधर मुड़कर देखने लगे, बाद में उनमें से एक, जो अत्यन्त नजदीक खड़ा था और सबसे ज्यादा इधर-उधर मुड़कर देख रहा था, बोला :

"हाजिर जनाब।"

मानो अचानक उसने दूसरों के बीच अपने को ढूँढ़ लिया हो। पर वह आगे नहीं आया, जवानों के बीच ही खड़ा रहा : वहाँ वह अपने को आश्वस्त महसूस कर रहा था।

"तोपों के कमाण्डर और ट्रैक्टर-चालक, इधर मेरे पास आओ!" त्रेत्याकोव ने उन्हें बैटरी के बाकी जवानों से अलग करने के लिए यह आदेश दिया।

एक-एक करके छ : लोग उसके सामने आकर खड़े हो गये। ट्रैक्टर-चालकों को फौरन पहचाना जा सकता है, वे हमेशा तेल-कालिख से सने होते हैं।

"सुनो मेरा आदेश, लोगों को तोपों से हटा दो। तोपों के कमाण्डर आगे-आगे जायेंगे। हरेक अपनी तोप के आगे। ट्रैक्टर-चालक टैक्टर को पहले गियर में डालकर ही तोपों को ले जायेंगे। जब एक तोप पार हो जायेगी तब दूसरी को ले जाना। समझ गये?"

क्षणिक मौन छा गया। दो तोप कमाण्डरों में से एक वही पाराव्यान था जो बकौल बैटरी कमाण्डर के "जरूरत पड़ने पर साथ रहेगा।"

"मेरी बात समझ गये?"

उत्तर समवेत स्वर में नहीं मिला : "हाँ, समझ गये..." और पीछे बैटरी के जवान मौन खड़े थे। वे सब एक साथ थे और वह उनके ऊपर नियुक्त, जिसे कोई भी न जानता था, अकेला था। उन्हें पुल तक की इतनी चिन्ता नहीं थी कि वह बोझ सह पायेगा या नहीं, जितना कि उसमें उनका विश्वास नहीं था। दूसरी बैटरी भी प्रतीक्षा कर रही थी, वह उन्हें पहले जाने के लिए रास्ता दे रही थी।

यह तुम्हारा ट्रैक्टर है?" त्रेत्याकोव ने उस ट्रैक्टर-चालक की ओर उँगली से इशारा करके पूछा जो शुरू में सबसे ज्यादा इधर-उधर देख रहा था। फिर ट्रैक्टर की ओर इशारा किया।

"यह रहा? मेरा है।" ट्रैक्टर-चालक मौका टाल रहा था। ट्रैक्टर की एग्जास्ट नली नीचे से तपकर लाल हो गयी थी, बारिश की बूँदें उस पर गिरने से पहले ही भाप बनकर उड़ जातीं।

"तुम्हारा कुलनाम क्या है?"

"कुलनाम में क्या धरा है, कामरेड लेफ्टिनेण्ट? सेमाकिन है मेरा कुलनाम।"

"सेमाकिन, तुम पहली तोप को लेकर जाओगे।"

"मैं, कामरेड लेफ्टिनेण्ट, ले जाऊँगा!" सेमाकिन जोर से बोलने लगा और निराशा से हाथ झटक दिया मानो अपनी उसे कोई परवाह नहीं। "मैं ले जाऊँगा। मैं हमेशा आदेशों का पालन करता हूँ!" यह कहते हुए उसने नकारात्मक ढंग से सिर हिला दिया। "पर ट्रैक्टर को कैसे बाहर निकालेंगे? वह पुल के नीचे पड़ा रहेगा। और तोप का भी यही..."

वह बैटरी के जवानों के सहानुभूतिपूर्ण मौन का सहारा पाकर बोल रहा था। वे सब संयुक्त रूप से और प्रत्येक अलग-अलग से देश के लिए, युद्ध के लिए तथा जो कुछ संसार में है और जो उनके बाद होगा उस सबके लिए उत्तरदायी थे। पर समय पर बैटरी को गंतव्य तक पहुँचाने के लिए सिर्फ वही अकेला उत्तरदायी था। जब एक ऐसा आदमी है तो उनका उत्तरदायित्व नहीं बनता।

"अगर तुम डर गये हो, चलाने में डरते हो तो मैं पुल के नीचे खड़ा हो जाऊँगा। मेरे ऊपर से तोप ले जाना!"

ट्रैक्टर-चालकों को अपनी-अपनी सीट पर बैठने तथा सभी जवानों को तोपों के पास से चले जाने का आदेश देकर वह बैटरी को पुल की ओर आगे ले चला।

जब ट्रैक्टर के पट्टे पहले लट्ठों पर टिक गये और वे हिल-डुलकर झुक गये, त्रेत्याकोव दौड़कर नीचे पहुँच गया। बैटरी कमाण्डर के सामने जवान इस तरह चिपककर, एक दूसरे को ताकते न खड़े रहते, और उस पर तो अपना बोझ भी लादा जा सकता है।

"चलो!" वह हाथ हिलाकर नीचे से चिल्लाया, हालाँकि वहाँ, ट्रैक्टर के पास उसकी आवाज नहीं सुनी जा सकती थी। वह पुल के नीचे ऐसे चला गया मानो अपने भाग्य को दाँव पर चढ़ा रहा हो।

सिर के ऊपर, उठे मुँह के ऊपर एक लट्ठे से दूसरे लट्ठे पर लुढ़कते बोझ से सब कुछ झुक रहा था। ऐसा लगा कि पुल के खम्भे धँस रहे हैं। और अब तोप पुल पर आ गयी। पुल कराह उठा, डगमगाने लगा। "ढह जायेगा!" ऊपर की साँस ऊपर, नीचे की साँस नीचे रह गयी। लट्ठे एक दूसरे से रगड़ खा रहे थे, ऊपर से बुरादा झड़ रहा था। किरकिराती, झपकती आँखों से उसे कुछ नहीं दिखाई दे रहा था, अपनी खुरदरी उँगलियों से वह उन्हें मसल रहा था, ऊपर उसे केवल झिलमिलाहट ही दिखाई दे रही थी। और ट्रैक्टर के इंजन की फट-फट के बीच चरमराती लकड़ी की आवाज सुनाई दे रही थी।

बिना कुछ देखे ही उसने महसूस किया कि किस प्रकार यह विशाल बोझ पुल को पार कर जमीन पर उतर गया और पुल ने राहत की साँस ली। केवल अभी उसे आभास हुआ कि ऊपर से कितनी बड़ी शक्ति दबा रही थी। अपनी तनी मांसपेशियों

से उसे लगा, मानो वह स्वयं अपनी पीठ पर पुल को उठाये खड़ा था।

त्रेत्याकोव घाटी के बाहर निकल आया : उसने क्या पुल के नीचे खड़े रहने का ठेका लिया है, आखिर यह सर्कस तो है नहीं। उसने सुरक्षा के ख्याल से ट्रेलर को हुक से अलग कर लोहे के लम्बे रस्से से बाँधकर खींचने का आदेश दिया और वह प्रतीक्षा किये बिना पुल के पार चला गया। वह तोप और उसके निकट खड़े जवानों के पास से जा रहा था, वह सही था, उसने वही किया जो उसे करना चाहिए था, पर पता नहीं क्यों उसे उनकी ओर देखना अप्रिय लग रहा था, अपने पर शर्म-सी आ रही थी। पुल के नीचे घेस गया, जाने क्या-क्या चिल्ला रहा था... सबसे सरल तो यह था कि ट्रैक्टर-चालक के साथ बैठ जाता और चैन से बैटरी को उस पार ले जाता : शोर भी कम होता और काम भी ढंग से होता।

आधी रात के आस-पास गाँव में एक झोंपड़ी का दरवाजा खट-खटाकर उन्होंने एक बूढ़े को रास्ता दिखाने के लिए जगाया। सिर्फ अन्दर के कपड़ों में ऊपर से कुछ पहने बिना वह ट्रैक्टर पर बैठा : शायद उसको यह आशा थी कि इस हालत में उस पर दया करके जल्दी ही घर वापस भेज दिया जायेगा। उसके कन्धों पर रूईभरी जैकेट डाल दी गयी जिसमें से डीजल की गन्ध फैल रही थी। और वह उसकी आस्तीनों को लपेटे, पैरों को आपस में रगड़-रगड़कर गर्म कर रहा था।

"उध, उध... वो रही पगडण्डी..." सफेद सघन रोयें से ढँकी उसकी चूजे जैसी गर्दन कालर से बाहर निकली हुई थी।

"उल्लु, उल्लु", ट्रैक्टर-चालक उसे चिढ़ाने लगा, वह किश्तीनुमा टोपी पहने सिर से पैर तक भीगा हुआ था, "तू मुझे कहाँ ले जा रहा है? यहाँ तो लुगाइयाँ जंगल-पानी को जाती हैं। तू मुझे वह रास्ता दिखा जहाँ से तोप जा सके!"

बुड्ढा दीन भाव से, पनीली आँखें मिचमिचा रहा था, और जैकेट से बाहर निकला उसका काँपता हाथ फिर आगे की ओर, वर्षा की ओर इशारा कर रहा था। उसने बैटरी को जंगल की पट्टी तक पहुँचा दिया और उसे छुट्टी दे दी गयी।

इंजन बन्द कर दिये गये। बिल्कुल पास ही अचानक मशीनगन जोर से ठक-ठक करने लगी। जमीन के अंधकार से प्रकट और लुप्त होती गोलियों की रेखाएँ चमकने लगीं। अग्रिम-पाँत कहीं आसपास ही थी। वह है कि भारी तोपों के साथ यहाँ आ फँसा।

ट्रैक्टर-चालक उसके पास आकर बोले :

"कामरेड लेफ्टिनेण्ट, ईंधन नहीं है।"

"कैसे नहीं है?"

"फूँक डाला।"

"सारी रात चलते रहे हैं..."

हल्के धमाके की आवाज सुनाई दी। धुएँ की चमचमाती रेखा खींचता भभूका छूटा। ऊपर पहुँचकर वह जलने लगा, उसके प्रकाश में जंगल, तोपें, लोग ऐसे खड़े थे, मानो वे हथेली पर धरे हों।

"क्यों नहीं है ईंधन?" अपनी असहाय स्थिति और हताशा का पूर्ण अनुभव करते हुए त्रेत्याकोव ने पूछा। "कैसे नहीं है, जबकि होना चाहिए?"

वे उसके सामने, जमीन में नजरें गड़ायें मौन खड़े थे। और इसी तरह जाने कब तक खड़े रह सकते थे, वह इसे भी महसूसकर रहा था। प्रकाश बुझ गया। त्रेत्याकोव को नहीं मालूम था कि अब क्या करें, क्या और कहे। चिल्लाना, डाँटना तो बिल्कुल व्यर्थ था। वह एक तरफ हट गया। उसे लगा कि ट्रेलर से जावगोरोद्नी उसे बुला रहा है, कोई कराह-सी उसे सुनाई दी पर उसने ऐसा आभास दिया, मानो उसने कुछ सुना ही नहीं हो। सांत्वना की उसे आवश्यकता नहीं, और वह बीमार भला वहाँ से कर क्या सकता है?

जंगल की पट्टी पर कई घोड़े चर रहे थे। उनमें से एक हल्के रंग का आँखें मिचमिचाकर पेड़ की छाल कुतर रहा था। उसके गीले कूल्हे से भाप उठ रही थी। केवल अभी त्रेत्याकोव ने देखा कि वर्षा बन्द हो गयी। जमीन और फैली घास से कोहरा निकल रहा था।

उसे कुछ आवाजें सुनाई दीं और वह उनकी ओर चला गया। हाँफते हुए, दबी आवाज में गालियाँ देते हुए तोपचियों की टोली ताजी खन्दक में तोप को उतार रही थी। अधनंगे, बारिश से भीगे तोपचियों ने नाल सम्भालकर रबड़ के पहियों पर और पीछे से जोर लगाकर उसे उतार ही दिया। वे अपनी उत्तेजना को वश में किए उसे घेरे खड़े थे। यह डिवीजन की तोपों की पोजिशनें थीं। उसने प्लाटून कमाण्डर को ढूँढ़ लिया। वह देखने में कुछ बूढ़ा-सा लगता था, पैदल सेनावाले गेटर और जूते पहने था जिन पर काली मिट्टी के मन-मन भर के लौंदे लिपटे थे। वह शुरू में त्रेत्याकोव को अविश्वास के साथ सुनता रहा। अन्ततः वह समझ गया कि बात क्या है। उन्होंने अपने-अपने नक्शों की तुलना की और अचानक सब साफ हो गया, मानो वह जगह उनके सामने पलट गयी। यहाँ से कोई आधे किलोमीटर की दूरी पर वह टीला था जिसकी ढलान के पीछे बैटरी को तैनात करना था।

पौ फटने से पहले ही जल्दी-जल्दी उसने बैटरी की पोजीशनें ढूँढ़ लीं, वहाँ पूरी छान-बीन कर ली, यह तय करके कि किस रास्ते से तोपों को वहाँ लायेगा वह जंगल में लौट आया। जवान सो रहे थे, सिर्फ पाराव्यान बरसाती लपेटकर तोपों के पास टहल रहा था। सबको उठने का आदेश दिया गया। सीली जैकेटों में ठिठुरते, उनींदे ट्रैक्टर-चालक उसके पास आ रहे थे, वे कँपकँपी के साथ उबासियाँ ले रहे थे। उसने समझाया कि तोपें किस तरह ले जायेगा और ईंधन भी मिल गया।

"कनस्तरों में कुछ बचा हुआ था..."

और सब सैनिक नजरें चुराने लगे। जब ईंधन समाप्त होने की बात उसे बतायी गयी थी तो हताश हो गया था कि उसने टंकियों तक को नहीं जाँचा। और अब न कि कनस्तरों में बल्कि डीजल तेल का एक भरा हुआ ड्रम भी निकल आया। हाँ, ट्रैक्टर-चालक भी तो सही थे। सारी रात भटकते-भटकते वास्तव में सारा ईंधन फुँक सकता था।

पौ फटने से पहले, जब नम अँधेरा सिमटकर घना होने लगा, तोपचियों को तोपों के लिए खन्दकें खोदने का आदेश देकर त्रेत्याकोव निरीक्षण चौकी पर टेलीफोन का तार खींच लाया। ताजी खुदी खाई में चबारोव बैटरी कमाण्डर की दूरबीन फिट कर रहा था।

"बैटरी कमाण्डर कहाँ हैं?"

"वहाँ ऊपर सो रहे हैं बैटरी कमाण्डर।"

अग्रिम पाँत पर छूटे भभूके के प्रकाश में त्रेत्याकोव ने देखा कि खाई की मेड़ के पीछे बैटरी कमाण्डर अपने गीले बूट बाहर किये और बरसाती को सिर तक ओढ़े सो रहा था।

"कामरेड कैप्टन! कामरेड कैप्टन!"

पोवीसेन्को उठकर जमीन पर बैठ गया, भभूके के प्रकाश से मिचमिचाती धुँधली आँखों से उसने देखा, वह एक क्षण कुछ समझ न पाया। उसने ऐसी उबासी ली कि उसकी आँखों में आँसू आ गये, शरीर में कँपकँपी दौड़ गयी। वह सिर हिलाकर बोला :

"हाँ... लाइन बिछायी?"

फिर बड़ी देर तक अँधेरे में डायल की चमकती सुइयों को देखता रहा।

"इतनी देर से तुम कहाँ थे? तुम्हारा कुलनाम क्या है, चेत्वेरिकोव?"

"त्रेत्याकोव।"

"अच्छा, त्रेत्याकोव* है, ठीक ही तो है। तुम्हें तो मौत को बुलाने भेजना चाहिए।"

वह उठ खड़ा हुआ। उसने अँगड़ाई लेकर हूँक के साथ जम्भाई ली।

"तोपों के लिए खन्दकें खोद लीं?"

"खोदी जा रही हैं।"

अभी तक त्रेत्याकोव के कानों में ट्रैक्टरों की गड़गड़ाहट गूँज रही थी और पैर मानो काले चिपचिपे कीचड़ में चलते जा रहे थे। निद्राविहीन रात्रि के बाद केवल सिर हल्का-हल्का और साफ था और बरसाती पहने भीमकाय बैटरी-कमाण्डर तो कभी पास लगता तो कभी आग की लालिमा में कहीं दूर चला जाता।

* 'चेत्वेरिकोव' और 'त्रेत्याकोव' में वही अन्तर है जो 'चतुर्वेदी' और 'त्रिवेदी' में है।

अध्याय 5

कई दिन से इस क्षेत्र में छिट-पुट लड़ाइयाँ चल रहीं थीं। जर्मन और सोवियत खन्दकों के बीच बम-गोलों के काले गड्ढों से छिदा खेत था जिसमें गेहूँ की पकी फसल खड़ी थी। रात को फसल में रेंगकर गुप्तचर जाते—जर्मनों की ओर सोवियत और हमारी ओर जर्मन। और अचानक हड़बड़ाकर गोलीबारी शुरू हो जाती, भभूके उड़ने लगते, चीखते मार्टर प्रहार करने लगते। और किसी को खाई में घसीटकर युद्ध के अज्ञात शिकारों की गिनती में जोड़ा लिया जाता और वह बूटों की एड़ियों, लटके हाथ की पीली निर्जीव उँगलियों से जमीन पर रेखाएँ छोड़ता जाता।

गर्म दोपहरी में एक गोले से खेत धू-धू जलने लगा। चक्रवात से फैलती आग खन्दकों को पार करने लगी। सारी अग्रिम पाँत और उस टीले पर जहाँ त्रेत्याकोव बैटरी-कमाण्डर का निरीक्षण चौकी पर गुप्तचर और टेलीफोन आपरेटर के साथ बैठा था, वहाँ अब घास की जड़ों तक जली जमीन, भस्म हो चुकी थी। जले अन्न की धुअयंध सारे वातावरण में छा गयी थी। यहाँ तक कि खाद्यवस्तुओं और कपड़ों से भी धुआयंध आ रही थी।

जब अनेकों रणभूमियों का चक्कर काटता, धुएँ और धूल से धूसरित भारी सा गोलाकार सूरज जर्मनों के पृष्ठ-प्रदेश की बढ़ता, तब शनैः शनैः बादलों में सूर्यास्त की लालिमा बुझती जाती और निस्सीम आकाश की ऊँचाई में चन्द्रमा उभर आता। फिर धीरे-धीरे वह दीप्तिमान होता जाता, काली जमीन पर शीतल आभा बिखेरने लगता।

हरिताभ चाँदनी में अपने हाथों की गहरी कालिख और काले-काले नाखूनों को देखते हुए त्रेत्याकोव उन दिनों की याद करता था जब स्ताराया रूसा के पास के दलदल में वे उजले और धुले से थे—चमड़ी झुर्रियों से भरी, लटकी-लटकी थी जैसे कपड़े धोने के बाद हो जाती है। और जब वह पिण्डलियों पर लिपटे गेटरों को सुखाने के लिए बूट से बाहर पैर निकालता तो वह निर्जीव-सा, पानी से निकाले गये किसी डूबे आदमी के पैर जैसा लगता।

तब वे बहुत दिनों तक दलदल के बीच, एक नन्हें टापू पर, अग्रिम पाँतों के बीचवाले क्षेत्र में तैनात थे, वहाँ एक बार भी उन्होंने आग नहीं जलायी थी और सिर से पैर तक उनके कपड़े नम थे। सन् बयालीस में बसन्त के वे दिन लम्बे और सर्द थे। मई दिवस को अचानक भारी हिमपात हुआ, चमकती धूप में बर्फ के बड़े-बड़े गाले उड़ाती हुई हिम-आँधी चलने लगी, काले मनहूस पानी पर तरंगें दौड़नें लगीं, उनका टापू बर्फ से सफेद हो गया। बाद में जब बर्फ पिघली तो धुली हुई घास और

भी हरी लगने लगी।

वह नहीं भुला पाता था कि कैसे आधी रात को वह भयानक फुसफुसाहट में कहे गये शब्द "जर्मन!" को सुनकर उछल पड़ा था। शाम से आकाश पर छाये बादलों को बसन्ती हवा उड़ाये लिये जा रही थी, धुँधला पानी चमक रहा था। वह ठिठुरता हुआ काँप रहा था, उनींदा दाँत किटकिटा रहा था, अपनी सत्रह बरस की उम्र में उसको सबसे बड़ा डर यह था कि कहीं लोग उसे कायर न समझ बैठें। त्रेत्याकोव खाई की मेंड़ के पीछे से नजरें दौड़ा रहा था पर उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। तनाव और ठण्ड के कारण आँखों से पानी बह रहा था। अचानक झाड़ियों की ओर से एक अश्रव्य लहर उठी। फिर एक और। चाँदनी में झिलमिलाती लहरें पानी पर फैलने लगीं। एक के बाद एक, चार छायाएँ चुपचाप एक झाड़ी से दूसरी झाड़ी की ओर बढ़ रही थीं। उनके पदचाप की हल्की सी लहर फैल जाती थी।

वहाँ झाड़ियों में चारों को कारबाइनों से धराशायी कर दिया गया। और अपनी जवानी की मूर्खतावश वह जर्मनों के देखने चल पड़ा : वे कैसे होते हैं? उसे उत्सुकता जो थी। पर वहाँ जाकर वह खुद मरता-मरता बचा क्योंकि भेदियों में से एक अभी जिन्दा था। त्रेत्याकोव उसे लादकर उठा लाया, और जब वह क्षीण हो चुके; मौत के पसीने से तर जर्मन के पट्टी बाँध रहा था, तो उसे आश्चर्य हुआ कि उसके प्रति उसमें न क्रोध है, न घृणा जबकि थोड़ी देर पहले इसी जर्मन ने उस पर गोली चलायी थी।

अब तक वह बहुत कुछ अपने लिए स्पष्ट न कर पाया था, पर युद्ध का तीसरा साल चल रहा था, और जो कुछ समझ में न आता था वह अब आम और सामान्य बात बन गयी थी। युद्ध में काल की गति के अपने नियम थे : पुरानी बात कभी इतनी ताजी हो जाती जैसे अभी कल की ही हुई हो और जो कुछ वर्तमान में घटित होता वह सबसे लम्बा, अनन्त लगता। उसे लगता कि आधी उम्र उसने यहीं, इस जले हुए टीले पर, मोर्चे की स्वाभाविक अवस्था में बैठे-बैठे काट दी, नींद में भी जागता रहता, हर क्षण चौकस रहता। उसके साथ बैठे जवानों के बारे में भी अब उसे बहुत कुछ ज्ञात था। उनमें सबसे छोटा ओबुखोव, जिसके बाल ललौंहे और भवें काली थी, साँवला चेहरा कत्थई चित्तियों से ढका था अठारह साल से कुछ कम उम्र के बावजूद बड़ी तत्परता से लड़ता था। वह हमेशा सिगनलमैन सुयारोव की हँसी उड़ाता रहता जो उससे उम्र में दुगुना बड़ा था :

"तुझे क्यों सजा मिली थी? जरा लेफ्टिनेण्ट को भी बता दे!"

और फिर खुद ही, अपनी नीली आँखें चमकाते हुए बताने लगता :

"इसे वोद्का सूँघने तक के लिए नहीं दी जा सकती। इसमें खून की जगह स्पिरिट भरी है, बस एक ग्राम पीने के बाद औंधा हो जाता है, काबू में नहीं रहता। हाँ, तो युद्ध से पहले तुझे कितने साल की सजा मिली थी?"

सुयारोव सहमा-सहमा चुप रहता। उसमें और उसकी कभी-कभी चापलूसीभरी मुस्कान में, जब तम्बाकू से काले दाँत उघड़ जाते, कुछ अविश्वसनीयता का भाव बना रहता था। पर अक्सर जब उसके बारे में बात चलती तो वह सिर्फ आँखें झपकाता और ध्यानमग्न होकर सिगरेट पीता रहता। और न जाने क्यों उसकी कटी अनामिका के स्वयं फड़कते, हिलते-डुलते ठूँठ को देखकर घिन-सी आती।

जब वे वहाँ रहने के आदी हो गये और सुनकर ही यह बता सकते थे कि कहाँ से और कौन सी जर्मन बैटरी फायर कर रही है, उन्हें तार लपेटकर फौरन अपने तोपखाने की पोजीशन पर लौट आने का आदेश मिला। उन्होंने आड़ का काम देनेवाली बरसाती उतार ली, जल्दी-जल्दी टाँड़ों पर बिछे भूसे को उलट-पलट दिया। त्रेत्याकोव एक बार आखिरी नजर डालने के लिये पीछे मुड़ा और अचानक अपनी इस तंग खोह से विदा लेते समय उसका दिल भारी हो गया, मानो उनकी आत्मा का हिस्सा यहीं छूटा जा रहा हो। मोर्चे पर हमेशा यही होता है : वह स्थान जहाँ कोई अप्रिय घटना नहीं हुई, वह विशेषकर विश्वसनीय लगता है। चाँदनी रात में वे जली भूमि पर रेंगते हुए तार लपेटते जा रहे थे। जर्मन बेचैनी से फायर कर रहे थे, एक के बाद एक भभूके छोड़ रहे थे। जब आदमी जमीन पर चित्त लेटा हो तो लगता है कि मानो गोलियाँ पास ही चल रही हैं और हर भभूका जैसे ऊपर ही छा जाता है। तब याद आता है कि खन्दक में बैठना कितना अच्छा और सुरक्षित होता है।

ढलान के उस पार नीचे की ओर सीधे खड़े होकर चलने लगे। यहाँ नम घाटी में ऊँची-ऊँची ओससिक्त घास थी, चलते-चलते त्रेत्याकोव ने उससे हाथ-मुँह धोया और आकस्मात हँस पड़ा। वह धुएँ की गन्ध का इतना आदी हो चुका था कि ताजी हवा में भी उसने महसूस किया कि उसका सारा शरीर धुआंयंध से भरा हुआ है।

लपेटे तारों के गोलाकार बण्डलों से लदे, बेलचे, दूरबीन, अपना सारा सामान और हथियार उठाये वे कूच करती हुई बैटरी में पहुँचे। पैरों और पहियों से उड़ती घनी धूल में इन्फैंट्री मोर्चे की रेखा के समानांतर चल रही थी। जब कम्पनियाँ खाइयों, खन्दकों, गड्ढों में तैनात होती हैं तो लगता है कि कोई है ही नहीं। जैसे लड़नेवाला कोई बचा ही न हो। पर जब सेना सड़क पर इस तरह उमड़ आती है तो उसकी अन्तिम पंक्ति से पहली पंक्ति तक–सब कुछ धूल के गुबार में छिप जाता है। रूस जन-समृद्ध है। आखिर युद्ध का तीसरा साल चल रहा है और फिर उन्हीं स्थानों पर जहाँ सन् इकतालीस में अनगिनत सैनिक वीरगति पा गये।

सर्चलाइट की रोशनी ऊँचाई पर मौन फिसल रही थी, उसके प्रकाश में लोगों के ऊपर उड़ रहे धूल के घने बादल, बोझ के कारण झुककर चलते हुए इन्फैंट्री के जवान साफ नजर आते और क्षण भर के लिए यह नजारा भी दिखाई पड़ा–एक फद्दावर सैनिक जिसके किश्तीनुमा टोपी प्रकाश में सफेद लग रही थी, छाती पर चपटे डिब्बे

को सीने से चिपकाये हुए उससे चलते-चलते पानी के घूँट भरता जा रहा था; चौड़े चेहरे और चुँदी आँखोंवाले बख्तर-तोड़क के कन्धे पर लम्बी काली, तेल से चमचमाती टैंक भेदी रायफल थी। सर्चलाइट की किरण एक ओर चली गयी और अँधेरे में सभी गन्धों को केरोसीन की बदबू से घोंटते हुए दौड़ते टैंक गुजर गये जिनके बख्तर पर पैदल सैनिक चिपके हुए थे। जब कच्ची सड़क पर फिर सर्चलाइट की किरण पड़ी तो उन्हें टैंकों के दाँतेदार निशानों पर लौटती इन्फैंट्री के बीच आगे अपनी बैटरी दिखाई दी : खोलों से ढकी भारी तोपें धीरे-धीरे खिसक रही थीं। उन पर अपना सामान लादकर वे हल्के होकर चलने लगे।

भोर का स्वागत उन्होंने जंगल में किया। कहीं पीछे से तोपें अभी आ रही थीं पर उसका निर्देशन प्लाटून, रात भर सबसे आगे चलने के बाद अब गहरी नींद में सो रहा था। शरत्कालीन सूर्य अपनी गुलाबी आभा बिखेर रहा था, झड़ी पत्तियाँ बर्फीली ओस से गीली थीं। बूट उतारकर, धूप में गेटर बिछाकर त्रेत्याकोव बैठा-बैठा ऊँघने लगा, उसके नंगे पाँवों में गर्माहट लगने लगी। ऊपर गहरा नीला आकाश, और नीचे हवा से खड़खड़ाती पेड़ों की पीली फुनगियाँ सफेद बादलों की ओर हिल रही थीं वह नींद में कभी डूब जाता, कभी जाग पड़ता... जंगल में पतझड़ और अलाव की गन्ध छायी हुई थी, जलते अलाव के चारों ओर उसका प्लाटून सो रहा था। बिना धुएँ के जलती आग पर कालिख से ढकी बाल्टी थी। एक जवान आग पर कुछ चलाता और उठती भाप के ऊपर झुककर चम्मच से चखता। एक सप्ताह में, जबसे त्रेत्याकोव इस रेजिमेण्ट में आया है उसे अपने प्लाटून के सभी जवानों के नाम याद नहीं हुए पर इस जवान को उसने पहचान लिया। आग की गर्मी से उसका चपटा, चिकना चेहरा चमक रहा था, आँखें मिची-मिची... कीतिन! नाम उसका अनायास ही होंठों पर आ गया। हाँ-हाँ, कीतिन ही तो है।

आग की लपटें चिकनी, धुआँ उड़ाती बाल्टी का स्पर्श कर रही थीं। चम्मच से एक बार फिर चखने के बाद कीतिन को कुछ शंका हुई और उसने सोचकर थोड़ा नमक और डालकर चला दिया। बाल्टी से मांस की घनी भाप उठी तो उसे भूख लगने लगी।

"कीतिन, तुम क्या पका रहे हो?"

उसने मुड़कर देखा :

"जाग गये, कामरेड लेफ्टिनेण्ट?"

"मैं कह रहा हूँ किसे पका रहे हो?"

"दौड़ रहा था चार पैरों पर... सींगोंवाला।"

"और वह बोलता कैसे था?"

कीतिन की आँखें सिकुड़कर झिर्रियाँ बन गयीं :

"मैं ऽऽ" वह बकरी की तरह बोला। "कामरेड लेफ्टिनेण्ट, लाइये गेटर आग के पास, गर्माकर पहन लीजियेगा।"

"वे धूप में सूख गये हैं।"

कालिख से ढकी उँगलियों से गेटरों को मसल-मसलकर त्रेत्याकोव बूट चढ़ाये और खड़ा हो गया। सारे जंगल में थककर चूर इन्फैंट्री सो रही थी। पीछे छूटे सैनिक अभी भी नींद में भटकते-से चले आ रहे थे। वे अपने लोगों को देखते ही वहीं जमीन पर ढह जाते। और बगल में थैला लटकाये नर्स कभी एक जवान के पास दौड़ती जाती कभी दूसरे के, वह अपने गालों से आँसू झाड़ती जा रही थी।

"एक ही थर्मामीटर था, वह भी चुरा लिया", वह अपरिचित लेफ्टिनेण्ट, त्रेत्याकोव से शिकायत कर रही थी, कोई और था भी नहीं जिससे वह शिकायत कर सकती। उसकी जवानी ढल चुकी थी, उम्र कोई तीस वर्ष की होगी, नाई के यहाँ घुँघराले करवाये गये उसके बालों में धूल भरी थी। उसका थर्मामीटर चुराने की किसको जरूरत पड़ी थी? टूट गया होगा या खो गया होगा, वह है कि उसे ढूँढ़े जा रही है। और रो इसलिए रही है कि एकदम अशक्त हो चुकी है, सारी रात पैदल चलती रही। सैनिक सो रहे हैं और वह जवानों के पास जा-जाकर उनसे बूट उतरवाती, थके पाँवों पर कोई दवा मलती, कुछ छिड़कती : छाला तो गोली नहीं है फिर भी वह लिटा देता है। युद्ध में औरतों पर त्रेत्याकोव को सदा तरस आता। विशेषकर इस जैसी बदसूरत, निढाल औरतों पर। इनको तो युद्ध के दौरान भी कहीं ज्यादा मुसीबतें उठानी पड़ती हैं।

उसे जंगल में भारी गोले से बना गड्ढा मिल गया जिसमें पानी भरा था। उसके चारों ओर नन्हे पेड़ लेट गये थे, उनमें से कुछ शायद जी भी सकते थे। किश्तीनुमा टोपी और ग्रेटकोट उतारकर वह घुटनों के बल बैठ गया। पानी के दर्पण पर सफेद बादल का एक टुकड़ा तैर रहा था, उसी में उसने अपनी छवि देखी; कोई जिप्सी जैसा काला व्यक्ति वहाँ से देख रहा था। बढ़ती दाढ़ी के कड़े बालों में भरी धूल से काले पड़ गये गाल; धँसी आँखों के चारों ओर काले घेरे, कपोलों की हड्डियों पर चकत्तेदार खुरदरी तनी हुई त्वचा—एक हफ्ते में ही वह इतना बदल गया कि खुद अपने को नहीं पहचान सका। उसने पानी पर गिरी सूखी पत्तियों को और मकड़ी जैसी पतली टाँगों पर कूदते कीड़े को एक तरफ हटाया। पानी दलदल जैसा कत्थई था पर जब उसने चुल्लू में भरकर उसे निकाला तो वह पारदर्शी, स्वच्छ और शीतल निकला। बहुत दिनों से उसने इस तरह हाथ-मुँह नहीं धोया था, उसने कन्धों से कमीज तक उतार दी। फिर कमीज के पल्ले से मुँह और गर्दन को पोंछा, कँघी किये बालों पर किश्तीनुमा टोपी पहन ली। जब वह अपनी वर्दी के खड़े कालर का बटन बन्द कर रहा था तो उसने और ताजगी महसूस की। सिर्फ फेफड़ों से धूल को खाँसकर न

निकाल पा रहा था—रात को उसने इतनी अधिक धूल निगल ली थी... इस बीच में जंगल के ऊपर ऊँचाई पर खड़खड़ाहट और चीख की आवाजें आती रहीं : भारी सोवियत तोपखाना अपनी छिपी पोजीशनों से निरन्तर गोले बरसा रहा था और उसके धमाकों से पेड़ों के पत्ते झड़ रहे थे। जंगल से बाहर निकलकर वह टूटी रेतीली खाई में गिरा और उसमें लेटे एक पैदल सैनिक के पैर को कुचलते-कुचलते बचा। वह पूरी वर्दी पहने, पेटी कसे ऐसे लेटा था, मानो सो रहा हो। पर उसका रक्तविहीन, गैररूसी चेहरा पीला पड़ गया था, अधमिची आँख धुँधली चमक रही थी। मशीन से मुण्डा उसका काला गोल सिर मिट्टी से ढका था : वह पहले ही मृत था और दूसरा गोला उसे दफनाने आया था।

त्रेत्याकोव खाई के मोड़ के पीछे चला गया। यहाँ भी खाई के आगे, पीछे और स्वयं खाई में ताजे गड्ढों की भरमार थी, प्रचंड गोलाबारी हुई थी। इधर आते समय उन्हें इसी की गरज सुनाई दे रही थी। रेत की मेंड़ पर कुहनियाँ टिकाकर वह सामने के मैदान का निरीक्षण कर रहा था। घाटी की ओर उसका ढलान था, वहाँ मशीनगनें ठक-ठक कर रही थीं, गौशाला की गीली छत शीशे की तरह चमक रही थी, टीले की नीली-सी चोटी को अपने पीछे छिपाकर सीधे तने वाले पहाड़ी पीपल के पेड़ प्रहरी की तरह खड़े थे। और सूर्य की ओर मुँह मोड़े सूरजमुखी का खेत सुन्दर पीली आभा में चमक रहा था।

वह दूरबीन से देख रहा था, और सोच रहा था कि शाम के झुटपुटे में जब सूरज टीले के पीछे डूब जायेगा तो वह यहाँ से किस प्रकार इन्फैंट्री तक लाइन बिछाये, अगर वहाँ जाने के आदेश मिला तो तार को किस जगह से ले जाना होगा ताकि कहीं गोले से ये तार कट न जायें। जब वह वापस लौट रहा था तो उसे एक और मृत सैनिक दिखाई पड़ा। वह खाई के तल में पूरा खिसककर बैठा हुआ था। छाती पर लिपटा ग्रेटकोट खून के ताजे, गाढ़े धब्बों से ढका था, पर उसका चेहरा था ही नहीं। खाई की रेतीली मेंड़ पर बिखरे भेजे के लाल-सलेटी चिथड़े अभी भी मानो काँप रहे थे। युद्ध में त्रेत्याकोव अनेकों मौतों और मृतकों को देख चुका था पर इस जैसे दृश्य को पहली बार देख रहा था। यह वह दृश्य था जिसे आदमी को नहीं देखना चाहिए। और वहाँ आगे, चीड़ के तनों के पीछे फैला स्वर्णिम विस्तार अनजिये जीवन की तरह अपनी ओर खींच रहा था।

जब वह लौटा तो उसका प्लाटून घास पर बैठा नाश्ता कर रहा था। बीच में तामचीनी की चिलमची रखी थी और उसकी ओर सिर किये जवान लेटे थे, वे बारी-बारी से अपनी चम्मचें भर रहे थे और हवा एक-साथ उन सबके कटे बालोंवाले सिरों को सहला रही थी। उपप्लाटून-कमाण्डर चबारोव चिलमची के पास पालथी मारकर, सम्मान की मुद्रा में बैठा था। लेफ्टिनेण्ट को देखकर उसने टन् से चम्मच

बजाया, हड़बड़ाकर लेटे जवान उठकर बैठने लगे।

"खाइये, खाइये," त्रेत्याकोव ने कहा। पर चबारोव ने सख्ती से नजर दौड़ायी और कीतिन ने गर्म राख में विशेष रूप से रखा गया डिब्बा लेफ्टिनेण्ट को थमा दिया। वे सब साथ, अपने ही थे और वह अभी अपना न बना था। बगल में ग्रेटकोट बिछाकर त्रेत्याकोव लेट गया और वह भी खाने लगा। बकरे को शोरबा गाढ़ा बना था और गोश्त मीठा व रसदार।

"क्यों, क्या रूमाल है आपका, कामरेड लेफ्टिनेण्ट," उसकी ओर सबका पेट भरनेवाली गृहणी जैसी प्यारभरी आँखों से देखते हुए कीतिन ने पूछा, "हमारे मोर्चे पर तो मजे से लड़ा भी जा सकता है?"

और सब बोलने लगे कि गर्मी तो सर्दी है नहीं, गर्मियों में तो आराम से लड़ाई की जा सकती है, पाले या वसन्त की पिघलती बर्फ में तो यह बात नहीं। खाना खाकर वे जला हँसमुख हो गये थे। तोपची कहीं अपनी तोपों के साथ आ रहे होंगे या उनके लिए खन्दकें खोद रहे होंगे, और वे सोने के अलावा नाश्ता भी चुके हैं—यही है निर्देशन प्लाटून जिसमें गुप्तचर, सिगनलमैन और वायरलैस आपरेटर शामिल होते हैं। वह युद्ध में शुरू से ही निर्देशन प्लाटून में रहा, उसको वह इसलिए पसन्द था कि यहाँ कुछ स्वच्छंद लगता है। मानव खतरे के जितना पास होता है उसका मन भी उतना ही स्वच्छंद अनुभव करता है।

वह इन जीवित हँसमुख लोगों को मौत के पास देख रहा था। डिब्बे के ढक्कन में रखे नमक में मांस की बोटियाँ डुबो-डुबोकर खाता हुआ वह उन्हें उत्तर-पश्चिमी मोर्चे की गीली और भूखी जिन्दगी के बारे में बता रहा था और उन्हें यह सुनकर आनन्द आ रहा था। खाना खाकर उसने सिगरेट सुलगायी और चबारोव से कहा कि वह रात को उसके साथ जाने के लिए दो लोगों को नियुक्त कर दे, एक गुप्तचर हो और दूसरा सिगनलमैन। उसने कीतिन और फिर उसी सुयारोव को नियुक्त कर दिया जिसे मालूम था—क्यों। यह सब हो रहा था। जंगल के ऊपर सूरज उठता जा रहा था, परन्तु चेतना में बिल्कुल भिन्न प्रक्रिया चल रही थी। उसकी आँखों के सामने गोलों से छिदी रेतीली खाई ही घूम रही थी। क्या सचमुच महान् विभूतियाँ ही बिल्कुल लुप्त नहीं होतीं? क्या सचमुच उन्हीं के भाग्य में मृत्यु के बाद भी जीवित लोगों के बीच रहना लिखा होता है? और आम लोगों के बाद, उन जैसे सभी लोगों के बाद जो यहां जंगल में बैठे हैं—और जो इनसे पहले यहीं घास पर बैठे थे—क्या सचमुच ही उनके बाद, उन सबके बाद कुछ नहीं बचेगा? जीवित थे, दफना दिया गया और मानो तुम पैदा ही नहीं हुए थे, मानो सूर्य का प्रकाश तुम पर कभी पड़ा ही न था, मानो इस शाश्वत नील अम्बर के तले तुम कभी रहे ही नहीं जहाँ इस समय अत्याधिक ऊँचाई पर दहाड़ता हुआ विमान उड़ा जा रहा था। क्या सचमुच अनकही

बात और छिपा दर्द भी—सब कुछ बिना कोई चिन्ह छोड़े लुप्त हो जाता है? या फिर भी कुछ-न-कुछ रह जाता है, अदृश्य रूप से मँडराता है और वह घड़ी आयेगी जब वह किसी की आत्मा में प्रतिध्वनित होगा? और कौन महानविभूतियों सामान्यजनों का पता लगायेगा, जब उन्हें अभी जीने का मौका ही न मिला? हो सकता है कि सबसे महान—भावी पुश्किन और तोल्सतोय—इन वर्षों के दौरान लड़ते हुए वीरगति पा गये और वे हमेशा के लिये खामोश हो गये, अनकहे और अव्यक्त रह गये। क्या सचमुच ही इस रिक्तता को भी जीवन अनुभव न करेगा?

अध्याय 6

तोपखाने की तैयारी-गोलाबारी शुरू होने से आधा घण्टा पहले त्रेत्याकोव अपनी खन्दक में कूद गया। कीतिन अपने ग्रेटकोट का कॉलर उठाये मिट्टी की दीवार से गुद्दी टिकाकर ऊँघ रहा था, उसने आँखें आधी खोलीं ओर फिर बन्द कर लीं। सुयारोव उकड़ूँ बैठा बेताबी से कश खींच रहा था, और घुटनों के बीच पीक उगल रहा था। लेफ्टिनेण्ट को पहचानकर उसने आदरवश अपने सिर के ऊपर लटके तम्बाकू के धुएँ के बादल को हाथ से हिला दिया।

"वोदका पियेंगे, कामरेड लेफ्टिनेण्ट?" कीतिन ने पूछा। प्रातः के झुटपुटे में सिमटी आँखोंवाला चपटा चेहरा बिल्कुल मंगोल जैसा लग रहा था। स्वयं वह ताम्बोव के पास के किसी के गाँव का था। देखो कहाँ तक उसके पूर्वज उसके दूसरे पूर्वज को मारने पहुँच गये थे। पर उसमें ये दोनों खून सुलह से रहते हैं और आपस में नहीं लड़ते।

"कहाँ से आयी वोदका तुम्हारा पास?"

"यहाँ इन्फैंट्री का सार्जेंट-मेजर जो है न..." कीतिन ने अपना सारा हलक दिखाकर उबासी ली, उसकी आँखें नम थीं, शायद सचमुच ही सोया हुआ था। "इन्फैंट्रीवाले हताहतों की सूचना अगले दिन भेजते हैं। पहले वोदका का नियमित हिस्सा पा लेते हैं फिर मारे गये लोगों की सूचना देते हैं। कल, पता है, उनके पास ढेरों वोद्का होगी!..."

त्रेत्याकोव घड़ी देखकर बोला :

"फिलहाल आज की बात कर, कल की नहीं। इधर ला, 100 ग्राम पी ही लूँ!"

उसने ढक्कन से पी ली, पर वोद्का उसे हल्की-सी लगी, मानो उसने पानी पिया हो। सिर्फ छाती में कुछ गर्मी-सी आयी। वह खड़ा हुआ। वह बूट की नोक से खन्दक की दीवार से मिट्टी झाड़ रहा था। ये रह वे अन्तिम क्षण जिन्हें वापस नहीं लौटाया जा सकता। अँधेरे में इन्फैंट्री को नाश्ता बाँटा जा रहा था, और प्रत्येक, हालाँकि इसके

बारे में कुछ कह नहीं रहा था पर अपने डिब्बे को खुरच-खुरचकर खाली करते हुए यह सोच रहा था : "हो सकता यह आखिरी बार हो"... इस विचार के साथ ही साथ चम्मच को पोंछकर गेटरों में खोंस कर छिपा रहा था : "हो सकता है कि अब फिर कभी उसे इसकी आवश्यकता ही न पड़े।" इस कारण कि ये विचार मन को जकड़े हुए हैं, सब कुछ वैसा नहीं लगता जैसा हमेशा होता है। सूरज भी उगने में देर लगाता है और सन्नाटा भी कँपकँपी पैदा करनेवाला होता है। क्या सचमुच ही जर्मन महसूस नहीं कर रहे हैं? या छिपकर बैठे हैं, प्रतीक्षा कर रहे हैं? और अब इसे नहीं रोका जा सकता और कुछ भी नहीं बदला जा सकता। मोर्चे पर प्रारम्भिक महीनों के दौरान उसे अपने पर शर्म आती, यह सोचकर कि वही अकेला ऐसा है। ऐसी घड़ियों में सभी ऐसे होते हैं, हरेक अकेला स्वयं उनको भुगतता है : "आखिर दूसरा जीवन तो होगा नहीं।"

और इन्हीं घड़ियों में जब मानो कुछ नहीं हो रहा हो, केवल प्रतीक्षा ही हो, पर वह अपनी अन्तिम सीमा की ओर, विस्फोट की ओर बढ़ रहा है, उसे पीछे नहीं मोड़ा जा सकता, और न तुम, न ही कोई और, उसे रोकने में समर्थ हैं, ऐसी ही घड़ियों में इतिहास की अश्रव्य गति की अनुभूति होती है। अचानक स्पष्ट अनुभूति होती है कि विभिन्न लोगों के कोटि-कोटि प्रयासों से बना यह पर्वत हिलकर लुढ़कने लगा, किसी की इच्छा से नहीं बल्कि स्वयं, अपनी गति पाकर, इसीलिए उसे नहीं रोका जा सकता।

इस समय उसकी रग-रग तनाव से खिंची हुई थी, पर सुयारोव, जो खन्दक की तली में बैठा चकमक से आग जला रहा था, उसे देखकर सहम गया, लेफ्टिनेण्ट का चेहरा इतना शान्त था कि उस पर उपेक्षा का भाव छाया हुआ था : खन्दक की मेंड़ पर पीठ टिकाये वह अनमने में बूट की नोक से मिट्टी झाड़ रहा था, मानो नींद को भगाने के लिए यह कर रहा हो।

इस रात का बाकी समय त्रेत्याकोव ने उस कम्पनी-कमाण्डर की खोह में बिताया जिस का उसे अपने तोपखाने का सहयोग देना था। वे सो नहीं रहे थे। सूती, बनियान के स्थान पर पहनी जानेवाली कमीज में बैठा, गन्दे-से, गिंजे तौलिये से गर्दन पोंछता कम्पनी-कमाण्डर चाय पी रहा था और बता रहा था कि कैसे वह अस्पताल में रहा जो यहाँ से बहुत दूर सीजरान में था, कितनी भली औरत वहाँ मेडिकल-अफसर थी।

खोह की नीची, बल्लिदार छत की छाया में उसकी आँखें विनम्रता से चमक रही थीं। वह उस्तरा फिरे ऊपरी होंठ से पसीना चाट रहा था, गर्दन पूरी भीगी हुई थी, नम झुर्रियों में पसीना भरता जा रहा था, और हँसली के ऊपर, जहाँ भयंकर घाव का निशान चमकीली त्वचा से ढका था, नब्ज धड़क रही थी, वह एकदम अरक्षित लग

रही थी और कभी-कभी फूल-सी जाती थी।

त्रेत्याकोव उसकी बातें सुन रहा था, स्वयं भी बोल रहा था पर अचानक बड़ा अजीब-सा लगता मानो यह सब उसके साथ नहीं घट रहा हो : वे जमीन के नीचे बैठे हैं, चाय पी रहे हैं, उस नियत घड़ी की प्रतीक्षा कर रहे हैं। उस तरफ जर्मनों के यहाँ भी, शायद, वे सो नहीं रहे होंगे, प्रतीक्षा कर रहे होंगे और फिर जोश में आकर सब के सब खन्दकों से बाहर कूद पड़ेंगे और एक दूसरे को मारने के लिए दौड़ने लगेंगे... एक समय ऐसा भी आयेगा जब लोगों को यह सब अजीब लगेगा।

उसने लगातार तीन मग चाय पी डाली जिनमें से देगची में उबाले गये पानी के कारण चर्बी की गन्ध आ रही थी। बातें करते हुए संयोग से पता चला कि यह वही रायफल्स रेजिमेण्ट है जिसमें उसका सौतेला पिता सेवारत था। पर अब उसका नम्बर बदल गया है क्योंकि सन् बयालीस में जब यह रेजिमेण्ट घिर गयी थी तो उसका ध्वज वहीं छूट गया, और उसको विघटित करके दूसरा नाम दिया गया। माँ के पास उनकी रेजिमेण्ट के ही एक सैनिक का पत्र था : उसने अपनी आँखों से देखा था कि कैसे उसका सौतला बाप मारा गया था जब वे घेरे को तोड़कर निकल रहे थे और उसने यह सब माँ को लिख दिया था। पर फिर भी आशा बनी हुई थी—आखिर युद्ध के समय इतनी अधिक असम्भव बातें हुई थीं। और, भाग्य को धोखा देते हुए, इस अन्तिम आशा के भी टूट जाने के भय से त्रेत्याकोव ने सावधानी से पूछा :

"मेरा चचा आपकी रेजिमेन्ट में था। सैपर प्लाटून का कमाण्डर जूनियर लेफ्टिनेण्ट बेजाइत्स... खार्कोव के पास... शायद नहीं जानते?"

स्वत : उसके मुँह से "चचा" शब्द निकल गया, मानो अगर वह यह जवाब भी दे कि "मारा गया" तो प्रत्यक्षत : यह सूचना उसके सौतेले बाप के बारे में न होगी।

"बेजाइत्स... नाम कुछ ऐसा है...तुम, पता है किससे पूछो : पोसोखिन, बटालियन का एक्जेक्यूटिव अफसर, सीनियर ए. डी. सी. है। बेजाइत्स... उसे याद होना चाहिए। मैं खार्कोव के क्षेत्र में नहीं था, मैं तो अस्पताल से छुट्टी के बाद ही इस रेजिमेण्ट में आया हूँ।"

सन् बयालीस की मई में जब खार्कोव के पास सेना की चढ़ाई शुरू हुई, उसने स्ताराया रूसा के पास से अपने सौतेले बाप के नाम किशोर उत्साह से भरा एक पत्र भेजा था जिसमें उसने लिखा था कि उसे ईर्ष्या हो रही है कि वे भी अपने यहाँ शीघ्र ही... पर तब तक खार्कोव के पास घेरा पूरा कस चुका था।

माँ का चेहरा दीन-भाव से फड़का जब उसने स्टेशन पर उससे अनुरोध किया—"तू तो वहाँ, दक्षिण-पश्चिमी मोर्चे पर होगा... उन्हीं स्थानों पर... शायद, इगोर लेओनीदोविच के बारे में कुछ तो पता चल जाये...

वह उसके सामने सौतेले बाप का पूरा नाम लेती थी और अब भी दूसरे नाम से

पुकारने में शर्मा रही थी।

पहली बार उसके मन में सौतेले बाप के प्रति कोई भाव तब उमड़ा जब युद्ध शुरू हुआ और बेजाइत्स को फौजी बुलावा आ गया। माँ और ल्यालका के साथ वे तीनों भरती केन्द्र में गये जो बड़ी सड़क पर ल्यालका के स्कूल में खोला गया था। कठबाप उनकी प्रतीक्षा कर रहा था, वह स्कूली फाटक के खम्भे से पीठ टिकाकर फुटपाथ पर बैठा था। रूपांकन इंजीनियर जिसे यहाँ अनेकों लोग जानते थे, अपने ही शहर में परायों की तरह जमीन पर नुकीले घुटनों पर हाथ टिकाये बैठा था। उनको आते देखकर वह खड़ा हो गया, उसने उदासीनतावश पीछे से पैंट झाड़ी और माँ को बाँहों में भर लिया। वह लम्बा और दुबला था। वह सूती फौजी कमीज पहने था और सिर पर किश्तीनुमा टोपी। माँ का चेहरा उसकी छाती पर लगे बटनों पर टिका था, माँ के सिर को उसकी उस्तरा फिरी ठोड़ी छू रही थी, वह सामने देखते हुए माँ के बालों को सहला रहा था। और उसकी दृष्टि में ऐसा भाव था, मानो वहाँ जिस ओर वह देख रहा था, उसे माँ का पूरा भविष्य दिखाई पड़ रहा था।

इस बात से वह आश्चर्यचकित हुआ था कि काले गेटरों में लिपटे उसके पैर कितने पतले थे। और इन्हीं पतले पैरों में भारी फौजी बूट पहने वह युद्ध मोर्चे पर चला गया। जितने साल वे साथ रहे, वह कठबाप की ओर एक किरायेदार की तरह कोई ध्यान न देता, पर अब माँ के लिए नहीं, बल्कि उसके लिए पहली बार दिल में कसक उठी।

इस बार माँ, जब उसे प्रशिक्षण विद्यालय के बाद देखा, बहुत बूढ़ी और चपटी-चपटी लगने लगी थी। गर्दन पर नसें उभर आयी थीं। ल्यालका भी दो साल में इतनी बदल गयी थी कि उसे पहचानना मुश्किल था। युद्धकाल है, खाने को पता नहीं क्या नसीब होता है--फिर भी फूल की तरह खिल गयी। जब मोर्चे पर जा रहा था। तब देखने को कुछ था भी नहीं : घुटने और दुबली पीठ पर लटकी दो चुटियाँ। और अब की बार जब उसके साथ चल रही थी तो फौजी अफसर मुड़-मुड़कर देख रहे थे।

त्रेत्याकोव ने घड़ी देखी, जल्दी से तम्बाकू की थैली निकाली। पर समझ गया कि सिगरेट बनाने का वक्त नहीं मिलेगा।

"लाओ मुझे, आखिरी कश लेने दो!"

उसने सुयारोव से सिगरेट ले ली, हवा की तरह धुएँ को गहरा खींचा, पूरे साँस के साथ उसने दो-तीन लम्बे-लम्बे कश खींचे और खन्दक में सीधा खड़ा हो गया। जब उसने पीछे मुड़कर देखा तो सूरज अभी निकला न था, परन्तु अपने चेहरे पर उसने सूरज की रोशनी-सी महसूस की। और यह रोशनी काँपी, हवा में हिली फिर गरज के साथ चमक हुई। सिर के ऊपर की हवा को महसूस किया जा सकता था :

वहाँ सरसराहट के साथ ऊपर-नीचे कई स्तरों पर गोले उड़ रहे थे।

वे तीनों खन्दक में खड़े, जर्मनों की ओर देख रहे थे। सामने सूरजमुखी के खेत से मिट्टी उड़ी, भू-सखलन जैसी गरज से सब कुछ थर-थर काँप गया, अग्रिम मोर्चे के ऊपर धूल और धुएँ की दीवार उठने लगी। और डिवीजन की तोपों की बैटरी जो उनकी खन्दक के पीछे तैनात थी, सबसे अधिक चीखते हुए कान फाड़ रही थी।

अचानक कुछ झन्न से सिरों के ऊपर से गुजरा। कुछ समझने से पहले ही वे झुक गये।

"जिन्दा हूँ," इस सुखद अनुभूति के साथ त्रेत्याकोव चिल्लाया। "लाइन चैक कर!"

फिर चीत्कार सुनाई पड़ी। बैटरी पर जवाबी मार की जा रही थी। पर वे कहाँ से हमला कर रहे थे—यह दिखाई नहीं पड़ रहा था : सामने धुआँ ही धुआँ उड़ रहा था। और इस धुएँ में चीखते हुए सोवियत प्रहारक विमान तेजी से घुसकर काली छायाओं की तरह उड़ रहे थे : उनके डैनों के आगे चमक उठ रही थी। लगता था कि वहाँ आगे वे खेत की ओर तेजी से नीचे आ रहे थे। वे डेयरी-फार्म की छतों के ऊपर पल भर के लिए दिखाई पड़े—छत से उनकी ओर कई विस्फोट गोले उड़े।

अभी गरज और विनाश हो ही रहा था पर सबने महसूस किया कि अग्रिम मोर्चे पर मानो सन्नाटा छा गया हो। यह रहा वह क्षण, यह रही वह गुरुत्वाकर्षण शक्ति, जब इन्फैंट्री धावा बोलने के लिए खड़ी होती है, अपने को जमीन से अलग करती है।

"हुर्रा ऽऽ!" विलापभरी पुकार उड़कर आयी। और फौरन सब मशीनगनों की ठक-ठक और मशीनगनों की लम्बी बाढ़ें दगने लगीं।

खन्दकों से उमड़कर, मानो दर्द से दुहरे होकर पैदल सैनिक विस्फोटों से उड़ती धूल और धुएँ में छिपते हुए दौड़ रहे हों।

जब वे तीनों अपने पीछे-पीछे मैदान में टेलीफोन का तार खींचते खाई में कूदे तो इन्फैंट्री आगे सूरजमुखी के पौधों के बीच नजर आ रही थी। और हर बार की तरह जर्मन खाई में जाकर आश्चर्य हुआ : हमारे तोपखाने ने खूब गोले बरसाये पर मरे जर्मन लगभग नहीं के बराबर हैं। क्या वे उन्हें अपने साथ घसीटकर ले जाते हैं? सिर्फ उलटी मशीनगन के पास एक मरा हुआ गनर पड़ा था।

अगले क्षण वे तीनों खाई की तली में हाथों से, जो कुछ मिला उससे सिर ढककर लेट गये। सुयारोव तार का गोल बंडल सिर पर रखकर रेंगता हुआ एक तरफ चला गया। हमला समाप्त होने पर त्रेत्याकोव थोड़ा उठा। गर्म कपड़े, लोहे को टोप और चश्मा पहने जर्मन गनर वैसे ही खाई में चित्त पड़ा था जैसे कपड़ों में लिपटी कोई गुड़िया। चश्मे के धूल से सने शीशे धुँधले से चमक रहे थे, वे साबुत थे, दरार तक

न पड़ी थी उनमें; उनके बीच में से मृतक की सफेद नाक झाँक रही थी।

कीतिन थूकता हुआ बैठ गया—मुँह और नाक में मिट्टी भर गयी थी। बारूद की दमघोंटू बू आ रही थी। जमीन की सतह पर धुआँ तैर रहा था। एक-एक करके वे खाई के बाहर निकल आये। खेत में बचे सूरजमुखी के फूल धुएँ में पीले-पीले चमक रहे थे, वे उनकी ओर मुँह किये हुए थे : वहाँ पीछे से, रणभूमि के ऊपर सूर्य उदित हो रहा था।

पीठ के बल लेटे-लेटे त्रेत्याकोव ने एक सूरजमुखी के फूल को झुकाया। कारतूसों की तरह पके बीजों से भरा वह पूरा झुक गया। उसने सूखी पँखड़ियों को हाथ से झाड़कर किनारा तोड़ लिया।

"चलो!"

मुँह में मुट्ठी भर बीज डालकर मुलायम, अभी कड़े न हुए छिलकों को थूकता हुआ वह खेत में दौड़ पड़ा।

सूरजमुखी के खेत और जंगल की पट्टी के बीच बनी इस छोटी-सी खन्दक को उसने दूर से ही देख लिया था। आगे सूखी घास में इन्फैंट्री रेंग रही थी। वे वहाँ कर क्या रहे हैं? चढ़ाई गाँव तक पहुँच गयी है और ये यहाँ रेंगते फिर रहे हैं। खन्दक थी बहुत बढ़िया, वहाँ से सारा मैदान दिखाई पड़ता था। त्रेत्याकोव ने जवानों को हाथ हिलाकर आदेश दिया :

"एक-एक करके—मेरे पीछे आओ!"

और सिर को कन्धों में छिपाकर दौड़ पड़ा। कई गोलियाँ सिर के ऊपर से सनसनाती हुई गुजर गयीं। खन्दक में कूदा और ऊपर फौरन मशीनगन की बाढ़ दगी। वह बाहर झाँका। घास में टेढ़ा-मेढ़ा रेंगता हुआ कीतिन आ रहा था। सिर को उसने सब-मशीनगन के कुंदे से छिपा रखा था, उसकी पीठ पर रखा तार का कुण्डल टैंक के टरेट जैसा लग रहा था।

एक-एक करके वे खन्दक में लुढ़क गये। उनके गालों पर जमी काली मिट्टी में पसीने की धाराएँ बह रही थीं। उन्होंने फौरन टेलीफोन जोड़ना शुरू कर दिया।

केवल अभी त्रेत्याकोव की समझ में आया कि इन्फैंट्री घास में इधर-उधर क्यों रेंग रही थी : मशीनगन ने उन्हें लेटने पर मजबूर कर दिया। वह उन्हें आगे नहीं बढ़ने दे रही थी : कोई सिर उठता तो जंगल से मशीनगन की लम्बी बाढ़ दगती और हिलना-डुलना बन्द हो जाता।

"आफताब, आफताब, आफताब!" सुयारोव डरी-डरी आवाज में बैटरी को पुकार रहा था, पर सुनाई पड़ रहा था : "आफत, आफत, आफत..." इस खन्दक में नहीं घुसना चाहिए था। मैदान दिखाई पड़ता है, पर फायदा क्या? मशीनगन तक को नष्ट नहीं कर सकता। यहाँ से दो किलोमीटर की दूरी पर खड़ी भारी तोपों की मार इस

फासले पर इतनी चौड़ी है कि पहले वह अपने ही सैनिकों पर पड़ेगी। "आफताब?! मुझे सुन रहे हो? यह मैं, बबूल हूँ! कामरेड लेफ्टिनेण्ट!" सुयारोव नीचे से चोंगा दे रहा था, उसकी गीली पलकें झपक रही थीं, कन्धे से वह अपने गाल को रगड़ रहा था जिससे वह और गन्दा होता जा रहा था। उसे खुशी थी कि लाइन सही-सलामत है इसलिए उसे गोलियों की बौछार में न जाना पड़ेगा।

चोंगे से पोवीसेन्को की फटी-फटी आवाज सुनाई दी। और तत्क्षण बटालियन कमाण्डर ने रिसीवर ले लिया : वह बैटरी की निरीक्षण चौकी पर बैठा था। सुनाई दे रहा था कि वह कैसे पोवीसेन्को से पूछ रहा था : "तुमने वहाँ किसको भेज रखा है? नयावाला है? क्या नाम है?..." त्रेत्याकोव ने भी बटालियन कमाण्डर को अभी आँखों से नहीं देखा था, सिर्फ उसकी आवाज सुनी थी।

"त्रेत्याकोव! तुम कहाँ हो? स्थिति की रिपोर्ट दो! मुझसे झूठ मत बोलना। समझे? झूठ मत बोलना!"

"कामरेड थर्ड, मैं यहाँ मैदान में हूँ। जंगल से कुछ बायें। यहाँ इन्फैंट्री लेट गयी है..."

इस समय खन्दक के सामने हरी किश्तीनुमा टोपी पहने प्लाटून-कमाण्डर रेंगता हुआ कभी एक सैनिक के पास जाता तो कभी दूसरे के और सैपरों के छोटे-से बेलचे से हरेक का कूल्हा थपथपाकर आदेश दे रहा था :

"पेट के बल—आगे बढ़!"

और जितनी देर में दूसरे के पास रेंगकर जाता—"पेट के बल आगे बढ़!"—इतने में पहलेवाला जड़ हो जाता। उसकी हरी किश्तीनुमा टोपी घास में से कलगी की तरह बाहर निकली हुई थी। "कम से कम टोपी तो उतार लेता..." त्रेत्याकोव के मन में विचार कौंधा, और स्वयं वह बटालियन कमाण्डर को रिपोर्ट दे रहा था। खन्दक की तली में बैठा कीतिन दम लेने के बाद अब सूरजमुखी के बीज चबा रहा था, उसके निचले होंठ से बीजों के छिलके जंजीर की तरह लटके हुए थे।

मोर्टार की चीख सुनाई पड़ी, सब एक-साथ नीचे झुक गये। ऊपर मोर्टार के कई गोले फटे। त्रेत्याकोव ने सिकुड़कर रिसीवर का बटन भी दबा लिया और उसे छोड़ना भूल गया।

"तुम्हारे यहाँ क्या हो रहो है?" बटालियन कमाण्डर चिल्ला रहा था। उसे वहाँ अपने रिसीवर में यहाँ होनेवाले धमाके सुनाई पड़ रहे थे। "तुम इस वक्त कहाँ हो?"

"मैं कह तो रहा हूँ, खेत में।"

"किस खेत में? कौनसा है वह खेत?"

"यहाँ मशीनगन रोके हुए है..."

"तुम लड़ने की सोच रहे हो या नहीं। मशीनगन की तुम्हें क्या पड़ी है?"

"वह इन्फैंट्री को नहीं..."

"मैं तुम से पूछ रहा हूँ : तुम लड़ने का इरादा रखते हो या नहीं?"

अल्प चीत्कार सुनाई पड़ा। कहीं पास से ही मार जारी है : चीत्कार-विस्फोट! चीत्कार-विस्फोट! परन्तु दगने की आवाज नहीं सुनाई दे रही थी। पर बैटरी कहीं पास में ही थी। उसने सिर बाहर निकाला और मुश्किल से ही वापस बैठ पाया : गोला इतना नीचे आ रहा था, लगता था कि सिर से टकरा जायेगा। उसका प्रक्षेपपथ लगभग बिल्कुल सीधा था। उसने फिर उठकर बाहर देखा। आवाज से लगता था कि कहीं गाँव के पीछे से मार कर रहा है।

खेत में ताजे गढ्ढे के पास से रेंगकर सैनिक हट रहे थे। सिर्फ एक वहाँ बिना हिले-डुले औंधा पड़ा था। अगर उसे, इस बैटरी को नष्ट न किया गया तो वह यहाँ सारी इन्फैंट्री को एक-एक करके मार डालेगी। मशीनगन को तो ये स्वयं ही नष्ट कर देंगे, पर मोर्टार बैटरी... और यहाँ से निकलना भी तो कठिन है। और अगर गोशाला की छत पर चढ़ा जा सके...

एक कान से वह मोर्टार गोले की उड़ान को टोह रहा था और दूसरे में बटालियन कमाण्डर की गर्मागर्म आवाज गूँज रही थी। पर त्रेत्याकोव किस पर चिल्लाये, आगे–सिर्फ इन्फैंट्री ही है।

"गोशालाओं की छतें देख रहे हैं, कामरेड थर्ड?"

क्षण भर के लिए ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की साँस नीचे रह गयी : लगा कि वह आ रहा है उड़ता हुआ, तुम्हारे हिस्से का... ऐसा धमाका हुआ कि खन्दक हिल उठी।

"गोशालाओं की छतें दिखाई दे रही हैं आपको?" कान बन्द होन के कारण त्रेत्याकोव चिल्ला रहा था। हिलकर उसने अपने ऊपर से मिट्टी झाड़ते हुए कहा : "मैं वहाँ रहूँगा।"

गहराई को चीरता-सी अस्पष्ट आवाज सुनाई दे रही थी :

"वहाँ अपने सैनिक हैं कि जर्मन? वहाँ कौन है?"

शैतान जाने कौन है वहाँ! हमारी इन्फैंट्री नजर आयी थी। अगर छत पर चढ़ा जाये तो वहाँ से सब कुछ दिखाई पड़ना चाहिए।

"वहाँ पहुँचकर रिपोर्ट दूँगा!"

"तुम देखना..."

पर क्या देखना–नहीं समझ पाया : कानों में झनझनाहट भर गयी। सिर हिलाया तो झनझनाहट और भी तीव्र हो गयी। उसने चिल्लाकर सुयारोव से कहा कि वह कनेक्शन काट दे। यहाँ बैठने का कोई काम नहीं। पता नहीं क्यों यहाँ घुस गया, दूसरों को भी अपने पीछे घसीट लाया... वे बैठे हैं, और इन्फैंट्री गोलाबारी के बीच

खेत में पड़ी हुई है। इस तरह तो वे भी यहाँ बेकार में मारे जायेंगे। पर जब इस खन्दक से बाहर निकलना है, तो वह कितनी सुरक्षित लग रही है!

"कीतिन! चलो पहले!"

पहले का विशेष रूप से मन नहीं करता। पर पहले का मशीनगनर को भी इन्तजार नहीं होता, वह बाद में तैयार होकर दूसरों की प्रतीक्षा करता है।

"तार का कुण्डल, टेलीफोन उठाओ–और बढ़ जाओ गोली की तरह सूरजमुखी में!"

कीतिन ने होंठों से छिलके झाड़े, घुटनों से हथेलियाँ पोंछीं और गम्भीर हो गया। सब-मशीनगन को पीठ पर डालकर उसने मिची-मिची आँखों से दूरी को नापा।

"मैं चला।" कहकर वह खन्दक की मेंड़ पर पेट के बल लेट गया, उसने उसके पार पैर डाले और उछलकर दौड़ पड़ा, उसके ग्रेटकोट के पल्ले घास पर बुहारी लगा रहे थे। यह सब दुश्मन देख रहे थे। दूर से ही कीतिन ने भारी कुण्डल को आगे फेंक दिया और उसके पीछे-पीछे सूरजमुखी में गोता लगा गया। जब मशीनगन चली तो सिर्फ फूल ही उसका निशान दिखाते हुए हिल रहे थे।

"सुयारोव! तुम चलो।"

वह संकेन्द्रित होकर रेती के टुकड़े की मदद से चकमक से आग जलाने की कोशिश कर रहा था। जल्दी थी। उसने सिगरेट सुलगायी। कई बार बेसब्री से कश खींचे। सिगरेट उँगलियों में काँप रही थी, और वह उसे चूसे जा रहा था।

"तेरा इन्तजार करूँ क्या, जब तक तू जी भर पी न लेगा?"

"अभी, कामरेड लेफ्टिनेण्ट, अभी..."

मुँह के पास हाथ हिल रहे हैं, अनामिका का ठूँठ फड़क रहा है।

"और कितनी देर लगेगी?"

"अभी कामरेड लेफ्टिनेण्ट..."

उसका चेहरा उतरा हुआ था, सारा पसीने से ढका था, मानो उस पर पानी डाला गया हो। वह अचानक, बैठे-बैठे कोहनी से मुँह ढककर पीछे सरकने लगा।

"ही ऽऽ उ ऽऽ!" खेत के पार से उनकी ओर चीत्कार खिंची आ रही थी–"धम! धाँय! धम!"

"तुम जाओगे या नहीं? जाओगे?"

और बूटों से उसे जमीन से उठा रहा था पर वह पीठ के बल लेटा हुआ था।

"जायेगा? जायेगा?"

सुयारोव विस्मय से आहें भर रहा था, उसके अन्तः स्थल में कराह उठ रही थी। ऊपर फिर गोला फटा। और वे यहाँ खन्दक में भरे धुएँ में कश-मकश कर रहे थे। त्रेत्याकोव ने आपे से बाहर होकर उसके ग्रेटकोट के गरेबान को पकड़ा और उसे

जमीन से उठाकर अपनी ओर खींचा :

"जीना चाहता है?"

और उसे हिलाने, झकझोरने लगा। आँखों के सामने एकदम नजदीक—पसीने से तर पलकें और टिमटिमाती आँखें काँपती जा रही थीं।

"जीने की ख्वाहिश बहुत है? है न!"

उसे अपने में कँपकँपी और मीठी-सी बेसब्री महसूस हो रही थी : पीटूँ। पर उसने उसे धक्का दिया, सुयारोव धप से पीठ के बल खन्दक की दीवार से जा टकराया, उसकी नाक से अधपकी चेरी के रस जैसा चमकीला खून बहने लगा। आँखें फाड़े वह जमीन से ऊपर देख रहा था पर खुद फिर पीठ के बल लेटा हुआ था, चेहरे के ऊपर फड़कती उँगलियाँ उठा रहा था।

"तो जी ले, हरामजादे!"

त्रेत्याकोव ने उसकी सब-मशीनगन छीन ली, उसका कुण्डल, टेलीफोन के लाल नजदीक तारवाला, आठ सौ मीटर का बड़ा जर्मन कुण्डल छीन लिया और उन्हें उठाकर ऊपर फेंक दिया।

कोई कराहता हुआ धम्म से खन्दक में लुढ़क गया। हरी किश्तीनुमा टोपी। भयमिश्रित, धुँधली आँखें। खून और मिट्टी में लथपथ हाथों से पेट को बगल में दबाये हुए। यह सब उसे तब दिखाई पड़ा जब वह दौड़ने के लिए सीधा खड़ा हो रहा था। क्षण भर के लिए जीवनदायी विचार कौंध गया : रुककर, उसके पट्टी बाँध दूँ... पर वह दौड़ने लगा था, हाथ में कुण्डल खड़-खड़ कर रहा था, तार जमीन पर बिछता जा रहा था। और तभी मैदान के पार से मोर्टार के गोले की चीख सुनायी पड़ी। न दगने की आवाज सुनाई दी, न कोई धक्का महसूस हुआ—बस यही अलग, सबसे अधिक सुनाई देनेवाली चीख। ओट की तरह उसकी छाया में, जैसे-जैसे वह बढ़ती जाती वैसे-वैसे त्रेत्याकोव झुकता हुआ दौड़ रहा था, हाथ में थमा कुण्डल खुलता जा रहा था, पैर खुद ही अधिकाधिक तेजी से उसे उड़ाये ले जा रहे थे। और ऊपर अधिकाधिक तेजी से चीख उड़ती आ रही थी। केवल उसी पर लक्षित लौह चीत्कार नीचे आ रहा था। वह जमीन पर गिर पड़ा। जमीन पर पसरे अपने शरीर के रोम-रोम से, मोढ़ों के बीच पीठ से वह उसे महसूस कर रहा था, उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। और जब यह असहनीय हो गया, जब साँस रुक-सी गयी, चीत्कार टूट गया। मौत का सन्नाटा छा गया। उसने आँखें भींच लीं... पीछे धमाका हुआ। पहले से भी तेजी से झपटकर उठ खड़ा हुआ। दौड़ते हुए उसने पीछे मुड़कर देखा। धमाके का धुआँ खन्दक के ऊपर छाया हुआ था। सूरजमुखी तक भागकर वह गिर पड़ा। उसने एक बार फिर देखा। खन्दक में से विस्फोट का धुआँ निकल रहा था। वहाँ सुयारोव और हरी किश्तीनुमा टोपीवाला प्लाटून-कमाण्डर थे।

अध्याय 7

गौशाला की लट्ठों की बनी दीवार से चिपककर टटोलते-टटोलते त्रेत्याकोव कोने तक गया, उसने सिर आगे बढ़ाया। कनपटी के पास से सन्न की आवाज हुई। कुछ रुककर वह तैयार हो गया। कन्धों में सिर को दुबकाकर वह खाली जगह के पार दौड़ गया। गिर गया। खुरों से खुदी सूखी जमीन गोबर से चिकनी थी। वह उछलकर खड़ा हो गया, फाटक को बन्द करनेवाले पटरे को गिराते समय उसने देखा कि गोबर और भूसे में लथपथ कीतिन घेरे के बाँसों के नीचे से रेंगकर आ रहा है। उसने फाटक को अपनी ओर खींचा, अन्दर भेड़ें डरकर दुबक गयीं।

अपने पीछे-पीछे जमीन पर तार बिछाता कीतिन दौड़कर अन्दर आ गया।

"टेलीफोन जोड़ो, जल्दी से।"

और ऊपर चढ़ने लगा। ग्रेटकोट इसमें बाधा डाल रहा था। झटपटाहट में हुकों को उखाड़ते हुए उसने ग्रेटकोट को उतारकर जमीन पर पटक दिया। दीवार के पीछे धमाका हुआ, छत में छेद चमकने लगे, ऊपर से गिरा, धूप का तिरछा पुंज भूसे पर टिक गया। त्रेत्याकोव फिर से बाड़ पर चढ़ गया, उछलकर उसने बल्ली को पकड़ लिया और हाथों के बल अपने को ऊपर खींचकर उस पर बैठ गया। वहाँ बीट और धूल की परत जमी थी। बल्ली पर सीधा खड़ा होकर उसने अपनी सब-मशीनगन के कुंदे से एस्बेस्टस की छत को तोड़कर छेद बना लिया और उसमें से बाहर निकल आया। हाथ का सहारा लेते हुए, छत पर दौड़ता हुआ ऊपर चढ़ गया और छत की काठी की आड़ में एस्बेस्टस की गर्म चादरों पर लेट गया। और यहाँ से सब साफ दिखायी पड़ता था।

नीचे गाँव में लड़ाई चल रही थी। घरों के पीछे, सागबाड़ियों में इन्फेंट्री जमा हो रही थी, वे एक-एक करके दौड़ते हुए सड़क पार कर रहे थे। धूलभरी सड़क मौत की रेखा के समान थी, मशीनगनें उस पर गोलियों की निरन्तर वर्षा कर रही थीं। कई लोग धूल में चित्त पड़े थे। पर फिर भी इन्फेंट्री का कभी एक जवान तो कभी दूसरा घर की ओट से निकलकर सिर दुबकाये बेतहाशा दौड़ता और उस ओर जाकर गिर पड़ता।

गाँव के पीछे, बागों के उस पार तँगघाटी में त्रेत्याकोव को मोर्टार बैटरी दिखाई पड़ी, वह इतने पास थी कि दूरबीन में चेहरे साफ नजर आ रहे थे। ऊपर को नालें किये दो मार्टार तोपों के बीच लोहे का टोप पहने हट्टा-कट्टा जर्मन खड़ा था, दोनों हाथों से उसने बारी-बारी से गोले भरे, एक के बाद एक चमक हुई, और घास में लेटा सिगनलमैन थोड़ा-सा उठा। घुटनों के बल बैठा वह कान पर चोंगा लगाये इन्तजार

कर रहा था। उसने कुछ चिल्लाकर हाथ हिलाया—कहीं दूरबीन के साथ लेटे जर्मन प्रेक्षक ने उसे कोई आदेश दिया था।

त्रेत्याकोव ने सब-मशीनगन के कुन्दे से छत पर प्रहार किया और एस्बेस्टस की चादर में अपने पास एक छेद बना लिया :

"कीतिन!"

चमकती धूप के बाद आँखों को वहाँ नीचे कुछ दिखायी नहीं दे रहा था : अँधेरा और छत में बने छेदों से छनते प्रकाश की बस तिरछी रेखाएँ।

"कीतिन, लाइन है?"

"है।"

कीतिन भूसे में, टेलीफोन से जूझ रहा था। गोशाला के कोने में भेड़ें दुबकी खड़ी थीं।

"बैटरी को बुलाओ!"

कल ही, जब सूरज डूब रहा था त्रेत्याकोव ने एक टीले पर ध्यान दिया जो अधिक ऊँचा न था। तलहटी में कोहरे से ढका वह टीला मैदान पर तैरता-सा मालूम होता था, और उसकी चमकती चोटी पर लगा कि जर्मन कुछ कर रहे हैं। उसने टीले पर एक गोला छोड़ने को कहा और निर्देश लिख लेने का आदेश दिया : चैक प्वाइण्ट नम्बर एक। उससे वह गोलों को निशान तक पहुँचा देगा।

कुछ समय तक बटालियन कमाण्डर उससे तरह-तरह के सवाल पूछता रहा, जाँच कर रहा था कि कहीं वह दुबककर तो नहीं बैठा है। उसने माँग की कि वह भभूके से अपना स्थान दिखाये, पर त्रेत्याकोव के पास न तो भभूका था और न ही प्रकाश-पिस्तौल।

इस बीच मोर्टार बैटरी पर लोहे का टोप पहने जर्मन बारी-बारी से तोपों की नालों में गोले भर रहा था। उसे नीचे से गोले थमाये जाते और वह दायें-बायें, दायें-बायें—उन्हें पूँछों के बल मोर्टारों की नालों में उतारता और जल्दी से कान ढक लेता। नालों से ज्वाला उठती, और, जब गोले अभी हवा में उड़ते होते, वह नालों में दूसरे भर देता और खुशी से कुछ चिल्लाता और लोहे के टोप के नीचे अपने कान ढक लेता। और आगे कुछ दूरी पर झाड़ियों के पीछे से भी मोर्टार तोपें चल रही थीं, पर वे यहाँ से नहीं दिखायी दे रही थीं। वहाँ झाड़ियों की शाखाएँ काँप रही थीं, धुआँ उनसे टकराता और हवा उसे अपने साथ उड़ा ले जाती, और वहाँ कभी लोहे का टोप दिखायी पड़ता तो कभी गायब हो जाता। मोर्टार बैटरी घातक बाढ़ फायर कर रही थी, गोले पीछे जाकर सूरजमुखी और जंगल की पट्टी के बीच के उसी स्थान पर फट रहे थे जहाँ सोवियत इन्फैंट्री चित्त लेटी थी।

अन्ततः गोलाबारी शुरू करने की अनुमति दी गयी। त्रेत्याकोव ने आदेश भेजा।

पीछे से गरज सुनायी पड़ी, मानो तोप नहीं दगी बल्कि कोई भारी चीज धरती पर पटक दी गयी हो। वह साँस रोककर अपने गोले के विस्फोट की प्रतीक्षा कर रहा था। सारी लड़ाई में, समस्त युद्ध में उसके लिए धरती पर वही एक स्थान था, जहाँ गोले का विस्फोट होना था। अचानक जर्मन मोर्टार तोपची जमीन पर गिर पड़े। फिर धीरे-धीरे उठने लगे। पर विस्फोट उसे दिखायी ही नहीं दिया।

त्रेत्याकोव ने निशाना घटाकर कुछ बायें मोड़ दिया। इतने में जब वह कीतिन से "फायर!" शब्द सुनने की प्रतीक्षा में था, संयोग से उसने एक जवान को घर के पीछे से निकलकर, अपने बूटों के नालदार तले तेजी से चमकाते हुए, सड़क के पार भागते देखा। उसके पैरों के नीचे मशीनगन की बौछार पड़ी, धूल में जलती रेखा-सी खिंच गई। इन्फैंट्री का जवान गिर पड़ा।

"फायर!" नीचे से सुनायी पड़ा। कान से गोले की उड़ान को पकड़कर वह मन ही मन उसे लक्ष्य की ओर पहुँचा रहा था, और खुद छत पर घुटनों के बल खड़ा था, पर उसे स्वयं को इसका ख्याल ही न रहा।

जर्मन और तेजी से जमीन पर गिर पड़े, पर विस्फोट इस बार भी नहीं हुआ। यंत्रवत् उसने उस जगह की ओर देखा जहाँ इन्फैंट्री का जवान गिरा था। खाली। कोई नहीं था। पर समझ में नहीं आ रहा था : देखा और भूल गया।

तीसरी बार उसने आदेश भिजवाया, और इस बार फिर वही हुआ। वह पसीने से तर हो गया—तीन गोले छोड़ चुका है पर लक्ष्य को ब्रेकेट में लेना तो दूर उसे अपने धमाके तक न दिखायी दिये—उसने निशाना एकदम घटा दिया। इतने में उसने ऊपर से देखा कि कोठरी के नीचे से, दीवार के पास खड़े छकड़े के पीछे से एक जर्मन ने बाहर झाँका। वह छिप गया और फिर बाहर झाँका। त्रेत्याकोव छत की काठी के पीछे लेट गया, उसने सिर के ऊपर से अपनी सब-मशीनगन खींची। उसकी पेटी से टोपी लुढ़क गयी, मुड़कर सिर्फ इतना देख पाया कि एस्बेस्टस की चादरों पर फिसलते हुए वह नीचे गिर गयी।

जर्मन अब पूरा बाहर निकल आया था। सबकी नजरों से बचता हुआ वह अपने लोगों के पास जा रहा था। झुककर अपने बायें पैर से लँगड़ाता हुआ दौड़ पड़ा। सिर्फ उसे छोड़ देने के भय से त्रेत्याकोव ने उसकी ओर सब-मशीनगन की नाल घुमायी। वह घोड़ा दबा ही रहा था, जब मानो महसूस करके जर्मन मुड़ा। उसके चेहरे पर आशंका और भयमिश्रित हर्ष का भाव था : बच गया, जिन्दा हूँ! और तभी चेहरा काँप गया। जर्मन सीधा तनने लगा, पीठ से जहाँ गोलियों की बौछार समा गयी थी यातनाभरी हल्की सी अँगड़ाई ली, छाती फूली, ऊपर उठे काँपते हाथ कन्धों के पीछे चले गये। और अपनी सब-मशीनगन गिराता देर हो गया।

उसी क्षण त्रेत्याकोव को अपने गोले का विस्फोट दिखायी पड़ा। मैदान में हो रहे

दूसरे विस्फोटों के बीच बैटरी के पीछे की झाड़ियों से धुआँ उठ रहा था। वहाँ खड्ड है, नीचाई है—इसीलिए उसे अपने गोलों के विस्फोट नहीं दिखायी पड़े थे : वे खड्ड में फटे थे। उसने निशाना ठीक कर दिया।

"फायर!" नीचे से कीतिन चिल्लाया।

आँखों पर दूरबीन लगाकर त्रेत्याकोव प्रतीक्षा कर रहा था। चाँद और मोढ़ों के बीच गीली पीठ को ऊपर लटका सूरज तपा रहा था।

घाटी में जर्मन अचानक मोर्टारों को छोड़कर दौड़ पड़े। दौड़ते-दौड़ते गिर रहे थे, जो जहाँ था वहीं औंधा लेट रहा था। प्रतीक्षा का लम्बा, अनन्त क्षण खिंचा जा रहा था। अब त्रेत्याकोव को दूरबीन में छोड़ी गयी फायरिंग पोजीशन साफ-साफ दिखायी दे रही थी : मार्टार गोलों की पोटियाँ, मार्टारों की ऊपर मुँह उठाये नालें, धूल से ढकी नालों पर सूरज की चमक—रिक्तता, समय की गति रुक गयी थी एक मार्टार तोपची से न रहा गया, वह जमीन से उठ खड़ा हुआ... और इसी क्षण गहरायी से विस्फोट हुआ।

"बैटरी, तीन गोलों की बाढ़—फायर!" त्रेत्याकोव चिल्लाया। वहाँ धमाकों से सब कुछ उड़ रहा था, उसके नीचे छत, जिस पर वह लेटा था, काँप रही थी।

विस्फोटों से उड़ी मिट्टी बैठ गयी और धुएँ को हवा उड़ाकर ले गयी। इस दौरान फायरिंग पोजीशन पर कुछ भी नहीं बचा था। सिर्फ खुदी जमीन और गोलों के गड्ढे शेष थे। बाद में उसने देखा : खड्ड के उस पार कुछ हिल-डुल रहा है। उसने ध्यान से देखा। ऊँचे किनारे पर चढ़ता हुआ मार्टर तोपची रेंगकर खड्ड से बाहर निकल रहा था, वह पूरी शक्ति लगाकर, कुचले जीव की तरह खुद को घसीट रहा था।

अध्याय 8

सूरज को ढकती धूल और धुएँ में कई घण्टे से युद्ध चल रहा था। टैंकरोधी खाई के सामने अटके टैंक अब उसे पार कर चुके थे और उनमें से एक, बीच मैदान में खड़ा जल रहा था। यह अफवाह थी कि बायीं तरफ से कवचधारी इन्फैंट्री आगे बढ़ गयी थी : इस्पाती के टोप पहने, रीढ़ को फौलादी की पट्टियों से ढके, छाती पर फौलाद के कवच बाँधे। कहा जा रहा था कि उन्होंने टैंकों से भी पहले टैंकरोधी खाई को पार किया था। अब तक के सारे युद्ध में त्रेत्याकोव ने एक बार भी ऐसी सोवियत इन्फैंट्री नहीं देखी थी, पर कहा जाता था कि वह बायीं तरफ से गयी है।

गोलों से टूटी-फूटी टैंकरोधी खाई के पास एक ध्वस्त टी-34 टैंक खड़ा था, और मैदान में इन्फैंट्री के खेत रहे जवान लेटे थे। अपनी बदरंग फौजी कमीजों में, कन्धों पर लिपटे ग्रेटकोटों के छल्लों के साथ, कोई किश्तीनुमा टोपी में, तो कोई छोटे

बालोंवाले नंगे सिर को कड़ी, सूखी घास पर रखे इस ललौंहे मैदान का अंग बन गये थे। और अब किसी को भी आवाज—न प्लाटून-कमाण्डर की, न कम्पनी-कमाण्डर की और न ही कमाण्डर इन-चीफ की, अगर वह यहाँ होता,—उन्हें उठाने में असमर्थ थी। अब से वे किसी के भी अधीन न थे, वे टैंकरोधी खाई के सामने घास में ऐसे लेटे थे मानो अभी भी रेंग रहे हों। और नीचे, जहाँ विस्फोट से बचने के लिए त्रेत्याकोव लुढ़क गया, उसका पैर मिट्टी में आधे दबे जवान पर पड़ते-पड़ते बचा। कहीं से हरा टेलीफोन का तार उसके ऊपर से आड़ा जा रहा था।

जब वह खाई से बाहर निकलकर कीतिन के साथ तार बिछाता मैदान में दौड़ रहा था तो गोलियाँ नजदीक से सनसनाती हुई उड़ रही थीं और त्रेत्याकोव दौड़ते-दौड़ते ऐसे सिर हिला रहा था, मानो उन्हें मक्खियों की तरह उड़ा रहा हो। तोपखाने के आकस्मिक प्रहार ने दोनों को लिटा दिया। एक क्षण के लिए उसने जमीन से सिर उठाया तो उसे आगे काली-सलेटी, गर्म दिन में बर्फीली घटा दिखायी पड़ी। वह बिजली की उमड़ती दीवार की तरह खड़ी थी, उसकी पृष्ठभूमि में ऊँचाई पर कबूतर उड़ रहे थे, दूध की तरह सफेद चिट्टे। और अचानक उसने देखा कि कैसे उनमें से एक को गोली ने बींध दिया, त्रेत्याकोव ने अपने जीवन में पहली बार यह देखा था। धक्के ने कबूतर को झुण्ड के ऊपर उछाल दिया, वह चकराता, खुले डैने से पँख बिखेरता नीचे गिर रहा था। फिर उसके दिल में सिहरन फैल गयी : "आज मैं मारा जाऊँगा!..." यह सोचते हुए वह काँप गया : अगले क्षण वह उछलकर, झुके हाथ में सब-मशीनगन उठाये मैदान में दौड़ रहा था। आगे अपनी फौजी कमीजों में झुककर दौड़ते इन्फैंट्री के जवान काली घटा के सामने ऐसे सफेद लग रहे थे मानो नेगेटिव पर हों।

धमाके के धुएँ में डुबकी लगाकर गिरते हुए त्रेत्याकोव को मोर्टार की नीचे आती चीत्कार सुनायी पड़ी। और पास ही किसी की घुटती, करुण कराह : "उई, ओह, उई-उई ऽऽ!.." मोर्टार की झपटती चीत्कार। और भी दर्दभरी कराह। और दो आवाजें जल्दी-जल्दी तू-तू मैं-मैं करती हुई : "मैं कह रहा हूँ, दे.... दे दे!" "वह तुझे अभी देगा... अभी दे देगा..." एक आवाज कीतिन की-सी लगी। धमाका हुआ। कराह रुक गयी। जब त्रेत्याकोव उठा तो कीतिन और इन्फैंट्री का जवान एक जगह पैर पटकते एक दूसरे से जर्मन टेलीफोन के तार का कुण्डल खींच रहे थे। इन्फैंट्री का जवान लम्बा-चौड़ा, हट्टाकट्टा था, उसके ग्रेटकोट के बटन खुले थे। कीतिन छीना-झपटी करते हुए उसके हाथों पर चोट भी कर रहा था। और बीच-बीच में पैर भी मार रहा था। और इसके अलावा हताश होकर चिल्ला रहा था :

"कामरेड लेफ्टिनेण्ट! लेफ्टिनेण्ट!"

फौलादी गोले की सनसनाहट कौंध गयी। दोनों बैठ गये, उनमें से एक भी कुण्डल

को नहीं छोड़ रहा था।

"कामरेड लेफ्टिनेण्ट!"

"अबे छोड़!" दौड़कर आयात्रेत्याकोव चिल्लाया। इन्फैंट्री के जवान ने अनिच्छा से हाथ हटाया।

"मेरा कुण्डल है। मुझे यह मैदान में मिला था..."

विस्फोट की लहर ने तीनों को झुला दिया। कालर में घुसी मिट्टी को झाड़ते हुए त्रेत्याकोव ने देखा कि कीतिन छीने गये तार को जोड़ रहा था :

"तुझे मिला था—जा और ढूँढ़ ले। यहाँ कितने पड़े हैं..."

वे खाई में कूद गये, उसके ऊपर अभी भी धूल और धुआँ छाया हुआ था। तार के कुण्डल पर बैठकर कीतिन, मानो यहाँ भी उसका पहरा दे रहा था, टेलीफोन जोड़ रहा था। त्रेत्याकोव कोहनियों के बल खाई की मेंड़ पर लेटकर दूरबीन लगाये मैदान को छान रहा था। दूरबीन के शीशे पसीज रहे थे, पसीना फटे होंठों में चिरमिराहट पैदा कर रहा था, कमीज के अन्दर छाती के गड्ढे में बह रहा था।

आगे इन्फैंट्री जल्दी-जल्दी खाइयाँ खोद रही थी। जमीन पर रेंगते और लेटे जवानों के बीच पेड़ के तनों की तरह धमाके उठ रहे थे, मैदान के ऊपर धुएँ के बादल मँडरा रहे थे, और मशीनगनें निरन्तर गोलियाँ बरसा रही थीं, वे इन्फैंट्री को उठने नहीं दे रही थीं। और सिर के ऊपर भी, हवा की ऊँचाइयों पर भी—द्ददद! द् द् द्!... मशीनगनों की दबी-दबी आवाज सुनाई पड़ रही थी, इंजन चीत्कार कर रहे थे—गोले की तरह हवाई युद्ध इधर-उधर लुढ़क रहा था।

खाई में क्षण-प्रतिक्षण लोग इधर-उधर दौड़ रहे थे। एक बार दीवार से सटकर त्रेत्याकोव ने पल भर के लिए देखा कि किसी की बगलों में हाथ डालकर घसीटकर ले जाया जा रहा है। ऊपर को खिसकी फौजी कमीज, पीला पिचका पेट... छोटे बालोंवाला, कहीं-कहीं गंजेपन की चिंदियों वाला सिर परिचित-सा लगा, किसी का हाथ उस पर किश्तीनुमा टोपी को टिका रहा था।

कुछ देर से गायब कीतिन लौट आया।

"कामरेड लेफ्टिनेण्ट, वहाँ जमीन के अन्दर ऐसी-ऐसी सुरंग हैं! दसेक मीटर की गहराई पर, हाँ, हाँ!"

और खुद कुछ चबा रहा था।

"रोटी खायेंगे? वे वहाँ सब कुछ छोड़कर भाग गये हैं। जाकर देख लीजिये। सिर के ऊपर कोई दस मीटर मोटी जमीन है, एक भी गोला नहीं बींध सकता।"

खाई के मोड़ के पीछे बगल में बनी खोह में एक के ऊपर एक मरे जर्मन पड़े थे। ऊपरवाले के पाँव फटे मोजों में चौड़े फैले थे, गले के पास वर्दी फटी थी, चेहरे पर—मिट्टी और ख़ून की सूखी पपड़ी, और उसके ऊपर हवा के हिल रहे सुनहरे

लहरीले बाल। त्रेत्याकोव को चमकती धूप से नीचे अंधकार में खाई की दीवारों का सहारा लेकर उतरते हुए कई बार मरे जर्मनों को लाँघना पड़ा।

यहाँ सब आवाजें दबी-दबी सुनाई पड़ रही थीं, धमाकों से—वे, धक्कों की तरह जमीन के अन्दर महसूस हो रहे थे—मोमबत्तियों की लपटें उछल रही थीं और छत के मजबूत गुम्बद से मिट्टी झड़ रही थी। फर्श पर, पीले धुँधलके में घायलों की सफेद पट्टियाँ चमक रही थीं। उनके बीच उसे कम्पनी कमाण्डर दिखाई पड़ा। वह जमीन पर कमर तक निर्वस्त्र बैठा था, इस प्रकाश में वह कत्थई लग रहा था, और एक मेडिकल अर्दली उसकी छाती पर पट्टियाँ लपेट रहा था। त्रेत्याकोव को पहचानकर कम्पनी कमाण्डर ने अपना निढाल झुकता गंजा सिर उठाया :

"लो... फिर हो गया घायल.... एक लड़ाई भी पूरी न लड़ पाया..."

सुरंग, धुएँ की तरह धूल से भरती जा रही थी, प्रहार निरन्तर महसूस हो रहे थे, और अब लग रहा था कि ऊपर कुछ हो रहा है। कम्पनी कमाण्डर के पास खड़े त्रेत्याकोव ने पूछा :

"सीनियर, आपने कहा था कि हमारा एक्जेक्यूटिव आफिसर खार्कोव के पास लड़ा था। क्या वह यहाँ है, हुँ? देखा नहीं? चचा के बारे में पूछना चाहता था..."

और अपनी नजरों से जल्दी करने को कह रहा था, याद दिलाने में मदद दे रहा था। पर कम्पनी कमाण्डर ने सिर उठाकर छत को देखा, जहाँ से उसके चेहरे पर मिट्टी झड़ रही थी। घायलों में बेचैनी पैदा हो गयी। वे अपने आस-पास हथियार टटोल रहे थे, कुछ घिसट कर कहीं जा रहे थे।

ऊपर धमाके हुए जा रहे थे। जब वहाँ जा रहा था सब जगह रास्ते में पता नहीं कहाँ से आये लोगों की भीड़ धक्का-मुक्की कर रही थी। और खाई में भी—धक्का-मुक्की, चिल्लाहट, भयभीत चेहरे थे। क्षणिक चीत्कार सुनाई पड़ा। धमाका। एक और धमाका। टैंक! खाई से सिर बाहर निकाले बिना ही वह समझ गया : वे ही हैं। सीधी मार कर रहे हैं : गोला छूटते ही धमाका होता। फिर क्षणिक चीत्कार हुआ और खाई में सब झुक गये। मिट्टी से ढके त्रेत्याकोव ने खाई की मेंड़ के ऊपर सिर उठाकर देखा : टैंक। ठिगने, लम्बी तोपोंवाले, वे उस टीले के पीछे से आ रहे थे जिस पर पवनचक्की के पँख घूम रहे थे। दो टैंक... उनके पीछे और—एक, दो, तीन... अगलेवाले की तोप में आग चमकी। ऐसा धमाका हुआ कि कान बन्द हो गये।

"कीतिन!"

मिट्टी से ढका टेलीफोन पड़ा था। तार का कुण्डल भी नहीं था। और कीतिन भी कहीं नहीं था। त्रेत्याकोव ने चोंगा उठाया : लाइन कटी हुई थी। क्या सचमुच भाग गया?

मैदान में अपने लिए खाइयाँ न खोद पायी इन्फैंट्री लेटी थी। टैंक जा रहे थे और

उनके आमने-सामने, मानो हवा लोगों को जमीन से उड़ा रही थी। वे एक-एक करके उठते और झुककर ऐसे दौड़ते मानो हाथ-पाँव के बल दौड़ रहे हों, बिस्फोट भागते लोगों का सफाया कर रहे थे।

"मैं तुम्हें सिखाऊँगा दौड़ना! मैं तुम्हें बताऊँगा कैसे भागते हैं!" बटालियन कमाण्डर क्रोध से चोंगे में चिल्ला रहा था और आँखों के ऊपर अपनी टोपी के कपड़े के छज्जे को झिंझोड़ रहा था, और खुद पूरा जमीन के अन्दर, सुरंग के द्वार में खड़ा था।

तोपखाने का लेफ्टिनेण्ट टेलीफोन के पास नक्शे को हाथ में लिये असहाय-सा खड़ा था, उसका चेहरा सफेद-फक पड़ गया था। रिसीवर में अपनी सफाई दे रहा था, फायरिंग नहीं शुरू कर रहा था।

"तेरे पास कौन-सी तोपें हैं?" त्रेत्याकोव ने चिल्लाकर पूछा।

"हाविट्जर... एक सौ बाइस एम. एम. वाली..."

"बैटरी कहाँ है?"

"यहाँ, यह रही," लेफ्टिनेण्ट ने नक्शा दिखाया और स्वयं भी आशा के साथ देखने लगा।

त्रेत्याकोव ने दूरी का अनुमान लगाया :

"शुरू कर फायरिंग!"

और आदेश देने लगा।

एक लड़का, माथे पर लटवाला, सार्जेंट के फीतों में, पता नहीं उसका यहाँ क्या काम था, प्रशंसा के साथ त्रेत्याकोव को निहार रहा था।

"बहुत होशियार हैं, लेफ्टिनेण्ट!"

और तभी त्रेत्याकोव को रिसीवर में कीतिन की हाँफती आवाज सुनाई पड़ी :

"बबूल, बबूल!..."

"कीतिन?"

"मैं!" यहाँ मैदान में तार कट... और फौरन बटालियन कमाण्डर की आवाज सुनाई पड़ी :

"क्या हो रहा है तुम्हारे यहाँ? त्रेत्याकोव! तुम्हारे यहाँ क्या हो रहा है?"

"जर्मन सेना टैंकों की मदद से प्रत्याक्रमण कर रही है! बराज गोलाबारी की जरूरत है :"

"टैंक, टैंक... कितने टैंक देख रहे हो? खुद कितने देख रहे हो?"

"पाँच देखे थे...अभी..."

वह कहना चाहता था "गिनता हूँ", उसको धक्का लगा और वह गिर पड़ा। वह टेलीफोन को ढके घुटनों के बल, मिचली को रोकता हुआ खड़ा था, ऊपर से मिट्टी

के लौंदे बरस रहे थे, उसकी झुकी कमर और सिर पर चोट कर रहे थे। उसके मुँह से चिपचिपी लार टपक रही थी, आस्तीन से वह उसे पोंछ रहा था। दिमाग में आया : "आ गयी..." और आश्चर्य हुआ–बिल्कुल भी डर नहीं लग रहा था।

खाई की तली में लटवाला सार्जेंट एक हाथ को आगे बढ़ाये औंधा पड़ा था। उसकी उँगलियाँ हिल-डुल रही थीं। और वहाँ, जहाँ अभी-अभी खड़ा बटालियन-कमाण्डर चिल्ला रहा था और अपनी टोपी के छज्जे को झिंझोड़ रहा था, धुआँ छोड़ता भुर-भुरा गड्ढा पैदा हो गया था।

अपने क्षीण पैरों पर खड़े होकर त्रेत्याकोव ने मैदान, बिस्फोट, भागते, जमीन पर गिरते लोगों को देखा। वह समझ नहीं पा रहा था कि वह घायल है या नहीं–पर खून कहीं से भी नहीं निकल रहा था। टीले पर धीरे-धीरे मानो यह सिर चकरा रहा हो, पवनचक्की के छिदे पँख घूम रहे थे। वे बढ़ते टैंकों को अपने निचले सिरे से कभी छिपा देते, कभी खोल देते। और होनी की आवश्यंभाविता, काल की गति के रुक जाने का आभास करते हुए, कानों में हो रही गुंजार और झनझनाहट के बीच किसी पराये की तरह अपनी आवाज को सुनते हुए वह आर्टिलरी बटालियन को निर्देश दे रहा था। उसने आँखों पर दूरबीन लगायी। आवर्धक लेन्स सब चीजों को स्पष्ट बनाकर पास खींच लाये। आगे निकला टैंक अपनी पेटियों को चमकाते हुए बढ़ता चला आ रहा था, और पवनचक्की का फटे कपड़े से तना पँख ऊपर से नीचे आते हुए उसे बाकी टैंकों से अलग कर रहा था।

फिर गोला फटा। किसी ने टेलीफोन को खींचा, वह खाई के मेंड़ से गिरने लगा। उसको लपककर त्रेत्याकोव ने घुटने से खाई की दीवार पर टिका दिया और चिल्लाकर नया निर्देश दिया। टेलीफोन और जोर से खिंचा। वह मुड़ा। मेंड़ के ऊपर–काला, सफेद दाँत चमकाता चेहरा।

"नसरुल्लायेव!"

मुस्कान और भी चौड़ी हो गयी, खुशी से भर गयी, मानो सौ दाँत चमका रहा था, और सब के सब सफेद, मजबूत थे। उसका सिगनलमैन नसरुल्लायेव जमीन पर लेटा था। वह रेंग-रेंगकर आया था। उस पर टेलीफोन के तार के दो कुण्डल लदे थे। हाथ में उसके टेलीफोन तार था जिसे पकड़कर वह खींच रहा था।

"नीचे कूद आ! जल्दी!"

वह ऐसे मुस्करा रहा था मानो रूसी भाषा न समझता हो।

"नीचे उतर, किसे कह रहा हूँ। कीतिन कहाँ है?"

नसरुल्लायेव को खन्दक में खींचने के लिए उसने हाथ बढ़ाया, पर कोहनी के नीचे कोई चोट लगी थी, दर्द से हाथ जलने लगा। उसने दूसरे हाथ से जिसमें रिसीवर था अपना बायाँ हाथ पकड़ लिया। वह नहीं समझ पा रहा था कि किसने

उसे मारा, वह सिर्फ साँस लेने में असमर्थता महसूस कर रहा था। इससे पहले कि वह अपना खून देख पाता, उसे अपनी ओर निहारते नसरुल्लायेव के चेहरे पर भय और दर्द की छाप दिखाई पड़ी। फिर ग्रेटकोट की आस्तीन से खून टपकने लगा। एकदम क्षीण होकर, यह महसूस करते हुए कि कैसे चेहरा, होंठ अचेतन होते जा रहे हैं, वह खाई की तली में बैठ गया, पता नहीं किस उद्देश्य से अपने चंगे हाथ से अपने पास सब-मशीनगन को टटोलने लगा।

अध्याय 9

गाँव जल रहा था, उसके पीछे दूरी पर यान्त्सेवो स्टेशन धू-धू जल रहा था। वहाँ धमाके हो रहे थे, जैसे अलाव से चिनगारियाँ उड़ती हैं, काले आकाश में गोलियों की चमकती रेखाएँ उड़ रही थीं। यह सारा दृश्य कभी पीछे, कभी बगल में, तो कहीं आगे दिखाई पड़ता। अंधकार में, लपटों की धुँधली चमक में ट्रक ऊबड़-खाबड़ मैदान में रेंग रहा था, कभी गोलों के गड्ढे में फँस जाता, घायल एक दूसरे पर लुढ़क जाते, कराहते, ऊपर बैठे कुछ करते। इतने में ट्रक अपने कमजोर इंजन को घरघराते समतल जगह पर आ जाता। फिर वे मैदान में चक्कर काटने लगते, कभी रण-क्षेत्र से दूर जाते तो कभी लगता मानो फिर उसके पास आ गये हों। एक बार तो सपना-सा उसके सामने दिखाई पड़ा : जलती पवनचक्की देखते-देखते टूट रही थी, आग के टुकड़े गिर रहे थे; उसका अंजर-पंजर तपे तार के ढाँचे की तरह चमक रहा था।

धक्कों और हिचकोलों के कारण त्रेत्याकोव के मुँह से खून बहने लगा था, वह उसे आस्तीन से पोंछ रहा था। पोंछता और देखता जाता-कपड़े पर पड़े भीगे निशान। पहले क्षण सब घावों में से उसे सिर्फ एक ही महसूस हुआ, जब कोहनी के नीचे, सबसे संवेदनशील नस पर चोट लगी, हाथ से सब-मशीनगन तक छूट गयी थी। और बाद में मेडिकल अर्दली ने उसके शरीर पर और चार छेद गिने। पसलियों के बीच घुसा गोले का टुकड़ा साँस नहीं लेने दे रहा था। उसी के कारण मुँह से खून बहने लगा था। दर्द की प्रतीक्षा में दुबककर वह नये धक्के के लिए तैयार हो जाता, ट्रक हिचकोला खाता और सभी घावों में फिर टीस भर जाती।

"ओह, आह ऽऽ," उसके पास लेटा सेकेंड-लेफ्टिनेण्ट सुबकियाँ ले रहा था। "आह, हे भगवान, यह क्या हो रहा है? ओह, अब जल्दी ही आ जाये..."

एक बार जब कुछ ज्यादा ही तेज धक्का लगा, तीखे दर्द से करहाते हुए त्रेत्याकोव उस पर बरस पड़ा :

"अरे, कुछ तो लिहाज कर! क्या घायलों में तू ही अकेला है, क्या तेरी हालत

सबसे बुरी है?"

और वह चुप हो गया। ट्रक फिर मैदान में चक्कर काटे जा रहा था, लगता था कि इसका अन्त कभी न होगा, ट्रक का इंजन कभी निढाल क्रन्दन करता, तो कभी ठप्प हो जाता, भभूकों का प्रकाश ट्रक के ढाँचे पर बिखर जाता और फिर अँधेरा छा जाता। इस तरह समय को तो हिचकोलों और दर्द में ही मापा जाता।

ट्रक रुक गया। अँधेरे में आवाजें और कदमों की आहट सुनाई पड़ी। लोहे के खनकने की आवाज सुनाई पड़ी। ट्रक का बोर्ड खुल गया। घायलों को एक-एक करके उतारा जाने लगा। जब सेकेंड-लेफ्टिनेण्ट को उतारा जा रहा था, वह नहीं कराहा। और आवाजें भी खामोश पड़ गयीं थीं। सेकेण्ड-लेफ्टिनेण्ट को एक तरफ ले जाकर अँधेरे में जमीन पर लिटा दिया गया।

एक अपरिचित सार्जेंट-मेजर ने त्रेत्याकोव को उतरने में सहायता दी, वह बड़ी दौड़-धूप कर रहा था, उसको अपने कन्धे का सहारा दे रहा था :

"हाँ, तो मेरे कन्धे का सहारा ले लो। कोई बात नहीं, डाल दे पूरा जोर।"

घाव पर चिपका पायँचा उखड़ गया, टाँग पर गर्म खून बहने लगा। मानो एक छेद और है। अब तक वह महसूस नहीं हुआ था।

जल्दी से कोई दृढ़, ठिगना, परतले कसे व्यक्ति पास आया। उसके सामने त्रेत्याकोव को खड़ा कर दिया गया।

"हाँ, तो तुम हो लेफ्टिनेण्ट... अभी हम तुम को रवाना कर देंगे, इलाज होगा, तुम ठीक हो जाओगे और फिर तुम इस रेजिमेण्ट में लौट आओगे। तुम्हारा इन्तजार करेंगे।"

ऊपर से त्रेत्याकोव ने उसके कन्धों पर कैप्टन के फीते देखे, वह समझ गया : बटालियन-कमाण्डर है। उसकी आवाज से यह कल्पना करना कठिन था कि वह इतना नाटा है।

"आज मैं तुम पर चिल्लाया था," कैप्टन ने सख्ती से भौंहें चढ़ायीं। "लड़ाई के समय हम सब 'नर्वस' होते हैं। तुम बुरा न मानना, और न तुम्हें बुरा मानना ही चाहिए।"

"मैं बुरा नहीं मान रहा हूँ।"

आँखों के सामने सब तैर रहा था, सिर के ऊपर पेड़ झूल रहे थे, हो सकता है, वह खुद डगमगा रहा था। और साँस लेने में कठिनाई हो रही थी।

"बुरा नहीं मानना चाहिए, ठीक ही तो है : नहीं मानना चाहिए।"

फिर सार्जेंट-मेजर उसे ले जाने लगा और वह उससे अनुरोध कर रहा था, खुद अपनी आवाज उसे ठीक से सुनाई नहीं दे रही थी :

"मुझे वहाँ... उधर ले चलो..."

पसलियों के बीच फँसा गोले का टुकड़ा साँस लेने में बाधा डाल रहा था।

"उधर... सार्जेंट-मेजर..."

और झाड़ियों की ओर खींच रहा था। पर सार्जेंट-मेजर अपनी कर्त्तव्य निष्ठा के कारण कुछ समझे बिना सिर्फ कन्धे का अधिक सहारा दे रहा था, उसे अपने ऊपर लाद रहा था :

"अभी हम पहुँच जायेंगे, यहीं पास ही, पलक झपकते ही..."

"सार्जेंट-मेजर..."

"कोई बात नहीं!"

अन्तत : वह दौड़-धूप करने लगा, खुद उसकी पेटी उतारने लगा, उसकी पतलून का बटन खोल दिया।

"एक तरफ हट जाओ," त्रेत्याकोव ने अनुरोध किया।

"शर्माने की क्या बात है!"

"हट जाओ...मिन्नत करता हूँ..." इस कारण कि वह गहरी साँस नहीं ले सकता था, उसकी आवाज बहुत करुण थी। "मैं कह रहा हूँ हट भी जा.."

पतले-से पेड़ का तना पकड़े वह उसके साथ डगमगा रहा था। बेचारा इतना दुबला हो गया था कि रोना आ रहा था। पर वह यह सब भी सहने को तैयार था, सिर्फ शर्म को नहीं। पर सार्जेंट-मेजर, सस्ते तम्बाकू और वोद्का की गन्धभरा साँस छोड़ता हुआ दोहराये जा रहा था : "शर्माने की भी क्या बात है!" और उसका ढंग ऐसा था कि बुरा नहीं माना जा सकता था—वह सहर्ष, सहज-भाव से लेफ्टिनेण्ट के साथ व्यवहार कर रहा था।

"अगर मेरे साथ ऐसा हो जाता?" वह कह रहा था, और ऐसे काम के समय वह अब पूरी तरह 'तू' पर आ गया। "क्या तू मेरी मदद न करता? यहाँ तो एक दूसरे की सहायता करनी ही चाहिए किसी न किसी तरह।"

और उसके निबटने तक वह वहीं खड़ा उसे सहारा देता रहा। बाद में उसने ही पतलून के बटन बन्द कर दिये—त्रेत्याकोव में अब मना करने की भी शक्ति नहीं बची थी—उसकी कमीज ठीक की, अपने हाथों में उसकी अफसरोंवाली पेटी पर नजर डालकर, तारेवाले उसके बकसुए को देखकर शर्माता हुआ-सा बोला :

"तेरी पेटी तो बढ़िया है... मालूम है अस्पताल में वे क्या करते हैं? जो कुछ किसी के पास होता है, वह सब उनकी अमानत बन जाता है। मैं खुद अस्पताल में रह चुका हूँ, जानता हूँ सब।"

उसाँस लेकर वह संकोच में पड़ गया : इस पेटी को हाथ से जाने देने की उसमें तनिक भी इच्छा न थी।

"अगर कोई बेहोशी की हालत में होता है तो कोई सुराग तक नहीं मिलता, पूछे तो पूछे किससे।"

"ले लो," त्रेत्याकोव ने इस अन्दाज से कहा मानो बला टाल रहा हो। इस समय उसे पेटी का दुख नहीं था। उसे मानवतावश किसी दूसरी बात का ही दुख था। और अब तो इसके प्रति भी वह उदासीन होता जा रहा था। और सार्जेंट-मेजर खुशी से फुदकने लगा, उसकी कमर पर अपनी पेटी बाँधने लगा और फुसफुसा रहा था :

"मेरी भी अभी अच्छी हालत में है। क्या हुआ कि कुछ घिसी है, थोड़ा-सा ग्रीज मल देना..."

उसने कमीज को खोंसकर चारों ओर से खींच-खींचकर सिलवटें दूर कर दीं—इससे हर बार घावों में टीस होती—और उसने बड़ी सहजता से आश्वासन दिया :

"तुझे तो वहाँ नयी दे देंगे!"

फिर से त्रेत्याकोव को कभी सहारा देकर, कभी मोटर में हिचकोले खिलाते हुए कहीं ले जाया जाने लगा। बाद में उसने खुद को जमीन पर बैठा पाया। जंगल के पार से पारदर्शी प्रकाश छनता हुआ दिखाई पड़ रहा था : आग का लाल प्रकाश और उसकी पृष्ठभूमि में काले पेड़। और चारों ओर पेड़ों के नीचे जमीन पर घायल फौजी लेटे, बैठे हिल-डुल रहे थे। रुक-रुककर गरज सुनाई पड़ रही थी। पास ही में खड़े एक तम्बू से मरहम-पट्टी के बाद घायलों को बाहर लाया जाता, उन पर ताजी पट्टियों की सफेदी चमक रही थीं। और जब मेडिकल अर्दलियों द्वारा सहारा देकर ले जाने के लिए अगले व्यक्ति को चुना जाता, जमीन से घायल फौजी आँखें उठाये उनकी ओर आशाभरी नजरों से देखते, तब उनकी कराहें और भी करुण हो जातीं। स्ट्रेचर पर एक व्यक्ति को बाहर लाया गया। तिरपाल का पर्दा बूटों से लेकर पट्टी बँधे सिर तक उसके ऊपर से गुजर गया।

त्रेत्याकोव के कानों में गुंजार हो रही थी। कभी-कभी यह गुंजार भी कहीं दूर जाने लगती, गर्त्त में गिरने लगती... हड़बड़ाकर वह जाग पड़ता। दिल रुक-रुककर धड़क रहा था। उसे मालूम था : सोना नहीं चाहिए। सर्दियों में पाले की तरह ही : सो गये—तो फिर कभी जागोगे नहीं। और वह नींद को भगाने के प्रयास कर रहा था। पर उसके शरीर में क्षीणता हावी होती जा रही थी, दिल भी अब धड़क नहीं रहा था, बल्कि काँप रहा था। वह महसूस कर रहा था कि कैसे उसके शरीर से प्राण निकल रहे हैं। एक बार उसे अपने ऊपर आवाजें सुनाई दीं :

"लेफ्टिनेण्ट, सो नहीं!"

काली छाया ने लाल प्रकाश को ढक दिया, फिर नीचे झुक गयी :

"ए! ओ! चल उठ। चल, चल, उठ... निकीशिन, मदद कर। ऐसे। यह हुई न बात! चल सकते हो?"

कड़े तिरपाल ने चेहरे को रगड़कर सिर से किश्तीनुमा टोपी गिरा दी। अर्दली ने उसे उठाकर उसके ग्रेटकोट की जेब में ठूँस दिया। अन्दर, सफेद टेन्ट में लालटेनों की रोशनी से आँखें चौंध रही थीं।

जब उसके कपड़े उतारे जा रहे थे, सब कुछ अलग-अलग दिखाई पड़ रहा था कोने में–कमर तक निर्वस्त्र लोग, अपने एक हाथ से दूसरे को पकड़े हुए, ऊपर से देख रहे थे, कैसे नर्स चिमटी से उसकी कोहनी में, काले छिद्र से, भूरी गीली पट्टी को खींच रही थी।

नकाब बाँधे डाक्टर मेज के ऊपर झुक गये। वहाँ उनके हाथों के नीचे है–मुण्डा गोल सिर, कनपटी और कपोल के स्थान पर–खून के चिकने थक्के, बड़ा घाव। निकलदार चिमटियों से डाक्टर उलट-पलटकर कुछ निकालते, और मेज के नीचे रखी चिलमची में टन् से गिरा देते। उस व्यक्ति की तीव्र चमकती, काली, गैरऋसी आँखें नाक की सीध में देख रही थीं, वे दर्द से दूर थीं, और पीली टाँग, जो चादर से बाहर निकल आयी थी, हल्की सी कँपकँपी रही थी।

निर्वस्त्र त्रेत्याकोव भी काँप रहा था। जब उसे मेज पर लिटाया गया, उसकी टाँगे अभी गर्म थीं। एक ओर हटे पर्दे के पास खड़ा सर्जन किसी दूसरे के हाथ से सिगरेट पी रहा था। दस्तानों में अपने हाथों को उसने कन्धों तक उठा रखा था। आँखों तक चेहरा ढके वह उसके ऊपर झुका, जब वह साँस लेता तो नकाब चेहरे से चिपककर उसके मुँह, नाक की चिपकती और हटती आकृति को उभार देती। उसने शरीर पर कोई कुन्द चीज फेरी। चिलमची में धातु गिरने की टन् हुई। फिर मानो कुन्द छुरी फेरी, दर्द की प्रतीक्षा में शरीर स्वतः सिकुड़ गया। चिलमची में फिर कई बार टन् से गिरने की आवाजें हुई। और–दर्द ने बींध दिया।

"पैर दबाकर पकड़ लो!" सर्जन ने कहा।

कोई दहकती चीज-सी अन्दर दिल तक घुस गयी, दम घुट-सा गया।

"चिल्ला, मत रोक! चिल्ला!"

महिला स्वर बीच-बीच में लुप्त हो जाता, कभी जरा करीब सुनायी देता। कोई कान के ऊपर साँस लेता। कभी गीली पट्टी से उसका माथा और चेहरा पोंछता। एक बार सर्जन की आँखें जरा नजदीक दिखाई पड़ीं, पुतलियाँ एक दूसरे में झाँकीं। उसने कुछ कहा। और अचानक दिल ने खुला-खुला-सा महसूस किया।

जब उसे पट्टी बाँधी जा रही थी, महिला ने उसकी ओर रूई में लिपटा रक्तरंजित

लौंदा बढ़ाया।

"लो, इस किरच को सम्भालकर रख लो। रखोगे न?"

"यह मेरे किस काम की?"

और यह भी टन् से चिलमची में जा गिरा।

क्षीण, काँपते त्रेत्याकोव को तम्बू में ले जाया गया। आधी रात उसने ग्रेटकोट और कम्बल के नीचे काँपते-काँपते काट दी। आँख बन्द करता तो फिर दिखाई पड़ता : सूखी घास में झुककर दौड़ते इन्फैंट्री के जवान, आगे दीवार की तरफ–काली घटा, इन्फैंट्री जवानों की कमीजें और घास–वह भी सफेद। और कभी अचानक आपरेशन की मेज पर काँपती पीली टाँग दिखाई पड़ती, दर्द से पथरायी ऐंठी उँगलियाँ चुल्लू की तरह भिंची हुई। इस रात उसे एक नहीं कई बार सुयारोव दिखाई पड़ा, आँखें मींच लेता फिर भी दिखाई देता कि कैसे वह उसे वहाँ पीट रहा था, गोलाबारी के समय इस मौत के मैदान में, और वह पीठ के बल गिर पड़ा, दीन-भाव से पलकें झपका रहा था, हाथों की ओट लेकर। आखिर उसके जीवन में अन्तिम याद तो यही थी : कैसे उसे पीटा गया। किस बला से उसने अपनी आत्मा पर यह बोझ उठाया!... और हाथ की उँगली भी, अनामिका–कटी हुई, जैसे माँ की...

इन्फैंट्री धमाकों के बीच दौड़ रही थी। और टैंकरोधी खाई के पार घटाओं की दीवार की तरह खड़ी थी। उसके अन्तर्मन में धुन्ध सी छा गयी, बवंडर की तरह धूल उड़ने लगी। डगमगाता हुआ वह पास आ रहा था। और अचानक सीने में मीठी टीस के साथ उसका अन्तर्मन उड़ चला :

"माँ!"

एक ओर वह उदासी में डूबी खड़ी थी, चुपचाप देख रही थी। वह गालों पर उसकी साँस की गरमाहट अनुभव कर रहा था।

"माँ!"

और उसके प्रति पुत्र सुलभ स्नेह फूला नहीं समा रहा था, वह खुश था कि पहली बार वयस्क अवस्था में वह उसे इसके बारे में बता सकता था और उनके बीच कोई दीवार न थी, वह माँ की ओर दौड़ना चाहता था, पर उसको कन्धा पकड़कर खींचा जा रहा था, अलग किया जा रहा था, पीछे धक्का दिया जा रहा था। उसे दर्द के साथ झटका लगा और वह जाग पड़ा। भोर के धुँधलके में किसी का पट्टी बँधा सिर, सफेद गोले की तरह उसके ऊपर झूल रहा था।

"क्या चाहिए तुझे?" त्रेत्याकोव ने पूछा और मुँह मोड़ लिया : उसके गाल आँसुओं से गीले थे।

"तू चिल्ला रहा था। कुछ चाहिए तुझे?"

"नहीं, कुछ नहीं चाहिए मुझे।"

उसे दुख हो रहा था कि उसे जगा दिया गया। काफी देर तक यूँ ही लेटा रहा। भोर हो रहा था। तम्बू में चहल-पहल शुरू हो गयी। मेडिकल अर्दली जल्दी-जल्दी घायलों को गर्म चाय पिलाने, उनकी पट्टियों की जाँच करने, उन्हें ठीक करने लगे। कई बार उत्तेजित डाक्टर ने वहाँ झाँका। कोई तैयारी हो रही थी। शायद उन्हें पिछवाड़े भेजा जानेवाला था।

जब पर्दे को उठाये जाने पर बाहर सब कुछ ओस से ढका मालूम होता था। शीतल सूर्य उदित होकर वन-प्रांतर के ऊपर लटका हुआ था। घायल फौजी पास ही में कहीं हो रही लड़ाई की गर्जना को कान लगाकर सुन रहे थे, बरसातियों से ढकी पुआल पर लेटे हुए बेचैनी से करवटें बदल रहे थे।

त्रेत्याकोव के पास ही पट्टियों से लिपटा, टैंकभेदी तोपों की बैटरी का कमाण्डर बैठा था। कोहनियों के ऊपर तक उसके दोनों हाथ कटे थे। जहाँ उसके हाथों के ठूंठों के सिरे थे, वहाँ की पट्टियाँ खून से तर थीं। त्रेत्याकोव को उसके खून की गर्म, इस्पाती गन्ध महसूस हो रही थी! बैटरी-कमाण्डर को पीठ का सहारा देकर उसी की बैटरी का जवान मग से चाय पिला रहा था, वह भी इसी लड़ाई में घायल हुआ था। वह उसके पीछे बैठे किसी व्यक्ति को बता रहा था कि कैसे जर्मन टैंकों ने उन पर हमले किये, और कैसे यह सब हुआ।

"सबसे बड़ी बात तो यह है कि युद्ध से पहले वह दर्जी था," जवान जोर-जोर से बोल रहा था, मानो अब हाथों के बिना बैटरी-कमाण्डर सुन भी नहीं सकता हो, और मग भी ठीक से उसके होंठों पर नहीं लगा रहा था। और वह बैठा, विनीत भाव से प्रतीक्षा कर रहा था। "हाथों के बिना वह कैसे रहेगा? बिना हाथों के तो वह दो जून की रोटी भी न जुटा पायेगा," जवान उसकी उपस्थिति में ऐसे बतियाये जा रहा था मानो वह है ही नहीं।

बैटरी-कमाण्डर के नैन-नक्श कुछ-कुछ काकेशियाई या यहूदी जैसे थे : गरुडीय नाक, बाहर को निकली हुई आँखें, रक्तहीन चेहरे पर ललौंही, झुकी मूँछें। उसका चेहरा त्रेत्याकोव को अपने सौतले बाप की याद दिला रहा था, पर उसके मूँछ नहीं थीं।

झट से तम्बू का चौड़ा पर्दा खुला और कई अफसर एकसाथ अन्दर प्रविष्ट हुए, उनकी लम्बी-लम्बी परछाइयाँ जमीन पर आगे सरकीं। सबसे आगे–सीने पर पदक लगाये कर्नल था। उनके पीछे से डाक्टर भयमिश्रित आँखों से देख रहा था।

"जीते रहो, मेरे जाँबाजों! लड़ाई के समय आप में से कौन सबसे पहले जर्मनों की खाई में कूदा था?"

कुछ समय तक सन्नाटा छाया रहा। कर्नल प्रतीक्षा कर रहा था। घायलों के बीच फुसफुसाहट दौड़ गयी : "डिवीजन-कमाण्डर!" तम्बू के द्वार के पास पुआल पर बैठा, हल्का-सा घायल फुर्तीला जवान उठा, चाहो तो झट ध्वजवाहक बना दो।

"मैं, कामरेड कर्नल!"

डिवीजन-कमाण्डर ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा।

"शाबाश! बहादुर!"

और उसने अपनी गठीली गर्दन पीछे घुमायी ही थी कि सहायक ने डिब्बे से जिसे वह थामे खड़ा था, बड़ा-सा चाँदी का मेडल "साहस के लिए" बढ़ाया। वह रिबन पर झूल रहा था। डिवीजन-कमाण्डर ने खुद अपने हाथों से उसे जवान के सीने पर लगाया।

"तुम इसके योग्य हो! इसे लगाकर शान से घूमो!"

एक और उठा, देखने में तो इतना मुस्तैद नहीं था। कमीज के नीचे, कोहनी पर मुड़ा उसका हाथ पेट से सटा है। खुद झुककर दोहरा हो रहा है।

"मैं भी, कामरेड कर्नल..."

और उसकी कमीज पर भी मेडल लगा दिया गया। फिर किसी को उठने का साहस न हुआ। केवल कोने से किसी ने क्षीण स्वर में पूछा :

"कामरेड कर्नल, स्टेशन कब्जा तो कर लिया है न हमने? क्या नाम है, इस स्टेशन का?..."

"बेशक, कब्जा हो चुका है, उसे कब्जे में ले लिया है जँबाजो! बस, झट से चंगे हो जाओ। हमारे डाक्टर बढ़िया हैं, और सबको, जो समर्थ हैं, फौज में लौटा देंगे!..."

कर्नल उसी तेजी से बाहर निकल गया। बाकी भी झुण्ड बनाकर उसके पीछे-पीछे निकले। सब से अखिर में घायलों को सख्ती से मुड़-मुड़कर देखता हुआ डाक्टर दौड़ा जा रहा था।

अध्याय 10

पटरी के नीचे जमीन अविराम फिसलती जा रही है, इंजन के धुएँ की नीली रेखा टेलीग्राफ के तारों के ऊपर लटकती जा रही है। शारदीय परिधानधारी कुँज घूमते-घूमते अदृश्य हो जाते और फिर से दृष्टिगोचर होते। डिब्बे की चर्र-मर्र, पहियों की ठका-ठक में, हिचकोले खाता वह सो जाता और जब जागता–तो उसी तरह हवा

लुने खेतों पर इंजन के धुएँ की चादर बिछाती जा रही होती, खेत पीछे छूटते जा रहे होते। शरत्कालीन निर्मल नील आकाश की छाया में दूरी पर वन दृष्टिगोचर होता जो धूप में पीला-पीला दीखता।

शायद कहीं उत्तर में हिमपात हो चुका था : डिब्बे के दरवाजे से ठण्ड भीतर आ रही थी। पर यहाँ, जब से वे सफर कर रहे हैं, सूर्य इस शरत्कालीन धरती पर, जहाँ से दो बार युद्ध का बवण्डर गुजर चुका है अपनी अन्तिम उष्मा लुटा रहा था।

उसकी नींद टूटी तो एंबुलेंस गाड़ी मैदान में खड़ी थी। सन्नाटा छाया हुआ था। डिब्बे का दरवाजा खुला हुआ था, वहाँ हवा में बाहर नंगे पैर लटकाकर एक जवान फर्श पर बैठा था, उसने बिरजिस, सूती कमीज पहन रखी थी जिसकी बायीं आस्तीन नदारद थी। हाथ पर बँधी पट्टी को खोलकर, वह अपना छोटे बालोंवाला सिर झुकाये पतली छिपटी से घाव में से कीड़े निकाल रहा था। दूसरा जवान नीचे खड़ा सावधानी से पट्टी लपेट रहा था। एक और बैसाखियों से बिखरती गिट्टी पर किच-किच करता आ गया :

"तुम इन्हें निकाल क्यों रहे हो? ये तो बुरे नहीं होते, घाव को साफ ही करते हैं।"

"तुम्हें मालूम है कि ये पट्टी के अन्दर कितनी गुदगुदी करते हैं!"

गाड़ी से जुड़े इंजन ने हल्की सीटी बजायी। खुले दरवाजे में घायल घुसने लगे, अपनी बैसाखियों को फर्श पर रखकर अन्दर आने लगे, कोई बाहर से हाथों के बल अन्दर कूद रहा था। उसे खींचकर डिब्बे में चढ़ा लिया गया। डिब्बा ठसाठस भरा था।

फिर तटबन्ध के नीचे फैली जमीन फिसलने लगी, तारों पर धुआँ बैठने लगा। खेतों में शान्ति का राज था।

ऊपर की बर्थ से त्रेत्याकोव इस शरत्कालीन सौंदर्य को निहार रहा था, जिसे वह शायद फिर कभी भी न देख पाता। इस बार वह जल्दी ही 'आउट' हो गया, एक लड़ाई भी आखिर तक न लड़ पाया। पर उसका चित्त शान्त था। आखिर कितने लोगों की जरूरत है। युद्ध का तीसरा साल है और एक फौजी का उसमें इतना कम योगदान है?... प्रशिक्षण से पूर्व वह मोर्चे पर साल भर तो रहा, तब वह घायल भी अपनी मूर्खता के कारण ही हुआ था : घायल भी नहीं हुआ बल्कि उसे मामूली चोट लगी थी। हाँ, यह सच है कि उस उत्तर-पश्चिमी मोर्चे का, जहाँ सिर्फ स्थानीय महत्व की लड़ाईयाँ हो रही थीं, इससे क्या मुकाबला। पर मारे तो वहाँ भी जा रहे थे, वहाँ दलदलों में, गीले, कच्छी जंगलों में कितने ही छूटे गये।

इंजन गाड़ी को चढ़ाई पर खींचने लगा, बाहर धुआँ कोयले जैसा काला हो गया। डिब्बे में आती धूप को धुएँ की लहराती छाया ने ढँक दिया। इंजन की गहरी, मानो सुरंग से आती छुक-छुक को चीरता नीचे की बर्थ से किसी का हँसमुख स्वर सुनाई पड़ रहा था। कभी-कभी वह पहियों की ठकाठक, लकड़ी के डिब्बे की चरमराहट से दब जाता। और कभी वह बिल्कुल स्पष्ट सुनाई देता :

"... उन्होंने कमीजें उतार डालीं, उनमें चीलरें भरी थीं!..." उन्हें मेज पर बिछाकर वे आमने-सामने बैठे, अपनी-अपनी कमीज पर उन्हें नाखून से कुचल रहे थे :

'आइन रूस कपूट! त्स्वाई रूस कपूट!..'* उन्हें देखकर हँसी से पेट फूला जा रहा था। वे खुद भी हँस रहे थे।

वही जवान बोल रहा था, जो अभी थोड़ी देर पहले घाव में से छिपटी की मदद से कीड़ों को निकाल रहा था, त्रेत्याकोव ने उसकी आवाज पहचान ली।

चढ़ाई को पार करके इंजन ने मानो साँस छोड़ते हुए लम्बी सीटी बजायी, बर्थ के नीचे से आवाज फिर साफ सुनाई पड़ने लगी :

"...लड़ाई... कोई लड़ाई नहीं हुई! अपने लोग शाम से ही चले गये थे, भण्डार में आग लगाकर, औरतें रात भर जो मिला अपने-अपने घर ले जाती रहीं। सुबह वे फिर आने लगे। मैं दहलीज पर बैठा दूध-रोटी खा रहा था। देखता हूँ—आ रहे हैं साइकिलों पर बैठे। गर्मी तेज थी, सिर्फ जाँघिये पहने आ रहे थे। केवल बूट पहने और नंगी गर्दनों पर सब-मशीनगनें लटकाये—यह हुआ न युद्ध! मैं समझ चुका था, डरकर घर में घुस गया। बाद में छोकरों ने बताया, वे देखने के लिए गये थे : ये गाँव के बाहर बने बँध पर निकले, और नीचे खड्ड में दो लाल-सैनिक गला फाड़-फाड़कर गाते जा रहे थे : दोनों नशे में धुत्त। और उनकी जेबों में एक-एक बोतल ठुसी हुई थी।

उन्होंने फौरन सब-मशीनगनें तान लीं : 'रूस, हेन्डे होख!' और उन्होंने हाथ ऊपर कर लिये।"

हिचकोलों और लकड़ी की चूँ-चूँ के बीच कभी आवाज जोर से सुनाई पड़ती, तो कभी दब जाती, और पता नहीं कब, बहुत खून बह जाने के कारण दुर्बल त्रेत्याकोव को नींद आ गयी।

उसे सपने में दिखाई पड़ा कि वह एक पुल के नीचे है : घास में एक विशाल पत्थर के पीछे छिपकर लेटा है, और पुल पर मोटर-साइकिलों पर सवार जर्मन जा रहे हैं। उसे चरमराहट और मोटरसाइकिलों की फट-फट सुनाई पड़ रही थी, और दिखाई

* 'एक रूसी खत्म! दूसरा रूसी खत्म!' (जर्मन)

दे रहा था कि कैसे, पुल पर बिछे लट्ठे हिल-डुल रहे हैं। जब शान्ति छा गयी तो वह पत्थर के पीछे से झाँका। सामने खड्ड में सूखा नाला और झाड़ियाँ थीं। और अचानक महसूस हुआ—उसने देखा नहीं, बल्कि मोढ़ों, पीठ को जलाती किसी की नजर उसे महसूस हुई। मुड़कर देखा—जर्मन। वह ऊपर खड़ा उसे देख रहा था। बिना टोपी के, पसीने से तर छाती पर वर्दी के बटन खुले हुए, धूल धूसरित बूट में टामीगन की फालतू मैगजीन खुँसी हुई थी। साइकिल से उतरे बिना, सिर्फ उसे अपनी टाँग पर टिकाये हुए, जर्मन खड्ड के ऊपर से देख रहा था कि वह कैसे पुल के नीचे से धूप में बाहर निकल रहा है। उसके मस्तिष्क में यह भयंकर विचार कौंध गया कि अब बचा नहीं जा सकता और वह एकदम निःशक्त हो गया, वह, झुके-झुके ही, ऊपर खड़े जर्मन को ताक रहा था, और मस्तिष्क में लाचारीवश विचार दौड़ने लगा, अभी-अभी तो सब बिल्कुल ठीक था, पर अब कुछ नहीं किया जा सकता, अब कोई गुंजाइश न रही। जर्मन पसीने से नम गर्दन से टामी-गन उतार रहा था, अपनी सफेद पलकें झपका रहा था। अपनी ओर तनी नाल को देखकर उसने महसूस किया कि उसके पैर सुन्न पड़ रहे हैं, वह झटके से हिला, चीखा और खुद अपनी ही चीख से जाग गया।

खून के दवाब से कान बहरे हो गये थे, उसे विश्वास नहीं हो पा रहा था कि वह जीवित है। पता नहीं क्यों सपने में इतना डर लगता है?! युद्ध में उसे एक बार भी इतना डर नहीं लगा जितना कि बाद में सपनों में। और सपने में व्यक्ति सदा होनी के समक्ष अपने को असहाय अनुभव करता है।

कुछ दिन बाद एंबुलेंस गाड़ी के गर्म डिब्बे में, चादरों में लिपटे हुए, स्प्रिंगों पर झूलते हुए उसे खिड़की से क्षण भर के लिए पाले से प्रभावित बाग दिखाई पड़ा, जिसके पेड़ों की पत्तियाँ अभी झड़ी नहीं थीं। उसे यह खूब याद है कि कैसे वे सब अपनी क्लास के साथ स्कूल के बाग मे गये थे—यहाँ तक कि उसे वहाँ ठण्डे शरत्कालीन सेबों की खुशबू महसूस हुई। ओस सिक्त पीली पत्तियों के बिछौने पर पुराने, टेढ़े-मेढ़े पेड़ खड़े थे, उन पर लगे सेब बर्फ की तरह ठण्डे थे, पत्तियों के ढेर से अलाव का कड़वा-सा धुआँ उठ रहा था, हवा उसे सारे बाग मे फैला रही थी।

और जब दिन में काली घटायें घिरी, वर्षा के साथ हिमपात भी होने लगा और अँधेरा छा गया, वे चौकीदार की कुटिया में जमा हो गये, आग की रोशनी में वे अपने ठिठुरे लाल हाथों से मेज पर रखे देग से गर्मा-गर्म उबले आलू निकालकर, नमक लगाकर खा रहे थे।

और मगों में भरा दूध...

यह सब इतना पुराना लगता था मानो पूर्वजन्म की बात हो।

अध्याय 11

यहाँ यूराल प्रदेश में जाड़ा कभी का शुरू हो चुका था। और सुबह के वक्त वार्ड की छत बर्फ की चौंध से उजली-सफेद हो जाती। गीले शीशे पर, जिन पर जमी बर्फ पिघलने लगती सूर्य की किरणें चमचमा जातीं। एक दिन घायलों ने खिड़की की सील तोड़कर उसे खोल दिया और सब वहाँ जमा हो गये। वे तालियाँ बजा रहे थे, चिल्ला रहे थे और बैसाखियों से खिड़की के दासे पर मढ़े टीन को पीट रहे थे :

''विदाई का गीत सुनाओ!''

नीचे, आँगन में, भूतपूर्व स्कूल की ओर अब सैनिक अस्पताल की धूप से गर्म ईंट की दीवार के पास स्कूल का तंत्री-वाद्य आर्केस्ट्रा उन लोगों के लिए धुन बजा रहा था, जो फिर से मोर्चे पर जा रहे थे।

''विदाई का गीत सुनाओ!'' खिड़की से लोग चिल्ला रहे थे।

त्रेत्याकोव अभी चल-फिर नहीं सकता था, पर वार्ड के दूसरे छोर में भी उसे साफ-साफ सुनाई दे रहा था, कि आँगन में कई मेंडोलिनों और बालालाइकाओं के तारों की झँकार हुई और लोगों की पसन्द की धुन बज उठी। और एक जवान, हँसमुख स्वर तुषार में जोर-जोर से गाने लगा :

ऊबो नहीं, घुलो मत गम में
चुम्बन भेजो, घर, चौखट से...

अन्धा कैप्टन रोजयमान चारपाइयों के सिरहाने का सहारा लेता, स्टूलों को लुढ़काता, प्रकाश को महसूस करता खिड़की की ओर बढ़ रहा था।

कितना चौड़ा, कितना उजला
जो उभरा, देखो, इस पथ को...

नीचे, एक के बाद एक तीन बार इसी गाने को दोहराया गया। घायल कोई दूसरा गाना सुनने को तैयार ही नहीं थे : यह पसन्द आ गया और बार-बार इसे ही सुनाने की माँग कर रहे थे। और फिर तारों की झँकार होती, और अपने यौवन, समृद्धि और शक्ति के हर्ष से ओत-प्रोत किशोरी का स्पष्ट स्वर सभी अन्य स्वरों को दबाता बुलन्द गूँजने लगता :

ऊबो नहीं, घुलो मत गम में...

वार्ड में नर्से दौड़ती आयीं, उन्होंने खिड़की बन्द कर दी, घायलों को बिस्तरों पर लिटा दिया :

"पागल हो गये हो! बाहर पाला पड़ रहा है, क्या निमोनिया चाहते हो?"

उसी दिन नकली टाँग का सहारा लेते हुए लँगड़ा अर्दली आया। कभी वह भी यहाँ उपचार के लिए लाया गया था, जब छुट्टी मिली तो कहाँ जाये : उसका घर और आस-पास का सारा क्षेत्र जर्मनों के कब्जे में था; बस इसी तरह अस्पताल में ही रह गया। उसने कीलें ठोककर खिड़की को जड़ दिया ताकि वसन्त आने से पहले न खोली जा सके : गर्मी को बाहर न निकलने देने का यहाँ पूरा ख्याल रखा जाता था। पर शाम तक वह धुन वार्ड में गूँजती रही : एक भूल जाता, तो दूसरा गुनगुनाने लगता, चलते-फिरते खुद मुस्कराता। और एक कोने में अपने बिस्तर पर आलथी-पालथी मारकर गोशा, सेकेण्ड लेफ्टिनेण्ट, बैठा था। वह ताश की गड्डी हिला-हिलाकर तीन पत्ती का खेल खेलने को बुला रहा था।

उसकी उम्र लगभग उतनी ही थी, जितनी इन स्कूली छात्रों की, अपने जीवन में बस वह मोर्चे तक ही जा पाया था। वहाँ उनकी गाड़ी बमवर्षा मे फँस गयी, भीतरी घाव के साथ उसे अस्पताल ले जाया गया। पर वह फिर मोर्चे पर भाग गया, और इस बार वह बमवर्षा में नहीं बल्कि गोलाबारी में फँस गया। उसे अस्पताल में ही होश आया। डाक्टरों का कहना था कि उसका पुराना भीतरी घाव फिर हरा हो गया है। और यह भी हो सकता है कि फिर से भीतरी घाव लगा। खुद गोशा ने कभी ढंग से अपना किस्सा सुनाया नहीं : हर बार भावोत्तेजित हो जाता, ऐसे हकलाने लगता कि एक शब्द भी न बोल पाता, सिर्फ इस तरह काँपने लगता मानो सुबकियाँ ही ले रहा हो।

हर रोज वह सुबह से ताश की गड्डी लेकर अपने पलंग के बीचों-बीच बैठ जाता : प्रतीक्षा करता कि कोई उसके साथ तीन पत्ती खेले। और तब दूर तक उसका भविष्य देखा जा सकता था। इसी लिए डाक्टर गोशा को छुट्टी देने में जल्दी नहीं कर रहे थे।

पर उसे देखकर पता चलता था कि लड़का बहादुर है और कुछ कर दिखाने की लालसा ही उसे मोर्चे पर खींच लायी है, पर बेचारे की किस्मत में कुछ कर दिखाने का मौका ही नहीं मिला और न उसे सम्मान के साथ वीरगति पाना ही बदा था।

हर शुक्रवार को इन्फैंट्री स्कूल के कैडेटों को अस्पताल के पास से हम्माम के लिए ले जाया जाता। हम्माम से वे गाना गाते लौटते। लहराती पाँतों के ऊपर, भूरे ग्रेटकोटों में छिपी पीठों, झाँपों का काम देनेवाली पत्तीदार टहनियों के गुच्छों से उड़ती भाप के

ऊपर प्रमुख गायक का पाले में भंगुर, क्षीण स्वर काँप रहा था :

जहाँ नहीं जा पाये प्यादा
कवचित गाड़ी जहाँ न जाये,
जहाँ भयंकर टैंक न पहुँचे...

बर्फ पर बूट किच-किच कर रहे थे। कतारों में शान्ति छायी थी। और उन कतारों के बीच प्रमुख गायक का अकेला स्वर गूँज रहा था, उसके लिए डर-सा लगता था : साँस अब फूला, अब फूला, तान अब टूटी, अब टूटी। पर वह पूरा जोर लगाकर गीत की अन्तिम पंक्ति खींच रहा था।

इस्पाती पक्षी उड़ पाये...

और पदचापों को दबाते, मानो उन्हें काटते, कैडेटों के बाँके स्वर इस गीत में जोड़ गये, किसी कवि के छन्द को गला फाड़-फाड़कर गा रहे थे :

विदा, विदा, प्यारी, मैं तेरा
प्यार न यह तो भूला सकूँगा
इन सुन्दर, नीली आँखों को
शायद कभी न देख सकूँगा

और फिर पाले में नालदार बूटों की ठक-ठक, किच-किच सुनाई पड़ती, मुँहों से भाप निकलती, कनटोपों के ऊपर भाप उड़ती। और बर्फ से ढकी चौड़ी सड़क वीरान है, बन्द फाटकों के पास बर्फ के ढेर जमा हैं, चिमनियों से जलती लकड़ी का सफेद धुआँ उठ रहा है, और खिड़कियों से उन्हें गाते, मार्च करते देखनेवाला तो कोई है ही नहीं : युद्धकाल है, जो मोर्चे पर नहीं है, वह मोर्चे के लिए बारह-बारह घण्टे काम करता है। बस सिर पर रूमाल बाँधे, किसी बुढ़िया का चेहरा खिड़की के शीशे से सट जाता, बदरंग, क्षीण आँखें उन्हें जाते देखतीं।

जिस्म ठण्ड से गला जा रहा है, कैडेट जल्दी-जल्दी चल रहे हैं। जाहिर है कि इस समय ग्रेटकोट से नहीं बल्कि गीत और कदमों की खर-खर, किच-किच से गर्मी मिल रही है। पाँतों के पीछे-पीछे गोरैयों की तरह बच्चे फुदकते चले रहे हैं, बगल से देखने के लिए आगे दौड़ते हैं, वे कदम से कदम मिलाकर चलना चाहते हैं, मानो वे स्वयं को भूतकाल में देख रहे हों।

आधे महीने बाद, जब वह कुछ तन्दुरुस्त हो गया, त्रेत्याकोव का एक और आपरेशन किया गया : बाँह में से गोले के बारीक टुकड़े निकाल दिये गये, नस को

सीकर उसे सेलोफेन में लपेट दिया गया। "हमने इसे टॉफी की तरह लपेट दिया है," सर्जन ने कहा।

आपरेशन सिर्फ शल्य-क्रिया के स्थान को सुन्न करके किया गया था, और रात के लिए, जब असली दर्द शुरू होना था, नर्स के पास उसके लिए मार्फिया का एक इंजेक्शन छोड़ दिया गया था। लगभग सवेरे तक वह गलियारे में टहलता रहा पर इंजेक्शन नहीं लगाने दिया। उनके अफसरों वाले वार्ड में एक सीनियर लेफ्टिनेण्ट था, वह भी तोपखाने का ही था, विस्फोटक गोलियों से उसके हाथों की हड्डियाँ चकनाचूर हो गयी थीं। जब उसे घायलों को जमा करनेवाली गाड़ी और बाद में एम्बुलेंस रेलगाड़ी द्वारा लाया जा रहा था, उसे मार्फिया के इंजेक्शन लगाये जाते रहे ताकि वह खुद भी सोये और दूसरों को भी सोने दे। अब वह नर्सों से मार्फिया माँगता, अदला-बदली करता, झूठ बोलता, गिड़गिड़ाकर याचना करता। त्रेत्याकोव यह सब जी भरकर देख चुका था, इसलिए उसने फैसला किया कि इस तरह का आदमी बनने से तो दर्द को सह लेना ही भला है, हालाँकि नर्सें उसकी हँसी उड़ाती हुई कह रही थीं कि एक इंजेक्शन से कोई मार्फियाखोर नहीं बनता है।

सुबह होने से कुछ देर पहले उन्होंने दया करके उसे स्पिरिट का आधा गिलास दे दिया, उसे पीकर वह लेट गया, सिर को तकिये से ढककर अचेत सो गया। सपने में उसे लगा कि स्वर सुनाई पड़ रहा है, उसी लड़की का स्वर जो आँगन में गा रही थी।

ऊबो नहीं, घुलो मत गम में...

उसे सुनकर बड़ा अच्छा लग रहा था कि कैसे यह लड़की उसके ऊपर झुकी बोल रही थी, और उसे जाग पड़ने का भी डर लग रहा था। जब वह जागा तो वह समझ न पा रहा था कि वह नींद में है या नहीं : स्वर सुनाई पड़ रहा था, लुप्त न हुआ। उसने सावधानी से तकिया हटाया। वार्ड में बर्फ का उज्जवल प्रकाश भरा हुआ था, खिड़की के बाहर हिमाच्छादित टहनियाँ झूल रही थीं। ऐसी स्पष्टता व्याप्त थी जो निद्राविहीन रात्रि के बाद होती है। और दो पलंगों के पार, उसकी ओर पीठ किये सफेद चोगा पहने लड़की बैठी थी, जिसकी चोटियाँ स्टूल तक लटक रही थीं। उसके पैरों में मोटे सिले हुए नमदे के सलेटी फौजी बूट थे। लड़की की चोटियाँ हिलीं, उसने सिर मोड़ा क्षण भर के लिए उसे उत्तेजना से चमकती उसकी आँख दिखाई पड़ी।

उस शैय्या पर, जिसके पास वह बैठी थी—"लाली पताका" पदकवाला कैप्टन था। उनके वार्ड में सिर्फ वही अकेला था जो अपने पदक को तकिये के नीचे नहीं

रखता था, बल्कि गाउन के नीचे बनियान पर लगाये घूमता रहता था। वह अपनी जवानी को पार कर चुका था और गम्भीर रूप में घायल था : मार्टर के गोले का टुकड़ा उसके भेजे में अटक गया था। डाक्टरों से पता चला था कि वह पूरा जीवन भी इस टुकड़े के साथ बिता सकता है, पर किसी भी क्षण उसकी अचानक मृत्यु हो जाने की भी आशंका है। उसको कभी-कभी सिर-दर्द के ऐसे दौरे पड़ते कि वह चूने की तरह सफेद होकर पीठ के बल सीधा लेट जाता।

वार्ड में डोमिनो की गोटियों की खट-खट हो रही थी, खाने की मेज पर खेल चल रहा था। अन्धा कैप्टन रोयजमान फर्श पर जूते घसीटते हुए पलंगों से टकराता चल रहा था। लड़की धीरे-धीरे बोल रही थी, त्रेत्याकोव को स्पष्ट सुनाई नहीं पड़ रहा था :

"खुद को माफ नहीं कर सकती... बिल्कुल नहीं समझती थी... और बहुत व्यग्र था। 'तू क्या भूल गयी?' तब मैं समझी कि उसके पास तो सिर्फ आधे घण्टे का समय बाकी है...एक के बाद एक सिगरेट पिये जा रहा था... कहना चाहता था... जब दौड़कर पहुँची तो हमारे सब लोग कब के प्लेटफार्म पर जमा हो चुके थे..."

त्रेत्याकोव को उसकी आवाज से लगा कि वह उसकी ओर मुड़ी।

"वह सो रहा है," कैप्टन ने कहा। "कल शाम उसका आपरेशन हुआ है।"

और उसे अचानक बहुत बुरा लगा कि उसने उसके बारे में कुछ पूछा तक नहीं, कि वह उसकी बातचीत के लिए सिर्फ बाधा मात्र है।

पलंग को तेज धक्का लगा : यह रोजयमान उससे टकराया था। फिर से कदमों की घिस-घिस दूर जाती सुनाई पड़ी। वह धीरे-धीरे बोलने लगी :

"और बाद में, जब सीटी और भोंपू बजा, माँ बेतहाशा उसे चूमने लगीं। कसे वह उसे चूम रही थी। गर्दन, गुद्दी, सिर को... मुझे सिर्फ तभी महसूस हुआ, तभी मैं समझी कि यह क्या है। उसके आने से मुझे अच्छा लग रहा था, और मेरे खुले बाल कन्धों पर लहरा रहे थे। पर वह मरने के लिए जा रहा था।"

त्रेत्याकोव को उसका मुँह देखने की इच्छा हो रही थी, पर उसे चोगे पर लटकी चोटियाँ और स्टूल के नीचे नमदे के बड़े सलेटी बूट ही दिखाई दे रहे थे। अचानक उसे याद आया कि उसने ये बूट पहले कहीं देखे थे। उनकी एम्बुलेंस गाड़ी प्लेटफार्म पर खड़ी थी। जो घायल उठ नहीं सकते थे उन्हें स्ट्रेचरों पर लिटाकर उतारा जा रहा था और जो चल-फिर सकते थे उन्हें सहारा देकर परिचारक बाहर ले जा रहे थे। जब उसे पायदान से उतारा जा रहा था, डिब्बे के नीचे से दो लोग बाहर निकले : शाल में लिपटी हुई लड़की—पाला कड़ाके का पड़ रहा था—और लड़का, काला, चमड़े का कनटोप पहने था। वे मुड़-मुड़कर देख रहे थे कि कहीं किसी ने उन्हें देखा तो नहीं,

दोनों खुश थे, सुखी लग रहे थे, और उनके पास धुआँ छोड़ते अधजले कोयले की पूरी बाल्टी थी : उन्होंने पटरियों पर उसे जमा किया था। और उसने लड़की के पैरों में ऐसे ही बड़े नमदे के फौजी बूटों को देखा था। क्या पता, यह वही लड़की हो?

"लड़को," रोयजमान ने आवाज दी। सलेटी फलालेन के गाउन की आस्तीन नीचे खिसक गयी—हाथ उठाकर वह खिड़की के किनारे को टटोल रहा था। "यह खिड़की है न?"

डोमिनो की गोटियों की खट-खट बन्द हो गयी। प्रकाश की पृष्ठभूमि में काली छाया की तरह खड़ा रोयजमान शीशे को छू रहा था, खिड़की के चौखटे को टटोल रहा था। उसकी आँखें, पूर्णरूप से अक्षत, हैरानी से वार्ड में नजरें दौड़ा रही थीं, शून्य में झाँक रही थीं।

"रोशनी दिखाई देने लगी है। यह... यह रही..."

और काँपते हाथ से वह शीशे से छनकर आते प्रकाश को पकड़ रहा था।

अध्याय 12

मरहम-पट्टी के कमरे के पास के बरामदे से, जहाँ खिड़की के शीशों से ठण्ड अन्दर आ रही थी, दूरी पर रेल की पटरियाँ, स्टेशन, पाले से ढकी उसकी खिड़कियाँ दिखाई देती थीं। एक समय वह फाटक जैसी बड़ी खिड़कियों को देखकर अपने भोलेपन के कारण सोचता था कि उन्हीं में से रात को बचपन की कवितावाला इंजन टहलने के लिए बाहर निकला था : "फौलादी छाती से द्वार ढकेलकर निकला वह बाहर, बाहर थी निर्जनता, अँगीठी से स्टूल सटाकर स्टिमैन भी था सोया..."

तब उसकी उम्र करीब-चार साल की रही होगी, और पिता उसके साथ थे। पिता ने उसे कहा कि वह सोये नहीं, सामान की चौकीदार करे, और वह खुद माँ के साथ कहीं चले गये। वह यही सोये पड़े लोगों के बीच सूटकेस पर बैठा था, और उसे लग रहा था कि कोने में अँगीठी के पास बैठा स्टिचमैन ऊँघने लगा और इंजन ने खिड़की को अपनी फौलादी छाती से आ ढकेला...

पिता लौटकर आये, सामान उठाया और बेटे का हाथ पकड़कर चल पड़े। वे एक बड़े हाल में पहुँचे। यहाँ बिजली के प्रकाश में सब कुछ जगमगा रहा था, बहुत से लोग मेजपोशों से ढकी मेजों पर बैठे गप-शप कर रहे थे, सिगरेटों का धुआँ छत की ओर उठ रहा था। इस शोर-शराबे व भीड़भाड़ बीच उसकी माँ मेज पर अकेली बैठीं, उनकी प्रतीक्षा कर रही थीं। सब कुछ अनदेखा-सा था, वैसा नहीं जैसा घर पर था।

पहली बार वे इतनी रात में खाना खा रहे थे। खाना माँ नहीं परोस रही थीं, हाथ पर तौलिया लटकाये एक व्यक्ति आया, पिताजी उसे आर्डर देने लगे, वह सब लिखता जा रहा था और बहुत खुश नजर आ रहा था। वह इस बात से चकित रह गया था कि यहाँ कितनी जल्दी खाना पकता है। कभी-कभी ऐसा भी होता था कि माँ को आधा-आधा दिन रसोई में ही रहकर खाना पकाना पड़ता था, और यह आदमी झट से गया और फौरन सब कुछ बनाकर ले आया।

बाद में वे छकड़े में बैठकर सफर कर रहे थे, लगता था कि तारे बिल्कुल चेहरे के पास लटककर झूल रहे हैं। संसार असीम था। ब्रह्माण्ड, सुदूर जगत तो क्या हैं!.. केवल एक जगत ही असीम है—वह है बचपन। और इस जगत में अमर लोग रहते थे : वह, उसकी माँ, पिताजी। और हाँ, ल्यालका! लेकिन वह तो जन्मी ही न थी।

जब पाले में इस तरह बर्फ की आँधी चलती, वह हर बार पिता के बारे में सोचता। माँ ने पिताजी को अन्तिम पार्सल युद्ध शुरू होने के कुछ समय पहले ही भेजा था, और पिता का अन्तिम पत्र वहाँ से और भी पहले आया था।

जब पिताजी—वहाँ हैं, और माँ का दूसरा पति है। पिताजी के अलावा भला कोई और दूसरा व्यक्ति माँ का पति हो सकता है। माँ को इसके लिए वह क्षमा नहीं कर सकता था। और वह यह नहीं सह पाता कि कैसे वह बेजाइत्स का ख्याल रखतीं, कैसे वह उसे कभी-कभी टुकुर-टुकुर देखतीं। वह अवचेतन अवस्था में माँ के पति में सबसे अप्रिय दोष ढूँढ़ता और कभी भी उसने उसे सिवाय इसके : "आपका टेलीफोन है... आपकी वहाँ चिट्ठी है..." बस, इतना ही नाता था। पर अक्सर वह ल्यालका की मध्यस्थता से ही मामूली सम्पर्क रखता था : "उसे बुला रहे हैं, जा कह दे उसे..."

ल्यालका, नन्हीं नासमझ थी, वह बेजाइत्स से भी हिल गयी थी और पिताजी की भी उसे याद थी। एक बार उसने देखा था कि कैसे वह पिता जी के फोटो को बिस्कुट का चूरा खिला रही थी : पलंग के पीछे फर्श पर बैठी, कुछ फुसफुसा रही थी और बिस्कुट का चूरा पिताजी के होंठों पर लगा रही थी।

तीनों में से सिर्फ उसी ने पिताजी का कुलनाम—त्रेत्याकोव—नहीं बदला था। पिताजी के सभी फोटो, वे भी जिनमें माँ उनके साथ थी, उसने चुरा लिये थे। अब वे संब—सैनिक स्कूल में मिले ल्यालका के पत्र, माँ की चिट्ठियाँ वगैरह फौजी बस्ते के साथ बैटरी की फायरिंग पोजीशन पर सार्जेंट-मेजर की वैन में ही छूट गये। उसे अपने साथ ले जाते समय उसने सोचा भी था : "पर मैं तो रेजिमेण्ट में वापस

आऊँगा ही..." जैसे युद्ध में पहले से ही कोई अन्दाजा लगाया जा सकता है।

बरामदे में एक खिड़की से दूसरी के पास लँगड़ा अर्दली जा रहा था। खड़ा होकर कुछ मापता और मूँछों से ढके मुँह में से कील निकालता, धीरे से ठक-ठक करते हुए उसे खिड़की के दासे में एक तरफ से ठोक देता। फिर खड़ा होकर देखता,–और कील पर बोतल टाँग देता। फिर अकड़ी उँगलियों से धुली पट्टी को मसल-मसलकर खिड़की के दासे पर देर तक बत्ती बिछाता, ताकि शीशे पर पिछलती बर्फ का पानी फर्श पर न रहे बल्कि बत्ती के सहारे बोतल में जमा हो। जितना उससे हो सकता था वह लड़ लिया, अब युद्ध की समाप्ति तक इस तरह का काम उसके लिए काफी है।

कभी माँ भी सर्दियों में इसी तरह खिड़कियों के दासों पर बोतलें टाँगती थीं। सुबह तक शीशे ऊपर तक बर्फ से जम जाते थे, कभी-कभी वह हथेलियों में पाँच कोपेक का बड़ा, ताम्बे को सिक्का गर्म करके जमी बर्फ पर चिपका देता। फिर सिक्के को गर्म करके दूसरी तरफ से चिपका देता–एक चित और एक पट। फिर सूरज की गर्मी पाकर जमी बर्फ के सिक्के पिघलने लगते, शीशे पर बहने लगते। देखते-देखते वे लुप्त हो जातें अब यह सब सपना हो गया। बस, स्मृतियाँ ही शेष रह गयी हैं।

अचानक उसे याद हो आया : शरद ऋतु है, वह खिड़की के पास कक्षा में बैठा है, दूसरी मंजिल से बाहर देख रहा है। वहाँ आयल मिल की ओर जानेवाली रेल की छोटी पटरी है, और पटरी के किनारे-किनारे सूरजमुखी के बीजों का विशाल ढेर लगा है। उस पर रूईभरे गर्म कोट पहने लड़के-लड़कियाँ लेटे हैं, ठण्डे सूरज की ओर मुँह करके धूप सेंक रहे हैं। केबिन की खिड़की में खड़ा, मानो फ्रेम में जड़ा, इंजन-ड्राइवर पास से गुजरते हुए उन्हें देख रहा है। उसने डोरी खींची, सीटी से सफेद भाप का फौव्वारा छूटा। और बच्चे जैसे नींद से जाग गये हों, रूईभरी आस्तीनों को पकड़कर हँसते-खिल-खिलाते हुए एक दूसरे पर लुढ़कने लगे... यह सब अब बीते जमाने की बात हो गयी है। वे दिन अब वापस न लौटेंगें। हो सकता है कि उनमें से अब कोई भी जीवित न रहा हो : न वे लड़के, न वह इंजन-ड्राइवर...

अचानक स्टेशन के दरवाजों से प्लेटफार्म पर भीड़ उमड़ पड़ी, सबके चेहरे आँखों तक कपड़ों से ढँके हुए थे। पाला कड़ाके का पड़ रहा था, सब कुछ धूसर था : हवा भी और बर्फ भी... सिर्फ शीशों पर जमी बर्फ ललौंही चमक रही थी। अगर समय मालूम न हो तो अनुमान लगाना मुश्किल हो जाता है कि सूर्यास्त हो रहा है या सूर्योदय : पिघलता-पिघलता-सा सूरज धूसर कोहरे से धूमिल, बिना किरणों के चमक रहा था।

भाप में लिपटी रेलगाड़ी प्लेटफार्म पर पहुँची। डिब्बों की छतों पर पाला बिछा है,

छत से हिमशंकु लटके हुए हैं, खिड़कियों पर सफेद बर्फ जमी हुई है। और मानो वही अपने साथ हवा को लायी हो, स्टेशन की छत से बर्फ उड़ने लगी, वात्यचक्र घूमने लगा। बर्फ के बवण्डर और उड़ती भाप के सैलाब में लोग रेलगाड़ी के एक दरवाजे से दूसरे की ओर इधर-उधर दौड़ रहे थे। हर बार वे इसी तरह सामान के साथ, बच्चों के साथ दौड़ते, पर सभी दरवाजे बन्द रहते, एक भी डिब्बे में उन्हें न घुसने दिया जाता।

पास खड़ा अर्दली भी देख रहा था। उसने सावधानी से अपनी हथेली पर कीलें थूक दीं।

"उस हिटलर को यहाँ हाजिर किया जाये! खुद तो वह गरम जगह पर बैठा है। और लोगों को ऐसी कठिनाइयाँ झेलनी पड़ रही हैं... वह भी बाल-बच्चों के साथ..."

और वह ठिठुरकर दुबक गया, मानो उसे भी यहाँ पाला काट रहा हो। त्रेत्याकोव को ये बातें मूर्खतापूर्ण लगीं। अर्दली पर गुस्सा उतारते हुए उसने कहा :

"तो तुम्हारा विचार है कि किसी हिटलरी की मर्जी हुई और युद्ध शुरू हो गया? उसकी मर्जी हुई–खत्म हो गया?"

और यह कहते हुए वह रौब से तन गया।

अर्दली का चेहरा एकदम बुझ गया।

"मर्जी मेरी थोड़े ही थी," वह दूसरी खिड़की की ओर बढ़ते हुए बड़बड़ाया। "या मुझे अपनी एक टाँग फालतू लग रही थी?"

त्रेत्याकोव ने उसे जाते हुए देखा, उसके एक बूट को और लकड़ी की टाँग को। उसे क्या समझाये? कटी टाँग को न जोड़ा जा सकता है, न ही उसे समझाया जा सकता है। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि अब वह खुद अपने को भी सब कुछ नहीं समझा पाता था। हाँ, स्कूल में ऐसे प्रश्नों पर उसे अच्छे नम्बर मिलते थे। वह बेखूबी उत्तर देता था कि युद्ध क्यों और कैसे होते हैं। और निश्चित परिस्थितियों में उनकी अवश्यम्भाविता को भी सरलता से समझाया जा सकता था। पर जो कुछ उसने इन वर्षों में देखा, उनकी आसानी से व्याख्या नहीं की जा सकती थी। आखिर कितनी बार इतिहास में ऐसा हो चुका है–युद्ध समाप्त होते और वे जन-गण, जो अभी कुछ समय पहले तक एक दूसरे का ऐसी उन्मत्तता से संहार कर रहे थे मानो इस पृथ्वी पर उनके लिए साथ रहने का स्थान ही न हो, ये ही जनगण बाद में आपस में बड़ी शान्ति से रहते और एक दूसरे के प्रति घृणा का कोई भाव न रखते। क्या लाखों-करोड़ों का खून बहाये बिना इस मंजिल पर पहुँचने का कोई दूसरा रास्ता नहीं है?

किसी के लिए नहीं, बल्कि स्वयं मानव जीवन के लिए इसकी क्या आवश्यकता है कि लोग बटालियनें, रेजिमेण्टें, कम्पनियाँ बनाकर रेलों में लदकर, रास्ते में भूख और कठिनाइयों को सहते हुए जल्दी-जल्दी, ताबड़-तोड़ जायें, पैदल दौड़ते-दौड़ते कूच करें, और फिर यही लोग मशीनगनों से छलनी होकर, विस्फोटों से चिथड़े-चिथड़े होकर सारे युद्ध क्षेत्र में फैले पड़े रहें और न उन्हें वहाँ से हटाया जा सके, न ही दफनाया जा सके?

यह स्पष्ट है कि हम हमले का सामना कर रहे हैं। युद्ध हमने नहीं छेड़ा, खुद जर्मन हमलावर हमारी भूमि पर आये—हमें नेस्तनाबूद करने। पर उन्होंने हमला क्यों किया? शान्तिपूर्ण जीवन में अचानक यह खलल। हमें नष्ट किये बिना उन्हें अपना जीवन असम्भव लगने लगा? अगर सिर्फ आदेश का पालन ही करते तो बात दूसरी थी पर वे तो दृढ़ता से लड़ रहे हैं। क्या फासिस्टों ने उनमें विश्वास भरा है? आखिर यह विश्वास है कैसा? किस सिद्धान्त में विश्वास है?

घास पैदा होती है और उसका सूखना अवश्यम्भावी होता है, और सूखी घास से उर्वर बनी भूमि पर और भी घनी घास उगती है। परन्तु मानव धरती पर इसलिए तो नहीं जीता है कि अपनी देह से भूमि का उर्वर बनाये। और जीवन को इसकी क्या आवश्यकता है कि इतने सारे विकलाँग लोग अस्पतालों में यत्रंणाएँ सहें?

निःसन्देह, कोई एक व्यक्ति अपनी इच्छानुसार सृष्टि को नहीं चलाता है। पर जो न समझ में आये उसे कुछ यूँ समझने में आसानी होती है : या तो जो कुछ हो रहा है वह उन पर निर्भर नहीं करता, या कोई अकेला, जिसे वह ज्ञान प्राप्त है जो सामान्य नश्वरों की समझ के परे है, उसका दिशा-निर्देशन करता है पर यह सब इस तरह, इस प्रकार नहीं होता। ऐसा भी होता है कि मानव के सभी संयुक्त प्रयास भी इतिहास को इस मार्ग पर, न कि दूसरे मार्ग पर चलाने में असमर्थ होते हैं।

युद्ध से पहले एक बात पढ़ी थी जिसने उसे आश्चर्यचकित कर दिया था : पता चला कि चंगेज खाँ की चढाई से पहले के कई वर्ष विशेष रूप से अनुकूल रहे। समय पर वर्षा होती, अपूर्व रूप से घनी घास उगती, घोड़ों के बेशुमार झुण्ड विचरते, और इन सभी कारकों ने मिलकर चढ़ाई को शक्ति प्रदान की। सम्भव है कि अगर इस क्षेत्र पर कई वर्षों तक सूखा पड़ता, और इतनी अनुकूल परिस्थितियाँ न होती, तो दूसरे क्षेत्रों में रहनेवाले जन-गण के सिर पर इतनी भयंकर मुसीबतें भी न पड़तीं। और बहुत से जन-गण का इतिहास बिल्कुल भिन्न हुआ होता।

मोर्चे पर सैनिक लड़ता है, और किसी अन्य चीज के लिए उसमें शक्ति नहीं रहती। सिगरेट पीने से पूर्व यह मालूम नहीं होता कि उसे पीना भाग्य में बदा भी

है या नहीं : तुम आराम से बैठकर पीना चाहते हो, पर गोला आया—और पी ली जी भरकर... पर यहाँ, अस्पताल में एक ही विचार सताता रहता था : क्या सचमुच एक दिन पता चलेगा कि यह न भी हो सकता था? कि लोगों में इसको न होने देने का सामर्थ्य था? और लाखों-करोड़ों जीवित बच जाते... इतिहास को उसके मार्ग पर चलाने के लिए सभी के प्रयासों की आवश्यकता है और बहुत-सी बातों का भी मेल होना चाहिए। पर, इतिहास के पहिये को पटरी से उतारने के लिए, शायद, इतने अधिक की आवश्यकता नहीं, हो सकता है कि एक कंकड़ ही काफी हो?

और जब वह उतरकर लोगों, उनकी हड्डियों पर कड़र-कड़र लुढ़कने लगा, तो कोई और चारा नहीं रहा, सिर्फ एक : रोको, उसे लोगों के जीवन को और कुचलने न दो। पर वास्तव में क्या यह न भी हो सकता था? अर्दली ने वही कहा, जो वह सोचता था, और उसके मन में फिर से उथल-पुथल होने लगी। परन्तु अब इसकी कोई आवश्यकता नहीं। न इसका समय है, न आवश्यकता। सिर्फ यही एक ऐसी चीज है जिसे किसी दूसरे पर नहीं लादा जा सकता। परन्तु सोचने से तो अपने को मना नहीं किया जा सकता, हालाँकि इसका लाभ ही क्या है।

लोग घटनाओं की व्यापकता के आधार पर उनके कारणों के बारे में कोई निर्णय लेते हैं : यदि घटना व्यापक है, तो उसके कारण ऐसे हैं कि यह घटना घटित हुए बिना नहीं रह सकती थी। पर यह भी तो हो सकता है कि सब कुछ बहुत सरल हो? सभी की भलाई के लिए बहुत कुछ करने की आवश्यकता पड़ती है। पर इतिहास को तो मरियल से मरियल बिल्ली तक बिगाड़ने में समर्थ है।

हरेक अपनी खिड़की से—अर्दली भी और वह भी—देख रहे थे कि यात्रियों को प्लेटफार्म पर छोड़कर रेलगाड़ी आगे चल पड़ी। पिछला डिब्बा इधर-उधर झूलता जा रहा था, मानो उस स्थान पर रेलगाड़ी की पूँछ कट गयी हो। पीछे-पीछे दौड़ता बर्फ का बवंडर रास्ते में सब कुछ बुहारता जा रहा था।

फिर भी, इस गुत्थी में चाहे जितना धागा उलझा हो, हरेक व्यक्ति का उसमें अपना स्थान है, अपना सत्य और अपना दोष है। इस गुत्थी को सुलझाया जा सकता है, हाँ, जरूर सुलझाया जा सकता है। इस पर चाहे सारी जिन्दगी लग जाये तब भी कोई परवाह नहीं। उसे किसी के साथ बात करने की इच्छा हो रही थी। पर किस के साथ? ऐसी बहस हरेक के साथ तो छेड़ी नहीं जा सकती। उसने एक बार स्तारीख के साथ बात छेड़ने का प्रयास किया था, उसने उसे ऐसे घूरकर देखा, मानो उसके शब्दों का अर्थ ही नहीं बल्कि यह भी नहीं समझ पा रहा है कि उससे किस भाषा में बोला जा रहा है :

"क्या... क्या?"

उसका सारा बदन छलनी हो गया था, वह चार बार घायल हो चुका था, और अब अपने दिल को बेकार न जलाने के लिए उसने युद्ध को ऐसे भुला दिया मानो अपना कोई अंग काटकर फेंक दिया हो।

हाँ, अत्राकोवस्की की बात दूसरी है। पर वह हमेशा खामोश रहता है। और त्रेत्याकोव जानता था कि वह चुप इसलिए नहीं रहता कि कहने को कुछ नहीं है बल्कि इसलिए कि जो कुछ वह जानता था, उसे हरेक को पूरी तरह नहीं बताया जा सकता था।

कैप्टन अत्राकोवस्की के पलंग के पास जो चोटियोंवाली लड़की बैठी थी, उसके नमदे के बूटों के निशान फर्श पर दो-एक दिन तक बने रहे। बाद में जमादारिन ने गीले झाड़न से चिकने फर्श पर पोंछा लगा दिया और वह चमकने लगा। त्रेत्याकोव को अब भी मानो दिखाई पड़ रहा था कि कैसे वह अपने नमदे के बूटों में, कमर पर पेटी से कसा सफेद चोगा पहने जा रही थी, कैसे वह दरवाजे तक पहुँचकर मुड़ी थी। संयोग से वह भी उसकी सलेटी आँखों के दृष्टि-क्षेत्र में आया था, पर वह उनमें किसी भी प्रकार प्रतिबिम्बित न हुआ।

वह किसी अस्पष्ट-से कौतूहल के साथ कैप्टन अत्राकोवस्की को देखता। वह बहुत दिनों से यहाँ था, और घातों के कारण पढ़ने या लिखने में असमर्थ लोगों को पुस्तकें पढ़कर सुनाने या उनके लिए पत्र लिखने के लिए अस्पताल में आनेवाले स्कूली बच्चे उसे जानते थे। पर देखो तो वह कितनी खुलकर उसे अपने बारे में बता रही थी! शायद, इसलिए कि वह तो अब बूढ़ा हो गया है?

वार्ड में हमेशा की तरह रात के खाने के बाद समय काटने के लिए शतरंज का खेल चल रहा था। अस्पताल में समय की गति बहुत सुस्त होती है, हरेक विवशता के कारण अपने जीवन का कुछ अंश यहाँ बिताता है : कोई मोर्चे पर फिर से जाने के पहले, और कोई उसके अब से शुरू होनेवाले अज्ञात भविष्य से पहले। पर इस अज्ञात की भी तीव्र उत्कण्ठा रहती है : अस्थिरता की नहीं बल्कि किसी निश्चितता की इच्छा होती है, हालाँकि उनमें से शायद किसी के लिए, यहाँ अस्पताल में जीवन के सुनहरे वर्ष की समाप्ति सदैव के लिए अतीत की बात बनकर रह गयी हो।

शतरंज का खेल कम्पनी-कमाण्डर स्तारीख और अन्धे कैप्टन रोयजमान के बीच चल रहा था। वे सौ से अधिक बाजियाँ खेल चुके थे, फिर भी स्तारीख ने जीतने की आशा नहीं छोड़ी थी। वे मेज पर आमने-सामने बैठे थे, और जो लोग चल-फिर सकते थे वे उनके चारों ओर भीड़ लगाकर खड़े थे। अत्राकोवस्की भी यहीं, हाथ से

अपना गाउन बन्द किये खड़ा था। उसने सावधानी से वार्ड पार किया मानो उसे डर था कि कहीं उसके भीतर दर्द न हिल उठे, और फिर रुक गया, सबके साथ खड़ा होकर देख रहा है, पर किसी कारणवश सब से अलग लगता है। लोगों की बातों से त्रेत्याकोव का मालूम था, कि सन् इकतालीस में अत्राकोवस्की को बन्दी बना लिया गया था, वह कैद से भाग आया, और बहुत समय तक उसकी जाँच होती रही। सन् बयालीस में भी उसे घेरे में पड़ने और वहाँ से बच निकलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस सबके बावजूद उसे 'लाल पताका' पदक से विभूषित किया गया तो इसका अर्थ यह है कि इस आदमी ने बड़ा कारनामा दिखाया है, क्योंकि ऐसे लोगों को पदक आसानी से नहीं मिलते। पर प्राण उसके शरीर में मुश्किल से ही अटके हुए थे, किसी भी दिन उसके जीवन की डोर टूट सकती थी।

जब वे सब बिस्तरों पर लेट चुके थे, तो घायल होने के बारे में बात छिड़ गयी—कौन, कैसे, किन परिस्थितियों में घायल हुआ था, और त्रेत्याकोव को अचानक याद आ गया :

"पर मुझे मालूम था कि मैं उस दिन घायल हो जाऊँगा।"

वास्तव में, जब उसने संयोग से हवा में उड़ते कबूतर को गोली लगते देखा था, तब उसने सोचा था कि या तो वह घायल होगा, या मारा जायेगा। उसे पता नहीं क्यों यह अपशकुन जैसा लगा। पर बाद में लड़ाई के समय वह इसके बारे में भूल गया, और सिर्फ अब उसे इसकी याद आयी।

"आखिर तुम्हें पहले से मालूम कैसे था?" स्तारीख ने पूछा, उसे इस पर कोई खास विश्वास न था।

"बस मालूम था।"

पर उसने अपशकुन के बारे में नहीं बताया, डर था कि कहीं उसकी हँसी न उड़ायें।

"नहीं, पर मैं नहीं जानता था," रोयजमान ने कहा और सिर हिला दिया।

एक बार त्रेत्याकोव ने रोयजमान के स्थान पर अपनी कल्पना की थी, कि कैसे वह चौबीस घण्टे से ऊपर जर्मनों के कब्जे में आये गाँव में अन्धा पड़ा था, अपने चारों ओर जर्मन बोली सुनते और हर पल इसका इंतजार करते कि अब तुम्हें पकड़ा गया, या तब। यह तक नहीं देख सकते थे कि कहीं छिपे भी हो या उनकी आँखों के सामने ही कहीं मौजूद हो... भगवान न करे कि ऐसी हालत में पड़ो।

"नहीं, मैं नहीं जानता था," रोयजमान ने फिर दोहराया।

अचानक बहस छिड़ गयी कि क्या यह भी हो सकता है कि कोई आदमी पूरा युद्ध इन्फैंट्री में लड़ा हो और एक बार भी घायल न हुआ हो?

"इन्फैंट्री में नहीं होगा!" स्तारीख ने आवेश में कहा, मानो खुद उससे कुछ छीना जा रहा हो।

"क्या कहते हो... अरे मुझे ही देखो!" और कीतेनेव, एक रायफल्स रेजिमेण्ट का गुप्तचर अधिकारी, वार्ड के बीचों-बीच अपनी उपस्थिति दिखाने के लिए खड़ा हो गया। वह अब चंगा हो रहा था, शीघ्र ही उसे डिस्चार्ज किया जानेवाला था, और त्रेत्याकोव व अत्राकोवस्की की पलंगों के बीच बिछी उसकी पलंगों पर कभी-कभी सुबह तक उसका ग्रेटकोट रात भर पड़ा रहता, जो एक सोते आदमी की तरह कम्बल के नीचे रखा होता। "पहले दिन से ही इन्फैंट्री में हूँ, पर घायल पहली बार हुआ हूँ। वह भी सयोंग से।"

"मतलब यह कि इन्फैंट्री में नहीं!"

"इन्फैंट्री में!"

"तो फिर पहले दिन से नहीं!"

"अरे तुम जाकर मेरी पर्सनल फाइल में देख लो।"

"जानता हूँ..." स्तारीख ने पिंड छुड़ाते हुए कहा। "मेरी पर्सनल फाइल पूरी मुझ पर ही लिखी हुई है। मेरे जख्मी जिस्म पर सारी दास्तान लिखी हुई है, देखो तो—कैसा छलनी हो गया है," कहते-कहते वह अपनी पीठ और कन्धों पर उँगली चुभो-चुभोकर दिखाने लगा, "इस बार अगर सिर पर टोप न पहना होता..."

मैं-मैं करके सेकेण्ड-लेफ्टिनेण्ट गोशा कुछ कहने का प्रयास कर रहा था। पलंग के बीचों-बीच, छत से लटकी दो बत्तियों में से एक के नीचे, जिनसे सभी परछाइयाँ फर्श पर बिछी रहती थीं, बैठा वह ऐसे हकला रहा था कि पलंग के स्प्रिंग उसे उछाल रहे थे। सब आँखें झुकाकर व्यथा के साथ प्रतीक्षा कर रहे थे। मन ही मन उनमें से प्रत्येक उसकी सहायता कर रहा था, और इस कारणवश वे खुद मानो हकलाने लगते...

"अरे ठहरो भी!" स्तारीख उसकी ओर हाथ झाड़कर चिल्लाया। "इस पर मैं विश्वास कर सकता हूँ कि वह जर्मन है जो युद्ध के शुरू से घायल नहीं हुआ। जर्मन टोप पहने ही खाना खाता है, टोप पहने ही सोता है। जब से उसने आदेश के अनुसार वह पहना है, तब से वह उसे सिर से नहीं उतारता। और हमारा रूसी-इवान..." उसने पूर्ण निराशा से हाथ झटका। पर उसमें 'रूसी-इवान' के लिए गर्व भी था जो मानो अपने लिए बुरा ही करता है, पर जब लड़ने की नौबत आती है तब कोई परवाह

नहीं करता। "मैंने, उदाहरण के लिए, इस अस्पताल में आने से पूर्व जख्मी सिरवाले घायलों को बिल्कुल देखा ही नहीं था। कहाँ है वे जख्मी सिरवाले लोग? वे तो मैदान में ही छुट गये हैं, वहीं लेटे हैं। देखो उसने मुझ पर कैसा डिंजाइन बनाया है।"

स्तारीख उठकर बैठ गया, पलस्तर चढ़े अपने पैर को लटकाकर उसने जवानी से ही गंजे, झुके सिर के किनारे-किनारे उँगली फेरी। वास्तव में उसका घाव बड़ा अजीब था : टोप के अन्दर घुसकर गोली चक्कर काटते हुए मानो उसके सिर की खाल उतार रही थी, उसने पूरे सिर पर वृत्ताकार निशान गोद दिया था। माथे पर सीधा निशान बना हुआ था।

"मुझे तो यह बात सबसे ज्यादा खलती है कि एक कमीने के कारण मैं अब तक जमीन में सड़ चुका होता। हमारे पास कुमक के साथ उन लोगों को... अरे, इनको...मुक्त किये गये स्थानों से लाया गया। मेरा सन्देशवाहक मुझे बुलाकर कहता है, 'कामरेड सीनियर लेफ्टिनेण्ट, देखिये तो इसने फिर खन्दक से हाथ निकाल रखा था...'' वह युद्ध के दौरान बीवी से चिपका मुँह छिपाये अलाव तापता रहा। उसको मुक्त कर दिया, पर यहाँ भी वह नहीं लड़ना चाहता। और था कितना चालाक : उसे मालूम था कि खुद तो बायें हाथ में गोली मारता है, इस लिए उसने खन्दक से बाहर अपना दायाँ हाथ निकाल रखा था, इंतजार कर रहा था कि कब जर्मन उसे... ठहर जरा, मैं तेरे हाथ को नहीं, तेरी खोपड़ी को निशाना बनाता हूँ! रायफल कन्धे पर टिका भी ली थी... और मानो कोहनी को झटका-सा लगा। 'जरा टोप तो लाओ,' मैंने कहा। विश्वास नहीं करोगे, पूरे युद्ध में मैंने एक बार भी सिर पर टोप नहीं पहना था पर तब मानो किसी ने मुझसे टोप पहनने को कहा। मैंने सन्देशवाहक के सिर से उसे उतारकर अपने सिर पर पहन लिया, और सिर उठाया ही था कि सीधा माथे में!" स्तारीख ने अपने माथे पर जोर से उँगली चुभोयी। "जरूर कोई निशानेबाज होगा। अगर मैं बिना टोप के होता..."

"अरे वह तो तुम्हारी चाँद का निशाना बना रहा था, ताकि न चमके," कीतनेव हँसा। "उसने तुम्हें कमाण्डर समझ लिया होगा।"

"मैं भी एक बार निशानेबाजी का शिकार होते-होते बचा," त्रेत्याकोव ने कहा। इससे पहले कि कोई उसकी बात काटता, वह जल्दी-जल्दी बताने लगा कि कैसे उत्तर-पश्चिमी मोर्चे पर एक बार उसे बैटरी की निरीक्षण चौकी से सन्देश के साथ भेजा गया और रास्ते में गोली से वह मरते-मरते बचा।

"बहुत दिनों से वहाँ हमारा रक्षा मोर्चा बना हुआ था, हमारी तरफ से भी और उनकी तरफ से भी फौजी सक्रिय थे। मैं जा रहा था, दिन साफ था, सूरज चमक

रहा था, बर्फ दमक रही थी... सनसनाती हुई गोली चली। मैं लेट गया। सिर्फ थोड़ा-सा ही हिला था कि फिर गोली सनसनाती आयी!

"निशानेबाज भी ऐसा ही होगा!" स्तारीख ने उसकी ओर इस तरह हाथ झाड़ा, मानो अब त्रेत्याकोव को चुप हो जाना चाहिए।

"आखिर अग्रिम पाँत थोड़े ही थी।"

"दो बार गोली चलाई औरयह जिन्दा है। निशानेबाज..."

पर कई-एक ने त्रेत्याकोव की हिमाकत की :

"आखिर निशानेबाज भी तो कभी सीखते हैं।"

"वह मुझ पर ही तो सीख रहा था। जगह भी ऐसी थी : सब तरफ ढेर सारी बर्फ पड़ी थी, पर यहाँ से हवाओं ने उसे उड़ा दिया था। मेरे पीछे देवदार का पेड़ खड़ा था। मैं निशाने की रेंज में था, इसलिए वह आसानी से निशाना बना सकता था। एक घण्टा बीत गया–मैं लेटा रहा। लेटे-लेटे एहसास हुआ कि ऐसे तो मैं मर जाऊँगा। पाला इतना अधिक तो नहीं था, पर मैं बर्फ पर चलने के कारण पसीने से तर था। और–बूतों में भी पस्त था।"

स्तारीख गप की तरह, तिरस्कृत भाव से सुन रहा था। स्वयं उसमें अपनी बात सुनाने की बेसब्री उफन रही थी।

"जब सूरज दूसरी तरफ चला गया और सीधा उसकी आँखों पर पड़ने लगा, मैं उछलकर दौड़ पड़ा। बटालियन में पहुँचा तो होंठ जमकर बर्फ हो चुके थे, उनसे बोल नहीं निकल रहे थे।"

"निशानेबाज... ऐसे निशानेबाज को..."

पर कीतेनेव ने उसे टोक दिया : "बताने भी दो उसे!"

"निशानेबाज...हो-हो!"

"और बटालियनवाले, जाहिर है, अपना सन्देशवाहक क्यों भेजें, मुझे ही लिफाफा थमा दिया और रेजिमेण्ट के हेडक्वार्टर में ले जाने का हुक्म दिया। रेजिमेण्ट का हेडक्वार्टर कीपिनो गाँव में था। रात हो गयी थी। दिन में तो टेलीफोन के तारों के सहारे-सहारे जाना आसान है, पर रात को हेडक्वार्टर कहाँ ढूँढ़ूँ?"

पलंगों के सिरहाने टटोलते-टटोलते रोयजमान पास आकर बैठ गया :

"आप कहाँ तैनात थे?"

"चौंतीसवीं में।"

"हाँ, हाँ, आप वहाँ पर तैनात थे जहाँ द्रोरेत्स, लीच्कोवो..."

हर बार जब कैप्टन रोयजमान उसे इस तरह अपनी स्पष्ट, मानो ज्योतिवान आँखों

से देखता, और उसे न पहचानता, तो त्रेत्याकोव को कष्टकर लगता। आखिर रोयजमान उसके विद्यालय में आर्टिलरी का विषय पढ़ाता था, उसे कई बार श्यामपट्ट के पास बुला चुका है। और अब उसकी आवाज तक नहीं पहचानता है। पर उससे कुछ कहने में त्रेत्याकोव को पता नहीं क्यों हिचकिचाहट हो रही थी।

"चौंतीसवीं," रोयजमान ने सिर हिलाया, "जनरल बेर्जारिन। सब सही है..."

और मानो उसने आगे की बात की पुष्टि कर दी, अब वे त्रेत्याकोव की बात बिना काटे सुन रहे थे।

"उस समय वहाँ कीपिनो में अवतरण दल तैयारियाँ कर रहा था : पूरी सड़क के किनारे-किनारे एअरस्लेजें खड़ी थीं, इंजन उनके चालू थे। अवतरण दल के सैनिक सफेद छद्मावरण ओढ़े हुए थे। मुझे इन जवानों से ईर्ष्या भी हुई थी... प्रसंगवश कह दूँ कि बाद में इनमें से लगभग कोई भी नहीं लौटा, लोगों का कहना था कि मानो जर्मन को अवतरण की तैयारी के बारे में मालूम था : मुझे नहीं मालूम। पर तब वे बर्फ पर खड़े थे, मैं उनके पास से गुजर रहा था, हवा के तेज झोंके मुझे पीछे से धक्का दे रहे थे। एक एअरस्लेज के पीछे प्रकाश की किरण काँप रही थी। वहाँ पँखा था पर पता नहीं क्यों मैंने सोचा कि पँखा सेफ्टी जाली से घिरा होना चाहिए। मुझे इतना स्पष्ट आभास हुआ कि उस पर निकिल चढ़ा है। मानो मैंने खुद अपनी आँखों से उसे देखा। अब तक मैंने एअरस्लेज कभी भी इतने पास से नहीं देखी थी। बाद में मैं समझ गया कि पास के घर का दरवाजा ठीक से बन्द नहीं था, वहाँ से प्रकाश छन रहा था, घूमता पँखा अपनी नोक से उसे काट रहा था। पर मैं तो उसे जाली समझ बैठा, निडर होकर आगे बढ़ता गया। कोहनी पर ऐसा वार हुआ कि ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की नीचे रह गयी। मैं बैठ गया और धीरे-धीरे उकडूँ बैठे-बैठे ही उसके पास से हट गया। हर बार मेरी इसी कोहनी की शामत आती है।"

"वह पँखा भी क्या था, उसने तेरा हाथ नहीं काट दिया?"

अपनी सूझ से चमकती आँखों से स्तारीख ने सबकी ओर देखा।

"मुझे तो उसकी नोक भर लगी थी।"

"बड़ी दिलचस्प बात है!..."

"और फिर ग्रेटकोट पहने हुआ था, ग्रेटकोट के नीचे रुईभरा कोट था, उसके नीचे कमीज थी। और मैंने फुलालेन का गर्म कुरता और उसके नीचे सादा कुरता भी पहन रखा था।"

"जुओं के तो मजे ही मजे होंगे", कीतेनेव ने कहा।

"उत्तर-पश्चिमी मोर्चे पर तो हम उनको गिनते तक नहीं थे। एक-एक करके

मारते तक नहीं थे। मौका मिलने पर बनियान उतार देते तो कुछ समय के लिए चैन मिल जाता।" त्रेत्याकोव ने स्तारीख की ओर मुड़कर कहा, "नहीं तो वह, बेशक, मेरे हाथ काट देता! मैं उसे कोहनी पर पकड़े मुख्यालय में गया, लिफाफा सौंप दिया, पर बताते हुए शर्म आ रही थी, विश्वास ही नहीं कर सकते थे..."

"मैं भी विश्वास नहीं करता!" स्तारीख ने रोब के साथ दो टूक कहा, "कोई जाली लगी है, शैतान की औलाद..."

एक-साथ कई स्वर जिरह करने लगे :

"क्या उसने जान-बूझकर थोड़े ही घुसेड़ा था हाथ अपना?"

"एक-एक मिलीमीटर का हिसाब लगाकर?"

"मैं क्या जानूँ। हो-हो-निकिलदार!"

"भई यहाँ भी एक को ऐसा लगा था : बर्च के तने के पास से अपने ही हाथ में उसने गोली मार ली थी। था तो निरा बुद्धू, पर सोची कितनी देर की : बर्च के तने के पार से! ताकि जले के निशान से यह पता न चले कि गोली खुद उसीने मारी है..."

"सच हमेशा... सच हमेशा..." अन्धा रोयज़मान बहस करनेवालों को तो देख नहीं पा रहा था पर उनकी बातचीत में शामिल होने का प्रयास कर रहा था। वह हकलाते हुए बोल रहा था। आखिरकार उसे वार्तालाप में शामिल होने में सफलता मिल ही गयी...

"असली सच ही तो झूठ जैसा लगता है," उसने ऐसे अन्दाज में कहा मानो किसी पोथी में से पढ़कर सुना रहा हो।

"तुम स्तारीख भी क्या हो, तोते की तरह रटे जा रहे हो!"

"पर मैं पूछता हूँ कि उसने अपना हाथ पँखे के नीचे घुसेड़ा कैसे?"

"पँखा तो पँखा है, चाहे आगे से घुसेड़ दो, चाहे पीछे से! कैसी ज़ालियाँ हो सकती हैं? हो-हो!.."

"तुम जानते हो कैसे लगते हो?" त्रेत्याकोव ने कहा, "हमारे स्टाफ अफसर के प्रथम सहायक की तरह। उसने भी विश्वास नहीं किया।"

"अगर मैं स्टाफ अफसर के सहायक जैसा होता तो मेरी चमड़ी में इतने छेद नहीं हुए होते!" अचानक काँपकर स्तारीख चिल्ला पड़ा। "पर मैं कुछेक की तरह मुख्यालयों में नहीं बैठा रहा! आप लोग यहाँ लेटे हैं..." वह बगल में बैसाखी दबाकर प्लास्टर में जकड़े अपने भारी पैर के साथ कूद-कूदकर वार्ड के बीचों-बीच आ गया। और यहाँ बत्ती के नीचे, जिसका प्रकाश इतना क्षीण था कि दूधिया शेड सिर्फ अन्दर

से ही पीला-पीला चमक रहा था, एक जगह खड़ा होकर घूमने लगा, बैसाखी को खटखटाता, पैर से अपनी परछाई को कुचलने लगा।

"आप यहाँ लेटे हैं? और लेटे रहिये! उधर इन्फैंट्री खन्दकों में बैठी है—वह खिड़की की ओर इशारा कर रहा था, हालाँकि वह पूर्व की दिशा में खुलती थी। "किसको सबसे बाद मे वार्ड मे लाया गया? आ-हा...यही तो! और किसको सबसे पहले डिस्चार्ज किया जायेगा? आप तो अभी यहाँ पड़े, होश सम्भाल रहे होंगे पर स्तारीख के घाव तो उसी तरह जल्दी भर जायेंगे, जिस तरह कुत्ते के घाव भर जाते हैं!..."

"वह ऐसा ऐंठ क्यों रहा है?"

"यहाँ सबसे ज्यादा यही तो 'नर्वस' है..."

"क्या यही अकेला लड़ा था, दूसरे नहीं लड़े थे भला?"

"दोस्तों, मेरी बात पर ध्यान दो," कीतेनेव ने आवाज धीमी की, पर बोल गम्भीरता से रहा था। "इसने आत्मविश्वास खो दिया है। इससे बुरी कोई बात नहीं होती जब आदमी आत्मविश्वास खो बैठता है। एक घाव लगा—दूसरा लगा, फिर जख्मी हुआ—एक बार फिर घायल हुआ, वह भी सिर में—पर जिन्दा है। पर कभी न कभी तो मौत आनी ही है?... वह मोर्चे पर लौटने से डरता है, वह यह महसूस करता है, इसीलिए तो इतना गुस्सैल है।" घड़ी पर नजर डालकर सोचने लगा कि जाने का समय आया या नहीं। फिर पूछ बैठा : "हाँ, तो तुम्हारे हाथवाले मामले का क्या हुआ? पदक-वदक मिला?"

"मिलते-मिलते रह गया, ताकि सारे जीवन न भूलूँ... मुझे अलावघर के ऊपर लिटा दिया गया, सुबह तक गर्मी में कोहनी ऐसी फूल गयी कि कमीज की आस्तीन में न घुसे। सारी बाँह पतली-सी और वह गेंद की तरह फूल गयी। रेजिमेण्ट का डाक्टर, बड़ा भला आदमी था, देखकर बोला, 'अस्पताल में भेजेंगे'। पर मेरी रेजिमेण्ट से जाने की इच्छा नहीं हो रही थी। और शर्म भी आ रही थी मानो मैंने यह जान-बूझकर किया हो। 'कोई बात नहीं, जाओगे।' पर बाद में मैंने ध्यान दिया कि मेरे इर्द-गिर्द वह बात नहीं रही, जो पहले थी। सब मुझसे कन्नी काटते, नजरें नहीं मिलाते। तब मैंने कहा कि मैं अपनी बैटरी पर चला जाता हूँ। हेडक्लर्क भी सख्त हो गया, बोला : 'कहीं नहीं जायेगा, यहीं बैठ...' मैं ऐसे बैठा था मानो कैद में हूँ। अस्पताल में भी नहीं ले जा रहे थे, मेरे साथ कुछ कर भी नहीं रहे थे और हेडक्वार्टर से जाने भी नहीं दे रहे थे। हाथ में इतने जोर से दर्द हो रहा था कि अब मेरे लिए सब बराबर था। पता चला कि स्टाफ अफसर का प्रथम सहायक मेजर ब्रायेव...

बहुत दिनों से वह इसी पद पर बिना प्रोन्नति के मेजरों में ही घूम रहा था... वही विशेष विभाग के अध्यक्ष के पास जाकर बोला : खूब सोच-समझकर अंगच्छेद किये जाने का मामला है।

त्रेत्याकोव को अचानक आभास हुआ कि अत्राकोवस्की भी उसकी बात सुन रहा है। वह देर तक प्रतीक्षा करने का आदी हो चुके व्यक्ति की तरह उदासीन बैठा था, उसका सिर झुका हुआ था, फूली नसोंवाले हाथ घुटनों में भिंचे हुए थे, पर इस समय वह ध्यान से सुन रहा था।

"रेजिमेण्ट में विशेष विभाग का अध्यक्ष नहीं होता," कीतेनेव ने अपना ज्ञान दिखाते हुए कहा। "सिर्फ प्राधिकृत प्रतिनिधि ही होता है। सीनियर लेफ्टिनेण्ट या कैप्टन के रैंक का।"

"हमारी तोपखाना रेजिमेण्ट सीधी सेना के अधीन थी।"

"इसका कोई महत्त्व नहीं है। ज्यादा से ज्यादा कैप्टन का रैंक के वरिष्ठ प्रतिनिधि हो सकता था। कैप्टन पर रेजिमेण्ट में विशेष विभाग का अध्यक्ष नहीं होता है," कीतनेव ने बारीकी से बात पूरी कर दी। और इसी बारीकी से वह अपने पलंग पर ग्रेटकोट बिछा रहा था, ताकि कम्बल के नीचे से वह सोये आदमी की तरह लगे। "उसे बोलचाल में विशेष विभाग का अध्यक्ष कहा जा सकता है। पर ऐसा पद होता नहीं।"

"ठीक है, न सही। असलियत तो यह है सन् बायलीस था। सर्दियों का मौसम। प्रसंगवश बता दूँ कि इस विशेष विभाग के अध्यक्ष कोतोवस्की को मैं एक बार देख चुका था। तब भी मुझे सन्देश के साथ भेजा गया था, सबसे छोटा था, खुब दौड़ लगवाते थे। मैंने खोह में सिर घुसेड़ा—वह वहाँ बैठा था। ऐसा बड़ा माथा गंजा-सा, दोनों भौंहों के ऊपर गुमटे-से फूले हुए थे। उसने मेरी ओर भृकुटी तानकर देखा," त्रेत्याकोव हँस पड़ा, "बात यह थी कि उसके पास एक आदमी को लाया जानेवाला था, और इधर मैंने सिर अन्दर कर दिया..."

अत्राकोवस्की ने अजीब-सी दृष्टि-से उसकी ओर ध्यान से देखा, और सब हँस पड़े, सबके साथ त्रेत्याकोव भी फिर एक बार हँस पड़ा।

इस सारे किस्से को वह हँसी-मजाक के साथ सुना रहा था, जैसे अक्सर मोर्चे की पुरानी बातों को चाहे वे जैसी भी हों सुनाया जाता है...

"उस बन्दे के साथ बात यह हुई थी... वहाँ हम लोग किसी भी तरह लीच्कोवो स्टेशन पर कब्जा नहीं कर पा रहे थे। एक बार वहाँ पहुँच भी गये थे, पटरियों पर खड़ी गाड़ियों के पीछे गोलीबारी हो रही थी। फिर इन्फैंट्री को पीछे हटा दिया गया।

तभी मोर्चे पर सेकेण्ड लेफ्टिनेण्ट के कोर्स के कैडेटों को लाया गया। वे सब भेड़ की उल्टी खाल के कोट और नमदे के बूट पहने हुए थे। पाला—शून्य से चालीस डिग्री से भी अधिक नीचे था। यह आदमी रात को मृतकों की घड़ियाँ उतारने जाता था। प्रसंगवश, वह हमारी ही रेजिमेण्ट का गुप्तचर था। दूसरे सेक्शन से था," और यह सब बताते समय त्रेत्याकोव को मानो फिर से साफ-साफ दिखाई पड़ रहा था कि कैसे उस लुटेरे को चौड़े, बिना पेटी के ग्रेटकोट मे ले जाया जा रहा था, शिशिर के श्वेद दिन में उसका चेहरा पीला पड़ा हुआ था, चपटी नाक के तीखे नथुने, कोयले की तरह चमकती काली आँखें सहमी-सहमी देख रही थीं। और किस प्रकार वह अन्तर्मन में इस आदमी को धिक्कार रहा था। "हाँ, तो कोतोवस्की ने भृकुटी तानकर मुझे देखा!... उसी से मेजर ब्यायेव ने अंगच्छेद के बारे में मेरी चुगली कर दी थी। पर उसे विश्वास नहीं हुआ। क्योंकि मैं इस रेजिमेण्ट में... मेरी उम्र कम थी पर मैं अपनी इच्छा से भरती हुआ था। उसे इसके बारे में मालूम था। इस लिए उसने विश्वास नहीं किया। उसने मुझे रेजिमेण्ट की मेडिकल टीम मे ही रखकर इलाज करने का आदेश दिया, नहीं तो वे अस्पताल भेज देते और वहाँ भी इसी तरह का कोई सचेत आदमी निकल सकता है... मुझे तो कुछ मालूम नहीं था, केवल फिर देखता हूँ कि मेरे चारों ओर स्थिति बदल गयी, मुझे चिकित्सा टीम में भेजा जा रहा है। बाद में यह क्लर्कों से ही पता चला था।"

इतने में कीतेनेव अपने ग्रेटकोट को सावधानी के साथ कम्बल से ढक चुका था, देखकर ऐसा लगता था कि कोई आदमी सिर ढककर सो रहा है। वह अपनी इस कारीगरी को सराहना की दृष्टि से देख रहा था।

"दोस्तों, अगर कोई पूछे तो कह देना, 'वह सो रहा है'। जगाने मत देना, कहना कि गहरी नींद में सो रहा है। उसे ऐसे ही सोने दो अगर जग गया तो सुबह तक उसे फिर नींद नहीं आयेगी।"

वार्ड से बाहर निकलते समय वह स्तारीख से टकरा गया। वह लँगड़ाता हुआ मेज के पास आकर बैठ गया :

"कैप्टन, चल शतरंज के प्यादे दौड़ा लें।"

"बिछा बिसात", रोयजमान ने कहा।

जो लोग चल-फिर सकते थे वे सब खेल देखने के लिए मेज के गिर्द चले आये। स्तारीख मोहरे लगा रहा था, रोयजमान उसी तरह पलंग पर बैठा दूर से ही अपनी याददाश्त के सहारे खेलने की तैयारी कर रहा था। उसकी खुली आँखें चमक रही थीं।

कुछ दिन बाद, एक शाम को त्रेत्याकोव को बरामदे में खड़ा अत्राकोवस्की दिखायी

पड़ा। वह उसके पास जाकर खड़ा हो गया। वह उससे उस लड़की के बारे में पूछना चाहता था : वह कौन है? फिर आयेगी या नहीं?

"देखो तो, बर्फ की कैसी आँधी चल रही है!" उसने कहा। खिड़की के बाहर कुछ नहीं दिखायी पड़ रहा था, सिर्फ शीशे के पास ही नीचे से ऊपर की ओर उड़ते बर्फ के गाले दिखाई पड़ रहे थे। आगे सब कुछ मानो धुएँ में लिपटा हुआ था, न स्टेशन दिखाई पड़ रहा था, न सड़क की बत्तियाँ। और खिड़की से ठण्ड की साँस-सी महसूस हो रही थी।

"हाँ, चल रही है," अत्राकोवस्की ने कहा।

पास ही में आपरेशन थियेटर में कोई आपरेशन हो रहा था। वहाँ तेज रोशनी जल रही थी, उसके दूधिया काँच पर कभी-कभी काली आकृतियाँ दिखाई पड़तीं।

"खन्दकों में बेचारी इन्फैंट्री का हाल... सर्दियों में लड़ाई से बुरी कोई चीज नहीं है। और वसन्त में भी।" त्रेत्याकोव हँसकर बोला : "हम तो फिर भी सौभाग्यशाली हैं।"

खिड़की के बाहर बर्फ की सघन आँधी में छाया की तरह किसी धुँधली-सी हिलती-डुलती चीज का भान हो रहा था। अन्दर से खिड़की के शीशे में अपने अस्पताल के गाउन पहने वे दोनों प्रतिबिम्बित हो रहे थे।

"आप यह समझते नहीं हैं कि आप कितने सौभाग्यशाली निकले," अत्राकोवस्की ने कहा। "भाग्य ने आपका पूरा साथ दिया। नादानी जवानी का रक्षात्मक गुण है। आपको एक शब्द कहने की जरूरत थी, सिर्फ एक शब्द... कहने की भी जरूरत नहीं थी, आप चुपचाप सहमत हो जाते और आपका सारा जीवन..." वह भावशून्य मुखमुद्रा में बोल रहा था, केवल उसके होंठ ही हिल रहे थे। उसे देखकर कोई भी यह मालूम नहीं कर सकता था कि वह किस विषय में बोल रहा है। "बेइज्जती की अपेक्षा लड़ते हुए मरना सौ गुना अच्छा होता है।"

त्रेत्याकोव का दिल मानो भय से जकड़ गया : उससे अपने पिता के बारे में पूछे! अत्राकोवस्की को वह मालूम हो सकता था जो दूसरे नहीं जानते थे। पर उसने नहीं पूछा, सिर्फ चेहरा उसका पीला पड़ गया। उसका पिता निर्दोष है, वह तो जानता है पर जब भी पिता की बात चलती वह खुद को अपमानित महसूस करता और शून्यता से घिर जाता।

आपरेशन थियेटर से सिर पर रूमाल बाँधे नर्स तेजी से निकली, एड़ियों की ठक-ठक करती बरामदे में दौड़ती चली गयी। खिड़की के बाहर ऐसा लगता था कि सारी दुनिया बर्फीली आँधी से ढक गयी है।

अध्याय 13

उस शाम, जब वे बरामदे में खिड़की के पास खड़े थे, बाहर बर्फीली आँधी चल रही थी और आपरेशन थियेटर की दूधिया काँच की दीवार से छनकर आती बिजली की पीली रोशनी उष्मा प्रदान करती लग रही थी और सफेद चोगा पहने नर्स वहाँ से निकलकर बरामदे मे दौड़ती चली गयी थी—उस शाम स्थानीय थियेटर के अभिनेता की टाँग को काट दिया गया था। वे अभी वहीं खड़े थे। उसे आप्रेशन थियेटर से स्ट्रैचर पर ले जाया गया और वहाँ से निकला सर्जन अपनी उत्तेजना को संयमित करते हुए बरामदे को पार करता चला गया, चलते-चलते उसने आसपास अपनी व्यावसायिक दृष्टि डाली। और बाद में वहाँ से गॉज में लिपटी कटी टाँग निकाली गयी : वह घुटने पर मुड़ी थी और पंजा नदारद था।

यह अभिनेता कलाकारों के दल के साथ फौजियों का मनोरंजन करने के लिए मोर्चे पर गया था और बमवर्षा के समय घायल हो गया था। त्रेत्याकोव के साथ वार्ड में लेटे अफसरों ने अब तक युद्ध के दौरान मोर्चे पर एक बार भी कलाकारों को न देखा था। वे आकर अपनी कला का प्रदर्शन करते थे, पर वहाँ कहीं मोर्चे के पृष्ठ प्रदेश में, हवाई अड्डों आदि पर, जो इन अफसरों और विशेषकर जवानों को इतने ही दूर लगते थे जितने कि पृष्ठ प्रदेश में स्थित सैनिक अस्पताल। बाद में कलाकार सबको कहते फिरते कि वे अग्रिम भाग पर होकर आये हैं, और स्वयं इसमें विश्वास करते; लौटकर वहाँ भेंट किये गये भेड़ की खाल के सफेद ग्रेटकोट में अपने उन साथियों के सामने जो यहीं रह गये थे, अग्रिम भाग के सैनिकों की तरह घूमते पर मोर्चे पर रह चुके सैनिकों को यह सब सुनकर बड़ी हँसी आती। शायद इसीलिए अस्पताल में कलाकार की टाँग कटने की चर्चा प्राय : हँसी-मजाक के साथ की जाती, जैसे सचमुच यह कोई हँसने की बात हो कि आदमी ने अपनी टाँग खो दी। अगर सच कहा जाये तो सेकेण्ड लेफ्टिनेण्ट गोशा भी सिर्फ मोर्चे तक ही जा पाया था, एक भी गोली उसने जर्मन पर नहीं चलायी थी, पर सब उसकी हालत समझते थे और उससे सहानुभूति रखते थे, जिसे युद्ध ने हमेशा के लिए तोड़ दिया। कुल मिलाकर युद्ध में, जब विमान बमवर्षा करते हैं और मोर्चे के पीछे भी उड़ानें करते हैं, ऐसे भी होने ही चाहिए जो मोर्चे तक पहुँच ही न पायें। यह सब समझ में आता है,—कुल गणना भी और ऐसी हानियों की अवश्यम्भाविता भी—तब तक समझ में आती है जब किसी और के बारे में बात चल रही हो और यह हानि का मुद्दा तुम

खुद नहीं हो। गोशा को शायद इतना दूभर न लगता, अगर वह कम से कम यह जानता कि मोर्चे पर जाना व्यर्थ नहीं गया, कि वह कुछ न कुछ तो कर ही सका है।

कोई तीन सप्ताह बाद, नववर्ष की पूर्वसन्ध्या पर स्थानीय कलाकार कंसर्ट प्रस्तुत करने के लिए अस्पताल में आये, और मंच के सामने पहियेवाले स्ट्रेचर पर मानो मेज पर सबके सामने सम्मान के साथ उनका वह साथी लेटा था जो मोर्चे पर अपना पैर खोकर आया था

कंसर्ट शुरू हो चुका था तब तक शोर मचाते स्कूली बच्चे बरामदे में उमड़ आये, उन्हें भी अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करना था। दरवाजे के पास ही बैठा त्रेत्याकोव सुनकर समझ गया कि उसको सारे वक्त इसी का इंतजार था। आइटम के खत्म होने की प्रतीक्षा करके वह उठकर बरामदे में निकल आया। सफेद चोगे पहने हुए वे झुण्ड बनाकर खड़े थे, वे सब एक-साथ बोल रहे थे :

"पर सर्दियों में तो कुत्ते काटते नहीं हैं!"

"हैरानी की बात है कि भौंका तक नहीं।"

"पर साशा को ही क्यों?"

"वास्तव में, उसी को ही क्यों?"

"सुनो, हो सकता है वह पागल है?"

"साशा, काटना मत!"

"तुमको हँसी आ रही है... पर मेरे लिए यह बिल्कुल ही हास्यजनक बात नहीं है। देखो जुराब कैसे फट गयी है। और पता नहीं क्यों इतना भयंकर दर्द हो रहा है।"

और खुद भी हँस रही थी ताकि रोना न आ जाये। वह फर्श पर नमदे के बूट को टिकाये एक पैर पर खड़ी थी, दूसरे पर नर्स झुकी हुई थी, और सब उन्हें घेरे खड़े थे। साशा... पाले के बाद दम लेकर उसके गाल दहक रहे थे। इस हिमानी ताजी हवा में जो वे अपने साथ ले आये थे, त्रेत्याकोव ने अस्पताल की गन्ध को विशेष रूप से महसूस किया, जिसका वह आदी हो चुका था और जिस पर अब ध्यान नहीं देता था। उसे धूल-धूलकर घिसे सूती फलालेन के अपने गाउन से दवाओं, अस्पताल में दिये जानेवाले खाने, बन्द जगह की, जहाँ हमेशा इतने सारे मरीज साँस लेते हैं, घुटी-घुटी हवा की गन्ध उड़ती महसूस हुई।

परायी नजर को महसूस करके लड़की ने पलकें उठायीं, वे इतनी घनी थीं कि उसकी सलेटी आँखें काली दिखाई पड़ी उसने अपने से छलकती जीवन की खुशीभरी

नजरों से उसे देखा। पर पल भर में उसके चेहरे पर से जैसे कोई छाया गुजर गयी, आँखें बुझ गयीं, वे परायी नजर को अपने इस जीवन में प्रवेश का रास्ता नहीं दिखाना चाहती थीं।

बाद में, अपने पर पड़ी छाप के कारण उसने फिर नजर डाली, इस बार रूचि के साथ, पर त्रेत्याकोव ने यह नहीं देखा। वह वार्ड में लौट आया। यहाँ सिर्फ चलने-फिरने में असमर्थ रोगी और कई खाली पलंग थें। और बिजली के लैंप के नीचे रखी मेज पर बैठा कैप्टन रोयजमान टटोल-टटोलकर दाढ़ी बना रहा था।

"त्रेत्याकोव यह आप हैं?" उसने कदमों की आहट को पहचानकर पूछा, "आप मेरी कलमें बराबर नहीं कर सकते?"

"लाइये, कोशिश करता हूँ।"

टटोलकर रोयजमान ने मेज पर से ब्रुश उठाया और गालों पर झाग मल दिया। त्रेत्याकोव ने साबुन के गुनगुने पानी में उस्तरे को डुबोया, वह झुकना चाहता था पर बगल के घाव ने नहीं झुकने दिया। बैठना चाहा पर टाँग के घाव ने नहीं बैठने दिया। और रोयजमान गाल बढ़ाकर प्रतीक्षा करने लगा।

" मैं झुक नहीं पा रहा हूँ, आप खड़े हो जाइये।" त्रेत्याकोव ने कहा।

"अभी, अभी।"

उन दो के पास तीन मजबूत हाथ और दो स्वस्थ आँखें थीं। रोयजमान कलम के पास खाल को उँगलियों से ताने हुए था, त्रेत्याकोव देसी उस्तरा पकड़े उसके हड्डीदार चेहरे के पास सावधानी से साँस ले रहा था :

"पकड़िये... अभी... चलाता हूँ।"

एक तरफ हटकर उसने देखा :

"यहाँ, और थोड़ा-सी कसर बाकी है।"

बाद में बायीं कलम ठीक करने लगा, और रोयजमान ने सिर के ऊपर से दूसरा हाथ लगाकर खाल को ताना। चेहरे के सामने उसकी समझभरी आँखें थीं। वे उसके पीछे-पीछे मुड़तीं, ऐसा लगता, कि वे देख सकती हैं। सिर्फ, जब त्रेत्याकोव अपने चेहरे को पास लाता, तो पुतलियाँ नाक के पास नहीं सिमटती थीं।

"कामरेड कैप्टन, आप मुझे नहीं पहचानते?" उसने घुटने के पास गाउन से उस्तरा पोंछते हुए पूछा।

"आवाज से मुझे कुछ लगा..." रोयजमान ने थोड़ा रुककर और अविश्वास के साथ कहा। वह उसकी ओर मुँह मोड़कर खड़ा था।

"याद है, आप विद्यालय में हमें पढ़ाने के लिए कक्षा में आये थे। तब ड्यूटीवाले

कैडेट ने कमान दी, और आपने मुर्गे की बाँग की तरह 'सावधान' कहते हुए उसकी आवाज सुनी, तब आपने प्लाटून कमाण्डर को अपने पास बुलाकर कहा था। 'कामरेड लेफ्टिनेण्ट, ध्यान रखना कि यह कैडेट मेरे सामने कभी कमान न दे'..."

"हाँ, हाँ," खुशी के साथ रोयजमान याद कर रहा था, "तो यह आप थे?"

"मैं।"

"ठहरिये, तो यह तब की बात..."

"मैं आपको ठीक-ठीक बताता हूँ। चढ़ाई उन्नीस नवम्बर को स्तालिनग्राद के पास शुरू हुई थी। तेईस को मोर्चे जुड़ गये। हमने मास्को में स्टेशन पर यह सूचना सुनी थी। हम मोर्चे से प्रशिक्षण विद्यालय जा रहे थे, तभी यह सूचना प्रसारित की गयी थी। बाद में कुयबिशेव में हम तीन दिन तक पीते रहे। हमारे साथ कुयबिशेव का रहनेवाला सार्जेंट-मेजर था, हम उसके यहाँ तीन दिन रहे, बाल्टियों में भर-भरकर बियर आती थी। हम तो और भी मौज उड़ाते पर हमारे पास खाने का सामान खत्म हो गया। हाँ, तो यह नवम्बर के अन्त की बात है। और दिसम्बर के शुरू में मैं आपके सामने कमान दे रहा था। आप हमें आर्टिलरी के बारे में पढ़ाते थे।"

"हाँ, हाँ..."

"और जनवरी के अन्त या फरवरी के शुरू में आप हमारे यहाँ से चले गये।"

"तीन फरवरी को।"

"हाँ, मुझे याद तो है। मोर्चे पर चले गये। पर तब आपकी एक टाँग जख्मी होने के बाद घुटने पर मुड़ती नहीं थी। मेरे ख्याल से दायीं थी न? आप तब छड़ी का सहारा लेकर चलते थे।"

"हाँ, हाँ" रोयजमान सिर हिलाता मुस्करा रहा था। बाद में उसने पूछा : "आप तब मेरी बात का शायद बुरा मान गये थे?"

"तब तो बुरा मान गया था," त्रेत्याकोव ने ईमानदारी से कहा। "पर अब याद करते हुए सुख मिलता है।"

"हाँ, तो अपने कमान बोलना सीखा?"

"आखिर हमें ड्रिल के मैदान में दो-दो की जोड़ी बनाकर घण्टों दौड़ाया जाता था। एक दूसरे की ओर जाते हुए हम कमान बोलते थे : 'सावधान! दाहिने मुड़! बा ऽऽ यें मुड़! पीछे मुड़े, तेज चल!...' और एड़ियाँ बजाते कवायद करते थे। अब तो यह जिन्दगी भर याद रहेगा।"

"मुझे शुरू में आवाज से कुछ-कुछ लगा था..."

और फिर रोयजमान सिर हिला रहा था, किसी सोच में डूबा हुआ हौले-हौले

मुस्करा रहा था। त्रेत्याकोव भी अपने सोच में मग्न था। "मुझमें जरूर कोई खराबी है," वह सोच रहा था और उसकी आँखों के सामने फिर वह दृश्य घूम गया कि कैसे उस लड़की ने उसे देखकर फौरन भौंहें सिकोड़ लीं। "मुझमें कोई ऐसी चीज है जो लोगों को पीछे धकेलती है, मैं जानता हूँ..."

पर बरामदे में सिगरेट पीकर वह फिर हॉल में चला गया। सब सीटें भरी थीं। वह दरवाजे के पास खड़ा देख रहा था कि कैसे मंचपर अभिनेता हिटलर की नकल उतार रहा है। मूँछें चिपकाये हुए, माथे पर तिरछी लट लटकाकर वह बन्दर की तरह उछल रहा था, उन्माद के साथ कुछ चीख रहा था। हॉल में ठहाके गूँज रहे थे, बैसाखियों को फर्श पर ठोक-ठोककर वह "एक बार फिर!" की आवाज लगा रहा था। दर्शक कलाकार को बिल्कुल भी छोड़ना नहीं चाह रहा थे मानो वह असली हिटलर हो जिसे उनका मन बहलाने के लिए भेजा गया हो। पता नहीं क्यों त्रेत्याकोव को उनके लिए और अपने लिए भी शर्म महसूस हो रही थी। हिटलर तक तो अभी पूरा मोर्चा और उसकी पूरी पिछली रक्षा पंक्ति पड़ी है, वहाँ से वह मोर्चे पर एक नहीं अनेक इन्फैंट्री और टैंक डिवीजनें भेजेगा। जो लोग इस समय सब कुछ भूलकर हँस रहे हैं उनमें से बहुत से तब तक इस दुनिया में नहीं रहेंगे। उसे खुद ठीक से मालूम नहीं था कि उसे शर्म क्यों आ रही है, पर इस निश्छल तमाशे में, हिटलर की अगम्यता में कुछ ऐसी बात थी जो उसको, त्रेत्याकोव को, अपनी ही नजरों में गिराती थी। हो सकता है कि उसकी मनोदशा ही इस समय ऐसी हो।

जब वह लड़की नमदे के बूट, सफेद चोगा पहने मंच पर आयी, और मैंडोलिन व बालालाइका उठाये दो लड़के भी अंगरक्षकों की भाँति उसके पीछे-पीछे मंच पर आकर स्टूलों पर बैठ गये, उसने सिर हिलाया, लड़कों ने एक साथ लटें झटकाकर तार झनझनाये। लड़की गाने लगी। त्रेत्याकोव ने मानो किसी चीज से डरकर जल्दी से अपनी नजरें झुका लीं। वह इसी तरह अधिकाधिक घबराता हुआ खड़ा था, उसको लग रहा था कि मानो गालों पर चींटियाँ रेंग रही हों। गीत भी उसी बारे में था जिसकी वह अनेकों बार कल्पना कर चुका था :

प्यारी लीजा, सतत प्रतीक्षा,
मेरी रानी, तुम करती हो
रात बिताती हो पलकों में,
रात रात आहें भरती हो
विजय हमारी हो जाने दो,
पास तुम्हारे तब आऊँगा,

तेज, युद्ध के घोड़े पर चढ़,
छवि में अनुपम दिखलाऊँगा।

कोई फर्क नहीं पड़ता कि उसने कल्पना ऐसी नहीं की थी और युद्ध भी ऐसा नहीं चल रहा : तेज जंगी घोड़ों पर नहीं, बल्कि कहीं ज्यादा भयंकर था, फिर भी यह गीत दिल को छू रहा था, और मन में उदासी छा रही थी। माँ और बहिन के सिवा उसकी प्रतीक्षा और याद करनेवाला और था ही नहीं। पता नहीं क्यों गीत के डींगभरे शब्दों ने उसे परेशान कर दिया : मुस्करा, मुझसे मिलते हुए, था मैं युद्ध में निडर..." हाँ, ऐसी लड़की तो पूछ सकती है : क्या तुम युद्ध में निडर थे? उसने अन्त तक गाना सुना।

बाद में वार्ड में लेटे-लेटे अपने विचारों में खो गया। वह करवटें बदले जा रहा था पर उसे आराम नहीं मिल रहा था। उसे अब पता नहीं चल रहा था कि यह दिल तड़प रहा है या उसके घाव दर्द कर रहे हैं जिन्हें उसने छू दिया था। उसे लेफ्टिनेण्ट अफानासियेव की याद आ गयी जो उत्तर-पश्चिमी मोर्चे पर उनकी रेजिमेण्ट में था और जिसने प्रेम के कारण शर्मनाक आत्महत्या कर ली थी। दो दिन तक उसका कोई पता नहीं चला, यह अफ़वाह तक फैल गयी कि वह जर्मनों के पास भाग गया। वह फायर पोजीशन से कोई किलोमीटर भर की दूरी पर पड़ा मिला। वह पैंट के नीचे पहने जानेवाला पाजामें में, जो टखनों पर फीतों से बँधा था और फौजी कमीज पहने जंगल में पिघले बर्फीले पानी में पड़ा था। दायें हाथ की कलाई पर जिसमें पिस्तौल भिंची हुई थी खरौंचें पड़ी हुई थीं, कनपटी गोली से झुलसी हुई थी।

लोगों को उसके साथ सहानुभूति भी थी और उसे धिक्कारा भी जाता। मोर्चे पर जहाँ रोज इतने मारे जाते हैं, खुद अपने को गोली मारना... नहीं जीना चाहते, वहाँ देखों जर्मन है, जाओ, उन्हें मारो। और वह जिसकी वजह से उसने आत्म-हत्या की, बटालियन कमाण्डर के साथ रहती थी : बटालियन कमाण्डर की अपनी अलग खोह थी। वह रूईभरी पैंट पहने घूमती, बूट पहनकर पानी में छप-छप करती चलती, सिगरेट पीने के कारण आवाज उसकी फटी-फटी सी थी। ऐसी मामूली लड़की की वजह से साहसी सुन्दर युवक ने खुद अपनी जान ले ली। पर अब मन में यह विचार आ रहा था : हो सकता है कि उसकी नजरों में वह वैसी नहीं थी जैसी उसे बाकी सब देखते थे? शायद वह किसी विशेष वजह से प्रभावित रहा हो, जिसे दूसरे न जानते थे?

अध्याय 14

कुछ दिन बाद वह बरामदे की खिड़की के दासे पर साशा के साथ बैठा था और साशा उसे अपने मित्र के बारे में बता रही थी जो दो महीने पहले मारा गया था, उसका भी नाम वोलोद्या था।"मुझे उसके साथी ने लिखा था, उसने अपनी आँखों से देखा था कि किस तरह वोलोद्या का टैंक जलने लगा। प्रशिक्षण विद्यालय के बाद वे दोनों, वोलोद्या और ईगोर यहाँ साथ आये थे। उन्होंने फैसला किया था कि अगर कुछ हो गया तो लिख देंगे। इसलिए उसने मुझे चिट्ठी लिखी थी। जब टैंक जलने लगा सब कूदकर बाहर आ गये, वोलोद्या भी। पर वह लेटकर गोलियाँ चलाने लगा ताकि सब भाग सकें। हो सकता है कि अगर वह भी फौरन भाग जाता... पर वह तो टैंक का कमाण्डर था।"यह अनुमान लगाना कठिन है," त्रेत्याकोव ने कहा। पर खुद उसने सोचा : यह तो फिर भी ठीक है अगर सब कुछ ऐसे ही हुआ जैसा कि उसने लिखा। यह भी हो सकता है कि वह टैंक में ही जल गया हो। "नहीं, यहाँ कोई अनुमान लगाना असम्भव है। मेरा भी एक जवान था, किसी भी तरह खन्दक से नहीं निकलना चाहता था। भय ने उसे जकड़ लिया, बाहर नहीं निकल पाया, और बस। वे जो निकल गये, जिन्दा हैं, पर वह मारा गया। गोला सीधा खन्दक में गिरा। वैसे तो यह बहुत विरली बात है कि गोला सीधा खन्दक पर ही गिरे। पर उसका भाग्य ही ऐसा था।""उसकी उम्र उन्नीस वर्ष की पूरी ही हुई थी," उसने तुलना करते हुए त्रेत्याकोव की ओर देखा, "आपकी उम्र बीस की है न?"

त्रेत्याकोव ने सिर हिला दिया। उसकी उम्र अभी बीस की नहीं हुई थी, पर लड़की की नजरों में एक साल बड़ा दिखना अच्छा लग रहा था।

"उसकी उम्र उन्नीस बरस की थी। उसे जब पिता के मारे जाने की सूचना मिली तो उसने माँ से छिपा लिया, सिर्फ झेन्का को, अपने छोटे भाई को बता दिया। वे दोनों माँ से बेहद प्यार करते थे। वह भव्य, सुन्दर महिला थी। चेहरा रूसी, हाँ, ठेठ रूसी महिला थी। पर कुछ-कुछ जिप्सियों जैसे नक्श भी थे। दोनों बेटों की शक्ल-सूरत माँ जैसी है। दोनों की आँखें बदामी और बाल घने घुँघराले।"

उसने त्रेत्याकोव के बालों पर नजर डाली : वह उसके सामने खड़ा था, और उसने नी से ऊपर तक उसे देखा। नहीं, उसके बाल काले नहीं, मुँडने के बाद पता नहीं कि रंग के बाल उग रहे थे। ल्यालका, उसकी बुद्धू, निष्ठावान बहिन, जिसके लिए व सबसे अच्छा था, कभी-कभी उसके बालों पर अपनी चोटी का सिरा रखकर पूछती : "माँ, मेरे बाल वोलोद्या के जैसे क्यों नहीं हैं? वह क्यों इतना सुन्दर है और मैं

बदसूरत?''

साशा की आँखें भाववेश के कारण चमक रही थीं, ठीक वैसे जैसे तब, जब वह अत्राकोवस्की को बता रही थी :

''...माँ ने उसकी इतनी मिन्नत की थी : 'सुन तो मेरे लिए यह बड़ी आसान बात है। सब ठीक हो जाएगा! तुझे कानूनी अधिकार है, तू जाने से इन्कार कर सकता है।' पर वह फौलाद की तरह अडिग था। उसकी माँ वास्तव में सब कुछ कर सकती थी। खुले बाजार में एक डबल-रोटी—आठ सौ रूबल की। वोद्का की बोतल—आठ सौ रूबल की। वह आपूर्ति विभाग की निदेशक जो थी। वह सब कुछ कर सकती थी। पर उसने डाक्टरी आयोग से यह छिपा लिया कि उसको दमे की बीमारी है और दौरे पड़ते हैं। उसने माँ को भी मना कर दिया। उसने माँ से कहा : 'अगर मुझे अयोग्य करार किया गया, तो याद रखना, तुम जिन्दगी भर के लिए मेरी दुश्मन हो जाओगी।' अब वह खुद को माफ नहीं कर पा रही है।''

बरामदे से नर्स तमारा गोर्व गुजरी, उसके हाथों में तौलियों में लिपटा इंजेक्शन की सूइया उबालने का गर्म पात्र था, उसने उन दोनों पर नजर डाली। साशा उछलकर खिड़की से उतर गयी, वह अपने नमदे के बूटों में तब तक खड़ी रही जब तक तमारा नहीं गुजर गयी। उसका कद उसके कन्धों जितना था। राख के रंग की दो चोटियाँ, दोनों हाथ जितना मोटी सी-कमर से नीचे तक लटकी थीं। कटे हुए बालवाली तमारा ने पास से निकलते हुए इन चोटियों पर एक नजर डाली।

त्रेत्याकोव ने जेब से 'बॉक्स' के मुसे पैकेट से एक सिगरेट निकाली। उसे पीने की इतनी इच्छा नहीं थी, जितनी कि अपने गाउन से आती अस्पताली गन्ध पर शर्म आ रही थी।

''लाइये, मैं जला लाती हूँ,'' साशा ने सहज भाव से कहा और उसके हाथ से सिगरेट लेकर किसी की जलती सिगरेट से सुलगाकर लाना चाहती थी : उसे यहाँ घायलों की सेवा करने की आदत पड़ चुकी थी।

''अभी कोई बाहर निकलेगा,'' उसने कहा।

सचमुच ही बरामदे के दूसरे सिरे पर झुककर दोहरा हुआ कोई घायल निकला। उसका खुला गाउन फर्श तक लटका हुआ था। उसने काले शीशे पर सिर टिकाया और वहाँ खिड़की के ढाँचे से उसके सिर के ऊपर उठता हुआ नीला धुआँ उड़ने लगा। त्रेत्याकोव ने उसकी सिगरेट से अपनी सिगरेट सुलगा ली। जब वह लौट रहा था, रीढ़ के घायलों के वार्ड का दरवाजा, जिसमें तमारा गयी थी, अधखुला था। सिरे के पलंग पर लेटा एक घायल व्यक्ति छोटे-से आईने में अपने को निहार रहा था। वह

चित्त लेटा, आईने को हाथ में पकड़कर अपने ऊपर घुमा रहा था, वह सिर मुँडने के बाद उगे छोटे-छोटे बालों को चुटकी में भरकर उनकी जाँच करता, उन पर कँघी करने की कोशिश करता। यह घायल युवा मार्टरमैन उम्र में गोशा से भी छोटा था। गोले के टुकड़े से उसकी रीढ़ में घाव लगा था, उसकी कमर से लेकर पैर तक फालिज मार गया था।

लौटने से पहले ही उसकी सिगरेट खत्म हो गयी, साशा ने उसे बुझती सिगरेट से दूसरी जलाने में मदद दी।

''वोलोद्या खुद्याकोव भी इसी तरह एक के बाद एक सिगरेट पीता जा रहा है।'' उसने कहा। ''एक फेंकता, दूसरी सुलगाता, फेंकता और सुलगाता। माँ इसके लिए मुझे माफ नहीं कर सकतीं कि वह इतना परेशान होकर गया। जब गाड़ी चल पड़ी वह दरवाजे पर खड़ा था, उस क्षण मेरे मन में उसके लिए अज्ञात भय छा गया। मुझे साफ-साफ महसूस हुआ कि उसके साथ कोई अनिष्टकारी घटना होनेवाली है, उसके चेहरे पर यह लिखा था।''

''यह तो अब लगता है।'' त्रेत्याकोव ने कहा, पर स्वयं उसके मन को आह्लादित करते हुए ये शब्द गूँज रहे थे : 'माँ मुझे माफ नहीं कर सकतीं कि वह इतना परेशान होकर गया।' पहले से किसी को कुछ मालूम नहीं होता।''

''नहीं, पूर्वाभास होता है।''

''वह तो होता है, पर हजार में से एक ही सही निकलता है। अच्छा ही है कि किसी को भी पहले से अपने बारे में कुछ मालूम नहीं होता। अगर मालूम होता तो ढंग से लड़ भी न पाते। ऐसे हरेक को आशा तो होती है।''

वह देख रहा था कि वह विश्वास करना चाहती है पर फिर भी अपने को ही दोषी मानेगी : जीवित हमेशा उन लोगों के समक्ष दोषी होते हैं जो न रहे।

वह खिड़की के पास खड़ा देख रहा था कि कैसे वे सब अपने पुराने स्कूल के आँगन में बिजली के खम्भे के पास जमा हुए, कैसे वे झुण्ड बनाकर आँगन को पार कर रहे थे। साशा समूर का तंग ग्रेटकोट पहने हुए थी, जो अब उसके लिए छोटा पड़ गया था। त्रेत्याकोव प्रतीक्षा कर रहा था कि वह मुड़कर खिड़कियों की ओर देखेगी। कोई बालक उनका पीछा कर रहा था और वे सब हँसते हुए दौड़ पड़े। रुक गये, शंटिंग इंजन के गुजरने की प्रतीक्षा में। साशा ने मुड़कर देखा ही नहीं। त्रेत्याकोव खड़ा देख रहा था कि कैसे वे चमचमाती पटरियों को उछलकर फाँदते हुए जा रहे थे।

''वोलोद्या!'' तमारा गोर्व ने उसे आवाज दी। तमारा की उम्र तीस से ऊपर हो

चुकी थी और उसने अपने मन में बिठा लिया था कि उसे कीतेनेव से बेइन्तहा प्यार है, अब वह उसकी शिकायत करेगी। वह पास जाकर, सावधानी से अपनी जख्मी टाँग को फैलाकर उसकी मेज पर बैठ गया।

"बोलो!"

तमारा उसकी ओर देख रही थी, और उसकी उभरी, छोटी-छोटी काली आँखें आँसुओं से भरकर बड़ी लगने लगीं। उसकी आँखों से आँसू बह निकले, वैसे ही जैसे कोई बर्तन से पानी उड़ेल रहा हो।

"वह ऐसा बुरा बर्ताव क्यों करता है?" पट्टी के टुकड़े से मेज पर टपके आँसुओं को सोखते हुए तमारा बोली। "वह इन्सान के साथ ऐसा व्यवहार क्यों करता है? मैं तो कुछ माँग नहीं रही हूँ, तुम ही बताओ! दवाई देने गयी, पर उसकी जगह कम्बल से ढका ग्रेटकोट पड़ा है... बोलो? मैं ही तो उसके लिए वह ग्रेटकोट, वह जैकेट लायी थी। मैं किस लिए लायी थी? बाहर बर्फीली ठण्ड हड्डियों में चुभ रही है, वह क्या पहनकर गया है?"

तमारा का चेहरा जिप्सियों की माँ-मरियम की तरह था, अगर जिप्सियों की माँ-मरियम होती भी है। पीला चौकोर-सा माथा चमकीली त्वचा से मढ़ा था, और तमारा निराशाजनक सीमा तक बदसूरत थी, इसी लिए तो उसने यह उन्मादी प्यार गढ़ लिया था। पर जब वह इस तरह रोती तो उसकी आँसूभरी आँखें बेहद सुन्दर लगतीं। कल कीतेनेव से मुलाकात होगी, वह जरा रोयेगा, और तमारा सब कुछ भूल जायेगी, उसके सारे गुनाह माफ कर देगी।

"...अब तो वह खुद मेरे पास आयी। पहले तो नाक ऊँची करके घूमती थी, किसी की तरफ देखती तक नहीं थी और अब खुद मेरे पास आयी और बोली : 'प्यारी तमारा, तुम कितनी सच थीं, मैं उससे कितना बड़ा धोखा खा गयी!..."

अपनी सच्चाई का कड़वा आभास... तमारा के लिए सिर्फ यही मिठास काफी थी।

गीले फाहे से तमारा मेज पर टपके अन्तिम आँसुओं को पोंछ रही है, गालों पर तो वे खुद ही सूख गये। आँखें फिर निर्मल हो गयीं, जैसे वर्षा के बाद ग्रीष्म की संध्या।

"वोलोद्या, तुम उसे कुछ मत बताना, ठीक है?"

और हल्के पैरों दौड़ती इंजेक्शन लगाने चली गयी।

लगता है, उसकी यहाँ यही भूमिका है : उसे बताकर लोग अपना दिल हल्का करते हैं, और वह सुनता है। ऐसे बताते हैं मानो वह अपनी जिन्दगी जी चुका हो,

या ऐसे जैसे रेल में अपने सहयात्री को बताते हैं, जिसके सामने शर्म नहीं आती : वह स्टेशन पर उतर जायेगा और बस, इतना ही काफी है।

वह वार्ड में लौट आया। यहाँ रोज की तरह शाम को शतरंज का खेल चल रहा था। कैप्टन अत्राकोवस्की एक कोने से दूसरे कोने तक टहल रहा था, वह मुँह पर हाथ लगाकर सावधानी से खाँसता। हथेली उसकी बड़ी, चौड़ी थी, जाहिर है कि उसका यह हाथ कभी मजबूत रहा होगा। अत्राकोवस्की ने उसकी ओर कौतूहल से देखा, पर खामोश रहा, फिर दूर जाने लगा।

वार्ड में बत्ती धुँधली थी, शाम को पढ़ना लगभग असम्भव था। अस्पताल में न जाने क्यों पढ़ने में जी भी नहीं लगता, किताबों में सब कुछ कृत्रिम-सा लगता है। पर अत्राकावस्की तो पढ़ता है। अखबार, किताबें—सब पढ़ता है। पिछली बार उसके पास शेक्सपियर की 'किंग लियर' पुस्तक देखी थी। जब उसने यह किताब उठायी तो उसके हाथ काँप उठे थे, अचानक घर की याद आ गयी। पिता की किताबों की अलमारी में शीशे के पीछे शेक्सपियर और शिलर साथ-साथ थे। भारी गहरे हरे रंग के खण्ड, चमड़े की जिल्दें, ट्रेसिंग पेपर से ढके चित्र। छात्र जीवन में ही उसने यह किताब पढ़ डाली थी, और चित्र तब देखता था जब पढ़ना तक नहीं आता था। अब पढ़ना शुरू किया तो समझ में कुछ नहीं आता। शब्द तो सब समझ में आते, पर 'ट्रेजेडी' का कारण क्या है, यह समझ में नहीं आता। क्या सचमुच ही युद्ध के दौरान इतना मूढ़ हो गया? या पहले किसी प्रमुख चीज को न समझता था? आखिर इतनी सदियाँ गुजर गयीं, पर अभी भी लोग किंग लियर से सहानुभूति रखते हैं, कैसे वह पागल होकर, मैदानों में यायावरी करता है। बचपन में वह भी सहानुभूति रखता था।

एक बार यह 'रिमर्क' पढ़ने को मिला : 'पार्श्व में लड़ाई का शोर। लियर, कोर्डेलिया और उनके सैनिक ढोल बजाते गुजरते हैं... और यहीं मानो ठोकर खाकर गिर गया। युद्ध का शोर। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में मारे गये लोग। पर उन्होंने पता नहीं एक दूसरे को किस लिए मार डाला : राजा ने बेटियों के बीच अपना राज्य सही नहीं बाँटा, और ये इतने सारे लोग मारे गये। पर सहानुभूति इनसे नहीं, मानो ये इन्सान ही न हों, बल्कि राजा से करते हैं...

वार्ड के कोनें में, सबसे अलग, गोशा और स्तारीख बैठे हैं। गोशा सदा की तरह पलंग के बीचों-बीच पालथी मारकर बैठा है। स्तारीख बराबर के पलंग से उसकी ओर झुककर अपनी कत्थई टाँट खुजाता धीरे-धीरे कुछ बोल रहा है। गोशा वार्ड का सबसे पुराना मरीज है और खिड़की के पास बिछा उसका पलंग सबसे बढ़िया माना जाता है। बहुत दिनों के बाद एक-एक करके वह वहाँ पहुँचा था। पर अस्पताल से छुट्टी

पाकर जाने के लिए कोई स्थान ही नहीं है उसके लिए, कोई उसकी बाट भी नहीं जोह रहा है। गोशा अनाथालय में पला, उसे अपने माँ-बाप तक याद नहीं। जब युद्ध पर जा रहा था—खुश था, अन्दरूनी घाव लगा—अस्पताल से मोर्चे पर भाग गया। पर असैनिक जीवन में लौटते हुए डरता है। उसके लिए यह अधूरा, एक मात्र पल बन गया कि कैसे वह दो बार लड़ने के लिए मोर्चे पर भागा था।

त्रेत्याकोव कम्बल के ऊपर ही लेट गया, बड़ी मुश्किल से उसने अपने अंगों : जख्मी हाथ, टाँग और बगल को बारी-बारी से फैलाया दीवार पर अत्राकोवस्की की परछाईं इधर-उधर घूम रही थी। न जाने क्यों आज वह सबका हमदर्द बन गया है? गोशा पर दया आ रही है, तमारा पर तरस आ रहा है और सच्ची-हमदर्दी तो चोटियोंवाली उस लड़की पर आ रही है।

अध्याय 15

दिन धीरे-धीरे लम्बे होने लगे थे। जनवरी की एक सुनहरी सुबह गोशा ने अस्पताल से विदा ली। उसने सबके साथ वार्ड ही में नाश्ता किया। विदाई से पूर्व उसका यह अन्तिम नाश्ता था। गोशा गया और वर्दी पहने लौटा। वे सब अस्पताली गाउन और स्लीपर पहने खड़े थे, पर गोशा ऊँचे फौजी बूटों में था, ग्रेटकोट पहने हुए : टोपी उसने हाथ में सम्भाल रखी थी, मानो सबके सम्मान में उसे उतार लिया हो।

प्रातःकालीन धूप में खिड़की के काँच पर जमी बर्फ चमचमा रही थी, किनारों पर पिघल रही थी; रँगा फर्श ऐसे चमक रहा था मानो अभी-अभी धोया गया हो, और पलंग फर्श पर उठ-से गये, उनके नीचे धूप और पायों की परछाइयाँ थीं। गोशा का पलंग अभी खाली था, किसी ने अभी उस पर अधिकार न जमाया था। दरवाजे के पास से ही उसने उस पर नजर डाली : गद्दे के ऊपर बिछी चादरें उठा ली गयी थीं, बिना गिलाफ के तकिया पड़ा था।

अखबार को खड़खड़ाता कीतेनेव पास आया और उसने एक बण्डल ऊपर से उसके ग्रेटकोट के अन्दर ठूँस दिया :

"गैरसैनिकों के लिए!"

गोशा समझ गया, मैं-मैं करने, हड़बड़ाने लगा, उसे निकालना चाहता था पर कीतेनेव ने उसकी कलाइयाँ पकड़ रखी थीं, छुड़ाना जरा कठिन था :

"ले लो, ले लो, तुम असैनिक जिन्दगी शुरू कर रहे हो। छोड़ो, इसमें है ही क्या!"

वार्ड के लोगों ने वे सब चीजें जमा कर दी थीं जिन्हें पिछले दिनों गोशा ताश के खेल में हार चुका था। ताश में भाग्य उसका साथ नहीं देता था, हो सकता है कि शान्तिपूर्ण जीवन में लौटने पर प्रेम में ही भाग्य उसका साथ दे।

खिड़की के काँच पर जमी बर्फ एक जगह पिघली हुई थी, वहाँ से दिखाई पड़ रहा था कि कैसे बाहर शान्त हवा में अहिस्ता-अहिस्ता बर्फ गिर रही है, उसका एक-एक कण हवा में देर तक तैरता रहता। गोशा फाटक पर पहुँचा, रबड़ के सोलवाले फौजी बूट अपने निशान छोड़ते जा रहे थे। फाटक से—दायें, बायें, और सीधे—सभी राहें उसके सामने खुली थीं। पर वह रुक गया, इन राहों में से किसी पर भी कदम रखने का वह साहस नहीं जुटा पा रहा था। धूप चमक रही थी, बर्फ के कण उड़-उड़कर उसकी टोपी और 'स्ट्रेपों' से सजे उसके कन्धों पर गिरते हुए जमते जा रहे थे। अपने 'स्ट्रेपों' के अनुसार वह सेकेण्ड लेफ्टिनेण्ट था, पर उम्र को देखते हुए अभी वह भरती को लायक भी न हुआ था। फिर भी वह युद्ध का अनुभव प्राप्त कर चुका था।

गोशा के बिना सूना-सूना लग रहा था। उदासी छा गयी, हरेक अपने रूमाल में डूबा हुआ था। दिन में पता नहीं कहाँ से स्तारीख धुत्त होकर आया, वह चिल्ला रहा था कि यहाँ पर सब नकली घायल हैं, असली घायल तो वही अकेला है, अपनी बैसाखी को घुमा रहा था, उसकी मदहोश आँखें पागलों जैसी थीं। उसे जबरन सुला दिया गया।

शाम होते ही वार्ड का दरवाजा खुला। बरामदे से आती सूर्यास्त की लालिमा में, मानो गुलाबी धुँध में, देहरी के पास स्ट्रेचर को मोड़ते हुए दो अर्दलियों ने कदमचाल की और गोशा के पलंग पर नये मरीज को लिटा दिया। ऊँचे कनटोप की तरह बन्धी ताजी पट्टियों में से पीला चेहरा, पीली गरुड़ीय नाक दिखाई पड़ रही थी। घायल चुपचाप लेटा था, वह थकान के साथ काली, देखने में अर्मनी आँखें खोलता और बन्द करता। उसकी आँखों का सफेद हिस्सा नीलिसा लिये हुए था। फौरन पता चला—हालाँकि इसमें विश्वास करना कठिन था कि गोली ने उसकी खोपड़ी को, भेजे को छेदते हुए आर-पार बाँध दिया : गोली एक कान के ऊपर से घुसी और दूसरे कान के ऊपर से निकली। पर वह जिन्दा है, सिर्फ बहुत शान्त, अत्यन्त वश्य है।

बरामदे में तमारा गोर्व आपरेशन थियेटर से निकलकर रूई में लिपटा उसकी जख्मी खोपड़ी का टुकड़ा दिखा रही थी जिसे आपरेशन के समय निकाला गया था। अन्दर से वह अखरोट के छिलके जैसा था। और रूई पर चटक, ताजे खून के धब्बे थे।

"उसे ढीली पट्टी बाँधी गयी है।" तमारा समझाने लगी। "वहाँ सब कुछ ऐसा है कि कुछ छेड़ा तक नहीं जा सकता।"

इसी तरह रूई को हाथ में पकड़े हुए उसने सहमी आँखों से कीतेनेव को नीचे से ऊपर तक देखा। कीतेनेव मुस्करा दिया। गाउन में भी वह सुन्दर लगता था, चौड़ी छाती, ऊँचा कद मानो चन्द रोज पहले तक कोई दूसरा ही दर्द से कराहता और दुहरा होकर चलता रहा हो। शीघ्र ही वह फौजी वर्दी पहन लेगा, परतले कस लेगा... तमारा की आँखें फैलने लगीं, उनमें आँसू छलक आये।

रात में किसी आकस्मिक अनिष्ट की आशंका से त्रेत्याकोव की नींद टूट गयी। अँधेरा छाया हुआ था, बर्फ से जमी खिड़की पर धुँधली चाँदनी बिखरी हुई थी। दरवाजे की दरार से बरामदे में फैला विद्युत प्रकाश अन्दर आ रहा था। सब कुछ हमेशा की तरह था, पर उसकी बेचैनी बढ़ती ही जा रही थी। अचानक मस्तिष्क में विचार कौंधा : घायल मर गया, वही, जो गोशा के पलंग पर है।

सावधानी से पलंग के नीचे रखे स्लीपर टटोलकर वह अण्डरवियर पहने ही धीरे-से उसके पास गया। पट्टियों के बीच से उसकी तीखी नाक निकली हुई थी। मृतक का दर्द स्याह चेहरा। आँखों के काले गड्ढों में सदा के लिए सिमटी-सिमटी पलकें! वह पूरा, जड़, सपाट पलंग के स्प्रिंगों में धँसा हुआ था। त्रेत्याकोव ने झुककर उसे घूरकर देखा। "मृत" की पलकों के नीचे पुतलियाँ काँपीं। उसकी आँखें खुल गयीं, सजीव, नींद से नम। वे त्रेत्याकोव को देखने लगीं।

"प्यास लगी है?" त्रेत्याकोव ने पूछा, उसकी बोलती बन्द होते-होते रह गयी थी।

वह उसे सावधानी से पानी पिलाने लगा, वह देख रहा था कि घायल कैसे क्षीण घूँट भर रहा है। इस क्षण वह उसका आभारी था कि जिन्दा है। उसने दो बार पलकें झपकायीं : बस, काफी है, शुक्रिया।

"सो जाओ। अगर जरूरत हो तो बुला लेना, संकोच मत करना।" त्रेत्याकोव ने कहा।

कन्धों पर गाउन डालकर वह सिगरेट पीने के लिए कारिडर में निकल आया। यहाँ ठण्ड थी। हवा की दिशा बदल गयी थी। दक्षिण-पश्चिमी हवा, उनके दक्षिण-पश्चिमी मोर्चे से आ रही थी। पर वह उन मैदानों से यहाँ तक न लोगों की आवाजें, न गोलियों की धाँय-धाँय, न विस्फोटों के धमाकों का शोर ला सकती थी। यहाँ युद्ध की गरज सिर्फ फिल्मों में ही सुनाई पड़ती है और बालक फिल्म के बाद डण्डों की बन्दूकें बनाकर दौड़ते फिरते हैं। और वहाँ, जहाँ युद्ध हो चुका है, बच्चे भी युद्ध का खेल नहीं खेलते।

नाइट ड्यूटी पर तैनात नर्स टेबुल पर सिर टिकाये सोयी हुई थी। वह वार्ड की घुटनभरी, साँसों की गर्मी में लौट आया, कम्बल के नीचे ठिठुरकर काँपा। नींद तुरन्त न आयी। दिन में भी पता नहीं क्यों उसे बेचैनी और किसी अनिष्ट की आशंका ने घेर रखा था। जब अस्पताल में फिर स्कूली बच्चे आये तो उसने देखा कि उनके बीच साशा नहीं है। "उसकी माँ को अस्पताल ले जाया गया है..." उस लड़के ने बताया जो उसके साथ मंच पर मैंडोलिन लेकर आता था। खुद यह जाने-समझे बिना त्रेत्याकोव ने भली प्रकार यह जान लिया कि साशा कहाँ रहती है, उसका पता क्या है, और रात के खाने के बाद उसने एक फैसला कर ही लिया। उसने आँख से आँख मिलाये बिना कीतेनेव से कहा :

"कैप्टन, अपना ग्रेटकोट मुझे दे दो, आज के लिए।"

"ओ हो!" कीतेनेव खुश हो गया। "आजकल जई का दलिया खिलाने का यह नतीजा है।"

त्रेत्याकोव को तैयार होने में दोस्तों ने मदद दी। बस, इसी क्षण उसे ऐसा लगा कि एक हाथ काम करना कितना मुश्किल होता है : न कमीज पहन सकता है, न गेटर ही बाँध सकता है।

स्तारिख ने, जिसकी टाँग प्लास्टर में जकड़ी थी, खुद उसके पैरों पर गेटर लपेटे। अत्राकोवस्की तक ने उसे तैयार करने में मदद दी : उसके तकिये के नीचे जमा कुछेक अखबारों में से, जिनमें वह कुछ रेखांकित करता, अपने लिए पेंसिल से कुछ नोट लिखता, उसने दो छाँटे और उन पर आखिरी नजर डालकर बोला :

"इनसे इसके पैर लपेट दो।"

"इसकी जरूरत नहीं है।" ऐसी मदद को स्वीकार करने में शर्म महसूस करते हुए त्रेत्याकोव इन्कार करने लगा। "ऐसी बर्फीली ठण्ड नहीं है।"

कीतेनेव, खुश की तरह, सबको काम बाँटकर, उन सबके ऊपर खड़ा कहने लगा :

"जब यहाँ से मुझे छुट्टी मिलेगी तो देखो मैं तुम्हें क्या-क्या छोड़ कर जाऊँगा : ग्रेटकोट—यहीं रहेगा, जैकेट यहीं रहेगी, बूट..."

"अरे, यह है क्या! मैं जब सैनिक अस्पताल में था, वहाँ हमारे पास," स्तारीख का चेहरा झुकने के कारण तमतमा गया था, उसकी टाँट तक लाल हो गयी थी। "हमारे पास वहाँ गद्दों के नीचे दो पिस्तौलें भी रखी थीं। अस्पताल का चिकित्सा अधिकारी हर वार्ड में बेधड़क जाता, पर हमारे यहाँ आने से डरता। डरता क्यों था? हमारे वार्ड से एक कैप्टन को पिछवाड़े के अस्पताल में भेजने लगे थे, उसे मुर्दे की

तरह कपड़े पहना दिये गये; पराया ग्रेटकोट, गोशा वाले से उन्नीस नहीं था, और तो और एक आस्तीन भी नदारद। वह बोला : 'हरामजादे! मैं अभी तेरे तीन हिस्से किये देता हूँ, और मातृभूमि मुझे इसके लिए धन्यवाद ही देगी...'' इसके बाद वह हमारे वार्ड में घुसने से पहले दरवाजा खटखटाता था।''

गोशा के पलंग पर पट्टियों में लिपटा, नीबू जैसा पीला चेहरा, कैदियों जैसी काली दाढ़ी और जख्मी सिरवाला सीनियर लेफ्टिनेण्ट आवेतिस्यान यह सब मौन होकर देख रहा था। अब तक वार्ड में किसी ने उसकी आवाज नहीं सुनी थी। त्रेत्याकोव को ग्रेटकोट पहना दिया गया, बायीं खाली आस्तीन के साथ कमर पर पेटी कसकर बाँध दी गयी, और तभी कोतेनेव को ख्याल आया :

''रुको! मैं अभी तमारा से ऊनी स्वेटर माँगकर लाता हूँ। वह दे देगी। नहीं तो खाली कमीज में ठिठुर जाओगे।''

पर त्रेत्याकोव को यह कल्पना करके ही पसीना आ गया कि साशा उसे जनाने स्वेटर में देखेगी।

जैसा कि उचित था, नियमानुसार पहले भेदिये भेजे गये, इसके बाद ही कोतेनेव उसे सुरक्षित रास्तों से अस्पताल के बाहर निकाल लाया।

फाटक के बाहर, गहरी बर्फ में, तारों से बिखरे आकाश तले, पहली बार, जबसे उसे वार्ड में बन्द किया गया, उसने पाले की ठण्डी हवा में साँस ली, ताजगीभरी सर्द हवा उसके फेफड़ों की गहराइयों तक पहुँच गयी, आदत छूट जाने के कारण उसको खाँसी तक आ गयी। पर वह मन ही मन खुश था कि खुली हवा में साँस ले रहा है, बर्फ पर चल रहा है और खुश था कि साशा के पास जा रहा है।

बूट तले जमी बर्फ किच-किच कर रही थी, तापमान शायद शून्य से पन्द्रह-एक डिग्री नीचे था : जब गहरी साँस लेता तो नथुने थोड़ा सा चिपक जाते। ग्रेटकोट के अन्दर पट्टियों में लिपटे हाथ को सीने से चिपकाए हुए—गरमाहट महसूस करता—और दूसरे हाथ से कानों को बारी-बारी से गर्म करता, हथेली से गालों पर टपकते आँसुओं को झाड़ता चल रहा था। सामने की सर्द हवा आँखों में चुभ रही थी, अनभ्यस्त आँखों से आँसुओं की धार बहती जा रही थी।

दो का गश्ती दस्ता सधे कदमों में, दोनों के स्कन्ध स्ट्रैपों के ऊपर निकली रायफलों की नालों को झुलाता हुआ स्टेशन के सामनेवाले चौक में सड़क की बत्ती के नीचे से गुजरा। वह घर के पीछे ओट लेकर उनके गुजरने की प्रतीक्षा करने लगा—अन्यथा पूछने लगेंगे : कौन? क्यों? किस लिए? देखने में वह भगोड़ा लगता है : ग्रेटकोट पर स्कन्ध स्ट्रैप नहीं है, खाली आस्तीन पेटी में खुँसी हुई है—कहाँ से

ऐसी मूरत आयी है? सब कुछ समझाने से तो भला यही है कि नुक्कड़ के पीछे छिपकर इंतजार कर ले।

वे धीरे-धीरे आगे निकल गये, पूरे चौक में वे ही सबसे बड़े थे : वे उधर स्टेशन की इमारत में हाथ-पाँव गर्म करने जा रहे थे। वह उनके जाने का इन्तजार करता खड़ा रहा, इंजन की भाप का सफेद बादल उड़ता आया, उसने नम गर्मी और कोयले के धुएँ की गन्ध से उसे ढक दिया। गश्ती दस्ते को निगलकर स्टेशन का द्वार धड़ाम से बन्द हो गया। त्रेत्याकोव छाया में चलता हुआ पटरियों को पार कर गया। जैसा कि उसे समझाया गया था, ये रहे वे दो चौमंजिले घर जिनकी खिड़कियाँ रेल की लाइन की ओर खुलती हैं।

किनारे के प्रवेश-द्वार के पास, जहाँ बर्फ पर खिड़की की रोशनी पड़ रही थी जिसे चौखटे की परछाई ने काट रखा था, वह अचानक सकुचा गया : आखिर कौन उसका यहाँ इन्तजार कर रहा है! तब तो दौड़ा-दौड़ा आ रहा था, खुश हो रहा था, पर अब उसने अपने पर निरपेक्ष दृष्टि डाली और सारी दृढ़ता उड़नछू हो गयी।

पर्दे के ऊपर से खिड़की में केरोसीन के स्टोवों की कालिख से ढकी रसोई की छत दिखाई पड़ रही थी। त्रेत्याकोव बर्फ में जमे ड्योढ़ी के चरमराते तख्तों पर खड़ा कुछ देर तक पैर बदलता रहा, उसने दरवाजा हाथ से पकड़ा। वह खुला हुआ था। बरामदे में पैरों से कुचली बर्फ पड़ी थी, यहाँ उतनी ही ठण्ड थी जितनी कि बाहर सड़क पर। प्रवेश-द्वार के ऊपर, पाले में, बिना शेड का, कार्बन के कॉयलवाला बल्ब धीमा-धीमा चमक रहा था। दो फ्लेटों के दरवाजे। पत्थर का जीना दूसरी मंजिल पर जा रहा था। कौनसे दरवाजे को खटखटाये? एक पर सर्दी से बचाव के लिए टाट मढ़ा हुआ था और दूसरे पर—काली कटी-फटी किरमिच। उसने पेटी से कसा ग्रेटकोट नीचे से खींचकर ठीक किया, तनकर टोपी को एक कान के ऊपर झुका लिया और अन्दाज से बर्फीली चमकवाले किरमिच मढ़े दरवाजे को खटखटाने लगा। उसके अन्दर भरी रूई ठक-ठक की आवाज को दबा रही थी। उसने कुछ प्रतीक्षा करके फिर खटखटाया। कदमों की आहट सुनाई पड़ी। दरवाजे के पीछे से नारी स्वर सुनायी दिया :

''कौन है?''

त्रेत्याकोव ने चुस्ती लाने के लिए खाँसकर पूछा :

''जी, क्या साशा यहीं रहती है?''

थोड़ी खामोशी के बाद।

''कौनसी साशा?''

अभी उसको ख्याल आया कि वह तो उसका पूरा नाम तक नहीं जानता। 'ऐसी सुन्दर चोटियोंवाली' वह कहना चाहता था पर उसने कहा :

"पता चला कि उसकी माँ को अस्पताल ले गये हैं..."

"ले गये हैं, तो का हुआ?"

'का हुआ, का हुआ...' अरे, दरवाजा तो खेलिये।

"साशा को बुला दीजिये, कृपया। क्यों हम दरवाजे के पीछे से बात कर रहे हैं? मैं सैनिक अस्पताल से उसके पास आया हूँ।"

फिर देर तक सन्नाटा छाया रहा। संकल खटकने की आवाज हुई, दरवाजा थोड़ा-सा खुला; रोयेंदार शाल के नीचे से निकला किसी नारी का स्थूल हाथ उसे पकड़े हुए था। मुँह सूजा-सा था, उसके पीछे से अँगीठी की गरमाहट और मिट्टी के तेल का भभका आया।

"हमें पता चला है कि उसकी माँ को अस्पताल ले गये हैं," त्रेत्याकोव यूँ बोल रहा था मानो वह पूरी लाल सेना की ओर से भेजा गया हो। साथ ही मुस्कराते हुए अनुकूल प्रतिक्रिया उत्पन्न करना चाहता था, वह इस प्रकार खड़ा था कि बल्ब के धूमिल प्रकाश में वह सिर से पैर तक समूचा दिखाई दे : यानी कि उसे देखकर भय की गुँजायश ही न रह जाय।

औरत उसे पहले की तरह संशय के साथ देख रही थी, संकल नहीं उतार रही थी :

"तुम, आखिर उसके कौन हो?"

"आपको यह सब जानने की कोई जरूरत नहीं। साशा रहती तो यहीं है न?"

"हाँ, यहीं।" औरत ने आवाज तानकर उत्तर दिया।

"कृपया, उसे बुला दीजिये।"

"पर वह नहीं है।" औरत ने फिर उसी ढंग से कहा।

त्रेत्याकोव को महिला की यूराली बोली अटपटी लग रही थी : वह ऐसे जवाब दे रही थी मानो खुद उसी से सवाल पूछ रही हो।

"साशा है कहाँ?"

"अस्पताल ही गयी है।"

उसने यह सोचा भी न था कि इस वक्त साशा घर पर न मिलेगा। बाहर ड्योढ़ी पर निकलकर उसे ख्याल आया : कम से कम यह तो पूछ ही लेना चाहिए था कि काफी कब गयी है? वापस कब तक आयेगी? उसने मुड़कर देखा पर लौटा नहीं।

सर्द हवा से बचने के लिए घर के नुक्कड़ के पीछे जाकर उसने इंतजार करने का फैसला किया। वह खड़े-खड़े पैर पटक रहा था ताकि वे बर्फ से जम न जायें। हालाँकि हिमपात इतना तेज नहीं था फिर भी सिर्फ ग्रेटकोट में ही देर तक खड़ा नहीं रहा जा सकता। विशेषकर पीठ का घाव ठण्ड में अकड़ रहा था। चन्द रोज पहले ही उसकी पट्टी उतारी गयी थी, वहाँ सब कुछ अभी संवेदनशील था।

उसके पास घड़ी नहीं थी कि वह समय का अनुमान लगा पाता, फिर इंतजार की घड़ियाँ तो हमेशा लम्बी लगती हैं। उसकी घड़ी तो वहाँ, खाई ही में चिकित्सा अर्दली ने उतार ली थी, जब वह घायल हुआ था। उसने खून रोकने के लिए बाँह पर कसकर पट्टी बाँध कर कहा था : 'टाइम देख लो। आधे घण्टे बाद पट्टी खोलनी है नहीं तो हाथ सुन्न हो जायेगा, बेकाम हो जायेगा।' त्रेत्याकोव ने घड़ी निकाली, और उसने यह भी पूछा था : 'सोवियत है?'

यह उसके जीवन में पहली घड़ी थी। तीन हफ्ते तक हर रोज सुबह वह लाइन में अपना नम्बर लिखवाने जाता था। वह शीशे के ऊपर जालीवाली कलाई-घड़ी विशेषकर पसन्द करता था। ऐसी, जालीवाली घड़ी, उनकी क्लास में कोपीतिन के पास थी। वह उसे कलाई पर बाँधता था, क्लास में अकसर उसे देखता था : हाथ को आगे बढ़ाता और दूर से देखता, जैसे उसे पास से ठीक नहीं दिखाई देगी। जब अन्ततः उसकी बारी आयी तो कलाई-घड़ियाँ खत्म हो चुकी थीं, उसके हिस्से द्वितीय राजकीय घड़ी कारखाने की बनी बड़ी, गोल, मोटी जेबी घड़ी आयी। उसका मूल्य पचहत्तर रूबल था, वही, युद्ध से पहले के पचहत्तर रूबल। उसने यह राशि खुद कमायी थी : दफ्तरों के लिए पर्व के अवसर पर लाल कपड़े पर पोस्टर बना-बनाकर। सिर्फ फील्ड-अस्पताल में, आपरेशन के बाद ही उसे पता चला कि घड़ी नहीं है। घड़ी का तो उसे इतना दुःख नहीं था, जितना कि उन यादों का जो उसके साथ जुड़ी थीं, वह उसे घर से जो लाया था।

आखिरकार वह एक हाथ से सिगरेट सुलगाने में सफल हो ही गया। सिगरेट के धुएँ से गर्मी पाता, पैर पटकता खड़ा था। जब उसे मुँह में जलते कागज का स्वाद महसूस हुआ, उसने टोंटा फेंक दिया। नुक्कड़ के पीछे से आती हवा उसे उड़ा ले चली, बर्फ पर चिंगारियाँ उड़ने लगीं। नहीं, देर तक ऐसे नहीं खड़ा रहा जा सकता। अपने पर क्रुद्ध होते हुए वह अनिच्छा से सैनिक अस्पताल की ओर जाने लगा।

दूर, रेल की पटरियों, सिगनलों के ऊपर—साफ कटी, विशाल, कृत्रिम-सी लगनेवाली चाँद की हँसिया लटकी थी। सड़क नीचे की ओर जा रही थी, आगे चाँद सिगनल के पीछे उतरने लगा। कहीं रेल की पटरियों पर, पाले में बैठी-सी आवाज में इंजन चीख पड़ा। उसकी ओर चीत्कार से त्रेत्याकोव की तंद्रा भंग हो गयी, वह

मुड़कर उल्टे पैर चल पड़ा। वह जल्दी-जल्दी चल रहा था मानो उसे डर था कि कहीं उसकी चुस्ती खो न जाये। उसने फिर वही दरवाजा खटखटाया। वह फौरन खुल गया।

"कृपया आप मुझे माफ कर दें, मैं आपसे पूछना भूल गया : कहाँ है वह जगह जहाँ साशा गयी है? वह अस्पताल?"

महिला ने साँकल उतार दी :

"अन्दर आ जाओ, घर में ठण्ड भरने की क्या जरूरत है।"

उसने प्रवेश किया। बिना भौंहोंवाले चेहरे से ललौंही-भूरी आँख उसे घूर रही थीं। सूजे-से चेहरे पर बस वही दिखाई दे रही थीं।

"साशा काफी देर हुए वहाँ गयी है?"

"देर तो इतनी हुई नहीं, पर काफी वक्त हो चुका है।"

वह उसे निहार रही थी, और जितना उसे निहारती जाती उतनी ही दया का भाव उसमें भरता जाता।

"यह अस्पताल यहाँ से दूर है?"

"यह अस्पताल कहाँ, अस्पताल तो शहर में है, यह तो बैरकें हैं जो छूत की बीमारियों वाले मरीजों के लिए हैं। साशा स्कूल से लौटी और माँ को ले जाया जा चुका था। ओह, बुरा हाल था उसका, बिल्कुल बुरी हालत थी। वह उसके पीछे-पीछे ही दौड़ती गयी। देखती हूँ—लौट आयी। मैंने कहा, 'साशा तू रुक जा, मेरा वसीली काम से लौटेगा तो हम इवान दनीलिच से पूछेंगे'।"

"कौन है यह इवान दनीलिच?"

"इवान दनीलिच को तुम नहीं जानते?" उसको आश्चर्य हुआ कि कोई ऐसा भी है जो उन्हें नहीं जानता। "इलाके के सैनिक कमिश्नर हैं इवान दनीलिच, मेरे पति के बड़े भाई। 'तू साशा, रुक जा, उनसे पूछें...' वह कुछ नहीं बोली, और एक कौर तक उसने नहीं तोड़ा। चुहिया की तरह घर में एक कोने से दूसरे कोने तक दौड़ने लगी। अँधेरा हो चुका था, मुझे सुनाई पड़ा कि वह फिर भाग गयी।"

"तो इन बैरकों को ढूँढ़ा कैसे जा सकता है?"

"यह तो बड़ा आसान है।"

फिर उसके ग्रेटकोट, पेटी में खोंसी हुई खाली आस्तीन को संशय की दृष्टि से देखा।

"कोल्या म्यागोतिन सड़क को तो जानते होंगे?"

"जानता हूँ?" त्रेत्याकोव ने सिर हिलाया, उसे आशा थी कि आगे की बात से

उसे पता चल जायेगा कि कोल्या म्यागोतिन सड़क है कहाँ। और खुद गर्मी को सोख रहा था, उसे ग्रेटकोट के अन्दर भरती गर्मी महसूस हो रही थी।

"तो इसी सड़क पर चलते-चलते तोबोल नदी तक चले जाओ।" और रोयेंदार शाल को पकड़े-पकड़े बायें हाथ से खिड़की में पटरियों के पार—तोबोल नदी से बिल्कुल उल्टी दिशा की ओर इशारा कर रही थी।

"मतलब, अगर स्टेशन से चलें, तो यह ऐसी चौड़ी-सी सड़क होगी न?"

"हाँ, हाँ। जैसे ही तोबोल तक पहुँचोगे तो दायें ही दायें चलते जाना।"

शाल को बायें हाथ से पकड़कर वह दायाँ हाथ हिला रही थी। दिमाग में उसने सब उल्टा कर दिया क्योंकि वह तोबोल की ओर पीठ किये खड़ी थी और सब कुछ उल्टा बता रही थी।

"समझ गया। मतलब, तोबोल तक पहुँचकर दायें मुड़ना है। तोबोल—पश्चिम में है? मेरे कहने का मतलब है कि सूरज तोबोल के पीछे डूबता है न?"

"तोबोल के पीछे। और कहाँ डूबेगा वह?"

"समझ गया।"

अब वह दिशा-विन्यास को समझने लगा था। अस्पताल के बरामदे की खिड़की से रोज उस तरफ अस्ताचलगामी सूर्य दिखाई देता था।

"और भी सरल रास्ता है : कोल्या म्यागोतिन सड़क पर पहुँचकर गोगोल मार्ग पर दायें मुड़ना है। फिर सीधा रास्ता है। उसके बाद दायें : पुश्किन सड़क है या लेर्मोन्तोव, खैर उस पर भी दायें मुड़ना है। और फिर वहाँ सीढ़ियों पर चढ़ते जाना..."

"बैरकें वहीं हैं?"

"नहीं, वह एकदम नहीं आयेंगी। पहले कब्रिस्तान आयेगा। तोबोल तो एक तरफ मुड़ जायेगी।

कब्रिस्तान—यह पक्की पहचान है। पूछने पर तो कोई भी उसे कब्रिस्तान का रास्ता बता देगा।

"और कब्रिस्तान के पीछे वे हैं। आगे कुछ नहीं है, सिर्फ खड्ड है।"

"शुक्रिया," त्रेत्याकोव बोला। हालाँकि अस्पष्ट-सा ही सही, फिर भी उसे कुछ अन्दाज हो गया। दरवाजे को पकड़कर उसने अनुरोध किया। "अगर साशा आ जायेगी तो उसे मेरे बारे में कुछ नहीं बताइयेगा। ढूँढ़ रहा था, नहीं ढूँढ़ रहा था, आप उसे यह कुछ मत बताइये! नहीं तो उधेड़बुन में पड़ जायेगी..."

और उसकी हैरान निगाहों से वह समझ गया : जरूर बता देगी। घर में घुसने से पहले ही सब कुछ बता देगी।

अध्याय 16

उसे नाश्ते के वक्त भी न जगाया गया। नींद में त्रेत्याकोव को कई स्वर सुनाई दिये, एक बार उसे अपने ऊपर कीतेनेव की आवाज बिल्कुल पास से सुनाई पड़ी।

"उसकी नींद बड़ी खराब है। सारी रात करवटें बदलता रहा..."

उसकी आँख शोर से खुली। वार्ड के बीचों-बीच मेज के पास कई लोग जमघट लगाये हुए थे, काँच से काँच के टकराने की आवाज आ रही थी, शीशे की सुराही से कोई चीज उण्डेली जा रही थी।

"हाँ... तो अब किसे?" कीतेनेव ने तेजी से पूछा। "अत्राकोवस्की को मनाही है। रोयजमान!"

उसने रोयजमान की आस्तीन पकड़ी, उसकी उँगलियों में धुँधला-सा गिलास थमा दिया :

"चलो!"

त्रेत्याकोव को गिलास से उठती देसी दारू की तीखी गन्ध महसूस हुई, वह उठकर बैठ गया :

"तुम लोग सवेरे-सवेरे किस खुशी में पी रहे हो?"

कीतेनेव ने उसकी ओर देखा :

"तू अभी थोड़ी देर और खर्राटे लेता। हमारी फौज बर्लिन के पास पहुँच रही है और यह है कि अभी सोकर ही उठा है।"

"बताओ भी, दरअसल हुआ क्या है?"

पर उसके हिस्से की गिलास भर दी गयी थी :

"खत्म कर! पूछताछ बाद में करना।"

और लोगों ने फौरन उसे बता दिया :

"अवेतिस्यान के बेटी पैदा हुई है।"

उनींदी चेतना में वह यह फौरन न जोड़ सका कि अवेतिस्यान वही सीनियर लेफ्टिनेण्ट है, जो सिर में आर-पार घायल है, जिसने उसे रात का डरा दिया था। उसने गिलास ऊँचा उठाया, उसे दिखाने के लिए, कि उसकी सेहत के लिए पी रहा है। वह चेहरे पर कोई शिकन न आने देने का प्रयास करता हुआ पीने लगा ताकि सबकी नजरों में उसकी मर्दानगी बुलन्द रहे। जैसे-जैसे गिलास की पेंदी ऊपर की ओर उठकर उलटती जा रही थी, स्तारीख उसके साथ-साथ अपनी नजरें उठा रहा था, और

दूर से उसकी मदद करते हुए, उसने घूँट तक भर डाली। तभी उसे भी लबालब भरा गिलास थमा दिया गया। यद्यपि सभी हड़बड़ा रहे थे, दरवाजे की ओर मुड़-मुड़कर देख रहे थे, पर वह एकदम गम्भीर हो गया : पुनीत क्षण आ गया था। उसकी आँखें चमकने लगीं, उसने सबकी ओर नजर दौड़ायी, मन ही मन आत्मकेन्द्रित हो गया :

"हूँ!..."

सिर हिलाकर, फेफड़ों से हवा बाहर फूँक दी, फिर आँखें मूँदकर ताजा हवा खींचने लगा। अचानक वह नीला पड़ने लगा, खाँसी आ गयी, आँखें फूलकर बाहर को निकल आयीं :

"ह-हरामजादो! किस ने पानी भरा है?"

ठहाका गूँज उठा। कीतेनेव हथेली से आँसू पोंछ रहा था :

"ज्यादा लालच मत कर। मैं दूसरे के लिये रहा हूँ—और यह है कि आँखों से ही पिये जा रहा है। कायदे से तो तुझे बिल्कुल भी नहीं दी जानी चाहिए। जब हम रक्षापाँत में थे तो हमारे यहाँ यह कड़ा नियम था : चार गिलास भरते थे, तीन में स्पिरिट और एक में पानी। किस गिलास में क्या है, यह वही जानता था जो उन्हें भरता था। उठाते और पी जाते। लेकिन किसी के चेहरे पर शिकन तक न आती कि आखिर उसके हिस्से क्या आया। और यह देखो बड़ा बुद्धिजीवी आया है : पानी से ही खाँसने लगा।"

उसने सुराही में बची दारू अपने और स्तारीख के लिए बराबर-बराबर डाल ली। ठीक दो गिलास ही बचे थे :

"ले, पकड़, अब खाँसना नहीं!"

इसके बाद शीशे की सुराही झट-पट धो दी गयी और उसमें नल से पानी भर दिया गया। कीतेनेव ने उसे तौलिये से पोंछकर सुखा दिया और मेज के बीचों-बीच यथास्थान रख दिया। उसने मेज पर शतरंज की बिसात भी बिछा दी : लोग शतरंज खेलने लगे, लाभदायक दिमागी कसरत में व्यस्त हैं। और रेडियो की आवाज भी तेज कर दी गयी।

हुआ यह कि कल शाम अवेतिस्यान, खामोशी तोड़ते हुए पहली बार अचानक बोला : 'मेरे यहाँ नन्हीं-सी बेटी ने जन्म लिया है।' पर दुबले चेहरे पर जड़ी दो बड़ी-बड़ी आँखें पूछ रही थीं : बेटी का बाप जिन्दा भी बचेगा? लेकिन आम राय यही थी कि बच जायेगा। बस, फिर क्या था? इस मौके पर जाम उठाने का फैसला भी हो गया। जब पूरी तैयारी हो गयी और वे शुरू करने ही वाले थे कि वार्ड में मेडिकल आफिसर आ धमकी जिसे सभी मरीज आपस में 'टैंक' कहकर पुकारते थे। उसकी

उम्र कोई पच्चीस-एक साल की होगी, उसका पति कहीं उत्तर में, कारेलिया में मोर्चे पर तैनात था। हालाँकि वह यदा-कदा नजरों से अस्पष्ट-सा इशारा करती पर उसे घर तक पहुँचाने की हिम्मत किसी में न होती। चंगे होनेवालों तक में ऐसा कोई साहसी नहीं मिला : वह बहुत मजबूत, गठीली थी, परतले की पेटियाँ छाती के ऊपर से कसी हुई मुश्किल से ही कमर की पेटी तक पहुँचतीं।

वही वार्ड में आयी जब त्रेत्याकोव सो रहा था। मेज के बीचों-बीच देसी दारू से भरी शीशे की सुराही रखी थी। वार्ड में कुछ छिपाने के प्रयास में तो जल्द ही पकड़ा जा सकता है, और ऐसे तो सुराही अपनी जगह रखी है, किसी को उसकी जाँच करने का ख्याल भी नहीं आयेगा। पर मेडिकल आफिसर को पानी कुछ मटमैला लगा। यह अव्यवस्था देखकर, और जाहिर है कि घायलों के स्वास्थ्य की चिन्ता करते हुए उसने सुराही को वहाँ छाये गहरे सन्नाटे में उठाया और एक बार फिर उसे रोशनी की तरफ करके देखा, क्रोध में भवें सिकोड़ीं, शीशे की डाट निकाली, उसे जरा सूँघा और चकित रह गयी। उसे खुद पर विश्वास न हुआ, उसने गिलास में थोड़ा-सा उड़ेलकर चखा और तत्काल अस्पताल के अधिकारी को बुलाने के लिए दौड़ पड़ी।

त्रेत्याकोव प्लेट में रखा जौ का दलिया समाप्त कर रहा था, जो जेली की तरह जमकर ठण्ड हो गया था। वार्ड में सभी ऐसे गम्भीर बैठे थे, जैसे कि ठहाका अब फटने ही वाला हो। रात में त्रेत्याकोव देर तक सोया न था और अब जरा गला तर हुआ तो उसकी आँखों को सब कुछ साफ-साफ दिखाई पड़ने लगा, मानो उसे कोई नयी दृष्टि मिली हो। शीत ऋतु का हिम उजास खिड़की के बाहर फैला धुँधला आकाश और काँच के उस पार जमा बर्फ का ढेर भी आज कोई विशेषता लिये हुए था। पेड़ की हर टहनी बर्फ से ढकी होने के कारण दुगुनी मोटी हो गयी थी, जिससे आच्छादित वह झूल रही थी।

वह उन सबकी ओर देख रहा था और इसके साथ ही उसे दिखाई पड़ रहा था कि कैसे वह साशा के साथ शहर की सड़कों पर जा रहा है और चाँद उन्हें रास्ता दिखा रहा है। हो सकता है कि यह न भी हुआ हो?

वह तो तब इन बैरकों को ढूँढ़ पाने की आशा ही खो बैठा था। आखिर में अपने पर खीज रहा था : वह क्यों जा रहा है? कौन उसकी बाट जोह रहा है? और कई बार वह वापस लौटने के लिए मुड़ता पर बाद में फिर पलटकर आगे बढ़ने लगता। और मन ही मन वह कल्पना करता कि साशा उसे देखकर कितनी खुश हो जायेगी, हैरान रह जायेगी। पर साशा ने उसे नहीं पहचाना। वह ड्योढ़ी के सामने खड़ी थी, छत से बर्फ तेजी से झड़ रही थी, दरवाजे के ऊपर लटकी बत्ती ऐसे चमक रही थी

मानो धुएँ से घिरी हो।

"साशा!" उसने आवाज दी।

वह मुड़ी, सिहरकर पीछे हटी।

"साशा," कहता हुआ वह उसकी ओर बढ़ा। फिर कुछ सोचकर रुक गया। "मैं हूँ, साशा, मैं ही हूँ। मुझे पड़ोसिन ने बताया था कि तुम्हारी माँ बीमार पड़ गयी है।"

सिर्फ तभी वह कुछ समझ पायी, उसे पहचानकर वह रो पड़ी। रोती जाती और दस्तानों से आँसू पोंछती जाती :

"मुझे यहाँ से वापस जाते हुए डर लग रहा है। वह इतनी दुबली है, इतनी दुबली कि सिर्फ नसें ही दिखाई पड़ती हैं। उनमें रोग से जूझने की शक्ति नहीं बची है।"

वह अपनी पीठ का रुख उसकी तरफ करके उसे ठण्डी हवा से बचा रहा था। जबकि खुद भी इतना ठिठुर गया था कि होंठ कुछ बोल ही न पा रहे थे। जब वे वापस जा रहे थे तो साशा ने पूछा :

"ग्रेटकोट के नीचे कुछ है भी तुम्हारे?"

"है।"

"क्या?"

"दिल।"

"तुमने नीचे कुछ भी नहीं पहन रखा है?" साशा घबरा गयी। "चलो, अब जल्दी से बढ़ लेते हैं।"

वह मानो लकड़ी के पैरों पर चल रहा था, बूटों में उँगलियों के स्थान पर कुछ अचेतन, सूजा-सूजा-सा लग रहा था। बगल में साशा के नमदे के बूट हल्की किच-किच कर रहे थे, और चाँद चमक रहा था, बर्फ भी जगमगा रही थी। क्या सचमुच यह सब घटित हुआ था?

स्तारीख उसके पास आकर पलंग पर बैठ गया :

"पैर नहीं ठिठुरे?"

"नहीं, बस थोड़े-से।"

"उसको धन्यवाद दो।" स्तारीख ने अत्राकोवस्की की ओर इशारा करके कहा। "चाहे जितना पाला पड़े नमदे के बूटों की कोई जरूरत नहीं।"

उसने दारू के कारण पसीने से तर चेहरे को गाउन की आस्तीन से पोंछा :

"जवान हो, तुम्हें सिखाना... सीखो जब तक मैं जिन्दा हूँ!"

पर त्रेत्याकोव की मनःस्थिति किसी धनवान जैसी थी, इनमें से हरेक उसे कुछ न कुछ अभागा लग रहा था।

स्लीपर घिसटता रोयजमान आकर उसके पलंग पर बैठ गया :

"हाँ तो, त्रेत्याकोव, आप प्रशिक्षण स्कूल में तीसरी बैटरी में थे न? लगता है मुझे आपकी याद है।"

अब रोयजमान बीते दिनों की याद कर रहा था, स्मृति में उन बातों को कुरेद रहा था जो उसने नेत्रवान होते हुए भी नहीं देखी थी, उन्हें अब देखना चाहता था। शायद ही उसे त्रेत्याकोव की याद थी : कैडेटों के बीच वह विलक्षण तो था नहीं। वे लोग ही स्मृति में गहरे छा जाते हैं जिनके साथ कोई हास्यपूर्ण घटना हुई हो। उदाहरण के लिए उनके प्लाटून में कैडेट शालोबासोव था, वह पहले दिन से ही दिलो-दिमाग पर छा गया, बैटरी की ओर से वह जवाबी भाषण देने के लिए कतार से निकला, आवाज बिल्कुल बुलन्द, दुश्मन को ललकारती हुई सी। उसने यह कहा :

"हमें यहाँ आर्टिलरी विज्ञान की फुनगियाँ पकड़ने आये हैं..."

यह बात तो कोई भी नहीं भूला। सिर्फ उसके हाथ 'आर्टिलरी विज्ञान की फुनगियों' तक मुश्किल से ही पहुँचते थे। सन् इकतालीस में जब कालीनिन शहर पर चढ़ाई की जा रही थी और सबमशीनगनरों के उतराई दस्ते के साथ हमारे टैंकों न उसमें प्रवेश किया, इस दस्ते में शालोबासोव भी था, वह नमदे के बूट पहने बख्तर पर बैठा था। गोले के विस्फोट ने उसे टैंक से उछालकर पत्थर की तरह बर्फ से जमी जमीन पर पटक दिया। उसे होश तो आया पर याददाश्त वह खो बैठा। कभी-कभी उसे कोई बात समझाना बिल्कुल असम्भव हो जाता था। लोग उसकी मदद भी करते थे और उस पर जी भरकर हँसते भी थे। गम्भीर चेहरे बनाकर उसके पास जाते : 'शालोबासोव, सुना है, कल बेलान ने दिगंश खो दिया...' उसका पारा चढ़ जाता, आँखें तरेरकर यह माँग करने लगता कि कैडेट बेलाल को सरकारी सम्पति खो देने के लिए सजा दी जाये। शालोबासोव को रोयजमान भी नहीं भूला, फौरन मुस्कराने लगा।

"और याद है आपको, एक बार आर्टिलरी के क्लास में एक कैडेट के गैस-मास्क के शीशों पर कागज चिपका दिया गया था?"

"हाँ, हाँ! क्या यह आप थे?"

"नहीं। आकजिगीतोव था।"

सब लोग गैस-मास्कों की बातें करने लगे। प्रशिक्षण स्कूल में कैडेटों को सताने के लिए कैसी-कैसी युक्तियाँ सोची जाती थीं। त्रेत्याकोव की स्मृति में यह ताजा था जैसे अभी कल की ही बात हो। पूरा बोझ लदवाकर गैस-मास्क पहनकर बर्फीली ठण्ड में दौड़ लगवायी जाती थी। उन्हीं को पहने-पहने सोते थे। यह सच है कि सोने की

युक्ति कैडेटों ने जल्दी ही ढूँढ़ निकाली थी : वाल्व निकाला और सोओ मजे में... पर सार्जेंट-मेजर भी कच्ची गोलियाँ नहीं खेला था। रात को सार्जेंट-मेजर चुपके से आता, लहरिया नलकी को दबा देता, पर कैडेट को क्या—वह आराम से सोता रहता, सपने देखता रहता। सवेरे सब केलीको के बनियानों में वर्जिश करने दौड़ते, पाले में उनके शरीर से भाप उड़ती और दोषी सफरमैना के बेलचे से पीली बर्फ को तोड़कर साफ करता जो रात भर में बैरक के नुक्कड़ पर जम जाती।

"आकजिगीतोव आँख खोले-खोले सोने में माहिर था। दिन भर मैदान में ठिठुर जाते थे, और यहाँ क्लास में भी गैस-मास्क पहनकर बैठाने की सूझी है। चेहरे को रबड़ से गर्मी मिलती, शीशे पसीज जाते, सब सो जाते, सिर्फ आकजिगीतोव की आँखें खुली रहतीं। बस उसी के शीशों पर कागज चिपका दिया गया। उसको श्याम-पट्ट के पास बुलाया गया, वह उछलकर खड़ा हो गया—सब कुछ मानो धुएँ से ढक गया। वह मेजों से टकराता जा रहा था..."

रोयजमान सबके साथ हँस रहा था, मानो उसे सबसे प्रिय बात याद आ गयी हो। अब तो वह उसी को देख सकता था जो उसके गुजरे जीवन से ताल्लूक रखती थीं। पर तब त्रेत्याकोव उसकी नीली सर्द आँखों से डरता था। कैप्टन रोयजमान कक्षा में प्रवेश करता, शेव के बाद चिकने, चमकते गाल, गर्दन पर खुजली का स्थान पाउडर से ढका। श्याम-पट्ट के पास बुलाता, पर नजरों से दूरी को बनाये रखता। पर उसकी चाल विशेष रूप से गर्वीली थी : घुटने मोड़े बिना, सीधे पैरों पर चलता। बाद में मालूम पड़ा : युद्ध में पीछे हटने के प्रारम्भिक दिनों में बाल्टिक सागर के तटवर्त्ती प्रदेश में ही उसकी दोनों टाँगे घायल हो गयी थीं। इसी कारण उसकी चाल ऐसी थी—चाहते न चाहते सारस जैसी।

मेजर बात्युश्कोव, जो शिक्षकों में सबसे ज्यादा उम्र का था, बच्चों की तरह न 'र' का उच्चारण कर सकता था न 'ल' का, इस लिए कैडेटों ने उसका नाम "तोतला" रख दिया था। एक बार सामरिक अभ्यास के दौरान, जब सारा प्लाटून, ठण्ड से ठिठुरकर, एक दूसरे के पीछे हवा से बचाव करता हुआ तम्बाकू के धुएँ से खुद को गर्मा रहा था, मेजर बात्युश्कोव ने रोयजमान की शिकायत की थी : 'मेइ बेटियाँ—जवान अड़कियाँ हैं, औअ उसके पास शाम को औअतें आती हैं। ओज नयी-नयी। और हम एक ही क्वाटअ में अहते हैं...'

उसको इसका बिल्कुल भी आभास नहीं था कि इस प्रकार वह कैडेटों की नजरों में कैप्टन की इज्जत ही बढ़ा रहा था।

टटोल-टटोलकर बनी शेववाला रोयजमान, जिसकी दाढ़ी पर कहीं-कहीं बालों के

गुच्छे छूट गये थे, गाउन पहने, बुड्ढे की तरह सोच में डूबा बैठा था। उसका परिवार है भी या नहीं? या सभी पदाक्रौंत क्षेत्र में छूट गये? अस्पताल में उसके पास एक बार भी कोई चिट्ठी नहीं आयी, नहीं तो पढ़कर सुनाने को कहता।

खिड़की के पास कोने में, जैसे पहले वह गोशा के पलंग पर बैठा करता था वैसे ही स्तारीख अब अवेतिस्यान के पायंते में बैठा था, वह बड़ी जोर-जोर से उससे पूछ रहा था, मानो किसी बहरे से बात कर रहा हो :

"बिटिया—तुम्हारी भाषा में क्या कहते हैं इसे?"

अवेतिस्यान ने कुछ कहा पर सुनाई नहीं पड़ा। स्तारीख ने चकित होकर होंठ हिलाये, उन्हें अजीब तरह से मोड़कर कुछ कहने का प्रयास किया :

"तो, क्या कहूँ... ठीक ही है। ऐसे भी कहा जा सकता है।"

अध्याय 17

अब फाया, पड़ोसिन का यही नाम था, उसके लिए अपनों की तरह दरवाजा खोलती थी, अगर साशा घर पर न होती तो उसे अन्दर आकर इन्तजार करने को कहती। उसका कमरा हमेशा अँगीठी से गर्माया रहता और छोटे-बड़े कई तरह से मेजपोशों की सफेदी छाई रहती जो सब जगह बिछे रहते थे। गर्म दीवार के पास पलंग बिछा था जिस पर तकियों का गुदगुदा पहाड़ सा बना रहता था।

मुलायम नमदे के ऊँचे बूटों को उतारे बिना जो फैक्टरी में बने पत्थर की तरह सख्त नहीं बल्कि घर के बने, गाँव से भेजे गये थे और जो पीछे से कटे हुए थे ताकि पिंडलियों पर आ जायें, फाया कपड़ों की कतरनों से घिरी कोई छोटी-सी चीज सीती रहती थी, क्रोशिया से कोई नन्ही-सी जूती बुनती रहती। और आहें भरती रहती। रेल की पटरी पर कोई इंजन सीटी देता, फाया खिड़की की ओर सिर मोड़कर देर तक सुनती रहती : वह कब का खामोश हो गया, पर वह सुने जाती। फिर क्रोशिया हाथ में सम्भाले बुनने लगती। फाया की शान्त करनेवाली आवाज, उसकी आहों को सुनते-सुनते, आँखों के सामने चमकते क्रोशिया को उँगलियों पर थिरकता देखते-देखते त्रेत्याकोव को नींद आ जाती।

"इत्ते विस्थापितों को यहाँ ले आये, ओइ, का होनेवाला है!" फाया उसाँस लेती। "पैसे सबके पास हैं, ढेर सारे हैं, फिर दाम क्यों न बढे फौरन बाजार चढ़ि गयी।"

गाउन अब फाया के पेट पर ठीक से बन्द भी नहीं होता था, शेड के नीचे पतले, सपाट कँघी किये बाल चमकते, गुद्दी पर गुच्छा न बिखरने देने के लिए चन्द्रकार

कँघी खोंसी हुई होती। कमरे में बेहद सन्नाटा छाया हुआ था, विश्वास न होता कि कहीं युद्ध भी चल रहा है।

"जो भी बाजार में आये, टूटकर विस्थापित सब खरीद लेते हैं। झपट-झपटकर, हाथ से छीनकर खरीद ले जाते हैं। पैसे की तो कोई कीमत नहीं रही, लोग किसी चीज के पास फटक तक नहीं सकते।"

फाया अपनी कहे जाती, वह सुनता रहता। 'विस्थापित'... शुरू में तो शब्द—विस्थापित था भी नहीं, जैसे पिछले युद्ध में कहा जाता था : शरणार्थी, वैसे ही बोलते थे। वह प्लेखानोव सड़क पर जा रहा था, अचानक सुनाई पड़ा : नमकीन हिलसा मछली बिक रही है। यह युद्ध के शुरू की ही बात है, राशन कार्ड तब बँटने ही शुरू हुए थे। यहाँ युद्ध से पहले की तरह ही बिना कार्ड के बिक रही थी।

बाहर फुटपाथ पर ही ड्रम लुढ़काकर जमा दिये गये, तराजू रख दी गयी और विक्रेता एप्रेन बाँधे जो पेट पर लवणघोल से गीला था, तोल-तोलकर मछली बेच रही थी : ड्रम में हाथ डालकर उन्हें बाहर निकालती और पलड़े पर पटक देती। फौरन ग्राहकों की लाइन लग गयी, लोग दौड़े आ रहे थे इस नायाब सौदे को बिकता देखकर खुद को खुशकिस्मत मान रहे थे।

अब याद करते हुए, पीछे मुड़कर देखते हुए बड़ा अजीब लग रहा था : जर्मन मिन्स्क में आ धमके थे, इतने लोग मारे जा चुके थे और मारे जा रहे थे, प्रतिक्षण मौत के सिलसिले जारी थे, और यहाँ लोग खुश थे : मछली बिक रही है। और वह भी खुश हो रहा था, पहले से ही कल्पना कर रहा था कि कैसे घर लाकर कहेगा : बिना राशन कार्ड के लाया हूँ! और 'क्यू' में बातें हो रही थीं : 'सब के लिए काफी होगी? खड़े हो जाएँ 'क्यू' में? नम्बर लगायें या नहीं? बीच-बीच में अन्य बातें भी हो रही थीं : कहीं दक्षिण में विशाल टैंक युद्ध हो रहा है, हमारी फौज ने जर्मनों के एक हजार से अधिक टैंक नष्ट कर दिये हैं। और लोग विश्वास करते हैं, विश्वास करने को जी चाहता है : सब कुछ फौरन ठीक हो गया। और कोई, जो विश्वसनीय सूत्र से कोई खबर जानता है, बड़े रौब से समझाता है कि अब जर्मन पीछे हटना शुरू कर देंगे..."

तभी भयंकर गाज लोगों पर आ गिरी, मानो आग से उड़ती कालिख के रोयें मँडराने लगे। सड़क के बीचों-बीच ट्राम की पटरियों पर लुढ़कती हुई गाड़ियाँ आ रही थीं जिनमें घोड़े जुते हुए थे, लोग यहाँ के नहीं थे, व जैसे-तैसे कपड़े पहने हुए थे, कोई रेशम की फ्राक में था तो कोई भरी गर्मी में समूर का मोटा ओवरकोट पहने, काले कलूटे बच्चे गाड़ियों में से झाँक रहे थे। ये शरणार्थी थे, पहले शरणार्थी जिन्हें यहाँ

के लोगों ने देखा था : युद्ध ने उन्हें अपने आगे हाँक दिया था। उन सबको मछली खरीदने दिया जा रहा था, 'क्यू' तराजू के पास से हट गयी, पर वे थे कि सिर्फ पीने के लिए पानी माँग रहे थे।

जब इस बार वह सैनिक स्कूल से मोर्चे पर जा रहा था तो वह वेरेशगिनो स्टेशन पर रुका था जहाँ उसकी माँ और बहिन विस्थापित थीं, तब उसे इन शरणार्थियों की फिर याद आ गयी थी। माँ बिल्कुल वैसी ही दुबली थीं जैसी कि अन्य औरतें : होंठ हवा से रूखे, फटे-फटे, दरारों में खून छलछलाता। और बायें हाथ पर अनामिका के स्थान पर फड़कता ठूँठ उसने देखा। माँ ने, मानो उससे शर्माते हुए हाथ को छिपा लिया : "अब तो घाव भर गया..." उसने माँ के कन्धे और मोढ़े पर पूरी पीठ पर फैले भयंकर निशान को भी देखा था।

फाया–बिल्कुल बच्चों की तरह थी, उसके लिए युद्ध नहीं बल्कि 'विस्थापित' दोषी थे : उन सबके पास ढेरों पैसे हैं, उनके कारण महंगाई बढ़ गयी है। अधिकांश लोग ऐसे ही है : जो आँखों से देखा, जो खुद भुगता उसी को समझते हैं। उनके विश्वास को नहीं बदला जा सकता। बहुतों को कारण समझ में नहीं आते और बहुतों को उनमें कोई रुचि नहीं है।

"पहले तो लोग अधिकतर ओर्शा से आये थे," फाया ठण्डी साँस लेती है, उसका चेहरा अब चिन्तनशील है। "यह ओर्शा है कहाँ?"

"बेलारूस में।"

"मेरे दनीलिच भी यही कहते हैं। लोग सोचते क्या थे? सब कुछ ज्यों का त्यों छोड़कर चले आये बस जो कुछ पहने हैं वही उनका सामान है। और हरेक के बहुत-से बच्चे हैं।

"फाया, वे बमवर्षा के दौरान भागे थे। तब लोग जान बचाने, बच्चों को बचाने की ही सोचते हैं।"

"ओफ, कैसी भयंकर बात है, कितनी भयंकर!" कँघी की नोक से फाया ने अपनी नाक के चौड़े बाँसे को खुजलाया। हालाँकि इस क्षण उसने भवों को ऊपर चढ़ाया पर माथे पर एक भी झुर्री नहीं पड़ी, सिर्फ वह गद्दी की तरह फूल गया। कँघी को बालों में फेरकर उसने उसे गुद्दी पर बनी गाँठ में खोंस दिया। "ऐसा जबरदस्त पाला पड़ने लगा, दनीलिच ड्यूटी से लौटते तो बताते : 'सुबह फिर स्टेशन के पास ठण्ड से मरे लागों को उठाया जा रहा था...' दनीलिच तो क्या, मैंने खुद भी अपनी आँखों से देखा, स्टेशन तो वो सामने है..."

खिड़की के बाहर नमदे के बूटों से बर्फ के कुचलने की आवाज सुनाई पड़ी। फाया

और वह दानों ही कान लगारकर सुनने लगे : दनीलिच? साशा? हरेक अपने की प्रतीक्षा कर रहा था। ड्योढ़ी के दरवाजे के धड़ाम से बन्द होने की आवाज सुनाई पड़ी : अपने कमरे में जाने से पहले साशा ने यहाँ झाँका, ठण्ड से ठिठुरे लाल-लाल गाल और चेहरे को घेरे शाल पर पाला जमा हुआ था। उसे देखकर वह खुश हो गया। बाहर से ही उसने कहा :

"मैंने माँ को देखा था। गले पर पट्टी बँधी थी, खिड़की पर अभागिन-सी बैठी थीं। बोल नहीं सकतीं, काँच के पीछे से मुझे सिर हिला रही थीं।"

उसने शाल खोला, फर का ओवरकोट उतारा और छींट की सूती फ्राक में हाथ-मुँह धोने रसोई की ओर भागी। अपने ग्रेटकोट के साथ उसने साशा के ओवरकोट को टाँग दिया, जिस में अभी उसकी गर्मी बाकी थी, और देखो कि कैसे वे साथ-साथ टँगे हैं। कमरे के बीच, फौजी कमीज में बिना पेटी के खड़ा वह उसका इन्तजार कर रहा था। साशा तौलिये से मुँह पोंछती लौटी, वह अस्पष्ट आवाज में बोल रही थी :

"मैं और माँ एक ही बिस्तर में सोते थे, तब भी मुझे बीमारी नहीं लगी, अब मैं वहाँ से लौटकर हाथ-मुँह धो रही हूँ... बाहर ही खड़ी रहती हूँ, अन्दर नहीं जाने देते, पर फिर भी लगता है कि सब रोगोणु मुझसे लिपट गये हैं।"

उसने झटपट तकिये के नीचे से रूईभरी जाकेट में लिपटी पतीली निकाली :

"अभी अँगीठी जलाते हैं।"

वह अँगीठी के पास सूख रही लकड़ियों को उठाकर बरामदे में ले गयी जहाँ अँगीठी जलायी जाती थी।

"माँ के बिना अब मैं रात को ही अँगीठी जलाती हूँ," उकडूँ बैठकर वह कह रही थी, और आग जलाने के लिए कुंदों पर से छाल उतार रही थीं। "सारे दिन मैं घर पर तो होती नहीं, इस तरह तो मैं कम से कम सुबह घर से सर्दी में बाहर निकलती हूँ।"

"पर साशा तुम खाती क्या हो?"

"तुम भी क्या पूछते हो! हमारे पास आलू जो है।"

उन दोनों ने मिलकर छिपटियों का ढेर बनाया, ऊपर से लकड़ियाँ बिछा दीं और आग जला दी। बर्च की लकड़ी का धुएँ की गन्ध फैलने लगी, अँगीठी से निकलती लपटों ने बरामदे को रोशन कर दिया।

"अभी सिगरेट मत पियो।" साशा ने ठण्डे आलू को छीलते हुए कहा।

"मेरी इच्छा नहीं है।" उसने कहा। "मैं खाना खाकर आया हूँ।"

"भला आलू से भी इन्कार किया जा सकता है? मेरे विचार में तो उसकी सुगन्ध.

.. आलू घर की उपज है, बाजार का खरीदा हुआ नहीं।"
छिला हुआ बड़ा सा आलू आग की रोशनी में मिसरी की तरह चमक रहा था।
"लो।"
वह उसे हाथ में पकड़े इन्तजार कर रहा था कि साशा अपने लिए भी छील ले।
"तुम्हें पसन्द है ऐसा छिलके सहित उबला? मुझे तो बेहद पसन्द है। और अगर साथ में दूध हो?..." उसने बेताबी से एक गुस्सा काट लिया। "खाओ। मैंने यहाँ एक दूधवाली के लिए फ्राक काढ़ा था, पूरे एक महीने कढ़ाई की थी। पलंग पर पैर ऊपर करके बैठ जाती, एक आँख से किताब पढ़ती और कढ़ाई भी करती जाती। सलेटी किरमिच पर नीलपोथे के फूल : यहाँ आस्तीनों, छाती और पल्ले पर।" उसने हवा में हाथ से आकृति बनायी, और उसने इस फ्राक में उसकी कल्पना की—नीलपोथे के फूल इसकी सलेटी आँखों के साथ कैसे फबते। "वह हमें पूरी चौथाई बाल्टी दूध दे गयी थी.... अरे, मैं तो नमक देना ही भूल गयी!"
"यह तो बिना नमक के भी अच्छा लग रहा है।"
"और मुझे भी। यह कोई खास किस्म है। विश्वास करोगे, हमने सिर्फ अँखुए बोये थे और ऐसे बड़े-बड़े आलू पैदा हुए हैं। एक पौधे से--आधी बाल्टी आलू।"
वह झट से कमरे में गयी और तश्तरी में रखे नमक को अँगीठी के आगे टीन की चादर पर रख दिया। वे अँगीठी के सामने बेंच पर बैठे, आलू को आग की रोशनी में नमक लगाकर खा रहे थे।
"मालूम है," साशा ने कहा, "तुम बिल्कुल ऐसे न थे। तब तुम्हारा चेहरा ही कुछ और था।"
"कैसा?"
वह हँस पड़ी :
"अब तो मैं याद भी नहीं कर सकती। बस किसी पराये आदमी का चेहरा था। पराया पता है कब? एकबार मेरे पैर पर पट्टी बाँधी जा रही थी और तुम बरामदे से गुजरे थे। तुम आगे निकल गये, पर मैंने तुम्हें पीछे से देखा। तुमने यह दिखावा किया कि मानो यूँ ही पास से निकले थे। मुझे तुम पर तरस आ गया था। फिर भी यह तुम नहीं थे। मैं तुम्हें शायद पहचान भी न पाती। याद है, हम खिड़की के दासे पर बैठे थे?"
तब तो तुम ऐसे देख रही थीं जैसे मैं वहाँ हूँ ही नहीं।"
साशा चुप हो गयी। उसके चेहरे पर अँगीठी की लपटों की परछाइयाँ हिल रही थीं।

"मालूम है, कब तुम पहली बार," उसने उसकी ओर देखा, "ऐसे लगे जैसे अब हो?"
"कब?"
"नहीं, तब मैंने देखा नहीं था, मैंने अगले दिन याद किया और सोचा कि तुम्हारे हाथ-पैर जम गये और शायद तुम बीमार पड़ गये। तुम ग्रेटकोट में ठिठुर गये थे तिस पर मुझे भी हवा से बचा रह थे।"
वे बातचीत कर रहे थे और आग को देखते जा रहे थे, जो कुछ वे वहाँ देख रहे थे वह उनकी आम धरोहर थी।
"याद है, मैंने यह भी पूछा था : 'ग्रेटकोट के नीचे कुछ है भी तुम्हारे?' और तुम हँसकर बोले थे : 'दिल!' खुद मुँह से बोल नहीं निकल पा रहे थे। मैं अगले दिन यही सोचती रही कि शायद तुम बीमार पड़ गये।"
"पर तब तो तुम मुझसे डर गयी थीं।"
"तब की बात नहीं है। जब तुम बैरक के पीछे से निकले थे, मैं डर गयी थी। तुमने देखा नहीं कि तुम कितने डरावने लग रहे थे। भेड़िये कि तरह बर्फ से ढके हुए थे। मुझे यह भी लगा कि तुम्हारी आँखें चमक रही थीं। और चारों ओर कोई नहीं। मैं बहुत डर गयी थी।"
रसोई के दरवाजे की आहट हुई। पाली के बाद लौटे फाया के पति वसीली दनीलिच प्यास्तोलोव कारिडर से गुजरे। उनकी रेलवे की वर्दी पर टँके टीन के बटनों पर तुषार जमा था : आज बाहर तेज पाला पड़ रहा था। दनीलिच सिर हिलाये बिना ही उधर से गुजरे, फौजी वर्दी में वह बड़ी शान से चलते थे। पर कमरे से वह बिल्कुल दूसरा आदमी बनकर निकले : रूईभरी जाकेट, नमदे के तुड़े-मुड़े बूट पहने, हाथ में—कुल्हाड़ा, सिर पर पुराना कनटोप जिससे एक कान दबा हुआ था। वह कोठरी से लकड़ियाँ लाने जा रहे थे, वे उनके पास रुके :
"मरुस्या की हालत कैसी है? सुधरी या नहीं?"
"आज मैंने उन्हें खिड़की में देखा था।" साशा ने इतराते हुए कहा।
"मतलब अब ठीक हो जायेगी।"
लपटों के थिरकते प्रकाश में दनीलिच का लम्बी नाकवाला चेहरा कभी चमकने लगता तो कभी अंधकारमय हो जाता।
"बुरी हालत थी, बिल्कुल बुरी," कुछ सोचते हुए उसने अपनी ठोड़ी खुजली, आग की ओर देखकर उसकी जड़ आँखें मिचमिचायी, उसने अपनी नाक पकड़कर खींची। मेरा ख्याल था कि, नहीं बचेगी। और लो... देखो तो बच गयी..."

साशा और त्रेत्याकोव ने एक दूसरे पर नजर डाली, मुश्किल से वे अपनी हँसी रोक पाये। वह इधर नहीं देख रहा था। कुछ देर तक उनके पास खड़ा रहा और फिर हाथ में कुल्हाड़ा लिये, नमदे के पुराने बूटों में हल्के-हल्के कदम रखता आगे बढ़ गया। यह देखकर कि वह आलू छील रही है, त्रेत्याकोव ने अँगीठी से सिगरेट सुलगा ली।

"ठहरो जरा," साशा ने फिर कहा।

"बस। अब नहीं खा सकता। जब सिगरेट पीनी शुरू कर दी तो नहीं खा सकता।"

"नहीं खा सकते?"

"नहीं।"

"नहीं, देखों तो कितनी ईमानदारी से झूठ बोलते हो। और आँखें भले मानसों जैसी हैं।"

"मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ।"

"झूठ नहीं बोल रहे हो। लेकिन बस इसे पीकर खा लेना।" उसने अपने लिए भी एक आलू छील लिया।

"जब पतझड़ में हमने आलू खोदा, आखिर वो दिन भी आ गया, मैं सोचती थी कि हम कभी भी जी भरकर नहीं खा पायेंगे। और बन्दगोभी यहाँ कैसी बढ़िया होती है। मास्को के बाजार तक में मैंने ऐसी नहीं देखी। हल्का-हल्का पाला पड़ने लगा था और क्यारी में बड़े-बड़े सफेद कल्ले उग आये थे। मुझे लगता है कि मैं उनकी सुगन्ध कभी भी नहीं भूल पाऊँगी। हमारे पास सौ वर्ग मीटर का जमीन का टुकड़ा था, मैं और माँ उसे खोदने गये तो देखा वहाँ सब पहले ही खुदा हुआ था। माँ घबराहट के मारे कहने लगीं : 'हम से छीन लिया गया, किसी ओर को दे दिया गया..." पर अचानक मेरी नजर "बेलोमोर" सिगरेटों की डिबिया पर जा पड़ी। वोलोद्या ही 'बेलोमोर' पीता था। मैं फौरन समझ गयी, जेन्या के साथ मिलकर उसने खोद लिया है।

वर्च के गीले कुन्दे अँगीठी में सर-सर कर रहे थे, उनके झुलसे सिरों पर रस उबल रहा था। आँच से बचने के लिए हाथ आग करके साशा कुन्दों को हिला रही थी, आग के सामने उसकी उँगलियाँ आर-पार चमक रही थीं।

"युद्धों के पूर्व माँ बिल्कुल भी ऐसी नहीं थीं। अब बड़ी जल्दी असहाय हो जाती है," वह उसकी आँखों में झाँकती हुई बोली। "मेरी माँ... माँ मेरी-जर्मन हैं।"

उसके, मुँह से सहजतावश निकल गया :

"तुम नहीं लगतीं।"

"मैं और माँ—हूबहू एक जैसी हैं।"

"साशा, मेरे कहने का यह मतलब नहीं था," उसके मन में उसके प्रति दया का भाव उमड़ आया—आखिर इस वक्त जर्मन होने का...

"तुम समझते हो यह? जर्मन होना, जब जर्मनों से ही युद्ध चल रहा है। पर उनका जन्म ही जर्मनी में हुआ था, इसमें उनका आखिर क्या दोष है? और वह पूरी जर्मन भी नहीं है। नानी रूसी थीं। पर नाना... वे सब बच्चों को चोरी-चोरी फिनलैण्ड ले गये थे, लूथर पंथ में उनका बपतिस्मा करवाने। क्रान्ति से पहले की बात है। टोकरी में रखकर नानी से छिपाकर ले गये थे। अगर यह न हुआ होता तो माँ के परिचय-पत्र में उनकी जाति रूसी ही लिखी होती। ऐसे परिचय-पत्र को लेकर वह कहाँ जायें? हम मास्को से भी हर हालत में कहीं न जाते। पर पापा को उनकी बड़ी चिन्ता थी। उन्होंने मोर्चे से न्यूस्या बुआ को लिखा था कि हम साथ रहें, साथ ही दूसरे स्थान पर जायें। जब वे मारे गये तो माँ मुझसे हर वक्त कहतीं : 'अगर मुझे कुछ हो जाये तो तू कम से कम न्यूस्या बुआ के साथ रह लेगी। उसके अलावा तेरा है ही कौन।' उन पर हमेशा भय सवार रहता है, वे सब जर्मनों के लिए, जो कुछ उन्होंने किया है, उसके लिए खुद को दोषी महसूस करती है। उनके लिए यह दामन पर धब्बे की तरह है। इसे खुद भुगते बगैर समझना मुश्किल है।

पर वह समझ रहा था और महसूस कर रहा था। उसके परिवार में जर्मन नहीं थे। उसके माँ-बाप—दोनों रूसी हैं। पर पिता उसका गिरफ्तार है। युद्ध शुरू होने में चार साल बाकी थे, 'जर्मन' शब्द का तब वह अर्थ नहीं था जो अब है, पर तभी उस पर कलंक लग गया था, और वह यह महसूस करता था। अब साशा ने उसे ये सब बताया तो उसके लिए और प्रिय हो गयी।

"माँ के सामने मैं शर्मिंदा भी हूँ," वह कह रही थी। "यहाँ का पहला वसन्त इतना भयंकर था, मुझे मालूम नहीं कि हम कैसे उसे काट पाये। पापा मारे गये, प्रमाणपत्र नहीं था, वह सब जो साथ लाये थे बेच चुके थे। मैं सुबह गुनगुना पानी पीकर इम्तहान देने चली जाती। और एक बार... कितनी शर्मिंदा हूँ। उन दिनों जब उनकी हालत बड़ी खराब थी, मैं अपनी शर्मिंदगी से बहुत परेशान रहती। बात यह है कि मैंने राशन-कार्ड से डबल रोटी खरीदी। इकट्ठी दो दिन की। अपने लिए और माँ के लिए। दुकान से बाहर निकली और खुद को न रोक पायी। डबल-रोटी की खुशबू ही ऐसी थी! लौटकर मैंने विक्रेता से कहा कि वह एक स्लाइस काट दे। उसने अपनी बड़ी छुरी से इतना बड़ा टुकड़ा काट दिया। और मैं उसे खा गयी। अपने को

न रोक सकी। बेशक, माँ ने देख लिया था। सबसे बड़ी बात तो यह है कि वह काम नहीं करती थीं।'' साशा की आँखों में आँसू छलक आये थे। ''उनका राशन-कार्ड आश्रितों का था। मैं शाम को स्कूल की पढ़ाई के बाद काम करती थी, इसलिए वह एक तरह से मेरी आश्रित थीं, और मैंने उनके मुँह का कौर छीनकर खा लिया है। और मुझे यह स्वीकार करते हुए शर्म आ रही थी। पर वह तो ऐसी हैं कि अपना सर्वस्व दे दें। यह तब की बात है जब हम अपना सारा समान न बेच पाये थे, उस साल सर्दी भी भयंकर थी... शरणार्थी आकर कुछ माँगते, खासकर अगर बच्चोंवाले होते... वह मुझसे छिपाकर कुछ दे देतीं, और बाद में खुद को दोषी मान कर सफाई देतीं। कहतीं : बिटिया, आखिर हम लोग तो इस भीषण जाड़े-पाले में गर्म घर में रहते हैं...''

साशा उठकर कमरे में चली गयी। जब लौटी तो चेहरा उदास, आँखें खुश्क और गाल लाल थे।

''वहाँ अभी ठण्ड है,'' उसने कहा, ''चलो यहीं बैठकर पियेंगे।''

वह प्याले उठा लायी और अँगीठी पर से कालिख से ढकी केतली उतारी। कारिडर में अँगीठी की आग खुलने से एक दम रोशनी हो गयी। वे अँगीठी की ओर मुँह करके बैठे थे, उनकी दो भीमकाय परछाइयाँ पीछे की दीवार पर हिल रही थीं, छत के नीचे छाये लाल-से धुँधलके में विलीन हो रही थीं।

''पता है क्यों वह बीमार पड़ीं?'' साशा ने कहा। ''न्यूस्या बुआ के बेटे ल्योनेच्का को डिप्थीरिया हो गया। माँ ने उसे अस्पताल में दाखिल न कराने के लिए राजी कर लिया, शक था कि कहीं वहाँ जाकर वह मर न जाये। कहीं से सीरम का प्रबन्ध किया गया। वे खुद ही उसकी देखभाल करती थीं। माँ को डर था कि कहीं उन्हें भी बीमारी न लग जाये, हर चीज क्लोरीन के चूने से धोती थीं। और एक दिन खुद बीमार पड़ गयीं।''

इस शाम वह छितरे बादलोंवाले शीतकालीन आकाश तले, पाले से ढके मोटे रस्सों जैसे बिजली के तारों के नीचे से जा रहा था। वह गहरे सोच में डूबा हुआ था। वह साशा के बारे में, युद्ध के बारे में, उस खून के बारे में सोच रहा था जो तीसरे साल सभी मोर्चों पर बह रहा था, पर साशा की धमनियों में वह आश्चर्यजनक रूप से मिलकर बह रहा था।

बच्चों को उनका नाना ही बपतिस्मा दिलवाने के लिए ले गया था, बिल्ली के बच्चों की तरह टोकरी में छिपाकर ले गया था। आखिर इन बातों का क्या सम्बन्ध है? पर सम्बन्ध है, सिर्फ अदृश्य, जो कुछ हो रहा है, सबका हरेक से सम्बन्ध है।

अगर तब वह लेफ्टिनेण्ट तरानोव की तरह ब्रिगेड के मुख्यालय में रहने के लिए राजी हो जाता, तो वह कभी भी साशा से न मिल पाता। सिर्फ दूर से ही दिखाई पड़ता है कि कैसे एक बात दूसरी से जुड़ी है।

सर्चलाइट की रोशनी ने बर्फ के ढेर को आलोकित कर दिया, उसकी छाया को आगे दूरी पर फेंक दिया। त्रेत्याकोव ने पीछे मुड़कर देखा। पटरियों पर आँखें चौंधानेवाला प्रकाश उसकी ओर दौड़ता आ रहा था, वह अँधेरे से हिमकणों को अपनी ओर खींच रहा था।

वह पटरी से उतर गया। भारी मालगाड़ी पटरियों को रौंदती, झपटकर उसके पास से गड़गड़ाती, बर्फीली हवा का सैलाब लाती आगे निकल गयी। सामान से लदे बन्द डिब्बे, खुले डिब्बे, उन पर लदे, हिमाच्छादित तिरपाल से ढके टैंकों के हिस्से, डिब्बे के पायदानों पर नमदे के बूटों में तैनात संतरी, जो हवा से बचने के लिए मुँह मोड़े खड़े थे, फिर खुले डिब्बों पर रखी तोपें, पायदानों पर पहरा देते संतरी—यह सब पहियों की गड़गड़ाहट के साथ तेजी से गुजरता जा रहा था, गाड़ी के ऊपर बर्फ की धूल-सी उठ रही थी। इस बर्फीली धूल में अन्तिम डिब्बा चमककर आँख से ओझल हो गया। युद्ध मोर्चे की ओर धड़धड़ाता हुआ दौड़ गया। और उसके साथ-साथ जैसे आत्मा का कोई अंश, कोई टुकड़ा टूटकर चला गया। रिक्तता और प्रबल हो गयी।

अध्याय 18

''बस हो गया, मिल-जुलकर साथ-साथ रह लिये, अस्पताल का दलिया भी खूब खाया, पर अब चलने का वक्त आ गया है। नहीं तो तुम्हारे साथ रहते-रहते लड़ना भी भूल जाऊँगा,'' कीतेनेव कह रहा था। वह छाती तक कम्बल ओढ़े था। कल शाम को सारे वार्ड में चादरें और कपड़े बदले गये थे, और वह मारकीन का, ठप्पा लगा लम्बी आस्तीनोंवाला साफ बनियान पहने सिर को हथेलियों पर टिकाये तकिये पर लेटा हुआ था, चादर का पल्ला कम्बल के ऊपर मुड़ा था। अँगड़ाई लेकर उसने ऐसी उबासी ली कि आँखों में आँसू छलक आये। ''मेरे बगैर रेडियो सुना करोगे, कहाँ क्या हो रहा है इस दुनिया में.... मैं उक्राइन के एक फौजी अस्पताल में था...''

''पर तू यह बतला रहा था कि एक बार भी घायल नहीं हुआ,'' स्तारीख ने उसकी बात पकड़ ली।

''एक बार भी नहीं। यह तो मैं बमबारी के समय दब गया था। वहाँ की अजीब भाषा में रेडियो पर सुबह से बताने लगते कि कितने विमान, टैंक तोपें आदि नष्ट

किये जा चुके हैं। और हम गिनने लगते कि जर्मनों के कितने क्या नष्ट किये गये. .. हमारे हिसाब से तो उनके पास लड़ने के लिए कुछ बचता ही नहीं था। युद्ध के प्रारम्भिक दिनों में भी उनके पास इतने अस्त्र नहीं थे, जितने कि 'नष्ट' किये जा चुके थे।"

"हाँ, तो फिर घायल नहीं हुआ, पर अस्पताल में था।"

"बेशक नहीं हुआ था घायल। भीतरी चोट लगी थी न--क्या एक ही बात नहीं है? इन्फैंट्री मे ऐसा एक भी नहीं है जो लड़ा हो पर उसे कहीं घाव या चोट न लगी हो।"

"भीतरी चोट भी नहीं लगी थी। मैं मिट्टी मे दब गया था।" कीतेनेव ने सगर्व उत्तर दिया। अस्पताल में महीने बड़ी जल्दी गुजरते है पर हर दिन मुश्किल से कटता है। बस, सुबह से कीतेनेव स्तारीख को 'चाबी' देने का प्रयास कर रहा था, वह था कि फौरन तैश में आ जाता था। वे दोनों कुछ और काम न होने के कारण आपस में बहसबाजी कर रहे थे : 'दब गया था... अगर बाहर न निकाला जाता?' 'दूसरी बार दफनाना न पड़ता..' और कीतेनेव ने करवट बदल ली। हथेली पर सिर टिकाकर त्रेत्याकोव को देखने लगा। वह कम्बल के ऊपर टिकी जख्मी बाँह को कभी सीधा करता, कभी मोड़ता। शुरू ही में एक बार पट्टी बदलते समय महिला चिकित्सक ने कहा था : "चाहते हो कि तुम्हारा हाथ काँटे की तरह मुड़ा रह जाये?" "भला मैं ऐसा क्यों चाहूँगा?" त्रेत्याकोव ने हैरानी से पूछा। "तब जोड़ को हिलाते-डुलाते रहो, नहीं तो वह ऐसे ही जुड़ा रह जायेगा।" हालाँकि शुरू-शुरू मे दर्द होता था, पट्टी खून से लथ-पथ हो जाती थी, पर अपाहिज बनने की उसमें तनिक भी इच्छा नहीं थी।

"क्या?"

कीतेनेव की बिल्लौरी आँखें पानी की तरह निर्मल थीं। त्रेत्याकोव प्रतीक्षा कर रहा था।

"सोच रहा हूँ, अपना ग्रेटकोट तुम्हें विरासत में छोड़ूँ या नहीं? क्या पता तुम बेकार ही सरकारी चीज घिस रहे हो? लगता है कि बेकार ही।" उसकी आँखों में हँसी छलक रही थी। "पर क्या खबरें हैं?"

मुस्कराते हुए त्रेत्याकोव अभी तक प्रतीक्षा कर रहा था :

"मैं पूछ रहा हूँ कि नैतिक-राजनीतिक हाल कैसा है?"

"एकदम बढ़िया।"

"देखो तो, कसा छोकरा था!" कीतेनेव ने तकिया पीठ के नीचे खिसकाया और थोड़ा उठकर बैठ गया। "जब इसे वार्ड में लाया गया था तो मैं सोचता था कि किसी

लड़की का लाये हैं। आँखें निश्छल, विचार निष्कपट और दुश्मन का हौसला पस्त करने को तत्पर। हमारे साथ रहकर देखो अब कैसा हो गया। यह सब इसने स्तारीख से सीखा है। त्रेत्याकोव, उसका अनुसरण न करो, वह तो गंजा हो चला है। प्रसंगवश, मैं, स्तारीख तुम से कह दूँ कि तुम अपनी गंजी चाँद की बदौलत ही जिन्दा बचे हो। तुमने तो शर्म के कारण सिर ढका था। अगर तुम्हारे सिर पर भी लट होती, जैसी कि कुछ फौजियों की होती है तो तुम भला क्या सिर पर लोहे का टोप चढ़ाते?"

कीतेनेव ने अस्पताल में काफी बढ़ गयी अपनी घुँघराली लट पर उँगलियाँ फेरीं। अवेतिस्यान को चम्मच से कूटू की लप्सी खिलानेवाली नर्स, जिसके बाल ललौंहे, चेहरा गोल और गाल लाल थे, खुश होकर सुनने में इतनी तल्लीन हो गयी कि अब वह चम्मच मुँह में नहीं, बल्कि कान की तरफ बढ़ाये दे रही थी।

"चल, मेरा हाथ दबा!" कीतेनेव ने त्रेत्याकोव की ओर अपना हाथ बढ़ाया। वह प्रशंसा के भाव से देखने लगा कि कसे कलाई से लेकर खुली कोहनी तक उसकी मांसपेशियाँ अठखेलियाँ कर रही है।

"किस लिए?"

"अपने से बड़े अफसर से भला पूछा जाता है 'किस लिए'? दबाने का हुक्म मिला--दबा! क्या पता तू रोगी होने का बहाना ही कर रहा हो?"

त्रेत्याकोव हँसते हुए अपनी कमजोर उँगलियों से जितना उससे हो सकता था, दबा रहा था।

"क्या बस? तू क्या इतना कमजोर है? अच्छा चल? दायें हाथ से दबा! नहीं, अभी ताकत तो है। चल एक बार फिर बायें से दबा! और जोर से!"

"बस।"

"क्यों बस?"

"बस। और ज्यादा नहीं दबा सकता।"

तभी बगल में बैसाखी दबाये स्तारीख दौड़ता आया और धम्म से पलंग पर बैठकर उसने बैसाखी को बाँहों में सम्भाल लिया। वह कुछ बताने को आतुर था।

"एक बार चिकित्सा आयोग में एक मरीज को लाया गया, उसका हाथ तुम्हारे से बुरा नहीं था, सीधा नहीं होता था... तुम सुनो, कान खोलकर सुनो, तजरबा हासिल करो, बुरी बात नहीं सिखाऊँगा हाँ, तो उसे लाया गया... 'करो सीधा अपना हाथ'। 'वह बस ऐसा ही है...' उन्होंने जोर लगाकर सीधा करने की कोशिश की। सब साफ है, वह लड़ लिया जितना लड़ सकता था, लड़ सका था, अब उसको बर्खास्त करना चाहिए था। पर वहाँ एक बूढ़ा सर्जन भी था जिसने कहा : दिखाओ जरा, तुम्हारा

हाथ पहले कैसा था?'' 'ऐसा!' और उसने खुद अपना हाथ सीधा कर दिया। देखो, त्रेत्याकोव, अगर तुमसे पूछेंगे तो कान पर जूँ तक न रेंगने देना,'' उसने अपने कान को झाड़ा। ''अब डाक्टर बड़े काइयाँ हो गये हैं...

वार्ड का दरवाजा खुला और सफेद चोगे पहने दो व्यक्तियों ने प्रवेश किया। आगेवाला, रौबीला व्यक्ति कन्धे उचका रहा था, रोशनी पड़ने पर उसका चश्मा शान के साथ चमक रहा था। उसके साथ अस्पताल का प्रबन्ध अधिकारी हड़बड़ाता हुआ चल रहा था।

प्रबन्ध अधिकारी असैनिक था। वह चोगे के नीचे छोटी, गिंजी हुई धारीदार पैंट पहने था, जो जूतों तक न पहुँच पा रही थी। वह नियमित सेना में न था, नियमानुसार उसे सीमित ड्यूटी के योग्य ही निर्धारित किया गया था। जब वह उनके, अफसरों के वार्ड में आता तो बहुत हीनता के साथ, वह समझता था कि ये घायल उसे, भले-चंगे को किस नजर से देखेंगे। हालाँकि उनमें से किसी पर भी उसका भाग्य निर्भर नहीं करता था फिर भी वह हरेक की चाकरी करने को तैयार रहता। 'जीना चाहता है'—स्तारीख ने व्याख्या दी थी। इस सन्दर्भ में भी कि प्रबन्ध अधिकारी जन्मजात तोतला है उसने कहा था : 'उल्लू बनाता है! अयोधी है... बीवी के साथ सोते वक्त तो योद्धा है पर जब मोर्चे पर जाने की बात आती है तो 'अनफिट' है।'

त्रेत्याकोव सदा इस व्यक्ति के लिए शर्म महसूस करता, जिसे सबके आगे झुकने में शर्म नहीं आती थी। एक आयोग से दूसरे आयोग तक कैसे रहा जा सकता है, और सिर्फ इसी इन्तजार में कि अगली बार फिर सीमित ड्यूटी के योग्य ही माना जाये और मोर्चे से दूर चण्डावल दस्ते में ही सेवा के लिए भेजा जाये... आखिर वह तो मर्द है, युद्ध चल रहा हैं, लोग मोर्चे पर खून बहा रहे हैं।

पर आज तो प्रबन्ध अधिकारी बड़े अफसर की सेवा में था। वह किसी पर खास ध्यान नहीं दे रहा था, उसने कड़ी नजर दौड़ायी :

''यहीं है वह, यहीं। शायद पट्टी बदलवाने गया हो... त्रेत्याकोव! आप हमारी नाक कटवा रहे हैं। आपके बारे में पूछताछ हो रही है।''

उस रौबीले व्यक्ति में, जिसके पीछे-पीछे प्रबन्ध अधिकारी चल रहा था, कन्धे उचकाने के उसके ढंग में त्रेत्याकोव को कुछ-कुछ जाना-पहचाना-सा लगा। पर तभी स्तारीख अनिच्छा से उठा, वे दोनों उसके पीछे ओझल हो गये। जब तक वह एक तरफ को हटा तब तक वे पायंते के पास आ खड़े हुए।

''वोलोद्या!''

''ओलेग!''

कन्धे पर से तिरछे परतले को कसे, आगे से खुला चोगा कन्धों पर डाले उसका सहपाठी ओलेग सेलीवानोव उसके सामने खड़ा मुस्करा रहा था। प्रबन्ध अधिकारी भी मुस्करा रहा था, वह उन दोनों को ऐसे देख रहा था जैसे पिता अपने बच्चों को देखता है। सारा वार्ड उनकी ओर देख रहा था।

''तुमने मुझे कैसे ढूँढ़ा?''

''बस, संयोग की बात है।''

ओलेग पलंग पर बैठ गया, चोगे के पल्ले से उसने ऊनी बिरजिस में कसे मजबूत घुटने को ढक दिया। फौजी वर्दी, चोगे से ढके कन्धों पर फीते, परतला, पेटी। पर चश्मे के पीछे वही नम्र, स्नेहिल आँखें। कई बार ऐसा होता कि ओलेग क्लास में श्यामपट्ट के पास, पूरा खड़िया से सना खड़ा होता, शर्म के मारे उसका पसीना छूटता। वह सफाई देता : 'मैं कसम खाकर कहता हूँ, मैंने पाठ याद किया था, चाहे तो मम्मी से पूछ लें...'

''सुन, देखने में तो तू बिल्कुल 'कामरेड कमाण्डर' लगता है।''

''सबसे बड़ी बात तो यह कि तू यहाँ इतने दिनों से है, और मुझे सिर्फ कल ही पता चला। कागजात देखते समय तेरा नाम दिखाई पड़ा...''

''कैप्टन, सोचो तो, स्कूल में साथ-साथ पढ़े थे।'' त्रेत्याकोव ने पता नहीं क्यों ओलेग के लिए कुछ-कुछ अटपटा-सा महसूस करते हुए कहा : उसे ससम्मान वहाँ लाया गया था, वह हृष्ट-पुष्ट और प्रफुल्लित दिखाई पड़ रहा था।

''ऐसा भी होता है,'' कीतेनेव ने कहा और गाउन पहनते हुए खड़ा हो गया।

''ओलेग, पर तू यहाँ कैसे आया?''

''मैं—यहीं हूँ।''

''यहाँ?''

''हाँ, यहीं पर।''

और दोनों को इस क्षण वार्ड का सन्नाटा महसूस हुआ।

''चलो, कम्पनी कमाण्डर, सिगरेट पीते हैं,'' कीतेनेव ने जरा जोर से कहा। स्तारीख के साथ वह कारिडर में चला गया। प्रबन्ध अधिकारी भी, यह देखने के लिए कि सब कुछ ठीक-ठीक है या नहीं वार्ड में एक नजर दौड़ाकर बाहर चला गया।

अत्राकोवस्की पलंग पर सिर के नीचे एक हाथ दबाये लेटा, अखबार खड़खड़ा रहा था। उसकी उघड़ी सफेद, नीली मुरझाई नसोंवाला कोहनी मृत-सी ऊपर की ओर निकली थी।

ओलेग चोगे के पल्ले से चश्मे के शीशे साफ कर रहा था, उसकी सूजी-सी आँखें

की तरह झपक रही थीं। त्रेत्याकोव को धुँधली-सी याद आयी कि जब वह मोर्चे पर था तो माँ ने या ल्यालका ने लिखा था कि ओलेग को उसकी क्लास के लड़कों—कार्पोव ल्योश्का, येलीसेयेव भाइयों, बोरिस और निकीता के साथ फौज में बुला लिया गया, उन्हें वर्दी पहनाकर कहीं भेज दिया गया, पर बाद में ओलेग लौट आया। उसके लिए कोई खतरा पैदा हो गया था। पर बाद में शायद उसके पिता ने, जो शहर का प्रसिद्ध स्त्री रोग चिकित्सक था, हस्तक्षेप किया था और ओलेग को उसकी आँखों के कारण नियमित सेवा के लिए अयोग्य करार दिया गया। स्कूल में उसकी आँखें वास्तव में कमजोर थीं।

"मालूम है, यहाँ बाजार में मुझे कौन मिला था?" ओलेग ने चश्मा लगा लिया और उसकी आँखों का झपकना बन्द हो गया। "सोन्या बातूरिना की माँ, याद है उसकी? उसने सैनिक प्रशिक्षण की कक्षा में तेरे सिर पर पट्टी बाँधी थी। मेरे विचार में सोन्या तुझसे कुछ-कुछ प्रेम करती थी। वह तो मारी गयी है, तुझे शायद मालूम नहीं था?"

"क्या वह फौज में थी?"

"वह अपनी मर्जी से गयी थी। प्रारम्भिक दिनों में लोगों में इतना उत्साह जो था!"

"पर मैं तो उससे अगस्त में मिला था। तब प्रारम्भिक दिन कहाँ थे भला?"

"तुझे गलतफहमी तो नहीं हुई?"

नहीं, गलतफहमी नहीं थी। वह सोन्या बातूरिना से अगस्त के ऐन अन्त में मिला था : एस्टर के फूल बिकने लगे थे। सोन्या ने कहा था : 'देख, एस्टर के फूल! शीघ्र ही स्कूल खुल जायेंगे। पर हमें अब वहाँ नहीं जाना है। देख कितने नीले हैं!' उसने गुलदस्ता खरीदकर भेंट किया था। पेत्रोवस्की ढलान के पास की बात है। बाद में वे पुल पर खड़े थे। सोन्या पुल की मुण्डेर पर पीठ टिकाकर खड़ी थी, वह फूलों को निहार रही थी। पुल के नीचे मटमैला पानी तेजी से बह रहा था, लगता था कि उन दोनों की छाया एक दूसरे से मिलने के लिए तैरती जा रही थीं। 'अभी तक किसी ने भी मुझे फूल नहीं भेंट किये थे,' सोन्या ने कहा था। 'तू—पहला है।' और ठोड़ी पर गुलदस्ता टिकाकर उसने उसकी ओर देखा था। उसको आश्चर्य हुआ था यह देखकर कि उसकी आँखें कितनी नीली हैं। उसकी ठोड़ी और नाक की चोंच पर पीले परागकण चिपक गये थे। वह रूमाल निकालना चाहता था, पर रूमाल गन्दा था, इसलिए वो सावधानी के साथ हाथ से ही परागकण झाड़ने लगा, और सोन्या उसकी ओर देख रही थी। उसने अनायास कहा :

"मुझे उत्सुकता है कि तू युद्ध के बाद कैसा होगा, अगर हम मिलेंगे भी?"

यानी उसे तभी मालूम था कि वह मोर्चे पर जा रही है, पर उससे नहीं कहा। क्योंकि वह लड़का होते हुए भी अभी फौज में भरती नहीं हुआ था।

"सोन्या की माँ खुद बाजार में मेरे पास आयी, नहीं तो मैं शायद उसे पहचान भी न पाता," ओलेग बताने लगा। "उसके चेहरे का यह हिस्सा... नहीं, यह वाला... रुको, मैं अभी याद करता हूँ।" वह पलंग पर खिड़की की ओर दूसरी बगल करके बैठ गया और कुछ सोचकर बोला : "हाँ, यह वाला। वह इस ओर से पास आयी थी। उसके चेहरे का यह सारा हिस्सा टेढ़ा हो गया है और आँख मर्दों की तरह खुली रहती है। चेहरे पर हुए पक्षाघात के कारण। बाद में मैं उसके यहाँ गया था, उसने मुझे सोन्या के पत्र पढ़कर सुनाये थे। बहुत दुःख हुआ... और याद है तुझे, कैसे हम अपनी गैलरी में सिपाहियों का खेल खेलते थे? तेरे पास जापानी फौज थी और मेरे पास हंगेरियन घुड़सवार। याद है, मेरे हंगेरियन घुड़सवार कितने सुन्दर थे?"

चौड़े मर्दाने चेहरे से, चश्मे के शीशों के पीछे से त्रेत्याकोव की ओर बाल सुलभ आँखें देख रही थीं, जिनमें काल की गति ठहर-सी गयी थी। वे उसकी ओर उस जीवन के झरोखे से देख रही थीं, जब उन्हें मृत्यु का बोध तक नहीं था। बड़े मरते थे, बूढ़े मरते थे, पर वे मृत्यु की भावना से अछूते थे। इसीलिये वे अमर थे।

कारिडर में ओलेग को विदा करते समय उसकी चौड़ी हथेली को दबाते हुए त्रेत्याकोव ने कहा : "फिर आना", पर स्वयं वह पूरी आशा कर रहा था कि वह नहीं आयेगा।

वार्ड में स्तारीख ने उससे फौरन पूछा :

"यार है तेरा?"

"स्कूल में मेरा सहपाठी था। पर यहाँ ढूँढ़ लिया उसने मुझे।"

"बड़ा आदमी है।" स्तारीख ने खींसे निपोरते हुए कहा। "मातृभूमि को उसकी जरूरत है।"

"तुम्हें क्या मालूम? उसकी आँखें..."

"खराब है!"

"अगर जानना चाहते हो, रात को वह बिल्कुल..."

"...मोर्चे के रास्ते से भटककर चण्डावल दस्ते में पहुँच गया!" ठहाकों के बीच स्तारीख ने उसके बदले बात पूरी कर दी। आँखों से दीखता जो नहीं! ऐसा ही एक किस्सा याद आ गया, सन् बयालीस की गर्मियों में हमें एंबुलेंस रेलगाड़ी में ले जाया जा रहा था। उस समय की बात है जब वह स्तालिनग्राद जा रही थी... कौन सा स्टेशन था, मुझे अब याद नहीं... खैर, भाड़ में जाये। वहीं मशीनरी से लदी रेलगाड़ी

पटरियों पर खड़ी थी, वहीं औरतों, बच्चों की भीड़ थी, किसी को बिठा लिया, किसी को नहीं, चीख-पुकार मची थी। वे हमारे माल-डिब्बों में ठसाठस भर गये। इसकी मनाही है पर उनको छोड़कर भी तो नहीं जा सकते। वहीं एक दबंग आदमी सूटकेसों के साथ घुस आया। उसको धकेलकर निकाला जा रहा था, वह चिल्लाने लगा : 'साथियो, साथियो यह आप क्या कर रहे हैं? हमें मेरी जरूरत है!'''

''गप्प है!'' कीतेनेव ठहाके मार रहा था, ''छोड़ भी, गप्प मार रहा है!''

''हमें मेरी जरूरत है!''

अध्याय 19

गम्भीर रूप से घायल लोगों के लिए रात काटनी मुश्किल होती है और चंगे होनेवालों के लिए शाम का समय। शाम को वार्ड में बिजली की पीली, धुँधली रोशनी होती, कोनों में चीथड़ों की तरह परछाइयाँ छा जातीं, और वे सब, जिनको युद्ध ने जीवितों और मृतकों के बीच बाँट दिया है, इस समय सिमटकर पास आ जाते।

रात को उसने स्वप्न में अपने पिता को देखा। वे दूर से उसे देख रहे थे, वे काफी बदले-बदले लग रहे थे, झुके-झुके, सिर मुण्डा हुआ, बूढ़े-से, जीवन में उसने कभी भी उन्हें इस रूप में नहीं देखा था। फिर भी वह जानता था कि यह दयनीय व्यक्ति जिसके पूरे सिर पर जख्मों के निशान हैं—उसके पिता ही हैं।

वह उनसे विदा भी न ले पाया था। तब वह पायोनियर कैम्प में छुट्टियाँ बिता रहा था। इतवार की बात है, सब बच्चों के माता-पिता उनसे मिलने आये थे पर उनसे मिलने कोई नहीं आया। बाद में अगले सप्ताह एक दिन माँ आयी थीं। वह ऐसी लग रही थीं मानो अभी-अभी किसी बीमारी के बाद उठी हों, और हर बार जब वह उसकी ओर देखतीं तो उसे उनकी आँखों में आँसू छलकते दिखाई पड़ते। उन्होंने कहा था कि पिताजी दौरे पर गये हैं, बड़े लम्बे दौरे पर गये हैं। जब वह कैम्प से छुट्टी बिताकर घर लौटा तो उसने दूसरे कमरे के बन्द दरवाजे पर सील लगी देखी, माँ ने उसे बता दिया कि यह कैसे हुआ...

पहले कभी उसे माँ से इतना प्यार नहीं था जितना कि मुसीबत के उन दिनों। उसने दृढ़ निश्चय कर लिया था : सातवीं पास करके काम करने लगेगा। पिता भी ऐसा ही करते, उसे यही सलाह देते। ल्यालका छोटी है, पढ़ती रहे, पर वह—बड़ा है। लेकिन बाद में बेजाइत्स आ गया। इसके लिए वह माँ को माफ न कर सका : न पिता की ओर से, न अपनी ओर से।

अगर वह ईमानदारी से लड़ता है और मोर्चे पर भी अपनी इच्छा से आया है जबकि उसकी उम्र के लोगों को भरती भी नहीं किया जा रहा था, अगर उसने अपनी योग्यता को प्रमाणित कर दिया तो यह पिता जी की शिक्षा-दीक्षा का ही फल होगा। उसने कई बार सोचा था कि जब युद्ध की समाप्ति पर घर लौटेगा तो जाकर बता देगा, और पिता का भाग्य बदल जायेगा। उसे ठीक से मालूम भी न था कि वह कहाँ जायेगा, वहाँ क्या होगा पर उसे विश्वास था : युद्ध समाप्त होगा, वह मोर्चे से घर लौटेगा और गुत्थी सुलझ जायेगी, वे समझ जायेंगे कि भयंकर भूल हो गयी थी, उसके पिता का कोई दोष नहीं है। माँ से भी उसने इस बारे में नहीं बताया था, पर अत्राकोवस्की से बात करने की इच्छा होती। एक बार वे आपरेशन थियेटर के सामने बरामदे में खिड़की के पास खड़े थे, और उसने पूछा था कि अत्राकोवस्की को यह पदक किस लिए मिला। उसने झुककर अपनी कमीज पर नजर डाली और बोला : 'यह जीवन में प्रवेश करने के लिये मेरी योग्यता का प्रमाणपत्र है।' और वह व्यंग्य से मुस्करा दिया।

अत्राकोवस्की इस समय वार्ड में टहल रहा था, वह किसी सोच में डूबा हुआ था। स्तारीख भी शतरंज पर झुका सोच रहा था। धुँधलके में, पलंग से त्रेत्याकोव को दिखाई दे रहा था कि कैसे वह ठोड़ी टिकाकर उँगलियों से माथे पर गुलाबी निशान को मसल रहा था।

''घोड़ा, घोड़ा चलो सीनियर,'' बावर्ची जोर-जोर से सलाह दे रहा था। और खुद मुँह बनाकर, अंधे रोयजमान की ओर आँख मारकर, बिसात पर कोई और ही चीज दिखा रहा था। स्तारीख का चेहरा सफेद हो गया, वह उछलकर खड़ा हो गया :

''मैं तेरे सिर पर अभी बैसाखी चलाता हूँ!'' और सबकी ओर अभिमुख होकर चिल्लाया : ''चलो, पीछे हटो! ऐसे घेर लिया है कि दम घुटा जा रहा है।''

''क्यों हाथों को छूट दे रहा है?'' बावर्ची ने झेंपकर अपनी सफाई देते हुए कहा। ''आदमी का भला चाहते हैं, पानी में धकेल रहे हैं, और वह, पागलों की तरह किनारे पर चढ़ रहा है...''

बावर्ची हर शाम को उनके अफसरों के वार्ड में आता, खड़ा-खड़ा देखता, उसका जी भी शतरंज खेलने को करता। वह मोटा था, उसका दाढ़ी बना चेहरा ऐसे चमकता मानो उस पर बाल उगते ही न हों, उसकी थुलथुल छाती का जैसे कोई आर-पार न था। पर यह मुफ्त की रोटी तोड़ने का परिणाम नहीं था। उसको ऐसा घाव लगा था कि जिसके बारे में बताते हुए भी शर्म आती। विरला ही यह जानकर न हँसता हो कि उसका कौन सा अंग घायल हुआ था, पर बावर्ची इसका आदी हो चुका था और

अब बुरा नहीं मानता था। युद्ध के ठीक पहले उसकी शादी हुई थी, उसके हाथ चंगे, पाँव चंगे पर जब घर लौटा तो पत्नी फूट-फूटकर रोयी और उसने साफ-साफ कह दिया कि वह उसके साथ नहीं रह सकती। और बावरची इस अस्पताल में असैनिक नौकरी करने के लिए लौट आया। शाम को वह उनके वार्ड में आता, खेल देखने में रम जाता, कभी सलाह देता : 'प्यादा बढ़ाओ...' एक बार उसने कहा था : 'जब तक युद्ध चल रहा है—सब ठीक है। पर युद्ध खत्म हो जायगा और आप सब अपने-अपने घरों को लौट जाएँगे...'

और तब त्रेत्याकोव को पहली बार इस विचार पर आश्चर्य हुआ : इस आदमी को डर है कि युद्ध खत्म हो जायेगा। जब तक वे यहाँ हैं, वह, सबकी तरह है, मानो उसके लिए सामान्य जीवन चल रहा हो। भगवान न करे कि ऐसी जगह घाव लगे, इससे तो मर जाना बेहतर है। पर फिर भी त्रेत्याकोव के मन में पता नहीं क्यों, उसके प्रति घृणा का भाव था।

"सीनियर, लाओ मैं भी एक बाजी खेल लूँ," बावर्ची ने अनुरोध-किया और बिसात की ओर बढ़ने लगा।

"अभी नहीं, सब्र कर!"

स्तारीख मोहरों को ठोक-ठोककर खानों में रखता हुआ फिर से बिसात बिछाने लगा।

"कैप्टन, चलो अब चैकर खेलते हैं!"

"चैकर?" रोयजमान ने सवाल दोहराया, "नहीं, चैकर खेलना मुश्किल है, सब गोटियाँ एक जैसी होती हैं।"

"कैसे वह उन्हें याद करता है!" स्तारीख को आश्चर्य होता है। "मैं आगे की बात सोचता हूँ और पीछे की चालें भूल जाता हूँ..."

कोई सहमते हुए वार्ड का दरवाजा खोल रहा था। शायद बाहर का आदमी था। त्रेत्याकोव चँगी कोहनी का सहारा लेकर कुछ ऊपर को उठा, दरवाजे पर साशा खड़ी थी।

"साशा," वह उसके दोनों ठिठुरे हाथों को अपनी हथेली में दबाकर गर्माते हुए कह रहा था। उसने उसकी बर्फीली उँगलियों को अपने होंठों से छुआ और बारी-बारी से उन्हें एक-एक करके चूम लिया, वह अपने होंठ हटा नहीं पा रहा था। जब उसने सिर उठाया, तो दिल धक-धक कर रहा था। साशा उसे चमकती आँखों से देख रही थी।

"साशा," वह मदहोशी में कह जा रहा था, "साशा।"

उसे आशा नहीं थी, प्रतीक्षा भी नहीं थी उसके आने की, पर वह आ गयी।

"कहो, तुम यहाँ कैसे आयीं?"

"मेरा ख्याल था कि तुम बीमार पड़ गये हो। पाला इतना तेज था और तुम सिर्फ ग्रेटकोट में थे।"

"अब ग्रेटकोट नहीं रहा, ग्रेटकोट वापस ले लिया गया, यही तो बात है। अब यहीं बैठा हूँ, बाहर नहीं निकल सकता।"

"...मैं सोच रही थी कि कहीं निमोनिया तो नहीं हो गया? मैं माँ से मिलने तक नहीं गयी।"

"साशा!"

वह सफेद चोगा पहने खिड़की के दासे पर बैठी थी। उसकी चोटी वक्ष पर झूल रही थी, और वह उसके सामने, उसके हाथों को पकड़े हुए खड़ा उन्हें निहार रहा था, मानो उसके हाथ में कोई अजूबा हो।

"वहाँ नया चौकीदार खड़ा है... मैंने उससे कहा कि मैं मनोरंजन कार्यक्रम के बारे में बात करने आयी हूँ। उसने कहा कि मैं तेरी वजह से नौकरी से हाथ नहीं धोना चाहता, मुझे ऊपर से हुक्म मिला है।"

"पास ही चहारदीवारी में दो तख्ते उखड़े हुए हैं। वे सिर्फ एक कील के सहारे लटके हुए हैं। उन्हें हटाकर..."

"अगर वे न होते तो मैं भला आ सकती थी। यह भी अच्छा हुआ कि तमारा गोर्ब ड्यूटी पर थी, उसने मुझे अपना चोगा दे दिया।"

उसने सोचा : "इसकी उँगलियाँ कितनी नन्ही-सी हैं। ठिठुरी हुई। पर पता नहीं क्यों इनमें से रेल के इंजन के कोयले की बू आ रही है।"

"मैं कोयला जमा कर रही थी," साशा ने कहा। "यह तो बड़ी किस्मत की बात है कि हम रेल लाइन के पास रहते हैं, नहीं तो आग जलाने के लिए ईंधन कहाँ से लाते। जब गाड़ी खड़ी होती है तो इंजन की भट्टी से जरूर कुछ कोयला नीचे गिर जाता है। कभी-कभी पूरी बाल्टी भर लेती हूँ।"

"डिब्बों के नीचे?"

"नहीं तो भगा देते हैं, बीनने नहीं देते।"

"अगर गाड़ी चल पड़े तो?"

"एक बार मालूम है, मैं कितनी डर गयी थी। बाल्टी वहीं छोड़ आयी..."

अचानक वह उछलकर खिड़की से उतर गयी : कारिडोर के दूसरे सिरे पर डाक्टर की सफेद टोपी नजर आयी। वे जीने पर दौड़ते हुए तीसरी मंजिल पर पहुँच गये।

वे हँस रहे थे, दोनों बड़े खुश थे। पर वहाँ भी वार्ड के डाक्टर से उनकी मुठभेड़ हो जाती। सिर्फ अटारी के नीचे ठण्डे जीने पर कोई नहीं था। वे वहाँ हाँफते हुए पहुँचे। यहाँ बर्फ साफ करने के लिए लकड़ी के लम्बे हैंडलोंवाले विशाल बेलचे दीवार से टिके थे, और भी क्या-क्या चीजें पड़ी थीं। किसी ठण्डे कमरे की तरह खिड़की अन्दर से झबरैले पाले से पूरी ढकी थी। इस नीली बर्फीली खिड़की के पास उसने साशा को बाँहों में भरकर चूम लिया। वह अपने होंठों के नीचे फड़कती पलकों, गालों, कोयले की बुवाली उँगलियों को चूम रहा था।

वे काँपते हुए ठण्ड में खड़े थे और एक दूसरे को अपने जिस्म से गर्मा रहे थे। नीचे दरवाजा खटका, ऊपर चढ़ते कदमों की आहट सुनाई पड़ी।

अध्याय 20

रोयजमान को विदा कर दिया गया। यह देखकर कि कैसे वह छड़ी से अपने आगे-आगे रास्ते को टटोलता चल रहा है, कैसे अविश्वास के साथ पैर से दहलीज को टटोल रहा है, त्रेत्याकोव की नजरों के सामने वह दृश्य घूम गया जब पहले वह न मुड़नेवाले पैरों पर चलता हुआ गर्व के साथ प्रवेश करता, शेव के बाद चिकने गालों पर पाउडर लगा होता, आँखें भावशून्य होतीं।

उसके स्थान पर नर्स कोहनी का सहारा देकर एक और कैप्टन को लायी, जो किसी बीमारी से झुका, पीला, चिड़चिड़ा और सब तरफ से असंतुष्ट नजर आया था। कैप्टन माकारीखिन को सन् तैंतालीस के शरद में फौज का बुलावा आया जब उसका आरक्षण रद्द किया गया था पर वह अभी तक मोर्चे तक नहीं पहुँच पाया था, अस्पतालों में डाक्टरों से उसकी लड़ाई जारी थी। वार्ड में वह फौरन लम्बे प्रवास की तैयारियाँ करने लगा। 'आपको कोई तकलीफ तो नहीं होगी अगर मैं इस रैक पर भी अपनी चीजें रख दूँ?' उसने अवेतिस्यान से पूछा। पर उसको तो जबड़े हिलाने तक में दर्द होता था, वह सिर्फ अपनी बड़ी-बड़ी झबरैली बरौनियाँ ही झपका रहा था। 'बहुत अच्छा', उसकी एवज में माकारीखिन खुद ही सहमति व्यक्त करके दूसरे रैक पर भी अपनी चीजें रखने लगा।

उसने घिन के साथ तकिये को लटकाकर उसे चारों ओर सूँघा, गद्दे को पीटा, जिससे सारे वार्ड में धूल भर गयी।

''इन्हें तो बस फौज में भरने की, सिर्फ फौज में ठूँसने की फिक्र है, गद्दे में रूई की गाँठों को घूँसा मार-मारकर तोड़ते हुए माकारीखिन कहने लगा, ''काबिल हो या

नहीं—चले जाओ फौज में।''

और शीघ्र ही वह पलंगों के बीच चलता हुआ हरेक को उन कानूनों के बारे में बता रहा था जिनके अनुसार उनमें से हरेक को सैनिक सेवा से निवृत्त कर देना चाहिए।

त्रेत्याकोव की ओर उँगली उठाकर उसने कहा, ''तुम्हारा मामाला धारा नम्बर ग्यारह 'बी' के अन्तर्गत आता है। प्रथम श्रेणी की सीमित सक्षमता, जिसका शांति काल में अर्थ है तृतीय वर्ग का अपाहिज।''

''खुद अपाहिज है भौंदू।'' त्रेत्याकोव ने मन ही मन सोचा, जिसे अब तक किसी ने भी यह बुरा शब्द नहीं कहा था। इस क्षण से वह माकारीखिन से घृणा करने लगा। जब कैप्टन नर्सों के पास अपने लिए कुछ माँगने बाहर निकला तो स्तारीख ने कहा :

''यह मौके की तलाश में है कि इसके मोर्चे पर पहुँचने से पहले ही युद्ध समाप्त हो जाये। यह ऐसों में से है जो कहते हैं 'वतन के लिए जान दे दूँगा, पर मोर्चे पर हरगिज न जाऊँगा...' ऐसा ही है यह।''

देर तक वह अपना गंजा सिर हिलाता रहा, जो इसीलिए उसके कन्धों पर टिका था और सही-सलामत था क्योंकि वक्त पर वह लोहे के टोप से ढका था।

दोपहर के खाने के समय माकारीखिन जबड़े कँपाते हुए खा रहा था, गर्म खाने पर सुबक-सा रहा था।

''चराते हैं,'' उसने भारी साँस लेते हुए कहा। ''देग में से आधा चुरा लेते हैं। हमारी रिजर्व रेजिमेण्ट में बावर्ची की जाँच की गयी—दो हफ्ते में उसने इतना माल चुरा लिया था! और उस हरामी ने हँसकर कहा : मैंने तो दो हफ्तों में इतना लिया, पर मुझसे पहले तो एक दिन में ही इतना चुराते थे...''

यह घिसा-पिटा किस्सा था, जिसे सब जानते थे, पर माकारीखिन इसे अपनी आपबीती की तरह सुना रहा था।

''देखो तो यहाँ का बावर्ची कैसा मोटा है। अफसरों के लिए चराना है या नहीं? फिर अपने लिए? और अपने परिवार के लिए भी?''

''माकारीखिन, जरा सुनो?'' कीतेनेव ने उसे आवाज दी। उसने धुँधली आँखें ऊपर उठायीं। ''तुम्हारे पैरों का क्या हाल है, उन पर कोई असर तो नहीं पड़ा?''

''समझा नहीं?''

''पैदल ठीक-ठाक चल लेते हो?''

''अगर दूर न जाना हो... वैसे एक तो मेरे पैर चपटे हैं, दूसरे उनकी नसें सूजी हैं...''

"थोड़ी दूर तक।"

"थोड़ी दूर तक?" माकारिखिन ने घुटने को पकड़कर पैर उठाया और फर्श पर पटक दिया। "थोड़ी दूर तक तो चल सकता हूँ।"

"तब तू... में जा," और कीतेनेव ने उसे साफ-साफ 'थोड़ी दूर' भेज दिया। और चेतावनी दी : "देर मत कर!"

माकारीखिन ने सबकी ओर नजरें दौड़ायीं, चुपचाप खाने की प्लेट उठायी और अलग जाकर अपने पलंग पर बैठ गया।

दो-एक दिन के बाद कीतेनेव वार्ड में वर्दी और बूट पहने, परतला कसे आया और बोला : "मेरे बिना तुम लोग ऊब जाओगे।" अस्पताल से वह औरों की तरह सवेरे नहीं, दोपहर को भी नहीं बल्कि शाम को डिस्चार्ज हो रहा था, ताकि अपनी आखिरी रात यहीं, इसी शहर में बिता सके। उस दिन तमारा गोर्ब से कोई काम ढंग से न हो पा रहा था। वह कभी रोने लगती, कभी सबकी ओर गीली चमकीली आँखों से देखने लगती। वह उसके पास विदा लेने के लिए जा रहा था।

अब उनके वार्ड में पुराने लोगों में से तीन ही बचे थे : अत्राकोवस्की, स्तारीख और त्रेत्याकोव। इस दौरान अवेतिस्यान भी अपना बन गया था, हालाँकि आवाज उसकी अब भी नहीं सुनाई पड़ती थी। वे तीनों खुद को यहाँ कुछ दिन का मेहमान मान रहे थे, उनका वक्त भी पूरा होने को आ रहा था।

"चल अभी मेरे पलंग पर चला जा, अत्राकोवस्की के पास रहेगा," कीतेनेव ने त्रेत्याकोव को जगह बदलने में मदद देते हुए कहा। उसने उसके तकिये के नीचे तह किया हुआ ग्रेटकोट रख दिया। "जी भरकर पहन। अब यह तेरा है।"

वे आमने-सामने बैठ गये, उनके घुटने एक दूसरे को छू रहे थे। कीतेनेव ने चपटी बोतल निकाली। जब उन्होंने विदाई के मौके पर पी तो स्तारीख का चेहरा अचानक बदल गया।

"इन्फैंट्री, तुझे क्या हो रहा है?" कीतेनेव हँस पड़ा, और खुद भावुक होकर स्तारीख की पीठ थपथपाने लगा। उसने भौंहें सिकोड़ीं और मुँह मोड़ लिया। "और डींग भी मारता था : मैं तुमसे पहले वहाँ पहुँचूंगा।"

"सब वहाँ पहुँचेंगे।"

"हमारे मोर्चे पर भेजने का अनुरोध करना, साथ-साथ लड़ेंगे। कम्पनी की कमान तो तुझे नहीं सौंपेंगे क्योंकि तुझे सिर में चोट लग चुकी है। पर डिवीजन का काम तो तू सम्भाल ही लेगा।"

वे चलते-चलते आपस में मजाक कर रहे थे, पर उन्हें मालूम था कि हमेशा के

लिए बिछड़ रहे हैं : पूरी जिन्दगी भर के लिए, चाहे वह छोटी हो या लम्बी। पर क्या पता, इस जिन्दगी में क्या नहीं होता!

उसी शाम विरासत में मिला ग्रेटकोट पहनकर त्रेत्याकोव साशा के यहाँ पहुँच गया। फाया ने उसे बता दिया कि कमरे की चाबी कहाँ है और खुद डींग मारते हुए बोली :

"इवान दनीलिच आनेवाले हैं।"

वह रसोई में आलू धो-धोकर देग में भर रही थी। फाया का चेहरा अब पहले की अपेक्षा अधिक सूजा-सूजा लग रहा था, उस पर कत्थई दाग पड़ने लगे थे : जिसके कारण भौंहों के ऊपर और ऊपर के होंठ पर सफेद रोयें दिखाई पड़ने लगे थे। उसकी नजर को पकड़कर वह शर्मा गयी :

"न जाने क्या होनेवाला है? बुरे सपने आते हैं।" इस रात, फाया ने उसकी ओर ऐसे हाथ झटका मानो दुत्कार रही हो, "चूहा दिखाई पड़ा। और वह भी बीमार-सा, कूबड़ा, दुम बिल्कुल गंजी। उई, डरकर ऐसी चिल्लायी! मेरे दनीलिच भी सहमे-से पूछने लगे : 'क्या हुआ?' क्या हुआ?' मेरा खुद का दिल फटा जा रहा था।"

"चूहा सलेटी था?"

"मेरे ख्याल में, हाँ।"

"तब, बस! फाया, देखना, बेटा और बेटी होंगे। शकुन बिल्कुल सही है।" फाया का चेहरा शर्म से लाल हो गया :

"तू हँस रहा है, क्या?"

"हँसी कैसी! तब तुम मुझे लिखना। हमारे अस्पताल में एक आदमी..."

वह अपने को रोक न पाया और मुस्करा पड़ा।

"मैं भी खूब हूँ मुँह बाये सुन रही हूँ," फाया बुरा माननेवाली थी, पर वह, हँसमुख रसोई में टहल रहा था। उसके साथ फाया को ऊब नहीं हो रही थी।

साशा से मिलने आया था। आज पहली बार उसने दोनों बाँहे आस्तीनों में डालकर फौजी कमीज पहनी थी। उसने खिड़की के शीशे में अपना प्रतिबिम्ब देखा, उबाऊ गाउन में नहीं, बल्कि चुस्त फौजी वर्दी में। उसे अपना व्यक्तित्व प्रभावशाली लग रहा था। वह आया भी इसीलिए था कि साशा उसे इस रूप में देख ले।

झाड़न को लगी लपट को झटककर, अँगीठी की दीवार से रगड़कर उसे बुझाते हुए, फाया ने मुड़कर दरवाजे की ओर देखा, और फुसफुसाकर बताने लगी :

"साशा की माँ है न, वह जर्मन है!"

"मालूम है।"

"जानते हो?" फाया चकित रह गयी।
"हाँ, जानता हूँ। आखिर उसका दोष क्या है?"
"आखिर लड़ाई तो जर्मनों से हो रही है।"
"साशा का बाप भी तो जर्मनों से लड़ा था, उनके ही द्वारा मोर्चे पर मारा गया।"
"मेरा मतलब है कि शहर में इतने घर हैं, और हर घर में मौत का मातम मनाया जा रहा है। लोग बड़े क्रुद्ध हैं!"
उसने आँखें तरेरीं। फिर बाद में फुसफुसाकर मानो कोई गूढ़ रहस्य खोल रही हो, बोली :
"अगर मालूम न हो, तो कोई सोच भी नहीं सकता। औरत नेक है, मेहनती है। हे भगवान, क्या मुसीबत है, दुनिया में, देखो तो सही, क्या हो रहा है!"
तभी उसे त्रेत्याकोव की बाँह आस्तीन में दिखाई पड़ी।
"तू क्या लड़ाई पर जाने की तैयारी तो नहीं कर रहा है?"
"फाया, धीरे बोलो, दुश्मन सुन रहा है!"
वह इससे पहले कि मजाक समझ पाती सचमुच मुड़कर देखने लगी। सिर हिलाकर बोली :
"ओ-हो, साशा खुश हो जाएगी..."
यह कहकर वह अपने कमरे में चली गयी। त्रेत्याकोव कारिडोर में उकड़ूँ बैठा सिगरेट के धुएँ को ठण्डी अँगीठी के कपाट में फूँकता प्रतीक्षा कर रहा था।
प्रवेश-द्वार पर आहट सुनाई पड़ी, रसोई में कोई भारी चीज धम्म से गिरी साशा शाल में पूरी लिपटी थी जिस पर पाला जमा था। वह कोयले से भरी बाल्टी को दहलीज से घसीटकर ला रही थी। उसे देखकर वह मुस्करायी :
"मुझे मालूम था कि तुम आओगे। लौटते वक्त सोच भी रही थी कि तुम बैठे इन्तजार कर रहे होगे।"
वह उसे देखकर खुश हो रही थी। त्रेत्याकोव ने उसके हाथ से बाल्टी ले ली।
"तुम कैसे लायीं इसे उठाकर? बहुत भारी है।"
"दौड़ती हुई! ताकि छीन न लें।"
"फिर डिब्बों के नीचे गयी थीं?"
"डिब्बों के नीचे ही तो बीना था।"
दोनों खिलखिलाकर हँस पड़े क्योंकि साशा ने बिल्कुल फाया के अन्दाज में जवाब दिया था।
"बोलो, इसके साथ क्या करना है?"

"रख दो, मैं अभी मग से इस पर पानी छिड़क दूँगी..."
"नहीं, हम इसे नल के नीचे रख देंगे!"
उसने बाल्टी का उठाकर झटका दिया और झट से बेसिन में नल के नीचे रख दिया और टोंटी खोल दी। फुफकारकर सफेद भाप का बादल छत की ओर उड़ गया, रेल के इंजन की बू फैल गयी। वह खुशी से फूलकर कुप्पा हो गया। अँगीठी के पास बाल्टी ले जाते हुए उसने मुड़कर देखा।
"हाँ, तो अब छिपटियाँ फाड़ेंगे..."
"पर हमारे पास उन्हें फाड़ने के लिए कुछ नहीं है," कमरे से साशा ने कहा। "मैं चाकू से काट लूँगी।"
"कुछ न कुछ ढूँढ़ लेंगे।"
रसोई में प्यास्तोलोव दम्पति की मेज के नीचे उसे जंग लगा डण्डा सा मिल गया : वह लकड़ी का कुन्दा और गंड़ासा उठाकर बाहर चला गया। ड्योढ़ी के पास जमी बर्फ गूँजती और उस पर लकड़ी का कुन्दा उछलकर दूर जा गिरता। प्यास्तोलोव बन्धु सधे कदम से पास से गुजरे। वह उनका पीछा कर रहा था। भारी जिस्म, ठिगना कद और चौड़े कन्धोवाला यह व्यक्ति बड़े शान से कदम रख रहा था। उसने भाई से कुछ पूछा और दस्तानेवाले हाथ को प्रोत्साहित करने के लहजे में अपनी टोपी के ऊपर हिलाया :
"मे ऽऽ हनतकशों को हमारा सलाम!"
यही सैनिक कमिश्नर था, त्रेत्याकोव को उसके कन्धों के फीतों पर एक-एक बड़ा सितारा नजर आया। यह याद करके कि पिछवाड़े में विनम्रता जूनियर को शोभा देती है, उसने कायदे के अनुसार उसका अभिवादन किया :
"आपकी सलामती चाहता हूँ, कामरेड मेजर।"
अपने भाई पर गर्व से प्रफल्लित वसीली दनीलिच ने बड़े भाई को आगे जाने दिया और बड़े भाई ने ड्योढ़ी पर चढ़कर हौसला बढ़ाने के अन्दाज में कहा :
"कान ठण्ड से जम जायेंगे!"
"हो-हो-हो!" छोटे भाई ने इस मजाक पर ठहाका लगाया।
जब तक उसने लकड़ी चीरकर एकत्रित की, वह ठण्ड से ठिठुर चुका था। वह जब रसोई में घुसा तो न अपने कानों को और न ही हाथ की उँगलियों को महसूस कर पा रहा था। घर की गर्मी में जूतों के तलवों पर जमी बर्फ पिघलने के कारण वह फिसल गया, हाथ में पकड़ी वस्तुएँ बिखरते-बिखरते बचीं।
"तुम्हारे बदन से पाले की गन्ध आ रही है!" साशा ने कहा और अचानक उसका

ध्यान त्रेत्याकोव की बाँह की ओर गया : "तुम्हें डिस्चार्ज किया जा रहा है क्या? तुम ठीक हो गये?"

"नहीं, नहीं, अभी नहीं!"

फिर ईमानदारी से उसने स्वीकार किया :

"मैं तो सिर्फ तुम्हें मिलना चाहता था।"

इस शाम उसने कई बार उसकी नजर पकड़ी जो पहले जैसी नहीं थी। जब वे अँगीठी जलाकर पास बैठ गये तो साशा ने पूछा :

"तुम्हारी शक्ल किससे मिलती है, माँ से या पिता से?"

"मेरी? मैं पिता पर गया हूँ। हमारी ल्यालका हूबहू माँ से मिलती है। बस यही दुख है कि फोटो फील्ड-बैग में ही रह गये, नहीं तो तुम्हें दिखाता।"

"वह तुमसे छोटी है?"

"वह तो बच्ची है। मुझसे चार साल छोटी है।"

साशा ने देखा कि जब वह बहन के बारे में बताने लगा तो उसके चेहरे पर दीनता का भाव छा गया, उसकी मुस्कान कितनी सुखद हो गयी।

आज भी लपटों के बिम्ब उनके चेहरों पर नाच रहे थे और अँगीठी से बर्च की लकड़ी के धुएँ की गन्ध आ रही थी। प्यास्तोलोव दम्पति के कमरे से जोर-जोर की आवाजें आ रही थीं।

"पता नहीं क्यों मैं पूरे समय तुम्हारे लिए इतनी निश्चिंत थी।" साशा ने कहा। "निःसन्देह ये सब शकुन-वकुन बेकार की बातें हैं। पर इन्सान जब मजबूर होता है तो अनायास ही इन पर विश्वास होने लगता है। कहते हैं कि अगर बेटा माँ पर जाता हैं तो सुखी होता है। वोलोद्या खुद्याकोव हूबहू माँ की नकल था... शायद, इसी लिए तुम्हारे लिए निश्चिन्त थी कि आगे बहुत वक्त पड़ा था। पर अब तुम्हारी बाँह देखकर..."

"साशा, याद कर लो," उसने कहा, "मुझे कुछ नहीं होगा।"

"ऐसे मत बोलो!"

"मैं वादा करता हूँ। तुम मेरी बात का विश्वास करो। अगर मैं कोई वादा करता हूँ..."

तभी कारिडोर में फाया निकली, उसने इशारे से साशा को रसोई में बुलाया। वह अँगीठी के पास बैठा आग को ताक रहा था, जलती चैलियों को हिला-हिलाकर, बेलचे से उन पर कोयला डाल रहा था। कमरे में चटकने की आवाज और रेल के इंजन की गन्ध फैल गयी। कोयले की काली जमी परत ने आग को ढक दिया। धीरे-धीरे

उसको फोड़कर गैस की नीली-नीली लपटें निकलनी शुरू हो गयीं। साशा किसी बात से खुश और शर्मायी-सी लौटी।

"चलो उनके यहाँ।"

"हमें वहाँ क्या लेना है साशा?"

"अच्छा नहीं लगता, आखिर वे हमें बुला रहे हैं।"

"यह सुनने के लिए कि कामरेड मेजर कैसे मजाक कर रहे हैं? मैं तो बोर नहीं हो रहा हूँ।"

"हम थोड़ी देर के लिए जायेंगे। चलो, नहीं तो वे बुरा मान जायेंगे।"

त्रेत्याकोव ने देखा कि वह पता नहीं क्यों वहाँ जाना चाहती है, पर पूरी बात नहीं बता रही है। उसने उठकर अपनी फौजी कमीज को ठीक किया।

"मेजर मुझे गार्ड रूम में ठूँस देगा, मेरे लिए खाना लेकर तो आया करोगी?"

"बेशक लाया करूँगी!"

"याद रखना, अपने साथ ले जा रही हो।"

फाया के यहाँ हमेशा की तरह अँगीठी की तेज गर्मी थी। खट्टी बन्दगोभी की महक आ रही थी, वह मेज पर प्लेट में रखी थी। आखिरी बार उसने खट्टी बन्दगोभी घर पर युद्ध से पहले खायी थी। तले हुए बैक-फैट की भी खुशबू आ रही थी। पर उसकी तो अब सिर्फ महक ही बची थी।

उनको मेज पर बैठाते हुए फाया दौड़-धूप कर रही थी :

"चाय पी लो कुछ।"

दोनों भाई बैठे थे, दोनों के चेहरे की लाल डोरियाँ चिकनी थीं।

"यह रहा, इसका यह हाथ, देखो," त्रेत्याकोव के बायें हाथ की अकड़ी उँगलियों को पकड़कर इवान दनीलिच को दिखाते हुए फाया कहने लगी। उसने गोल-गोल नम्र किन्तु भावनामय मुस्कराती आँखों से देखा।

"बायाँ है?"

तभी त्रेत्याकोव ने ध्यान दिया कि सैनिक कमिश्नर मेज पर रखा दायाँ हाथ चमड़े के काले दस्ताने से ढका है और बाँह पर आस्तीन ऐसे लटकी है मानो किसी डण्डे पर टँगी हो।

"साथ-साथ तुम दोनों के दो हाथ हो जाएँगे," वसीली दनीलिच हँसने लगा। "तेरा बायाँ, उसका दायाँ, क्या बात होगी!"

"बिल्कुल सच!" सैनिक कमिश्नर ने कहा।

"इसे, जैसे पहले से मालूम था, बचपन से खब्बा है। पिताजी हाथ से चम्मच

छीनकर कहते : 'लोग दायें हाथ से खाते हैं, दायें हाथ-से!' और स्कूल में भी इसकी शामत आती थी। जब फिनलैण्ड से हुए युद्ध में दायाँ हाथ कट गया तब, यह बायाँ बेकार नहीं रहा, काम आ गया।

सैनिक कमिश्नर फिर बोला :

"बिल्कुल सच!"

उसकी गोल आँखें उनींदी मुस्करा रही थीं। बोलने के ढंग से लगता था कि वह शायद कुयबिशेव के इलाके का रहनेवाला है; उनके सैनिक विद्यालय में उसी इलाके के चपायेवस्क नगर का सार्जेंट-मेजर था तो इसी की तरह 'च' की जगह 'श' बोलता था।

"अरे यह तो अकेला बायें हाथ से इतना कर दिखा सकता है जितना कि कोई दो हाथों से भी नहीं कर पाता।" वसीली दनीलिच अपने भाई की बड़ाई कर रहा था, और वह चुपचाप सुन रहा था। "तुम्हें सौ डाक्टरों की जरूरत है—अगले दिन वह सौ ही सामने लाकर—खड़ा कर देगा। प्रशिक्षण संस्थानों में हरेक को कितने साल पढ़ाया जाता है? पाँच साल? छः? और यह है कि पूरे प्रशिक्षण के लिए चौबीस घण्टे का समय देगा—और लो वे तैयार खड़े हैं। दो सौ इंजीनियरों की जरूरत है, तुम्हारे सामने दो सौ को ही लाइन में खड़ा कर देगा!"

इवान दनीलिच नाक घरघराता हुआ साँस ले रहा था और उनींदा-सा मुस्करा रहा था। सिर हिलाकर उसने कहा :

"जरा अलमारी में तो देख, तू भी कुछ पेश कर दे?"

वसीली दनीलिच ने अलमारी से वोद्का का सील बन्द पौवा निकाला।

"युद्ध से पहले तीन पन्द्रह का था! छः का आधा और तीन पन्द्रह का पौवा। 'काजबेक' सिगरेट का पैकेट भी तीन पन्द्रह का था।"

"तू तब भला 'काजबेक' कहाँ पीता था?" बड़े भाई ने पूछा।

"इसी लिए तो याद है कि नहीं पीता था। और पन्द्रह कोपेक बोतल के लगते थे," वसीली दनीलिच ने इस खास चलाकी का उल्लेख किया। "अब देखो तो कितने गुना दाम चढ़े हैं इसके? ओ-हो अब तो इसके दाम सौ गुना चढ़ गये हैं!" वह छोटे-छोटे जामों को भरते हुए बोल रहा था जिन्हें शायद फाया ने अभी हाल ही में मेज से उठाया था और अब उन्हें झाड़-झाड़कर एक-एक करके रख रही थी। "सौ गुना से भी ज्यादा की हो गयी है!"

मानो सिर्फ अभी उसके असली मूल्य को जानकर उसने बोतल के मुँह पर चिपकी रह गयी बून्द को उँगली से साफ किया और चटकारा लेते उसे चाट गया।

त्रेत्याकोव को जाम लेते हुए कुछ अटपटा लग रहा था। उनके वार्ड में कोई जो कुछ भी लाता था वह सबके लिए आम चीज मानी जाती थी। पर यहाँ उसे स्पष्ट अनुभूति हुई कि वह अपनी नहीं पी रहा है। पर मना करते भी अच्छा नहीं लगता था।

उन्होंने जाम खाली कर दिये फाया ने उसके लिए बन्दगोभी सामने रख दी।

"थोड़ी खट्टी गोभी तो खा लो।"

"शुक्रिया।"

उसने नजर बचाकर गोभी को साशा की ओर खिसका दिया। वह शर्म से लाल हो गयी, उसे इसकी आशा नहीं थी। दोनों भाई हँस पड़े।

"वाह भई, इन दोनों का भी कोई जवाब नहीं—वह पीता है और यह खाती है!"

और फाया ने प्लेट में कुछ और बन्दगोभी ऐसे डाल दी मानो गुस्से में पटक दी हो।

"मेरा मन नहीं कर रहा, फाया, सच कह रही हूँ" साशा बोली।

"क्या, अलग-अलग परोस दूँ?"

"नहीं, हम साथ-साथ ले लेंगे।"

वे साथ-साथ ही थे इस समय, हालाँकि एक दूसरे की ओर न देखने का प्रयास कर रहे थे, चुपके से प्लेट में एक दूसरे की ओर बन्दगोभी खिसका रहे थे। फाया, मानो और भी गुस्से में पास आयी और त्रेत्याकोव के जख्मी हाथ की सुन्न, अकड़ी हुई उँगलियों को पकड़कर इवान दनीलिच को दिखाने लगी :

"इस हाथ से यह कौन से किले फतह कर लेगा?" वह कपड़े की तरह उसकी क्षीण उँगलियों को मसल रही थी। "इस से यह भला क्या कर लेगा?"

उसने अपना हाथ खींच लिया और मजाक करते हुए बोला :

"मेरा काम, फाया, दिमाग का है : इन्फैंट्री नहीं आर्टिलरी है। आर्टिलरी में तो हाथों का कोई जरूरत है ही नहीं।"

"तू कुछ सोचता भी है या नहीं?" फाया उस पर बिफर पड़ी।

"यह तो कानून है, कानून! इवान दनीलिच से तो गैरकानूनी बात का अनुरोध करना ही बेकार है!"

छोटे भाई ने बड़े भाई के लहजे में पुष्टि की :

"बिल्कुल सच!"

अब त्रेत्याकोव समझ गया कि उन्हें क्यों यहाँ बुलाया गया है, रसोई में फाया साशा के साथ किस बारे में फुसफुसा रही थी। बड़ी अजीब है या फाया भी। अगर

उसे देखते ही न डर जाओ, तो ध्यान देने पर पता चलेगा कि वह औरत अच्छी है। कितना अच्छा होता अगर साशा के लिए जलावन की लकड़ी का अनुरोध कर सकता। चलो ठीक है, कम से कम यह जाम तो वह निःश्चिंत होकर पी सकता है।

इवान दनीलिच ने, जिससे जवाब सुनने को फाया और साशा आतुर थीं, अपने जिन्दा, लाल, मांसल कलाईवाले बायें हाथ से अपने काले दस्तानेवाले कृत्रिम हाथ को उठाकर ठीक से रखा। उसके दायें हाथ पर शायद ऐसी ही मजबूत, लाल कलाई होती। पर क्या पता, वह अब शायद इसी लिए जिन्दा है कि उसका एक हाथ लकड़ी का है। यह तो पक्का है कि छोटे भाई को इसी हाथ ने लाम पर जाने से बचाया है।

"हाँ, तो वसीली, कुछ बची है तेरे पास या सब खत्म हो गयी? चल एक-एक बूँद टपका दे, जरा कायदे से।"

वसीली दनीलिच ने आखिरी बूँद तक टपका दी, ठीक तीन जाम भर सके। बड़े भाई ने अपनी मोटी-मोटी उँगलियों से जाम उठाया और रौब से बोला :

"जिस आदमी ने वतन के लिए अपना खून बहाया, उसको हक है! और होगा!"

उसने सबसे पहले मुँह में वोद्का उड़ेल दी।

सड़क पर साशा ने अपराधपूर्ण लहजे में पूछा :

"तुम मुझसे नाराज तो नहीं हो?"

वह बड़ों की तरह मुस्कराया :

"फाया और तुम, दोनों ही अजीब हो। मैं समझ भी न पा रहा था कि हम क्यों जा रहे हैं। षड्यंत्रकारी..."

"पर क्यों हमेशा–सबसे अच्छे? मेरे पिता भी और बेचारे वोलोद्या को ही लो। उन्नीस साल की उम्र में मरने के अलावा वह और क्या कर पाया। मैं उसके बारे में बोल रही हूँ पर तुम बुरा न मानना। अब वह नहीं है। पर यह तो याद है कि वह कैसा था, भले ही उसे देख नहीं पाती।"

वे अस्पताल के पास पहुँच गये। फाटक पर टँगी बत्ती अपने चारों ओर बर्फ को रोशन कर रही थी।

"हम वहाँ क्यों जा रहे हैं?" त्रेत्याकोव ने पूछा।

"क्योंकि वहाँ तुम्हें खोजने लगेंगे।"

"पर मैं खुद मिल जाऊँगा। साशा, आखिर मोर्चे से आगे तो कहीं भेजेंगे नहीं! चलो तोबोल नदी के पास। ठण्ड तो नहीं लग रही?"

उन्हें आश्चर्य हुआ कि पहले यह विचार क्यों नहीं आया और खुश होकर वे पीछे मुड़कर जल्दी-जल्दी चल पड़े, सिर्फ उसकी नाल जड़ी एड़ियों के नीचे बर्फ की किच-किच सुनाई पड़ रही थी।

अध्याय 21

बाहर सर्द हवा से आकर वार्ड में बड़ी घुटन महसूस हुई। त्रेत्याकोव ने सावधानी से दरवाजा बन्द किया और पंजों के बल चलने लगा। जब आँखें अँधेरे की आदी हो गयीं तो कपड़े उतारते हुए उसने देखा कि बराबर के पलंग से तकिये पर लेटा अत्राकोवस्की मुस्करा रहा है। उसे खुद भी हँसी आ गयी जब उसने कल्पना कि कैसे वह चोरों की तरह पलंगों के बीच से गुजर रहा था।

"कैप्टन," उसने फुसफुसाकर कहा, "आस्तीन खींच दीजिये।"

अत्राकोवस्की पलंग पर उठकर बैठ गया, नंगे पैर फर्श पर सपाट टिक गये। हाल के दौरे के बाद वह बहुत कमजोर हो गया था, लगभग उठता ही नहीं था। जब उसे दौरा पड़ा था तो इस मंजिल पर डाक्टरों में हड़बड़ी मच गयी, पता नहीं क्यों उन्होंने चादरें तानकर उसे वार्ड से अलग कर दिया था। वह ठण्डा लेटा था, कभी-कभार धुँधली-सी आँखें खोलता।

"जोर नहीं लगाइये, सिर्फ पकड़े रहिये, पकड़ लीजिये," त्रेत्याकोव ने कहा। "मैं खुद निकाल लूँगा।"

बाँह निकालकर उसने दम लिया, पट्टियाँ ठीक कीं।

"शुक्रिया।"

"सिगरेट पियोगे?"

"तरस रहा हूँ। अपनी तो सब फूँक डालीं।"

दुर्बल हाथ से अत्राकोवस्की ने तकिये के नीचे टटोला और गाउन पहनने लगा :

"चलो, मैं भी तुम्हारे साथ सिगरेट पी लूँगा। नींद तो वैसे भी नहीं आ रही है।"

"सोते क्यों नहीं? दर्द हो रहा है?"

"तरह-तरह के विचार आते हैं।"

"विचार।" त्रेत्याकोव मुस्कराया। पता नहीं क्यों उसे हर वक्त मुस्कराने का दिल कर रहा था। "सोचने का काम युद्ध के बाद करेंगे। देखिये, वह स्तारीख सो रहा है, संत की तरह, उसे कोई सोच नहीं सता रही है।"

स्तारीख चित सो रहा था, उसका लटका हुआ हाथ फर्श को छू रहा था। और

वह बेफिक्र सो रहा था, भले ही उसके पास अँधेरे में फुसफुसाहट हो रही हो। उसने करवट बदली, स्प्रिंग चरमरा उठे—है तो कद का नाटा, पर मानो पत्थर जैसा भारी है—उसने नींद में होंठ चुपड़ें और जोर-जोर से खर्राटे लेने लगा। कम्बल के नीचे से पलस्तरवाला सफेद बूट बाहर झाँकने लगा।

"मैं भी मोर्चे पर ऐसे ही सोता था," गद्दे के नीचे वर्दी छिपाते हुए त्रेत्याकोव ने कहा। "जहाँ टेक मिली वहीं सो जाता, अब तो याद करके आश्चर्य होता है। एक बार हमारा बैटरी कमाण्डर जमीन में खुदी खोह में सो रहा था, एक गोला खोह को बींधता जमीन में धँस गया। दलदली जमीन थी, फील्ड चार्ज गोला था, गहरा धँस गया, विस्फोट की शक्ति मिट्टी पलटने लायक नहीं थी बस टाँड़ फूल गयी, पर उसकी नींद टूटी ही नहीं। सुबह उठकर देखता है कि उसकी टाँड़ में कूबड़ निकल आया है। मैं भी बस ऐसे ही सोता था। और यहाँ तो जुएँ भी नहीं हैं पर लगता है मानो कोई सारी रात काटता रहता है। मुझे कोई ढूँढ़ तो नहीं रहा था?"

"नहीं।"

वर्दी के ऊपर गद्दा बिछाकर त्रेत्याकोव ने गाउन पहन लिया।

"चलें?"

अँधेरे की आदी आँखें कारिडोर की रोशनी में चुँधिया गयीं। वे आपरेशन थियेटर के पास दूरवाली खिड़की की ओर चले गये। यहाँ से स्टेशन की रोशनी और पटरियों की बत्तियाँ दिखाई देती थी। यह खिड़की भी अन्य सभी खिड़कियों जैसी ही थी पर पता नहीं क्यों उसके पास ही खुलकर बातचीत होती थी। साशा के साथ भी वे यहीं बैठते थे।

त्रेत्याकोव ने इतनी देर से सिगरेट नहीं पी थी कि दो-तीन गहरे कश लेते ही सिर चकराने लगा, होंठ सुन्न हो गये। वह खिड़की से देखता हुआ अनायास ही मुस्करा रहा था। अत्राकोवस्की को उसके साथ अच्छा लग रहा था। उसके सामने ही इस छोकरे को लाया गया था, उसके देखते-देखते ही उसमें जान आयी थी।

ठण्ड से गाल नीले-नीले हैं—अस्पताल के पतले खाने से उन सबके खून में गर्मी नहीं है—पर यह मुस्करा रहा है, खुश है। पर जब भी मुस्कराता है तो नजर गम्भीर रहती है, आँखों से अनुभव झलकता है। उसे उस पर दया भी आती और ईर्ष्या भी होती।

सन् इकतालीस में जब वह खुद घायल अवस्था में बन्दी बना लिया गया और उसे अन्य बन्दियों के साथ पहरेदार हाँककर ले जा रहे थे, उसे टीले से वन्दियों की पूरी कतार दिखाई पड़ी। बारिश हो चुकी थी, सूरज ढल रहा था, उसकी रोशनी इतनी

कसकभरी थी कि मानो दिन नहीं, जीवन ढल रहा है। पूरी सड़क पर स्टेनगनों की छाया में युद्धबन्दियों की लम्बी लहराती पांक्ति भटक रही थी। वहाँ, जहाँ उन्हें हाँककर ले जाया जा रहा था, दलदल के बीचों-बीच लोग बैठे थे, सैंकड़ों हो सकता है हजारों लोग थे, उनके पैरों तले जमीन नहीं दिखाई देती थी : सिर्फ सिर ही सिर नजर आ रहे थे जैसे स्टर्जन मछली के अण्डे। इस जैसे सिर मुण्डे लड़के, उनमें से कितने ही अभी जीवित रह सकते थे। यह देखकर वह तब पहली बार समझा कि इस युद्ध में एक मानव के जीवन का जो खुद अपने आपमें अनमोल है, कोई मूल्य नहीं जब गिनती हजारों, लाखों, दसियों लाखों में हो रही हो। पर ये गौण जीवन, ये लोग, जो युद्ध में अन्तिम साँस तक लड़ने में समर्थ हैं, वहाँ इस बदहाली में थे कि झुण्ड बनाकर, एक-दूसरे को धकेलते हुए सड़े-गले छिलकों पर टूट पड़ते, और पहरेदार, भरपेट खाये जवान सिपाही, मन बहलाने के लिए क्योंकि इसकी इजाजत है, आलस के साथ इन लोगों पर कँटीले तार के पीछे से गोलियाँ चलाते—यही लोग, कोई विशेष या दूसरे नहीं, एकमात्र ऐसी शक्ति हैं जो सब कुछ कर दिखा सकती हैं। कितने समर्पण, आत्मत्याग के लिए कितनी तत्परता के साथ यह शक्ति हर बार उन घातक क्षणों में उठ खड़ी होती है जब-जब सर्वनाश का खतरा पैदा होता है।

वहाँ कैद में, उसके साथ एक हवाबाज था, ऐसा ही लड़का, उम्र शायद कुछ अधिक रही होगी। ठीक लक्ष्य के ऊपर, उस पुल के ऊपर जहाँ दुश्मन नदी पार कर रहा था, उसके विमान को क्षति पहुँचा दी गयी, वह अकेला ही वहाँ तक पहुँच पाया था। उसने, बेहिचक, अपने विमान को रेलवे पुल की ओर, शत-प्रतिशत मौत की ओर मोड़ दिया। विस्फोट ने उसे उछाल दिया पर वह जिन्दा बच गया। घाव में जहर फैलने से उसकी मौत हो गयी, पर अन्तिम क्षण तक वह कैद से भागने के सपने देखता। और वह भी, अगर भागने में सफल हो गया होता तो वह भी यह साबित करता फिरता कि उसने किसी के साथ गद्दारी नहीं की, देशद्रोह नहीं किया, जैसे अत्राकोवस्की को अनेकों बार सिद्ध करना पड़ा था, और उस पर भी अदृश्य, अमिट कलंक लग जाता।

कैद में अत्राकोवस्की किसी बात का बुरा नहीं मानता था : दुश्मन तो दुश्मन ही है, उसकी ओर से अपने लिए वह किसी भलाई की अपेक्षा नहीं करता था, वहाँ उसका दिल पत्थर की तरह था। पर जब अपने ही लोग विश्वास नहीं करते तो इससे अधिक दूभर तथा खेदजनक क्या बात हो सकती है?

दोहरे काँचवाली खिड़की के कारण रेलगाड़ी की सीटी दबी-दबी-सी सुनाई पड़ी। स्टेशन के सामने से मालगाड़ी तेजी से दौड़ती जा रही थी; दो इंजन सीटियाँ बजाते

उसे जोर लगाकर खींच रहे थे। वह खत्म ही नहीं हो रही थी, रोशनी में एक के बाद एक बन्द डिब्बे, खुले डिब्बे दिखाई पड़ते और विलीन हो जाते; भारी फौजी मालगाड़ी जा रही थी उधर, मोर्चे की ओर, और यहाँ, इतनी दूरी पर खिड़कियों के शीशे काँप रहे थे। जब रेलगाड़ी के डिब्बों का ताँता टूट गया और पटरियाँ वीरान हो गयीं, उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा, उनकी आँखों में एक ही भाव था। तब त्रेत्याकोव ने पहली बार इस पर ध्यान दिया कि अत्राकोवस्की बूढ़ा नहीं है, बस बहुत दुबला है, सिर्फ हड्डियाँ ही बची हैं।

एक बार जब वार्ड में गन्दे कपड़े बदले जा रहे थे, अत्राकोवस्की ने बनियान उतारा, उसकी मोटी धनुषाकार, नुकीली कशेरुकाओं से ढकी रीढ़ उघड़ गयी, तो त्रेत्याकोव की नजर संयोग से उसके इस हाथ पर पड़ी जिससे वह अब खिड़की पर टेक लगाये खड़ा था। वह सारा का सारा सूखा हुआ था, उस पर चमकीली झुर्रीदार चमड़ी से ढके गहरे गड्ढे पड़े थे, मानो वहाँ से बोटियाँ नोच ली गयी हों—ऐसे कमजोर हाथों से यह व्यक्ति जूझा और लड़ा, 'लाल पताका' पदक उसे मिला जिसे एक बार उसने ''जीवन में प्रवेश का पास' कहा था।

''ये दिन याद किया करेंगे,'' अचानक अत्राकोवस्की बोला, उसकी आँखों में एक विशेष चमक थी। ''जो जिन्दा बच जाएगा याद करेगा। क्यों, उधर जाने का मन करता है?''

''हाँ।'' त्रेत्याकोव को आश्चर्य हो रहा था कि कैप्टन वही कह रहा है जो वह खुद सोच रहा है। ''वहाँ जब बिल्कुल दूभर लगने लगता है, कभी-कभी विचार आता है कि घायल ही हो जाऊँ, कोई चोट ही लग जाए! पर यहाँ...''

अत्राकोवस्की उसकी ओर ऐसे देख रहा था जैसे बाप अपने बेटे को देखता है :

''वहाँ सिर नहीं उठा सकते पर आत्मा सीधी खड़ी हो जाती है।''

''इसी लिए तो मुझे निर्देश प्लाटून अच्छा लगता है,'' त्रेत्याकोव ने उसकी बात काटते हुए कहा, उसे भी कुछ कहने का मन हो रहा था। ''बैटरी से आगे निकल गये और तुम्हारे सिर पर कोई नहीं खड़ा होता। अग्रिम पाँत जितनी पास होती है, आदमी भी अपने को उतना ही स्वच्छंद अनुभव करता है।''

''महाविपदा से गुजरकर अन्तरआत्मा को महामुक्ति मिलती है।'' अत्राकोवस्की ने कहा। हममें से प्रत्येक पर आज जितना निर्भर करता है, इतना पहले कभी नहीं था। इसीलिए तो विजय हमारी होगी। यह नहीं भुलाया जाएगा। तारा बुझ जाता है पर उसका आकर्षण बना रहता है लोग भी इसी तरह होते हैं।''

वे काफी देर तक खिड़की के पास भाव-विह्वल खड़े सिगरेट पीते रहे, और मौन

रहकर भी वार्तालाप कर रहे थे। इस लड़के की दयालु आँखों में झाँककर, जो गहराई में कठोर थीं अत्राकोवस्की ने उसका पूरा भाग्य पढ़ लिया।

अध्याय 22

ओलेग सेलीवानोव ग्रेटकोट पहने ही वार्ड में झाँका, उसने इशारे से त्रेत्याकोव को कारिडर में बुलाया :

''चलो!''

''ले आया?''

''उतार रहे हैं।''

हवा के कारण ओलेग का चेहरा लाल था, मोटी त्वचा के रंध्रों में ठोड़ी पर उगे कड़े बाल सुनहरे-से चमक रहे थे।

''जल्दी चल। अस्पताल के अधिकारी से मैंने बात कर ली है, तुझे जाने देंगे।''

वे सड़क पर क़दम से कदम मिलाते जमी बर्फ पर एड़ियाँ ठोकते जा रहे थे। पाला सिर्फ छाया में था, वहाँ बर्फ, बाड़ों के तख्ते फाटकों के सामने रखी बैंचे—सब राख की तरह रात्रिकालीन तुषार से ढका था। पर धूप में स्लेजों की पटरियों से घिस-घिसकर चमचमाती चिकनी बर्फ की चमक से आँखें चौंध रही थीं। सर्दी का यह दिन वसन्त की महक लिये हुए था।

पहली बार त्रेत्याकोव शहर में दिन के समय जा रहा था : ओलेग सेलीवानोव, चश्मे और परतले से सज्जित, उसका संतरी भी था और रक्षक भी।

''ओलेग, कैसे किया यह काम तुमने?''

वह मुस्करा पड़ा :

''तू सोचता है कि अगर मैं यहाँ हूँ, तो सब जानता हूँ और सब कर सकता हूँ? पर मुझे कुछ करना नहीं आता। न ही मैं जानता हूँ। अच्छा हुआ, एक ऐसे आदमी से पाला पड़ गया, मानो मालूम था उसे, खुद प्रस्ताव रखा उसने।''

''शुक्रिया, ओलेग।''

''अगर जानना चाहते हो तो सच कहूँ, मुझे खुद को ही अच्छा लग रहा है।''

वे तेजी से चलते हुए बातें कर रहे थे, उनके मुँह से रुक-रुककर भाप निकल रही थी। पहले से कोई बात नहीं कहनी चाहिए। उस बार ओलेग को विदा करते समय त्रेत्याकोव को सचमुच ही यह आशा थी कि वह फिर नहीं आयेगा। क्या मालूम था कि उसे खुद ओलेग को ढूँढ़ना पड़े, जब प्रबन्ध अधिकारी उसे ढूँढ़कर लायेगा तो

वह खुश हो जाएगा।

तब उसने कहा था, 'ओलेग, मुझे एक ट्रक लकड़ी चाहिए, क्योंकि ऐसा अनुरोध वह और किससे करता? यह सुनकर ओलेग की आँखें चश्मे से भी गोल हो गयीं। वह बोला : 'वोलोद्या, मैं कहाँ से ला सकता हूँ? वह भी पूरी ट्रक।' 'मुझे इस बारे में कुछ मालूम नहीं।' पर दोनों जानते थे : करना ही है। उनकी पूरी कक्षा में से, सभी लड़कों में से सिर्फ अकेला ओलेग ही मोर्चे पर नहीं गया।

अपने लिए तो त्रेत्याकोव नहीं माँगता, पर भला वह यह सह सकता था कि साशा रेल के डिब्बों के नीचे घुसकर कोयला बीने। उसे इसमें कोई सन्देह नहीं था कि अगर ओलेग चाहेगा तो यह काम कर सकता है। वे लोग जो युद्ध के तीसरे वर्ष सैनिक-चिकित्सा आयोग मे जाँच के लिए बुलाये जाते, अपने जीवन को एक ट्रक जलावन की लकड़ी से अधिक महँगा समझते थे, और ओलेग–इस डाक्टरी आयोग का सचिव था। 'उसके पास मुहर है'–प्रबन्ध अधिकारी ने बताया था। त्रेत्याकोव के लिए मुहर कोई मायने नही रखती थी, पर जिस भाव से यहा कहा गया था, वह समझ गया कि उसके हाथों में लोगों का भाग्य है। उसको और भी अधिक विश्वास हो गया कि वह कर सकता है। और उसने कर ही दिया। और ऐसे गर्व के साथ आया। क्यों नहीं, किसी दूसरे के लिए कोई भला काम भी करके देखने लायक चीज है।

जब वे जल्दी चलने के कारण हाँफते हुए घर के पास पहुँचे तो ट्रक वहाँ से जा चुका था। कोठरी के सामने बर्फ पर दो-दो मीटर के लट्ठों का ढेर पड़ा था और साशा उन्हें उलट-पलटकर देख रही थी। बर्च के ठूँठ को बाँहों में सम्भाले वह सीधी खड़ी हुई और उनकी ओर खुशी से देखती हुई बोली :

"मैं तो सोच रही थी कि फाया के लिए लाये हैं। मैं फाया को बुलाने लगी पर उन्होंने कागज पढ़कर कहा कि मेरे लिए हैं।"

"तुम तो वापस कर देतीं!"

"वे चले गये?" ओलेग ने पूछा।

"पता नहीं क्यों वे बहुत जल्दी में थे। जल्दी-जल्दी उतार गये, पैसे तक नहीं लिये। कहने लगे : 'पैसों का क्या करेंगे? अगर स्पिरिट पीने को...' पर हमारे पास स्पिरिट कहाँ से आयी?" साशा दस्तानों पर से बुरादा झाड़ते हुए उनके पास आई। "वोलोद्या, मैं कुछ समझी नहीं।"

"लो इससे मिलो : ओलेग सेलीवानोव।" उसने ओलेग की पीठ पर हाथ रखकर उसे आगे किया। "महान और सर्वशक्तिमान आदमी है। मेरा सहपाठी रह चुका है। यह सब इसका काम है।"

साशा ने दस्ताने से अपना गर्म हाथ निकालकर उसकी ओर सहजता से बढ़ाया और अपनी काली पलकोंवाली सलेटी आँखों से उसे देखा। हाथ मिलाकर ओलेग शर्मा गया और अपना चश्मा साफ करने लगा।

"सबसे बड़ी बात तो यह है कि करीब सबकी सब बर्च की हैं!" साशा तारीफ कर रही थी। "देखो तो, बर्च की कितनी सारी है!"

"पर हम देखेंगे नहीं।" त्रेत्याकोव ने पेटी उतारकर कन्धे पर टाँग ली। वह देख रहा था कि लकड़ियों ने साशा को ओलेग से अधिक प्रभावित किया। "हम उन्हें चीरकर, फाड़कर कोठरी में रख देंगे और कह देंगे : हमें क्या मालूम, ऐसे ही था!"

"प्यास्तोलोव दम्पति की कोठरी में लकड़ी चीरने का शिकंजा मिल गया, रोयेंदार शाल लपेटकर फाया बाहर निकली और उन्हें दो हत्थियोंवाला आरा दे गयी। एक बार फिर निकली और उन्हें भारी कुल्हाड़ा दे गयी। मालकिन की तरह उसे अच्छा लग रहा था, वह खुशी-खुशी मदद कर रही थी, पड़ोसियों के लिए उसे खुशी हो रही थी।

शिकंजे के चारों ओर बर्फ पैरों से दबा दी और मोटा-सा तना उस पर टिका दिया।

"करें शुरू, साशा!"

जब कटकर पहला कुन्दा बर्फ पर गिरा तो ओलेग सेलीवानोव ने उसे फाड़ने की इच्छा व्यक्त की। जैसा था, ग्रेटकोट, पेटी और परतले में, वैसे ही उसने कुल्हाड़ा ऊपर उठाया और नाक पर से चश्मा गिर पड़ा। अब वह अपने फूहड़पन से शर्मिंदा होकर ठूँठ पर बैठा, चटके शीशेवाले चश्मे से देख रहा था, उस पर हाथ फेर रहा था। और वे दोनों चीर रहे थे।

आरी से सफेद बुरादा झड़ रहा था : साशा के नमदे के बूटों पर और उसके ग्रेटकोट के पल्ले व आगे बढ़े बूट पर। कुचली बर्फ पर उसकी पीली परत जमा हो गयी थी, पाले की ठण्ड में चिरी लकड़ी की ताजी, तीखी गन्ध फैल रही थी।

साशा का चेहरा लाल हो गया, उसने सिर से शाल खिसका दिया, दहकते गालों के पास उसके बाल घुँघराले थे। उसने पूछा :

"थक गयी हो?"

साशा ने सिर हिलाकर कहा :

"नहीं!"

पैना आरा आसानी से चल रहा था, दस्ताने पहनकर साशा उसे दोनों हाथों से अपनी ओर खींच रही थी, बाद में उसने दस्ताने भी उतार डाले : गर्मी लगने लगी

थी। उसके पीछे सलेटी तुषार से ढके आकाश में धुएँ के गुब्बारों की तरह बर्च वृक्ष खड़े थे; निःस्तब्धता में जकड़े।

दोपहर को ठण्ड कुछ कम हो गयी। घटा छा गयी और घनी बर्फ गिरनी लगी, उड़ती बर्फ में आँखें चौंधियाने लगीं, बर्च की चिरी लकड़ी की गन्ध और भी तीखी हो गयी, मानो यह ताजी बर्फ की सुगन्ध हो। साशा दस्तानों से बर्फ झाड़ रही थी, पर वह फिर उसे ढक देती।

स्टेशन पर से पहियों की कभी तेज, कभी समरस ठका-ठक सुनाई पड़ रही थी, धरती के कम्पन में उसकी प्रतिध्वनि हो रही थी। इंजन का धुआँ मंडराता हुआ आ रहा था। ऐसा लग रहा था कि यह बर्फ नहीं उड़ रही है बल्कि वे उसे चीरते हुए तेजी से तैर रहे हैं... शीघ्र ही उसका इंजन भी सीटी बजाएगा और पैरों के तले पहियों की ठका-ठक होगी। उसने साशा की ओर देखा : इस रूप में वह उसे याद करेगा।

रसोई की खिड़की के काले काँच के पीछे किसी का सफेद चेहरा कई बार दिखाई पड़ा। साशा उसकी नजर को भाँप गयी।

"यह मेरी माँ हैं! उसने चलते आरे की खर-खर के कारण जोर से चिल्लाते हुए कहा। "मैं माँ को कल घर ले आयी। वह इतनी अजीब-सी हो गयी हैं, सवाल पूछती रहती हैं तरह-तरह के। घर में ऐसे घूमती हैं मानो कुछ पहचानती ही नहीं।" साशा ने दम लिया। "पता चला कि उन्हें वहाँ निमोनिया हो गया था। पर किसी ने मुझे बताया तक नहीं।"

रसोई की खिड़की में सफेद हाथ हिलता नजर आया। साशा दौड़ती हुई घर के अन्दर चली गयी, और ठण्ड से ठिठुरे ओलेग ने उसका स्थान ले लिया। बाद में वे दोनों सिगरेट पीने के लिए बैठ गये। हिमपात जिस तरह एकदम शुरू हुआ था उसी तरह फौरन रुक गया। फिर से सूरज चमकने लगा। त्रेत्याकोव ने देखकर अनुमान लगाया कि उनमें पूरी लकड़ी चीरने के लिए शक्ति काफी होगी या नहीं, और ओलेग के घुटने पर काम करने के कारण गर्म हाथ को रख दिया, हथेली कुछ फूल-सी गयी थी :

"शुक्रिया, ओलेग।"

वह खुश हो गया :

"तू भी क्या है! मैं तो खुद देखता हूँ! मुझे मालूम ही नहीं था। सच कहूँ तो दुःख है कि तूने पहले क्यों नहीं कहा।"

साशा उनके लिए पीने को पानी लायी और फिर से रसोई में लौट गयी। वहाँ से रुईभरे कोट की लम्बी आस्तीनें हिलाती दौड़ती हुई निकली, कोट के पल्ले उसके

घुटनों तक लटके थे।

"फाया ने मुझे सजाया है ऐसे!" वह हँसते हुए, आस्तीनें मोड़ रही थी। वह रुइभरे कोट में भी सुन्दर लग रही थी, त्रेत्याकोव देख रहा था कि कैसे ओलेग उदासी भरी आँखों से उसे निहार रहा था।

साशा कोठरी भरने लगी और वे दोनों लकड़ी चीर रहे थे। बर्च वृक्षों के शिखरों के ऊपर वृत बनाता हुआ सूरज रसोई की खिड़की को आलोकित कर रहा था। वहाँ से कई बार उन्हें बुलाया गया, पर वह समझता था कि फिर से वे काम नहीं कर पायेंगे, आदत न होने के कारण उनमें इसकी शक्ति नहीं बचेगी। जब उन्होंने चीरने का काम पूरा कर लिया और शिकंजे को जाकर कोठरी में रख दिया, जब साशा ने बर्फ से छिपटियाँ, छाल व लकड़ी का अन्य कूड़ा बुहार दिया, तभी वे आरा और कुल्हाड़ा उठाकर एकसाथ घर की ओर चल पड़े।

टोपी से अपने कपड़ों से बुरादा और बर्फ झाड़ते हुए त्रेत्याकोव ने ड्योढ़ी से मुड़कर पीछे देखा : उसे इस घड़ी की प्रतीक्षा थी। कोठरी के सामनेवाली जगह खाली है। एक बार में वे यह काम निबटाने में सफल हो गये थे। धीरे-धीरे बूटों की ठक-ठक करते हुए उन्होंने बारी-बारी से रसोई में कदम रखे, कुल्हाड़े और आरे को दरवाजे के पास टिका दिया।

"ये मेहनतकश नहीं, फरिश्ते हैं।" फाया ने मन्द स्वर में सिर हिलाकर उनका स्वागत किया, वह पेट पर हाथ टिकाये आधी रसोई को घेरे खड़ी थी। चूल्हे के पास त्रेत्याकोव को साशा के शाल से पीठ को ढके एक दुबली-पतली वृद्धा दिखाई पड़ी। साशा उससे चिपट गई, अपनी जवानदेह से वह वृद्धा को आकर्षक बना रही थी :

"यह मेरी माँ हैं।"

फिर उसने ईर्ष्या के साथ त्रेत्याकोव की ओर देखा : उसके चेहरे पर क्या भाव हैं?

"माँ, यह वोलोद्या है।" वह माँ से बोली।

"वोलोद्या," माँ ने लज्जा से अपने मुँह को जिसमें आगे का दाँत नदारद था, ढकते हुए उसका नाम दोहराया। उसका हाथ सफेद, रक्तहीन था, देखने पर भी वह ठण्डा लगता था, नाखून भी सफेद थे।

"पता नहीं क्यों माँ के बाल काट दिये गये," साशा उसके बालों को सँवारती हुई कह रही थी। "माँ की चोटियाँ मेरी चोटियों से भी लम्बी थीं, पर वे छोटे बाल कटवाने के लिए राजी हो गयीं। अगर मालूम होता तो मैं हरगिज नहीं काटने देती।"

दो लम्बे-तगड़े व्यक्ति दहलीज पर खड़े थे : एक बिल्कुल रौबीला, चश्मा लगाये,

कन्धों पर अफसरोंवाले फीते, पेटियाँ कसी हुईं; दूसरा—सिपाहियों का ग्रेटकोट पहने बटन खुले हुए।

बेटी ने कहा : "माँ, यह वोलोद्या है।"

"कोट उतार दीजिये," माँ ने कहा, "खाना गर्म है। कोट उतारकर मेज़ पर बैठिये। साशा, दिखा दो कहाँ टाँगने हैं कोट।"

जब वे कमरे में ग्रेटकोट उतारकर टाँग रहे थे, साशा क्षण भर के लिए उसकी आँखों में झाँकी, उसने मुस्कराकर सिर हिलाया। यह देखकर कि उसकी माँ उसे पसन्द आयी साशा खुश हो गयी, विश्वास को पक्का करने के उद्देश्य से जल्दी-जल्दी बोली :

"वह बिल्कुल भी ऐसी नहीं थीं, वहाँ से वह इतनी खोयी-खोयी लौटी हैं, मैं उन्हें पहचान तक नहीं पाती हूँ।"

रसोई में जहाँ युद्ध के इन वर्षों में एक बार भी पुताई नहीं कि गयी थी और केरोसीन के चूल्हों की कालिख से ढकी छत काली थी, दीवारों और खिड़की के दासे का रंग धूमिल पड़ गया था। इस समय बर्फ में डूबते सूर्य का सारा गुलाबी प्रकाश मेज पर, पुराने पैबेन्द लगे मेजपोश पर सिमट आया था। गहरी प्लेटें भी गुलाबी आभा से चमक रही थीं।

फाया ने उनके साथ मेज पर बैठने से इन्कार कर दिया और अपने कमरे में चली गयी। माँ बारी-बारी से प्लेट उठाकर चूल्हे के पास ले जाती और बन्दगोभी के गर्मा-गर्म शोरबे से भरकर हरेक के सामने रखती जाती। बिना गोश्त और मक्खन के, सिर्फ गोभी की पाले में जमी पत्तियों और आलू से बना यह शोरबा इतना स्वादिष्ट और सुगंधित था कि पेटभरा आदमी कभी भी उसका स्वाद नहीं जान पायेगा। जब वे खाते-खाते बातचीत कर रहे थे, तब त्रेत्याकोव साशा की माँ की अपने पर टिकी नजरों को निरन्तर महसूस कर रहा था। वह उसकी ओर देख रही थी, प्लेटों में और शोरबा डालते समय भी उसकी ओर देख रही थी। ओलेग परेशान व उदास बैठा था, सूरज उसके चश्मे के फूटे शीशे में चमक रहा था। अपनी परेशानी के कारण अन्यमनस्कतावश वह अकेला डबल रोटी खा रहा था, उसने इस पर ध्यान दिया ही नहीं कि बाकी लोग रोटी नहीं ले रहे हैं : वह प्लेट से रोटी उठाता मेजपोश पर उसका चूरा बिखेरता, अनमना-सा खा जाता।

खिड़की से बर्च वृक्षों की फुनगियाँ दिखाई पड़ रही थीं। सिर्फ सबसे ऊपरवाली टहनियाँ लाल अँगारों की तरह चमक रही थीं, और स्वच्छ लाल प्रकाश में तने जामूनी रंग के थे। रेल गुजर रही थी, कोठरियों की छतों के पीछे रुक-रुककर छूटता धुआँ

आगे बढ़ रहा था, मेज पर पड़ता प्रकाश काँप रहा था।

सूर्यास्त हो रहा था, दिन का प्रकाश बुझ रहा था, दीवारों पर अँधेरा छाता जा रहा था, झुटपुटे में चेहरे को ठीक से पहचानना भी मुश्किल हो रहा था। पर वह अपने पर उसकी माँ की नजरों को महसूस किये जा रहा था।

जब वे ओलेग को विदा करके साशा के साथ सैनिक अस्पताल की ओर जा रहे थे, पूरा अँधेरा छा चुका था। साशा ने पूछा :

"तुम्हें सचमुच मेरी माँ पसन्द आयी?"

"तुम्हारी शक्ल उनसे मिलती-जुलती है।"

"तुम कल्पना भी नहीं कर सकते कि हमारे चेहरे कितने एक जैसे हैं! चोटियों में वह जवान लगती थीं, लोग हमें बहिनें समझते, विश्वास ही नहीं होता था कि वह मेरी माँ हैं। वह अस्पताल से ऐसी लौटी हैं, वृद्धों-सी, बिल्कुल बुढ़िया लगती हैं, मुझसे देखा नहीं जाता।"

चहारदीवारी के पास वे कुछ देर तक खड़े रहे। हवा उनके बूटों के पास बर्फ को उड़ाकर लहरा रही थी, उनके ग्रेटकोट के पल्ले फड़फड़ा रहे थे। अपनी पीठ से वह साशा को हवा से बचाते हुए उसके हाथों को अपने हाथों में लेकर गर्मा रहा था, मन ही मन वह उससे विदा ले रहा था।

उस शाम, उस खिड़की के दासे पर झुककर, जहाँ से वह प्रायः स्टेशन को, जाती गाड़ियों को देखता था, वह लिख रहा था, 'माँ, मुझे माफ कर दो। अब मैं जानता हूँ कि मैं तुम्हारा जीना कितना दूभर करता था। पर तब मैं यह नहीं समझता था, मैं अब समझ गया।'

एक बार माँ ने निराश होकर उससे कहा था : 'तू समझता नहीं कि उस औरत को जिसका पति जेल में है, अपने यहाँ रखने का क्या अर्थ है। वह भी दो बच्चों के साथ। तू समझता नहीं , कैसा आदमी होना चाहिए! यह करता है!...'

'मुझे रखने की कोई जरूरत नहीं है!' उसने तब माँ से कहा था। 'मुझे नहीं चाहिए कि कोई मुझे रखे!' और स्कूल छोड़कर तकनीकी विद्यालय में चला गया ताकि छात्रवृत्ति मिलने लगे। वह तो छात्रावास में रहना चाहता था पर वहाँ दूसरे शहरों के लोगों को ही कमरा मिलता था। अपनी सच्चाई में वह कितना निष्ठुर था, अब कोई बिल्कुल नयी बात समझ में आने लगी थी। उसने पहली बार सोचा, अगर पिताजी जिन्दा हैं और लौटकर आयेंगे, तब वह भी समझ जायेंगे और माफ कर देंगे। अनायास ही पत्र के अन्त में लिख डाला : 'ल्यालका का ध्यान रखना।'

अध्याय 23

वाष्पाच्छादित प्लेटफार्म पर औरतें रेल के आगे-पीछे दौड़ रही थीं, चीख-चीखकर बच्चों को आवाजें दे रही थीं। वे पायदानों पर चढ़ने लगतीं, कण्डक्टर उनके हाथों पर चोट करके चिल्लाते :

"कहाँ घुसी आ रही हो? यहाँ जगह नहीं है!"

"वोलोद्या, वोलोद्या! इस डिब्बे में!" साशा चिल्ला रही थी। उस पर भी स्टेशन की भगदड़ का रंग छा गया था।

महिला कण्डक्टर छाती से उसे धकेलने लगी :

"भर गया है, दिखाई नहीं देता?"

ऊपर से डिब्बे के द्वार से झाँकते लोग चिल्लाकर पूछ रहे थे :

"लेफ्टिनेण्ट, कितनी देर खड़ी होगी?"

उसने कन्धे पर लटके किट-बैग को झटककर उतारा और कण्डक्टर के सिर के ऊपर से डिब्बे के द्वार में डाल दिया, उसने देखा कि बैग को गिरने से पहले ही लपककर पकड़ लिया गया। आसपास खड़े लोग उन्हें धकेलते हुए दौड़ते जा रहे थे।

"मैं चिट्ठी लिखूँगा, साशा। जैसे ही फील्ड डाक-घर का नम्बर पता चलेगा, फौरन लिखूँगा।"

गाड़ी चल पड़ी और वह पायदान पर उछलकर चढ़ गया, कन्धे से कण्डक्टर को एक तरफ हटा दिया।

साशा साथ-साथ चलती, हाथ हिला रही थी। उसकी आँखों के सामने सब कुछ उछल रहा था, क्षण भर के लिए वह उसकी आँखों से ओझल हो गया।

"साशा!"

वह उस ओर देख रही थी पर वह दिखाई नहीं दे रहा था। अचानक वह प्लेटफार्म पर कूद गया। उसने साशा को बाँहों में भर, कसकर उसका चुम्बन लिया। स्टेशन की इमारत से भागकर निकले अफसर जो समूर की जैकेटें पहने थे दौड़ते-दौड़ते उनकी ओर मुड़कर देखते डिब्बों में चढ़ रहे थे।

और साशा के साथ वे भी दौड़ रहे थे वह उन्हें धकेल रही थी :

"वोलोद्या, जल्दी!.. गाड़ी छूट जायेगी!"

गाड़ी दौड़ने लगी थी। गाड़ी की ओर प्लेटफार्म पर दौड़ते लोग तेजी से पीछे छूटते जा रहे थे। नीचे दौड़ती साशा पिछड़ती जा रही थी, वह चिल्लाकर कुछ कह रही थी। रेल धनुष की तरह मुड़ने लगी, साशा दौड़कर एक तरफ हट गयी, अन्तिम बार हाथ

हिला पायी। और—वह नहीं रही, विलीन हो गयी। बस उसके नमकीन आँसू होंठों पर बिखर गये कण्डक्टर ने देखे बिना, पीठ से धकेलकर सबको अन्दर कर दिया और धुएँ से काले शीशेवाले लोहे के दरवाजे को धड़ाम से बन्द कर दिया। रेल की आवाज दबी-दबी आने लगी। किसी ने उसको किट-बैग पकड़ा दिया।

"लेफ्टिनेण्ट, अस्पताल से आ रहे हो?"

त्रेत्याकोव ने बोलनेवाले की ओर ध्यान से देखा।

"अस्पताल से आ रहा हूँ।"

"बहुत दिन रहे वहाँ?"

उसने फिर देखा, सहमा देनेवाली एक-एक नजर से। शब्द तो उसे सुनाई दे रहे थे, पर अर्थ समझने में देर हो रही थी : आँखों के सामने साशा का चेहरा घूम रहा था।

"बहुत दिन रहे। शरद के मौसम से।"

और जेब से तम्बाकू की थैली निकाली :

"है किसी के पास अखबार?"

उसे एक टुकड़ा फाड़ने के लिए दे दिया गया। त्रेत्याकोव ने अपने लिए तम्बाकू निकाल लिया और थैली आगे बढ़ा दी : डिब्बे में घूम-घूमकर वह सबको पिला रहा था। थैली जीत की चीज है, जर्मन, रबड़ की बनी थी : मुँह छोड़ते ही मुड़कर बन्द हो जाती। इस थैली में तम्बाकू सूखता नहीं था, सदा ताजा, गीला-गीला-सा बना रहता, सिगरेट के कश आसानी से खिंचते। स्तारीख ने विदाई के समय भेंट की थी। जब अस्पताल के फाटक के पास से त्रेत्याकोव ने मुड़कर देखा वे दोनों वार्ड की खिड़की में खड़े थे : स्तारीख और अत्राकोवस्की।

घूम-फिरकर थैली उसके पास लौट आयी, हरेक प्रशंसाभरी नजरों से उसकी परीक्षा करता। सब एक साथ धुआँ उड़ाने लगे, मानो तम्बाकू का स्वाद चख रहे हों। फर्श के नीचे पहियों की ठका-ठक हो रही थी, सब एक-साथ हिचकोले खा रहे थे। और साशा इस समय घर जा रही थी, त्रेत्याकोव मन की आँखों से देख रहा था कि कैसे लड़की अकेली घर जा रही है।

कण्डक्टर फिर आ गयी सबको धकेलकर। वह हट्टी-कट्टी, डील-डौलवाली औरत थी, देखती थी भौंह चढ़ाकर। जब वह नीचे झुकती, सिपाही उसकी पीठ पीछे एक दूसरे को आँख मारते। सिगरेट पीकर त्रेत्याकोव ने किट-बैग को कन्धे पर डाला, सबको सिर हिलाकर कम्पार्टमेण्ट का दरवाजा धकेलकर खोल दिया। वहाँ की हवा भारी-भारी थी। वह हिचकोले खाते फर्श के साथ डोलता जा रहा था। नीचे की बर्थ,

ऊपर की बर्थ, सामान रखने के रैक—सब जगह लोग लेटे, सटकर बैठे थे, सब जगहें युद्ध के शुरू से ही भर गयी थीं। और मैले-कुचैले फर्श पर निचली बर्थों के नीचे से बूट बाहर को निकले हुए थे, वह उन्हें लाँघकर चल रहा था। आखिरकार उसे खिड़की के ऊपर, जहाँ डिब्बे को गर्म रखनेवाली व्यवस्था का पाइप छत से सटकर जा रहा था, सामान रखने के संकरे रैक पर खाली जगह नजर आ गयी। उसने किट-बैग उछालकर वहाँ डाल दिया, खुद चढ़कर एक करवट लेट गया। यहाँ सिर्फ एक बगल पर लेटने लायक जगह थी। कभी एक हाथ से तो कभी दूसरे हाथ से छत को पकड़कर उसने ग्रेटकोट उतार डाला और अपने नीचे बिछा लिया। बस, हो गया। और रात को अपने को पेटी से पाइप के साथ बाँध लिया—बस, नहीं गिरेगा, सोया भी जा सकता है।

वह लेटे-लेटे सोच रहा था। तम्बाकू का सारा धुआँ नीचे उड़कर उसके पास आ रहा था। धुएँ में धूप कौंध रही थी; क्षण भर के लिए कौंधती और बुझ जाती : यह नीचे, खिड़की के बाहर सूरज को ढकता कुछ झिलमिला रहा था; गाड़ी तेज रफ्तार से दौड़ रही थी। इस झिलमिलाहट और घुटन में हिचकोलें खाते-खाते उसे नींद आ गयी।

जब आँख खुली तो उसके ऊपर छत रोशन थी। अस्ताचलगामी सूर्य का प्रकाश सुनहरी आभा बिखेर रहा था। हर तख्ता चमक रहा था। उसने कमीज का गीला कालर खोला, नींद में पसीने से भीगी गर्दन पोंछी। अचानक उसे स्पष्ट आभास हुआ कि मन में कुछ टूट गया : अब तो वह दूर पहुँच गया है। और कुछ बदला भी नहीं जा सकता।

वह सावधानी से नीचे उतरा और शाम की धूप में नीचे से चमकती बर्थों का सहारा लेता हुआ चल पड़ा। उनके नीचे बैठे लोग सिगरेट पी रहे थे, बातचीत कर रहे थे, कहीं खाना खा रहे थे, उसे चलते-चलते, क्षण भर के लिए लोगों की मुखमुद्राएँ दिखाई पड़तीं।

डिब्बे के प्रवेश-द्वार में लोहे की गड़गड़ाहट अधिक जोर से सुनाई दे रही थी। बर्फ से ढके मैदान के किनारे-किनारे क्षितिज में लाल सूरज रेल के साथ-साथ दौड़ रहा था। डिब्बे का द्वार दरवाजे के कालिख से ढके शीशे से आते काँपते प्रकाश स्तंभ से चमक रहा था। प्रकाश के इस स्तम्भ की छाया में लोहे के फर्श पर, पाले से ढके दरवाजे को घेरे हुई गठरियों के बीच एक औरत बैठी दो बच्चों को कुछ पिला रही थी, कभी वह एक के होंठों पर टीन का मग टिकाती कभी दूसरे के। उसने त्रेत्याकोव की ओर भय से देखा—कहीं भगा तो नहीं देगा यहाँ से?—यह देखकर कि वह तम्बाकू

का पाउच निकालकर असमंजस में पड़ा सोच रहा है कि यहाँ सिगरेट पीना उचित होगा या नहीं, वह खुशी-खुशी बोली :

"पीजिये! इनको तो आदत पड़ चुकी है।"

बच्चे एक ही उम्र के लग रहे थे, दोनों के गीले होंठ एक जैसे चमक रहे थे।

"इनको आदत पड़ चुकी है," दया का भाव जगाने के उद्देश्य से क्षीण स्वर में वृद्ध ने अपनी ओर ध्यान आकर्षित कराया। उसकी आवाज सुनने के बाद ही वह त्रेत्याकोव को दिखाई पड़ा : गठरियों के बीच कोई दाढ़ीवाला टोपी लगाये बैठा है। उसने उसे भी पीने के लिए तम्बाकू दी।

"बेकार ही इस पर तम्बाकू बर्बाद कर रहे हो!" सौम्य मुस्कान बिखेरते हुए उस औरत ने कहा। "इसकी तो आदत अब छूट चुकी है, उतनी तम्बाकू ही बेकार जायेगी।"

इस गाड़ी में कहीं भी, किसी भी स्टेशन पर असैनिक लोगों को नहीं बिठाया जा रहा था। पर हर स्टेशन पर वे डिब्बों में, दरवाजे के पास, दो डिब्बों के बीच के छज्जों पर आकर टिक जाते : उनको जाने की जरूरत थी, और वे किसी न किसी तरह चढ़कर यात्रा करते थे। यह औरत भी बच्चों के साथ, सामान के साथ, इस बुड्ढे के साथ जा रही थी, जो सबके लिए बोझ था। लगता था कि वह खुद यह समझता था। पहला कश खींचते ही उसे खाँसी आ गयी, चेहरा नीला पड़ गया, आँखों में आँसू छलक आये, वह काँपने लगा। हर बार कश खींचकर मुट्ठी में छिपी सिगरेट को देखता : कितनी बची है।

डिब्बे के दूसरे दरवाजे के पास वायुसेना का एक कैप्टन और एक युवा महिला आमने-सामने खड़े थे। कैप्टन हवा में हाथ हिला-हिलाकर किसी हवाई युद्ध के बारे में बता रहा था, महिला की नजरें उसके हाथ पर टिकी थीं और चेहरे पर उल्लास तथा विस्मय का भाव था। कैप्टन 'स्मार्ट' था, गुद्दी पर बाल छोटे कटे थे, गर्दन खड़े कालर से कसकर घिरी थी, और किसी सफेद धागे की तरह उसके अण्डर कालर के सफेद किनारे पर गिरती, पड़ती मोटी जूँ रेंग रही थी। पर त्रेत्याकोव नहीं सोच पा रहा था कि कैसे कैप्टन को बताये ताकि माहिला न देख सके।

लिपटी हुई झण्डी को हाथ में लिये कण्डक्टर कम्पार्टमेण्ट से निकली; अन्दर से सण्डास की बू उड़ती आयी। कोई स्टेशन आनेवाला था।

"इन्हें अन्दर बिठा ले तो अच्छा होता," त्रेत्याकोव ने बच्चों और बर्फ की परत से ढके दरवाजे की ओर आँख से इशारा करके धीरे से कहा। उनकी माँ ने सुनकर उसकी ओर हाथ झाड़कर कहा।

''नहीं, नहीं हम यहीं ठीक हैं! इससे अच्छा और क्या होगा!''

कण्डक्टर लिपटी, कालिख से काली पड़ी झण्डी को हथेली से सहला रही थी, सिलवटों को दूर कर रही थी। बाहर क्षण भर के लिए परछाई डालती कोई इमारत झिलमिलायी और फिर सूरज की लाल धूप ने डिब्बे के द्वार को बींध दिया। धूमिल शीशे के पास खड़े दो लोग साफ दिखाई पड़ रहे थे : युवा महिला दोनों हाथों से लोहे की छड़ों को पकड़े, प्रशंसात्मक दृष्टि से कैप्टन को निहार रही थी।

''अपने जीवन की परवाह नहीं?'' कण्डक्टर ने यह पूछते हुए त्रेत्याकोव की ओर घूरकर देखा। ''पर मुझे तुम जैसों पर दया आती है। जब से युद्ध छिड़ा है, तब से गाड़ियाँ भर-भरकर ले जाती हैं, सिर्फ उसी दिशा में।

अध्याय 24

अलाव सूँ-सूँ कर रहा था, उसके आस-पास पिघली धरती सूख रही थी, गीली टहनियों की भाप और धुएँ के कारण आँखों से पानी बह रहा था। मैले-कुचैले, दो दिन से न सोये बैटरीमैन हवा की ओर पीठ किये सिकुड़कर बैठे थे, गालों पर आँखों से बहते मटमैले पानी को पोंछ रहे थे, ठण्ड से ठिठुरी उँगलियों को आग पर गर्मा रहे थे। धुएँ में बैठे, सस्ते तम्बाकू का धुआँ उड़ाते अपनी आत्मा को सेंक रहे थे। बर्फ के गोले अलाव, पीठों और टोपियों पर तिरछे उड़-उड़कर गिर रहे थे।

बर्फ की पूरी बाल्टी ठसा-ठस भरकर कीतिन अलाव के पास ले गया। उसमें धुआँ अधिक, आग कम थी।

''फोमीचोव!'' उसने आवाज दी। ''थोड़ा-सा फिर छिड़को।''

घिसे, मोबिल आयल से काले, नमदे के बूट पहने पिघली बर्फ में छप-छप करता ट्रैक्टर चालक पास आया। ऊपर से नीचे तक वह बूटों की तरह ही तेल और कालिख से सना था। उसने टीन की पिचकी बाल्टी से अलाव में ठण्डा डीजल तेल छिड़क दिया। भभकर आग की गर्मी चेहरों को लगी। सोते लोगों की आँख खुल गयी, चकित आँखों से वे आग को देखने लगे, बर्फ आग में गिरने से पहले ही भाप बनकर हवा में लुप्त हो जाती।

कीतिन दस्ताने से चेहरे को ढककर आड़ा होकर, धीरे-धीरे अलाव के पास जा रहा था। बाल्टी में बचे तेल के साथ फमीचोव प्रतीक्षा कर रहा था वह तिरछी गिरती बर्फ में काला-कलूटा खड़ा था। ऐसा लग रहा था मानो वह कन्धे को आगे करके बर्फ की ओर तैर रहा हो। बर्फीले पानी से फूले उसके नमदे के बूटों को देखकर

त्रेत्याकोव ने सोचा : पैर सुखा लेने चाहिए। वह गोलों की पेटी पर बैठा था, खाँसी उसे झिंझोर रही थी; माथा, छाती, पेट की मांसपेशियाँ सब खाँसी के कारण दर्द कर रही थीं, आँख से बहते पानी की वजह से वह आग की ओर नहीं देख पा रहा था। मोर्चे पर कितनी बार हो चुका है--भीगा, ठण्ड में कुलफी की तरह जमा, पर जुकाम पास फटकता तक नहीं था। अस्पताल में, सफेद बिस्तर पर मानवीय सुविधाओं के साथ आराम से पड़े रहने के बाद अब पहले ही अभियान में ठण्ड की लपेट में आया।

उसने बड़ी मुश्किल से गीला बूट उतारा, गेटर को खोल दिया। नंगे पैर पर हवा ने चोट-सी की, रीढ़ में कँपकँपी फैल गयी, सारे शरीर में तपिश महसूस हुई। इस वक्त ग्रेटकोट को सिर तक ओढ़ना, आँखें बन्द करके ठिठुरी उँगलियों को साँस से गर्म करना, कितना अच्छा होता...

लम्बा ग्रेटकोट पहने बैटरी कमाण्डर अलाव के पास आया। बैटरी कमाण्डर कैप्टन गोरोदीलिन दूसरी रेजिमेण्ट से स्थानान्तरित होकर नया-नया आया था। कहा जाता था कि वह वहाँ रेजिमेण्ट अधिकारी के सहायक के पास था। शुरू-शुरू में लगता था कि वह अपने पुराने पद को भूल नहीं पाता, बैटरी उसको तुच्छ लगती, इसीलिए वह सबसे प्लाटून कमाण्डरों और जवानों से भी दूरी बनाये रखना था। सिर्फ सार्जेंट-मेजर से ही सलाह-मशविरा करता था, और सार्जेंट-मेजर प्लाटून कमाण्डरों के सामने नाक चढ़ाकर चलता। पर शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि बैटरी कमाण्डर में सिर्फ आत्मविश्वास की कमी है। वह चाहे कितना भी भौं चढ़ाकर सख्ती दिखाता, चाहे कितना भी चिल्लाता पर उसके आदेशों को, अगर वे काम के भी होते, तब भी अनिच्छा से पूरा किया जाता। यह तो सदा ही होता है—ढुलमुल आदेश को ढुलमुल तरीके से पूरा किया जाता है। सब पोवीसेन्को को याद करते : वह था असली बैटरी कमाण्डर! वह हुक्म भी नहीं देता, बस कह देता, पर लोग दौड़कर उसे पूरा कर देते।

परन्तु पोवीसेन्को रेजिमेण्ट में नहीं था, नववर्ष की पूर्ववेला में वह घायल हो गया था। त्रेत्याकोव के प्लाटून में भी कई लोग नये थे। उसके स्थान पर भी एक सेकेण्ड लेफ्टिनेण्ट को भेजा गया था, पर संचालन प्लाटूनों के कमाण्डर टिकते नहीं, इससे पहले कि जवानों को उसका नाम याद होता, वह मारा जाता कोई उसका नाम शिअहमेतोव बताता, कोई कमामबेतोव : 'बस इसी तरह का कोई नाम था...' उसी चबारोव ने उसे प्लाटून की कमान सौंपी, पर इस बार स्वागत ऐसे किया मानो आधा युद्ध उन्होंने साथ-साथ लड़ा हो, फौरन प्लाटून में खबर फैल गयी : 'हमारा लेफ्टिनेण्ट लौट आया है...'' अपने स्वागत से वह भावविह्वल हो गया, ऐसा लगा मानो अपने घर लौट आया हो।

नसरुल्लायेव उसी तरह अपने साँवले चेहरे पर पूरी बत्तीसी चमकाकर मुस्कराता। कीतिन उसी तरह स्वेच्छा से बावर्चिन का काम करता। सिर्फ ओबुखोव को, जो प्लाटून में सबसे छोटा था, पहचानना कठिन था। वह भी इस अवधि में अस्पताल हो आया था, पर वहाँ उसे गोली या गोले के टुकड़े ने नहीं भिजवाया था : एक गाँव में आबुखोव को वह बीमारी लग गयी थी जो जर्मन छोड़कर गये थे। अगर सन् बयालीस का साल होता तो अपने इस कारनामे के लिए.... उसे खून की कीमत चुकानी पड़ती, किसी ऐसे टीले पर कब्जा करना पड़ता, जिसे पूरी रेजिमेण्ट तक न जीत पाती। पर यह उसकी खुश किस्मती है कि अब जमाना बदल गया है।' 'हमारा ओबुखोव तो पुरस्कृत है,' उसके बारे में प्लाटून में कहा जाता, 'पदक के लिए उसका नाम भेजने की भी जरूरत नहीं है।' और वह पूरा मर्द बन गया था, आवाज भी भारी हो गयी थी उसकी।

अलाव के पास जाकर बैटरी कमाण्डर ने सुलगती टहनी उठायी और उससे सिगरेट जलाने लगा। वह ऊँचे कद का था, उसने लम्बा ग्रेटकोट पहन रखा था, बगल में नक्शों का बस्ता लटका था। सब महसूस कर रहे थे कि वह क्या कहनेवाला है। कई दिनों से हमला जारी था, आपूर्ति तंत्र पीछे रह गया था : राशन, ईंधन, गोले सब पीछे छूट गये थे। सभी सड़कों पर गीली बर्फ और कीचड़ में मोटरें फँस गयी थीं, उन्हें निकालने के लिए जितना जोर लगाया जाता वे उतनी ही और धँस जाती। उनकी आर्टिलरी बटालियन की तीन में से दो बैटरियाँ बची थीं। सबसे पहले छठी बैटरी में खराबी आ गयी। उसका ट्रैक्टर ईंधन, गोले लेकर दो बैटरियों के साथ आगे चल पड़ा। बाद में चौथी बैटरी भी पीछे रह गयी—ईंधन और गोलों के बिना। उनकी, पाँचवी को भी एक तोप छोड़नी पड़ती अगर रास्ते में पुराने मोटर-ट्रैक्टर डिपो में जंग लगा 'च त ज-60' ट्रैक्टर न मिला होता, ठीक वैसा ही जैसा उनका अपना था। जर्मन कब्जे के इन वर्षों के दौरान कबाड़ के बीच वह ऐसे ही खड़ा रहा। ट्रैक्टर चालकों ने दो को जोड़कर एक बना दिया, और वह तोप को खींचता चलने लगा मानो शुरू से ही उनके साथ रहा हो। दो तोपें, दो ट्रैक्टर सत्रह गोले—यही उनकी पूरी बटालियन थी जो तेजी से अग्रिम मोर्चे के पीछे-पीछे चल रही थी।

सड़क पर तिरछी पड़ती बर्फ में अपनी पूरी किट और मार्टर-चालकों के लिए मार्टर के गोले लादे इन्फैंट्री के जवानों की कतार चली आ रही थी। उनके परिवहन का साधन—सूखे, थके माँदे, गेटरों और जूतों से लैस, कीचड़ को कुचलने के आदी पड़ चुके पैर—इस मौसम में सबसे विश्वसनीय थे : आदमी ट्रैक्टर तो हैं नहीं, वह तो ईंधन के बिना भी चल सकता है। इन्फैंट्री के जवान एक दूसरे से कुछ दूरी पर

चल रहे थे, वे मुड़-मुड़कर आग की ओर देखते जा रहे थे। हवा उनको पीछे से धकेल रही थी : वहाँ, जिस ओर वे जा रहे थे, कुछ भी नहीं दिखाई पड़ रहा था, क्षितिज पर कोहरा-सा छाया हुआ था। सिरों के ऊपर कम ऊँचाई पर उड़ता कौआ हवा का मुकाबला करने का प्रयास कर रहा था, वह झटकों के साथ ऐसे उछल रहा था मानो कूदकर हवा पर सवार हो जाना चाहता हो। हवा ने उसे तिरछा करके एक ओर उड़ा दिया।

बैटरी कमाण्डर ने सिगरेट सुलगा ली, धुआँ छोड़ती टहनी को बाल्टी के नीचे जलती आग में फेंक दिया। बाल्टी में देखने में भारी लगनेवाले काले पानी की सतह पर बर्फ का आखिरी लौंदा तैर रहा था।

"खाने की तैयारी कर रहे हो?" आँख मिचमिचाकर उसने कहीं बायीं ओर से आती गड़गड़ाहट को सुना : "खाना नसीब नहीं होगा। फायर पोजीशन लेने का आदेश आया है। प्लाटून कमाण्डर मेरे पास आया!"

कीतिन अभी भी बाल्टी में देख रहा था। फिर कुढ़कर उसने पानी को अलाव में उण्डेल दिया। सूँ-सूँ करते काले कोयलों से एकदम भाप उड़ी। और बैटरी कमाण्डर ऐसा झुलसा कि चेहरा लाल हो गया, उस पर कटी-छँटी सफेद मूँछें बिल्कुल साफ दिखाई पड़ने लगीं।

"बातचीत बन्द!"

पर कोई बोल ही नहीं रहा था। वे उस अन्तिम सीमा तक थककर निढाल हो चुके थे, अपने बारे में सोचने तक की शक्ति नहीं बची-करीब दो दिन से वे न सोये थे और न ही उन्हें कुछ खाने को मिला था। वे इस समय बैटरी कमाण्डर से नाराज थे क्योंकि उसने खाना नहीं बनाने दिया, एक दूसरे से चिढ़ रहे थे, असल में चिढ़ना तो युद्ध से चाहिए था।

त्रेत्याकोव गीले बूट पहन रहा था जब फायर प्लाटून का कमाण्डर लावरेंत्येव जल्दी-जल्दी पास से गुजरा। वह सभी कमाण्डरों के बीच उम्र में सबसे बड़ा था, वह भी हाल ही में बैटरी में स्थानान्तरित होकर आया था। कद ऊँचा, पेटी पेट पर आखिरी छेद तक कसी हुई, वह बैटरी कमाण्डर के पास जल्दी-जल्दी जा रहा था, उसका चेहरा डरा-डरा-सा था। वह पिघलती बर्फ पर फिसल-फिसलकर चल रहा था, इस वजह से ऐसा लग रहा था मानो वह दौड़ते-दौड़ते बैठ रहा हो। उसके ग्रेटकोट के पल्ले इन्फैंट्री के जवान की तरह आगे से पेटी में खोंसे हुए थे। 'लुगाई की तरह है,' त्रेत्याकोव ने सोचा और उठकर खड़ा हो गया। वह गोरोदीलिन के पास जाकर धीरे से बोला ताकि जवान न सुन लें :

"कमाण्डर, लोगों को खाना तो बनाने देना चाहिए।"

और खाँस पड़ा।

"क्या आप बीमार हैं?" उसने घिन के साथ नाक-भौं सिकोड़ते हुए पूछा। अपने अधीन अधिकारी को चुप कराने की सबसे आजमाई गयी तरकीब है—उसकी कमियों पर उँगली उठाकर दिखाना।

"मैं बीमार नहीं हूँ, ठीक हूँ। लोगों को इतने समय गरम खाना नहीं मिला है।"

वह खड़ा था, हुक्म बजाने की तत्परता के साथ तनकर, पर बोल दृढ़ता से रहा था। वह देख रहा था कि गोरोदीलिन अपना आदेश नहीं बदलनेवाला है। कमाण्डर में आत्मविश्वास ही जितनी कमी होती है, उतना ही वह अड़ियल होता है, यह तो सदा का नियम है। वह किसी की सलाह नहीं सुनेगा और किसी भी हालत में अपना आदेश नहीं बदलेगा, उसे अपनी प्रतिष्ठा खो देने का जो डर होता है।

"नक्शा निकालिये," गोरोदीलिन ने ऐसे कहा मानो याद दिलाते-दिलाते थक गया हो। बात साफ थी; त्रेत्याकोव ने नक्शा निकाल लिया।

"देखो यहाँ—हम हैं। और यहाँ दुश्मन। अनुमान हैं! इन्फैंट्री में जाओ, पता करो कि आगे कौनसी रायफल्स रेजिमेण्ट है, और लाइन बिछा दो। काम समझ गये?"

"हाँ, एकदम समझ गया।"

"जाओ काम पूरा करो। अपने साथ चार गुप्तचरों को लेते जाओ!"

त्रेत्याकोव ने चुपचाप सैल्यूट मारी। प्लाटूनों की ओर जाते समय लावरेंत्येव उसके साथ-साथ चलने लगा। वह तो कम से कम अटपटा महसूस कर रहा था।

"क्यों नहीं, खाना तो बनाया जा सकता था, इसमें क्या हो जाता;" बैटरी कमाण्डर के बदले शर्माते हुए उसने कहा। त्रेत्याकोव ने कोई जवाब नहीं दिया, बस मन ही मन सोचा : 'अगर ऐसा ही था तो तू क्यों चुप रहा।' पर लावरेंत्येव को सिखानेवाला वह कौन होता है। युद्ध के शुरू से यह टैंकभेदी तोपखाने में रहा, उन बदकिस्मत 'पैंतालिस एम. एम.' की तोपों से लड़ता रहा, घायल होने के बाद उनके भारी तोपखाने में आया। उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं, यहाँ वह खुद को ऐसे महसूस करता है मानो पिछवाड़े में हो। वह भला बैटरी कमाण्डर से जिरह क्यों करेगा।

उन्होंने संकरी घाटी को पार किया। हवाओं ने उसमें बर्फ भर दी थी, वह कुछ-कुछ पिघली हुई थी, कभी वह पैरों के नीचे स्प्रिंग की तरह दबती, कभी धँस जाती और वे पिंडलियों को हिला-हिलाकर पैर बाहर निकालते। सामने ऊँचाई पर मैदान था, उसके आगे क्षितिज पर मानो कालिख से पुती मनहूस दीवार की तरह आकाश था।

घाटी के कगार पर ताजी बर्फ सफेद चमचमा रही थी। कहीं बायीं ओर से दूरी पर गोलाबारी की दबी-दबी आवाज आ रही थी। वायुसेना के विमान नहीं उड़ रहे थे; ऐसे मौसम में हवाबाज हवाईअड्डों में बैठे बोरियत से बचने के लिए डोमीनो खेलते हैं। शायद उनके हवाई अड्डों पर कीचड़ ही कीचड़ है : वहाँ से न तो उड़ना सम्भव है, न उतरना।

कगार पर, जहाँ-तहाँ उगी झाड़ियों के बीच जायजा लेने के लिए वे लेट गये। सिगरेटें जला लीं। त्रेत्याकोव ने जुकाम से सूजी अपनी आँखों से देखने की लाख कोशिश की पर इन्फैंट्री पास में कहीं भी नहीं दिखाई पड़ी : न खन्दकें थीं, न खोहें, कोई चिन्ह नहीं था। सिर्फ बर्फ से ढका मैदान और उड़ती भाप में ओझल क्षितिज ही नजर आ रहा था।

जब वे बर्फ में, पसीने से तर चल रहे थे, खाँसी बन्द हो गयी थी। अब वह फिर गले को झिंझोड़ रही थी।

"थोड़ा बर्फ खा लीजिये," ओबुखोव ने सलाह दी।

"तुम भी ऐसी सलाह दोगे!"

त्रेत्याकोव रुक-रुककर गर्म धुआँ निगल रहा था। पिघलती बर्फ ऐसे सरसर करती टहनियों से झड़ रही थी। चेहरा बिसरित प्रकाश और ऊपर कहीं भटकते अदृश्य सूर्य की उष्मा को महसूस कर रहा था।

"देख!" उसने ओबुखोव को दिखाया।

झाड़ी के ऊपर, गीली, धुँधली चमकती नंगी टहनियों के ऊपर कीटों का झुण्ड उड़ रहा था।

"जान आ गयी, गर्मी महसूस कर रहे हैं," ओबुखोव ने कहा। "बर्फ से भी वसन्त की गन्ध आ रही है।"

"मुझे कोई गन्ध महसूस नहीं हो रही, तेज जुकाम से नाक बन्द है।"

वे दबी आवाज में बोल रहे थे, हर क्षण उनके कान चौकस थे। ओबुखोव ने जड़ के पास बर्फ खोदकर पिछले साल की हरी, जमी घास उखाड़ी और हरे प्याज की तरह पूरे गुच्छे को मुँह में डालकर आँख मिचमिचाता हुआ चबाने लगा : ताजी सब्जी खाने का मन कर रहा था। त्रेत्याकोव ने अपने सूजे गले में बर्फानी ठण्ड महसूस की बर्फ पर घुटनों के बल खड़े होने के कारण वे गीले थे, उसके पैरों और पूरे शरीर में कँपकँपी बढ़ती जा रही थी।

"कामरेड लेफ्टिनेण्ट, कहीं जर्मनों से तो भिडन्त नहीं हो जाएगी?" आबुखोव ने गम्भीर स्वर में पूछा। "लगता है कि आगे इन्फैंट्री नहीं है।"

"लगता तो यही है।" त्रेत्याकोव पहले खड़ा हो गया।

वे कोई तीसेक कदम पीछे गये होंगे कि कुछ काला-काला-सा नजर आया। कन्धे से पेटी उतारकर त्रेत्याकोव ने स्टेनगन थाम ली, हाथ हिलाकर उसने ओबुखोव को पीछे हटकर चलने का इशारा किया। उसने ठीक ही किया कि चार गुप्तचरों को नहीं बल्कि एक को ही साथ लाया। पीछे आकाश मैदान की अपेक्षा अधिक सफेद था, अपने काले ग्रेटकोटों में वे बर्फ पर साफ-साफ दिखाई पड़ते; जर्मन पास आने देते और चारों को धराशायी कर देते।

तैरकर छँटते धुधलके में पिछले साल के पुआल का काला ढेर नज़र आया, उसके ऊपर पिघलती बर्फ का आवरण बचा था। अगर यहाँ इस ढेर में जर्मनों ने मशीनगन लगा रखी हो तो... पर चारों ओर कोई चिन्ह नहीं था। वे पास चले गये।

"कामरेड लेफ्टिनेण्ट, आपकी अनुपस्थिति में यहाँ, हमारी बटालियन में एक घटना हुई थी।" ओबुखोव ने खुशी-खुशी पुआल के ढेर पर पीठ टिका दी।

"बस हो गयी पीठ गर्म, चलो!"

"आपको लेकर गये ही थे, तब की बात है..."

"लड़ाई के बाद बताना!"

फिर वे मैदान में चल पड़े, वे एक दूसरे को ठीक से देख भी नहीं पा रहे थे। जब नम धुँधलके में किसी गाँव में लगे पत्र-विहीन गीले पोपनलर वृक्ष नजर आने लगे, उन पर गोलियाँ चलीं। वहाँ से चमक के साथ उनकी ओर गोलियाँ उड़कर आने लगीं : जर्मन दिन में भी चमकदार पथप्रदर्शक गोलियाँ चला रहे थे। वे बर्फ में लेट चुके थे पर तब भी मशीनगन खामोश नहीं हो रही थी, उनकी ओर गोलियाँ बरसाये जा रही थी। वे रेंगकर एक दूसरे से दूर चले गये। त्रेत्याकोव ने टोहने के लिए अपनी ओर एक बार फिर गोलीबारी करवाने के लिए कई राउण्ड चलाये। अब दो ओर से चमक आने लगी। बाद में मोटर गरजने लगा। उन्होंने रुककर प्रतीक्षा की। फिर उछलकर पुआल के ढेर की ओर दौड़ने लगे। पीछे से मशीनगनर कोहरे में चमकती गोलियों की बौछार कर रहा था।

"मैं तो कह रहा था कि आगे इन्फैंट्री नहीं है।" खतरे के नैकट्य के आभास से खुश होकर ओबुखोव डींग मार रहा था।

त्रेत्याकोव जर्मन स्टेनगन की चपटी मैगजीन को गोलियों से भर रहा था।

"जर्मन भी बुद्धू हैं, हमें पास तो अने देते।"

उसकी छाती हल्की हो गयी, सारा जुकाम उड़न-छू हो गया।

"देखते रहियेगा, वहाँ से जर्मन चोट करेंगे," ओबुखोव ने मानो खुश होते हुए

वायदा-सा किया।

"अगर कुछ है उनके पास इसके लिए।"

"उनके पास तो है!"

वापस वे हल्के होकर चल रहे थे। और रास्ता भी छोटा लगा।

फायर पोजीशनों पर कीचड़ को हटाकर तोपों के लिए खन्दक खोदी जा रही थी। बैटरी कमाण्डर गोरोदीलिन ने अविश्वास के साथ उसकी रिपोर्ट सुनी, वह बार-बार यही पूछे जा रहा था : 'पर हमारी, हमारी इन्फैंट्री कहाँ है?; उसने फिर से पूछा कि वे किस रास्ते से गये, कहाँ से उन पर गोलीबारी की गयी : वह किसी तरह यह समझ नहीं पा रहा था कि उनकी बैटरी, उनकी भारी तोप बिना किसी रक्षावरण के, प्रायः बिना गोला-बारूद के यहाँ खड़ी है, और आगे—जर्मन हैं।

"कमाण्डर, ऐसा करते हैं : हम बायीं ओर जाकर पता लगाते हैं कि वहाँ कौन है?" त्रेत्याकोव ने प्रस्ताव रखा। पर पता नहीं क्यों उसे गुस्सा आ गया :

"आप यहाँ सलाह देने की बजाय...बड़े आये हैं सलाह देने वाले!"

भीगा-भीगा दिन ढलने लगा था। वहीं कगार पर, जहाँ झाड़ियों में उसने ओबुखोव के साथ सिगरेट पी थी, शाम के धुँधलके में उन्होंने निरीक्षण चौकी बना ली, यहां तक टेलीफोन का तार खींच लाये थे। गुप्तचर बारी-बारी सफर मैनाओं वाले छोटे से बेलचे की मदद से जमीन खोद रहे थे, बारी-बारी से चौकसी कर रहे थे। अँधेरा छाने लगा। कोहरा घना होने लगा, उसने मैदान को ढक दिया, शीघ्र ही पूर्ण अंधकारी छा गया, कुछ भी नही दिखाई पड़ रहा था।

गहराई में जमी जमीन बेलचे से ढंग से नहीं खुद रही थी। आगे से उन्होंने मिट्टी की छोटी-सी मुंडेर बना दी, टहनियाँ तोड़ लीं और पुआल जमा कर लिया। वे चौकन्ना बैठे हुए कान लगाकर सुन रीहे थे। त्रेत्याकोव महसूस कर रहा था कि उसका शरीर तपता जा रहा है। पीठ बहुत ठिठुर रही थी, कभी-कभी कवह कँपकँपी पर काबू न कर पाता।

बिलकुल अँधेरा छा चुका था जब उन्हें कदमों की आहट, और कई लोगों के हाँफने की आवास सुनाई पड़ी : फायर पोजीशन की ओर से कोई उनकी ओर आ रहा था। वे चुपचाप प्रतीक्षा कर रहे थे। हाँफने की आवाज पास आती जा रही थी। जर्मनों की तरफ कुछ धुँधली-सी रोशनी हुई : वहाँ, ऊपर उठने से पहले ही कोहरे में घुटकर भभूका बुझ रहा था। इस झिलमिलाते प्रकाश में उन्हें चार आदमी दिखाई पड़े। वे टेलीफोने के तार के सहारे-सहारे आ रहे थे। सबसे लम्बा गोरोदीलिन, उसके साथ कोई नाटा-सा आदमी। जब वे पास आये तो यह बटालियन कमाण्डर निकला।

दो गुप्तचर उसका साथ दे रहे थे।

पता चला कि चौथी बैटरी भी आ गयी है, फायर पोजीशन पर तैनात हो रही है। बटालियन कमाण्डर ने पूछ कि क्या नयी खबर है। यह पूछते हुए वह चेहरों को घूर-घूरकर देख रहा था। फिर कुछ सोचने लगबा।

"हाँ तो, बैटरी कामाण्डर," उसने गोरोदीलिन से कहा। "सवेरे तक हम तुम्हारे साथ यही रहेंगे।"

और त्रेत्याकोव को फायर पोजीशनों पर भेजते हुए ताकि वह गाँव में जिस्म को थोड़ा गर्मा ले, लेट ले, उसने कहा :

"सुबह तुम आ जाना अपनी जगह पर। यही ठीक होगा।"

और उसने स्वीकृति में खुद ही अपना सिर हिला दिया।

अध्याय 25

यह रात बड़ी लम्बी थी। रात भर में वह आधी बाल्टी पानी पी गया, पर शरीर का तपना कम नहीं हो रहा था, सूखे होंठों के फटने से खून रिसने लगा था। उसे लग रहा था कि वह बिल्कुल भी नहीं सो रहा है, चेतना में सन्निपात और यथार्थ दोनों मिलकर एक हो रहे थे। आँख खोलता तो देखता : दहकते अँगारों के लाल प्रकाश में अलाव के पास बैठा लावरेंत्येव घुटने पर फील्ड-बैग रखकर कुछ लिख रहा है, होंठ बुदबुदा रहा है। फिर खोलता आँख—छत की कड़ियों में लाल धुँधलका, कोई दूसरा अलाव के पास बैठा, पीछे आधी कोठरी को घेरे काली छाया हिलडुल रही है : यह सब उसे दिखाई दे रहा है या सपना है? और रात बीतने का नाम ही नहीं ले रही है।

कई बार वह बाहर निकला। कोहरा, जिसमें साँस लेना दूभर था, दरवाजे के पास से ही घुमड़ रहा था; ऐसा लगता था कि कोठरी के अंधकार से वह दहलीज पर नहीं बल्कि सफेद बादल में कदम रखता; पैर अविश्वास के साथ आगे रखता, जमीन को टटोलता।

सुबह जब आँख खुली, वह पसीने से तर और कमजोर था। पर महसूस कर रहा था कि स्वस्थ है। आँखों के सामने सब कुछ बदल गया, खाली कोठरी ऊँची और बड़ी लगने लगी। दीवार के पास कमर तक कपड़े उतारकर लावरेंत्येव हाथ-मुँह धो रहा था, उसका रोम-रोम काँप रहा था। उसके हृष्ट-पुष्ट शरीर, बालों से ढके मोढ़ों से भाप उड़ रही थी, वह घुरघुर करता, आनंदित हो बगलों को थपका रहा था, छाती

और पेट पर से पानी बह रहा था।

त्रेत्याकोव कच्चे फर्श पर बैठ गया। वह महसूस कर रहा था कि रात भर में चेहरा अकड़ गया है और आँखें धँस गयी हैं। अलाव की राख के ढेर को देखकर उसने सोचा : शायद इसमें अभी आग है, चाय गर्म कर लेनी चाहिए। और देखा कि किस तरह हवा के आकस्मिक झोंके से राख उड़ने लगी। झटके के साथ खुली कोठरी के द्वार पर एक सैनिक खड़ा था। वह अपना मुँह भी न खोल पाया था, पर त्रेत्याकोव भूसे में टटोलकर अपना कनटोप ढूँढ़ने लगा।

"टैंक!"

दरवाजे से बाहर दौड़ते सैनिक नजर आये। पास से दौड़ते हुए त्रेत्याकोव ने देखा कि लावरेंत्येव गीले शरीर पर ही फौजी कमीज पहन रहा था : आधा तो उसमें घुस गया, पर आगे कन्धे नहीं घुस रहे थे। उसकी आँखें बन्द थीं, वह हाथ हिला रहा था।

बाहर फौलादी गड़गड़ाहट से कान बहरे होने लगे। आगे-आगे दौड़ता सैनिक पिघलती बर्फ पर फिसल गया, वह डरा-डरा उठने लगा। अचानक वह झुककर एक ओर भागा।

"किधर?" त्रेत्याकोव क्रोध से चिल्लाया : "वापस!"

चिल्लाहट से और भी नीचे झुककर वह जवान तोपों की खन्दकों की ओर दौड़ पड़ा। वहाँ तोपची दौड़-धूप कर रहे थे, भारी तोपों को गोलाबारी के लिए तैयार कर रहे थे, उनके पैर पिघली बर्फ और कीचड़ को रौंद रहे थे।

"वो! वो रहे!" ढाल के पीछे से दस्ताना उठाकर पाराव्यान दिखा रहा था, और जब वह पीछे मुड़ा तो उसका सुन्दर चेहरा पीला पड़ गया था।

कोहरा जमीन पर थोड़ा-सा उठा, उड़ती भाप के कारण अपारदर्शी हवा में तोपों से आगे करीब डेढ़ सौ मीटर की दूरी तक ही दिखाई पड़ रहा था।

और वहाँ, परछाइयों की तरह खड़े गीले पेड़ सड़क का संकेत दे रहे थे : टीले से नीचे उतरकर वह फिर लहराती-सी टीले पर चढ़ती। इससे आगे सब मिलकर एक हो गया : रात को गिरी सलेटी बर्फ उसको पिघलाकर झाँकती जमीन, और शाम के झुटपुटे की तरह धूमिल क्षितिज भी। त्रेत्याकोव ने उधर देखा, उसका दिल हौल गया, पैर एकदम कमजोर पड़ गये। पेड़ों के पीछे से प्रकट होती हुई बख्तरबन्द गाड़ियाँ सड़क पर चली आ रही थीं। उनकी चपटी, भारी बाडी कोहरे के पिण्डों की तरह लग रही थी। और जैसे ही वे उसे दिखाई पड़ीं, उनके इंजनों की गरज बढ़कर पास आ गयी।

"एक, दो, तीन..." पाराव्यान गिन रहा था।

वख्तरबन्द गाड़ियाँ बाजू से आ रही थी, और आगे जहाँ निरीक्षण चौकी की ओर तार जा रहा था, नीरवता छायी हुई थी।

"फायरिंग के लिए तैयार हो जाओ!" त्रेत्याकोव अपनी हड़बड़ी पर काबू करके चिल्लाया और खन्दक की मुंडेर पर चढ़ गया। दूसरी तोप से भी प्रतिध्वनि की तरह सुनाई पड़ा...तैयार हो जाओ! वहाँ लावरेंत्येव खड़ा ग्रेटकोट की आस्तीन में हाथ डाल रहा था।

वख्तरबन्द गाड़ियाँ टीले पर दिखलाई पड़ रही थीं, कोहरे में पेड़ों के पीछे धुँधलके में आ रही थीं।

"सत्रह, अठारह, उन्नीस," पाराव्यान मन ही मन गिन रहा था। धातु पर भारी हथौड़ा टन-टन बज रहा था : यह नसरुल्लायेव सिर्फ कमीज पहने वर्फ से जमी जमीन में तोपगाड़ी के टैकों को ठोक रहा था। वह कन्धे के पीछ से तिरछी चोट करता और चिल्लाता। ढाल के पीछे तोपची इन्तजार कर रहे थे, वे मुड़-मुड़कर उसकी ओर देखते। सड़क की ओर लक्षित तोप की नाल, धीरे-धीरे मुड़ रही थी।

"हवाला निशान--एक 'हल' आगे साध!" ऊपर से त्रेत्याकोव ने गनर को आदेश दिया, और खुद आँखें फाड़कर देख रहा था, सिर झटक रहा था। कोई चीज उसके गालों पर फड़-फड़ कर रही थी। अभी उसने ध्यान दिया कि रात को जैसे वह कनटोप के कान खोलकर सोया था वैसे ही उसे पहने हुए है। व्यग्रता के कारण, हाथों को व्यस्त रखने के लिए उसने कनटोप उतारा, उसे छाती से चिपकाकर कान मोड़ रहा था। नंगे सिर खड़ा हाँफता हुआ वह सड़क की ओर देख रहा था। उँगलियाँ काँप रही थीं, वह किसी तरह टोपी के तसमे नहीं बाँध पा रहा था। वह देख रहा था, जानता था कि यह मुठभेड़ कितनी अल्पकालिक होगी। उनकी तोप के पास नौ गोले हैं, आठ दूसरी के पास है। और बख्तरबन्द गाड़ियाँ टीले के पीछे से धड़धड़ाती चली आ रही थीं। भारी हथौड़े की टन-टन समय की गणना कर रही थी। जैसे ही नसरुल्लायेव ने हथौड़ा एक तरफ पटका, उसने टोपी हिलाकर आदेश दिया :

"फायर!"

आग चमकी, पाँव तले जमीन काँप उठी। आग उड़कर सड़क के पार गिरी, वहाँ, कोहरे में पेड़ झूल गया। और कई बार आग, उड़कर गयी : कभी मैदान में, कभी सड़क के पार। गनर हड़बड़ी में जल्दी कर रहा था। 'अभी बिठाता हूँ निशाने पर!' ढाल पर बौछार हुई, कीचड़ में गिरती तपी गोलियाँ साँय-साँय करने लगीं। मैदान में हर तरफ से तोप की ओर गोलियों की चमकती रेखाएँ आ रही थीं। सड़क से उतरकर बख्तरबन्द गाड़ियाँ बैटरी की ओर आ रही थीं। वे कोहरे से बाहर निकल

रही थीं, उनके सामने कोहरा चिथड़ों की तरह फटता जा रहा था, और हरेक से चमक निकल रही थी, आग की चमक, मैदान में गोलियों की चमकती रेखाएँ नीचाई पर हवा को काटती आ रही थीं। बख्तरबन्द गाड़ियों से कूदकर उतरते स्टेनगनर दिखाई पड़ रहे थे, वे झुण्ड बनाकर पीछे-पीछे दौड़ रहे थे और उनकी ओर से भी चमकती रेखाएँ आ रही थीं।

"चबारोव!" खन्दक में कूदकर त्रेत्याकोव चिल्लाया। उसे तोप की उस ओर चबारोव का चेचक के दागोंवाला भृकुटी तना चेहरा नजर आया। "फायरिंग से इन्फैंट्री को पीछे रख!"

और खुद गनर के कान के ऊपर हाँफता हुआ कह रहा था :

"जल्दी मत कर। निशाना लगा। जल्दी मत कर।"

और दिमाग में गिनती चल रही थी : पाँच गोले बचे है। पाँच फायर। दूसरी तोप दहाड़ी। कहीं पीछे से चौथी बैटरी गरज रही थी। यानी वहाँ भी जर्मन बढ़ रहे हैं।

नीचाई पर चीत्कार सुनाई पड़ा। मार्टर को गोला! गनर की पीठ काँप गयी। परिदृश्य लक्षक से आँख हटाये बिना, वह निशाना साध रहा था, वह अपनी पीठ को सिकोड़ता जा रहा था, उसका रोम-रोम मार्टर के उड़ते गोले को महसूस कर रहा था। उसके भीगे गाल पर पसीना बह रहा था, उसकी मटमैली बून्दें ठोड़ी पर लटकी कँपकँपा रही थीं।

उनके ऊपर मार्टर का चीत्कार अभी जारी था, जब तोप दगी। ढाल के पीछे से त्रेत्याकोव ने देखा : आगे को बढ़ी बख्तरबन्द गाड़ी, उस पर से कूदकर उतरते स्टेनगनर--एक, लोहे का टोप लगाये, सिर के ऊपर स्टेनगन उठाये, पैरों को मोड़कर नीचे कूदते, हवा में लहराते हुए--यह सब एक सफेद चमक के साथ फट गया, आग के अँगारे चारों ओर दूर-दूर तक उड़ रहे थे--गोला सीधा जाकर निशाने पर लगा।

और तभी, एक के बाद एक कई मार्टर-गोले फटे। जब त्रेत्याकोव कीचड़ से लथपथ था। कोई तोप के पायों के बीच कराहता हिलडुल रहा था। जिन्दा लोग एक के बाद एक उठ रहे थे। पर दूसरी तोप के तोपची ही भाग खड़े हुए। तोप पाये फैलाकर, मैदान की ओर नाल मोड़े खन्दक में खड़ी थी, और वे भाग रहे थे। उनमें सबसे बड़ा, सबसे लम्बा लावरेंत्येव ग्रेटकोट के बटन खोले भाग रहा था। धमाके ने दौड़ते लोगों को बिखेर दिया। हाथों से अपनी पीठ को पकड़कर, दौड़ते-दौड़ते झुकता हुआ लावरेंत्येव ढह रहा था।

फिर किसी की चीख सुनाई पड़ी :

"टैंक!"

वे क्रावत्सी गाँव की ओर से बैटरी के पीछ से आ रहे थे। कोठरी जिसमें उन्होंने रात बितायी थी, हिलकर आगे बढ़ने लगी, उसके टुकड़े टूट-टूटकर बिखर रहे थे। उसके नीचे टैंक तोप के साथ अपना टरेक घुमा रहा था, बल्लियाँ लुढ़ककर उस पर से नीचे गिर रही थीं, पुआल का छप्पर फिसलकर एक तरफ झुक रहा था। खन्दक में खड़ी अकेली तोप उछली, मानो खुद ही दग गयी हो और विस्फोट के धुएँ से ढक गयी।

गोलियों की बौछार में झुकते हुए उसने यह सब देखा, उसने फिर देखा बख्तरबन्द गाड़ियों को जो आग छोड़ती पूरे मैदान में फैली चली आ रही थीं, भागते लोगों के चेहरों पर भय देखा। तोप का लॉक उतारना चाहिए... और आदेश न दे पाया : मार्टर के विस्फोट ने सबको जमीन पर लिटा दिया। लेटे-लेटे कीचड़ में धँसते हुए उसे खन्दक की ओर आते मार्टर-गोले की आवाज सुनाई पड़ रही थी। उसे भयंकर विचार कचोट रहा था : हमें लिटा दिया, और खुद अभी यहाँ पहुँच जायेंगे। मार्टर की पास आती आवाज। इंजनों की घरघराहट। त्रेत्याकोव हाथ का सहारा लेकर थोड़ा उठा।

"खड्ड की ओर भागो! जंगल की ओर! वहाँ बर्फ..."

वह विस्फोट से पहले ही लेट गया। धमाका हुआ। उसने जमीन से सिर उठाया :

"जंगल की ओर भागो! वहाँ बर्फ गहरी है! सब उधर!..."

खन्दक की मुंडेर पर धमाका हुआ। वह आँखें मींचे लेटा हुआ था। सिर के ऊपर सनसनाहट हुई। वह उठकर खड़ा हो गया।

"पाराव्यान! लॉक उतारो! जल्दी!"

पाराव्यान खन्दक में खड़ा था, हाथों से तोप को पकड़े, चेहरा नीला पड़ गया था। और बगल में.... देखकर उसे अपनी आँखों पर विश्वास न हुआ : उसकी बगल में लाल, रिसता, बाहर निकला हुआ फेफड़ा फूलता, साँस ले रहा था। ऊपरी तौर पर वह साँस ले रहा था पर बिना हवा के पाराव्यान का दम घुटा जा रहा था, वह दाँत चमकता पूरा मुँह खोले हुए था। उसे हवा की तलाश थी।

किसी के काँपते हाथ उसे लॉक उतारने में विघ्न डाल रहे थे। देखा : नसरुल्लायेव है। उसकी बालसुलभ प्यारभरी, निडर आँखें पाराव्यान को निष्ठा से देख रही थीं।

"भाग, एल्दार!"

पेट से भारी लॉक चिपकाकर नसरुल्लायेव बाहर झाँका और दौड़ पड़ा।

पाराव्यान जमीन पर बैठा था। उसका चेहरा आँसुओं और पसीने से तर था, आँख की पुतली धुँधली-सी चमकी।

घुटनों पर खड़ा त्रेत्याकोव, तनावग्रस्त, अपने ग्रेटकोट की जेबों में स्टेनगन की गोलियाँ भर रहा था। ऊपर धायँ-धायँ गोलियाँ चल रही थीं। उसने गर्दन पर स्टेनगन को टाँगा। झुककर, खन्दक से बाहर दौड़ पड़ा। सारे मैदान में लोग भाग रहे थे। मुड़मुड़कर गिरते-पड़ते दौड़ रहे थे। एक तरफ से नसरुल्लायेव पर बख्तरबन्द गाड़ी झपटी। वह लॉक फेंककर और भी तेज दौड़ पड़ा। चमकती गोलियों की बाढ़ ने उसे धराशाही कर दिया। चित्त गिरा पर वह अभी भी उठने का प्रयत्न कर रहा था। त्रेत्याकोव ने यह तो नहीं देखा कि कैसे टैंक के ट्रैक ने उसे दबाकर मसल दिया, पर उसकी मर्मान्तक चीख ने उसका दिल दहला दिया।

गेत्याकोव गोलियों की बौछार में हाँफता हुआ दौड़ता हुआ महसूस कर रहा था कि कैसे पैरों में कमजोरी छाती जा रही है, और वह चलने से इन्कार करने लगे हैं। वह बेतहाशा हाँफ रहा था। आँखों में अँधेरा छाने लगा, सब कुछ तैरने लगा और बर्फ से ढका अक्षत मैदान अपनी ओर बुला रहा था, खींच रहा था। आखिर में वह दौड़ने की बजाय झुकता हुआ चल रहा था, जलते फेफड़ों में हवा सोख रहा था। वह बर्फ पर औंधा गिर पड़ा। घरघराते इंजन की तेज आवाज उसकी ओर झपटती आ रही थी।

अध्याय 26

सन् 1944 के वसन्त में उक्राइन के दक्षिण में शुरू हुई महान चढ़ाई के समय अपोस्तोलोवो के क्षेत्र में जर्मन प्रत्याक्रमण अब कुछ नहीं बदल सकता था—न युद्ध का घटनाक्रम, न इतिहास की गति। उसने उस इलाके में थोड़े समय के लिए हमले की गति को धीमा कर दिया और तात्कालिक घटनाओं के पैमाने की दृष्टि से उसका कोई महत्त्व नहीं था। पर उन लोगों को, जो उनकी ओर लक्षित इस प्रहार का सामना कर रहे थे, उनमें से हरेक को केवल एक ही जीवन मिला था जीने के लिए।

समय से एक महीने पहले आये अपूर्व वसन्त ने शीतकालीन सड़कों को काली मिट्टी के दलदलों में बदल दिया, भारी आयुध उसमें धँस जाते, गोलों से लदे ट्रक फँस जाते, आपूर्ति तंत्र पाँच सौ किलोमीटर के फासले पर बिखरा हुआ था, और जो ईंधन मोर्चे पर ले जाया जा रहा था, रास्ते में फुँक जाता। पर तोपखाने को आगे लाया गया, टैंक कोर भी पहुँच गयी, और मोर्चा तोड़नेवाले शत्रु समूह को खदेड़ दिया गया। वही जर्मन टैंक व बख्तरबन्द वाहन, जो गोलियाँ बरसाते हुए जिन्दा लोगों को कुचलते हुए, तोपचियों की फायर पोजीशनों को रौंदते हुए आगे बढ़ गये थे, अब मैदानों में जले, टूटे और साबुत, कीचड़ में धँसे, परित्यक्त पड़े थे।

तीसरे दिन मारे गये बैटरीमैनों को दफनाया गया। बर्फ बिल्कुल पिघल चुकी थी, सिर्फ निचले स्थानों और जंगल की पट्टी के पास, जहाँ सर्दियों में हवाओं ने उसके ढेर जमा कर दिये थे, वह मटमैले-सलेटी चिथड़ों की तरह पड़ी थी। गड्ढों में भरा पानी धूप में चमक रहा था, उनके बीच सारे मैदान में मृतक पड़े हुए थे। पानी से तर ग्रेटकोटों, रूईभरी गीली जाकेटों में अकड़े हुए वे वहीं लेटे थे, जहाँ मौत ने उन्हें आकर दबोच लिया था। क्रावत्सी गाँव को खेत, जिसमें सालों से गेहूँ की फसल बोने और काटने का क्रम चला आ रहा था, और जहाँ से हर साल शरद ऋतु में फसल काटने के बाद हँसों को चुगने के लिए छोड़ दिया जाता था, वही अब उनके जीवन में अन्तिम रणभूमि बन गया था। और जीवित लोग, चिकनी काली मिट्टी पर फिसलते हुए, मुश्किल से कीचड़ में से धँसते बूट खींचते हुए घुम-घुमकर मृतकों को ढूँढ़ते हुए उनकी शिनाख्त कर रहे थे।

वनकुंज से कुछ दूर उस स्थान से कोई ढाई सौ मीटर की दूरी पर जहाँ वह बर्फ में गिरा था और जहाँ उसके ऊपर से मशीनगन की अन्तिम बौछार हुई थी, त्रेत्याकोव को नसरुल्लायेव मिला। काली मिट्टी के मन-मन के लौदों से सने बूटों में वह पड़ा था, कुचली टाँगे अस्भाविक ढंग से फैली हुई थीं। वह पीठ के बल पड़ा था, रूईभरा कोट पीले पेट को उघाड़कर ठोड़ी के पास जमा हो गया था। हाथ की कलाई, जिसकी सहायता से उसने अन्तिम शक्ति बटोरकर आँखें ढकी थीं, उसी तरह पत्थर की तरह जड़ रह गयी थी और गड्ढे में भरे पिघलती बर्फ के शान्त जल में, जिसकी सतह पर सफेद बादल तैरते नजर आ रहे थे, स्थिर प्रतिबिंबित हो रही थी। कैसी विकराल थी तब उसकी चीख! ऐसा लगता था जैसे खुले मुख की काली गुहा में उस चीख की मर्मान्तिक मूक प्रतिध्वनि अभी भी गूँज रही है।

पहली बार त्रेत्याकोव ने उसे तब देखा था, जब प्लाटून का चार्ज ले रहा था, और तभी से वह स्मृति में बस गया था। कमर तक नंगे जवान, घर के पीछे खाइयाँ खोद रहे थे। पसीने से ढके, धूप में चमकते जिस्मों के बीच वह बिल्कुल अलग नजर आ रहा था। किसी पहलवान की तरह हट्टा-कट्टा, गले तक पूरी छाती काले बालों से ढकी थी। सूची में उसे जेजेलाश्वीली नाम दिखाई पड़ा था, और त्रेत्याकोव पता नहीं क्यों सोच बैठा कि वह यही है।

तोप की खन्दक में, फैल पायों के बीच तोप की टेक पर पीठ टिकाये पाराव्यान बैठा था, नंगा सिर छाती पर लुढ़का हुआ था। छोटे कटे बालों से ढकी गुद्दी से कान तक—खून की सूखी धारा बह रही थी। यानी अभी जिन्दा था, किसी जर्मन ने पास आकर उसका काम तमाम कर दिया था।

मैदान में उन्नीस लोगों के शव मिले, उन्हें क्रावत्सी गाँव के पास दफना दिया गया। उनके बीच लावरेंत्येव नहीं था। बहुतों ने देखा था कि वह पीछे झुककर हाथों से पीठ को पकड़ते हुए गिरा था। हो सकता है कि वह मरा नहीं और जर्मन उसे बन्दी बनाकर ले गये। जब उन पर हमारी सेना दबाव पड़ा तो कहीं रास्ते में उसका काम तमाम कर दिया होगा। युद्ध के दौरान वह टैंकभेदी तोपखाने में रहा, बहुत खुश होता था कि अस्पताल में इलाज के बाद भारी तोप रेजिमेण्ट में नियुक्ति हुई, बहुत उधमी था, उसे यहाँ सब कुछ अच्छा लगता था। कहता था : 'आपके यहाँ तो मजें से लड़ा जा सकता है।'

वसन्त का उज्जवल दिन था। धूप खिली थी। पर त्रेत्याकोव की आँखों पर पर्दा-सा पड़ गया, दिन और आकाश कलुषित-से हो गये सब तरफ काली मातमी छाया व्याप्त हो गयी।

गाँव के घरों के आँगन सैनिकों से खचाखच भरे थे। चारों ओर मोटरें, घोड़े, तोपें दिखाई पड़ रही थीं, जवान एक आँगन से दूसरे में, इधर-उधर आ-जा रहे थे, जमीन पर अलाव जल रहे थे, रसोइयों का धुआँ उड़ रहा था। रात को कोई टुकड़ी वहाँ पहुँची। अलावो के धुएँ, घोड़ों की लीद और पेट्रोल की बू आ रही थी।

पास के आँगन से त्रेत्याकोव को बुलाया गया :

"कामरेड लेफ्टिनेण्ट! कामरेड लेफ्टिनेण्ट!"

उसका प्लाटून धूप से गर्माये मकान की सफेद दीवार के पास बैठा था। बिना पहियों का उल्टा छकड़ा मेज का काम दे रहा था, उसके चारों ओर, उसी छकड़े पर सभी जवान बैठे थे। उसके लिए भी स्थान खाली कर दिया गया। ललौंहे बालों और गाजर की तरह गुलाबी गालोंवाला जवान आँगन के कोने में बनी रसोई की ओर दौड़ता गया, जहाँ भीड़ थी, धक्का-मुक्की थी। वह डिब्बे में सूप भरकर ले आया। उसने ग्रेटकोट उतार रखा था, कन्धे चौड़े, कूल्हे सँकरे। डिब्बा सम्भालते हुए त्रेत्याकोव ने उसके चेहरे को गौर से देखा। सफेद बरौनियों के नीचे—ललौंही हँसमुख आँखें। जेजेलाश्वीली। पर उसकी आँखों के सामने नसरुल्लायेव घूम रहा था, माथा मानो शिकंजे में कसा था, आँखों के ऊपर अदृश्य परदा पड़ गया था जो धूप को ढक रहा था। नहीं, उसे भीतरी चोट नहीं लगी, पर वह टूटा-टूटा-सा था, किसी तरह होश में नहीं आ पा रहा था : दिखाई सब दे रहा है, सुनाई भी दे रहा है पर समझने में देर लग रही है।

सूप का पहला घूँट निगलकर ही उसने देखा कि खा क्या रहा है। डिब्बे में—मटर का पीला, गाढ़ा सूप था और अगली चम्मच भरकर उसने आँखें बन्द कीं और मन

ही मन उन लोगों को याद किया, जो आज उनके साथ यहाँ नहीं थे। वे सब अभी यहीं हो सकते थे, और इसी तरह रसोई के पास धक्का-मुक्की कर सकते थे, धूप में बैठ सकते थे।

मकान की कच्ची, सफेद पुती दीवार गोलों से छलनी हो गयी थी। दीवार पर चिपकी हुई मक्खियाँ भिनभिनाती हुई इधर-उधर रेंग रही थीं। पन्ने की तरह हरी, नीली। सर्दियों के बाद वे अभी सुस्त थीं, वसन्ती धूप की गर्मी उनमें जान फूँक रही थी। लोग क्यों मारे गये? किस लिए अभी तक मारे जा रहे हैं? आखिर युद्ध का फैसला तो हो चुका है। और अब इसे नहीं बदला जा सकता : हम जीत गये हैं। पर वे, जिन्होंने उसे शुरू किया, अपनी मौत की घड़ी को टाल रहे हैं, मोर्चे पर वे अभी एक नहीं अनेक डिवीजन भेजेंगे, इन्फैंट्री की भी और टैंकों की भी, और लोग एक दूसरे को मार रहे हैं, खुद मर रहे हैं। अभी कितनों को और मरना है।

''चौखटा!'' आँगन में कोई चिल्लाया। पूरे गाँव में एक आँगन से दूसरे में पुकार फैल गयी :

''चौखटा!''

चौखटे के आकार का दो धड़ोवाला जर्मन जासूस विमान 'फॉक्केवुल्फ' आकाश में ऊँचाई पर चक्कर काटता हुआ दहाड़े मार रहा था। सूर्य के चकाचौंध प्रकाश में, आकाशीय नीलिमा में हवाई जहाज के साथ-साथ विमानभेदी गोलों के विस्फोटों के शुभ्र पुंज उड़ रहे थे, वह खुद नहीं दिखाई पड़ रहा था, बस कभी-कभी धूप में क्षण भर के लिए अल्यूमिनियम की चमक झलक जाती थी। सब जमीन से ऊपर सिर उठाये देख रहे थे। युद्ध के दौरान त्रेत्याकोव ने इतने विमान गिरते देखे थे पर एक बार भी उसने नहीं देखा कि किसी 'चौखटे' को गिराया गया हो। विमानभेदी तोपों के सफेद विस्फोट पुँज चमकते जा रहे थे, उनके पीछे-पीछे, अलग से, हवा की मोटाई और ऊँचाई के कारण दबे-दबे धमाके सुनाई पड़ रहे थे।

उल्टे छकड़े पर चढ़कर कीतिन कार्बाइन से ऊपर गोलियाँ चलाने लगा।

''उतर!'' चबारोव ने उससे कहा। ''तू भला उसे गिरा सकेगा?''

त्रेत्याकोव भी, जो कान के पास धाँय-धाँय से ऊब गया था, बोला :

''उतर आ!''

पूरी मैगजीन खाली करके कीतिन सन्तोष के साथ हँसता हुआ बोला :

''मरने के लिए जा रहा है।''

जेजेलाश्वीली खाने के डिब्बे को इकट्ठा करके उन्हें माँजने के लिए पोखर की ओर चला गया : आज वह महरी का काम कर रहा है। सब सस्ते तम्बाकू का धुआँ उड़ाने

लगे। दीवार के पास धूप में सुस्ती चढ़ने लगी। ठीक ही तो है जिन्दा लोगों को जिन्दा रहने की चिन्ता रहती है। चबारोव बता रहा था कि तातरिया में उनके कानाश इलाके में वसन्त में हंसों को कैसे सुखाया जाता है।

''हमारे यहाँ मार्च के महीने में ऐसी ही धूप होती है। बर्फ फटी होती है, सूर्य तेज चमकता है, धूल, मक्खियाँ नहीं होतीं। आँगन में मोटे-मोटे हंस घूमते रहते हैं। सुखाया हंस खा लिया तो किसी और चीज की इच्छा ही नहीं होती।''

''आगे!'' ओबुखोव उसे जल्दी-जल्दी बताने को कह रहा था।

''आगे क्या?'' चबारोव को यह पसन्द नहीं था कि कोई उसकी बात काटे।

''सुखाते कैसे हो उन्हें?''

''बिल्कुल आसान...''

गली के सिरे पर रेजिमेण्ट कमाण्डर की जीप दिखाई पड़ी। कोई चिल्लाकर आदेश देने लगा :

''पहली डिवीजन!..''

''अरे, सार्जेंट,'' कीतिन कहने लगा, ''तुम्हारे हंसों का मजा चखना ही शुरू किया था...''

पड़ोस के आँगन में ट्रेक्टर का इंजन गरज उठा, कोई घोड़ा हिनहिनाया।

अध्याय 27

सागर की ओर से आती आर्द्र और गर्म हवाएँ विशाल मैदानों को बर्फ से साफ करते हुए वसन्त को उत्तर की दिशा में उड़ाये ले जा रही थीं, पर दक्षिण में सड़कें सुख रही थीं। उक्राइन के दनीपर पारवाले पूरे क्षेत्र में सोवियत सेना की चढ़ाई जारी थी। क्रिवोय-रोग और निकोपोल शहर पीछे छूट चुके थे, इन्गुलेत्स नदी को कभी का पार किया जा चुका था, मोर्चे को भेदकर वे ओडेसा को मुक्त करने के लिए साहस के साथ आगे बढ़ते जा रहे थे।

'... एक सूचना बुलेटिन से दूसरे तक—यही हमारा सारा जीवन है।' माँ ने लिखा था। 'बहुत दिनों से तुम्हारी चिट्ठी नहीं आयी थी, दिल पर पत्थर-सा पड़ा था। दिन में एक बार तुम्हारी आवाज-सी सुनाई पड़ी, साफ-साफ लगा कि तुमने मुझे आवाज दी। इसके बाद में खोयी-खोयी घूमती रही। बाद में ल्यालका बाहर से दौड़ती आयी : डाकिया आया था। हम दोनो खुशी से रो पड़े, दोनों पढ़ रहे थे पर कुछ समझ में नहीं आ रहा था। निःसन्देह, तुम मुझे झूठ लिख रहे हो, ताकि मैं घबराऊँ नहीं, पर तुम्हारी

तरफ लड़ाइयाँ शायद बड़ी घमासान हुई थीं, रेडियों तक पर इस ओपोस्तोलोवो का जिक्र आया था...'

और साशा ने लिखा था : '....मैं माँ को इस साल के वसन्त में सब्जियाँ न बोने के लिए मना रही हूँ, पर वह डरती है। और फाया भी कहती है : 'शरद में आलू जमा कर लेना, उसे अपने साथ लेते जाइये, उसके बिना आप क्या करोगी?' पर अब मुझसे नहीं रहा जाता, घर जाने का मन करता है। सबसे भयंकर तो भुगत चुके हैं, अब जैसे-तैसे काम चला लेंगे। हाँ! बिल्कुल ही भूल गयी लिखना : फाया के लड़की पैदा हुई है। बहुत हँसमुख है, और समझदार इतनी है कि मुझे पहचानने लगी हैं और उन दोनों में से किसी से भी उसकी शक्ल-सूरत नहीं मिलती।'

सुहावनी हवा उँगलियों में भिंचे कापी के दो पन्नों को फड़फड़ा रही थी, ल्यालका और साशा की कापियों से फाड़े गये पन्नों को। स्तेपी पर कम ऊँचाई पर चमकता सूरज ग्रेटकोट को बींधता हुआ पीठ को जला रहा था, गुद्दी पर टिका कनटोप सिर को सेंक रहा था। ट्रैक्टर पर बैठे-बैठे हिचकोले लग रहे थे, नींद आ रही थी। भारी पलकें अपने आप बन्द हो जातीं।

पीछे, सूरज की ओर मुँह करके बैठा तोप कमाण्डर अलावीद्ज़े जार्जियाई भाषा में कोई सुन्दर, भजन की तरह का कोई गीत गा रहा था—शायद उगते सूर्य की स्तुति कर रहा था। मुड़कर त्रेत्याकोव देखता : अलावीद्ज़े तोप पर बैठा है, और नीचे, सड़क पर जेजेलाश्वीली और तोपची कचेरावा साथ-साथ चल रहे हैं। कचेरावा भवों तक काले घने बालों से ढका था। जब अलावीद्ज़े तान खींचता वे दोनों आतुरता से प्रतीक्षा करते, नीचे से उसकी ओर ताकते। कचेरावा टोपी हिलाता, और वे दोनों महीन जनानी आवाज में गीत के बोल दोहराने लगते, वे भवें तानकर दृढ़ता से चल रहे थे, जैसे शत्रु से भिड़न्त करने जा रहे हों। दूसरी तोप से कोई दौड़कर उनकी ओर आ रहा था।

ट्रैक्टर के लीवरों का संचालन करते हुए फोमीचोव ने सिर घुमाया :

"शायद, मौसम का असर है। इनकी आदत ऐसी है : एक ने गाना शुरू किया और सब—मानो आदेश के अनुसार जमा होने लगते हैं। वो देखो, और दो दौड़ते आ रहे हैं, डरते हैं कि कहीं देर न हो जाये।"

उसे कुछ-कुछ ईर्ष्या हो रही थी, मन ही मन मुस्करा रहा था।

सूर्य की गर्मी सुखदायी लग रहा था, स्तेपी पर हवा हिलोरे ले रही थी, विस्फोटों का धुआँ निःशब्द उठ रहा था। जब आदमी ट्रैक्टर पर, इंजन के पास बैठा होता है, तो चारों ओर हो रहा युद्ध विचित्र मौन-सा लगने लगता है। कभी-कभी इंजन की

गड़गड़ाहट सुनाई देनी बन्द हो जाती; झटककर त्रेत्याकोव जाग गया। चिट्ठियाँ को तह करके उसने दो त्रिकोण बनाये। रास्ते में कहीं उसके पत्र इनके पास से गुजरे थे, वे फील्ड डाक में देर तक भटकते रहेंगे; शायद उनके पहुँचने से पहले ही ओडेसा पर कब्जा हो जायेगा।

सड़क के किनारे पर परित्यक्त जर्मन तोप पड़ी थी। पता नहीं क्यों जर्मन तोपें हमेशा हमारी तोपों से बड़ी और भारी लगती हैं। छद्मावरण के पीले-धब्बेदार रंग में पुती, वह धँस गयी थी और उसे निकालने का समय नहीं मिला। एक जर्मन टैंक भी खड़ा था, तोप के साथ टरेट दूर जा पड़ा। इसी तरह सन् इकतालीस में वे मैदान मार लेते थे और सब कुछ क्षतिग्रस्त, साबुत या फिर से ठीक किया जा सकनेवाला, सब कुछ उनके पास रह जाता था। अब मैदान हम मार रहे है। वे बख्तरबन्द गाड़ियाँ, जिन्होंने क्रावत्सी गाँव के पास बैटरी को रौंदा था, शायद, दूर न जा पायीं।

त्रेत्याकोव ने चिट्ठियों को कमीज की छातीवाली जेब में रख दिया और वहाँ से चमड़े के खोल में रखा आईना निकाला। आईना बढ़िया था, दोनों तरफ से देखा जा सकता था, न टूटनेवाला था : चमचमाती पालिशदार स्टील का बना था। कल शाम को सूर्यास्त के समय इन्फैंट्री के साथ उसके गुप्तचरों ने एक कुंज पर धावा बोला था। वहाँ कोई जर्मन आपूर्ति टुकड़ी तैनात थी। वे अपना सब कुछ छोड़कर भाग खड़े हुए : जमीन मे गड़े ड्रमों में पेट्रोल, डिब्बाबन्द खाने की पेटियाँ; छकड़े पर भूसे में शराब का छोटा ड्रम मिला और वहीं 'आयरन क्रॉस' पदक लगी अफसर की वर्दी भी पड़ी थी, जिसकी जेब में यह आईना मिला था। शायद वह अफसर भगवान से बस जान बचाने की प्रार्थना करता हुआ भाग गया। और अब, अगर जिन्दा है, तो उसे क्रॉस गँवाने का मलाल रहा होगा, नया तो शायद मिलेगा नहीं। 'आयरन क्रॉस' से ओबुखोव खेल रहा था, कह रहा था : युद्ध से लौटकर, अपने कुत्ते के पट्टे पर टाँग दूँगा—फिर जी भर भौंकता रहे।

त्रेत्याकोव ने टोपी उतारकर घुटने पर रख दी और स्टील के आइने में गौर से अपना चेहरा निहारने लगा, उनींदी चेतना में कभी साशा का ख्याल आ जाता, कभी माँ का, कभी ल्यालका का, कभी सोचने लगता कि आगे ओडेसा है, काला सागर। अपने जीवन में वह एक बार भी वहाँ नहीं गया था। ओडेसा पर कब्जा कर लेंगे और बस सो जायेंगे! लगातार दो-एक दिन तक। और सच, ठीक ही तो होता, अगर हमें भी और जर्मनों को भी आदेश मिल जाता : सो जाओ! सब पैर पसारकर गहरी नींद सो जाते। पर युद्ध में ऐसा होता नहीं। युद्ध में तो जो पहले डिगा बस वही हारा। यही सोचकर शरीर में सिहरन फैल जाती है कि इन वर्षों क्या-क्या नहीं हुआ। इसके

बावजूद कि सन् इकतालीस में वह नहीं लड़ा था। उनमें से जो तब लड़ रहे थे, आज तक बहुत कम लोग जिन्दा बचे हैं। उन बेचारों पर खास तौर से दया आती, जो सन् इकतालीस में, जब सब ढह रहा था, मारे गये। वे दूर से भी विजय की झलक ने देख पाये।

माँ और ल्यालका ने उसे पहले से ही जन्मदिन की बधाई दी थी : अट्ठाईस अप्रैल को वह बीस का हो जायेगा। एक जमाने में लगता था : पच्चीस साल की उम्र में बुढ़ापा शुरू हो जाता है। पर एक साल पहले इस दिन क्या हुआ था? तब वह सैनिक विद्यालय में था, ड्यूटी पर तैनात, तोपों पर पहरा दे रहा था। अगर पाला नहीं पड़ रहा हो तो इस संतरी के लिए रात की ड्यूटी सबसे अच्छी होती है। अकेले खड़े हो, ऊपर तारे चमक रहे हैं, और जो जी में आए उसके बारे में सोच सकते हो। सिर्फ रात के समय ही कैडेट को सोचने की स्वतंत्रता मिलती है, पर रात को ही तो वह सोता है। दिन में तो अपने बारे में सोचने के लिए एक क्षण भी नहीं मिलता।

ट्रैक्टर हिचकोले खाता जा रहा था, छोटे-से दर्पण में बिम्ब उछल रहा था : कभी माथा दिखाई पड़ता, आधा गोरा, आधा धूप में रह-रहकर आधा ताम्र; कभी टोपी से मुसे बाल, तो कभी ठोड़ी।

सड़क पर, सिरों के ऊपर आकाश में हमारे लड़ाकू विमानों के तीन ग्रुप बिना आवाज के शिरोबिन्दु की ओर उड़ रहे थे। ऊँचाई से उन्हें वह सब दिखाई पड़ रहा था जो जमीन पर हो रहा था। शायद, उनकी भारी तोपखाना बटालियन भी लम्बी कतार में मार्च करती दिखाई पड़ रही हो। मोटराइज्ड इन्फैंट्री और हल्के तोपखाने के साथ वह जर्मनों के टूटे मोर्चे में टैंकों की चढ़ाई का समर्थन करने के लिए भेजा जा रहा था। विमानों से शायद यह भी दिखाई पड़ रहा है कि आगे टैंक कैसे लड़ाई लड़ रहे हैं।

पिछली रात वे जब स्टेशन पर पहुँचे तो वहाँ भाप छोड़ती जर्मन रेलगाड़ी खड़ी थी। पता लगा कि वह घायलों को लेकर जब स्टेशन पर पहुँची तो हमारे टैंक दौड़ते हुए वहाँ से गुजर चुके थे। जर्मन बिखरकर मकानों में छिप गये, निवासियों को बाहर ही नहीं निकलने दे रहे थे। बाद में इन्फैंट्री ने सागबाड़ियों, तहखानों में तलाशी लेकर उन्हें बन्दी बनाया रात की भगदड़ में कइयों को गोली भी मार दी गयी। पर बहुत-से अभी भी इधर-उधर भाग रहे हैं, कहीं छिपे हुए हैं, रात में छिपकर स्वजनों तक पहुँचने का प्रयास करते हैं।

ट्रैक्टर की घरघर और हिचकोलों से त्रेत्याकोव को झपकी आ गयी पर वह फौरन जाग गया, कम से कम उसे ऐसा लगा। परन्तु चारों ओर दृश्य बिल्कुल बदल गया

था, वे ढलानवाले स्थान पर थे और क्षितिज सिमटकर बिल्कुल पास आ गया था।

आगे सड़क पर कुछ हो रहा था, वहाँ घुड़सवार बटालियन का कमाण्डर सबसे ऊपर नजर आ रहा था। उसका कद नाटा था इसलिए वह हमेशा किसी ऊँची चीज पर चढ़ने का प्रयास करता था। उसका घोड़ा मचलता हुआ नाच रहा था, चारों ओर से उसे अफसर घेरे हुए थे, बटालियन कमाण्डर उन्हें ऊपर से हाथ का इशारा करके कुछ दिखा रहा था। और छठी बैटरी, जो आगे-आगे चल रही थी, एक तरफ मुड़ने लगी, ट्रैक्टर तोपों को खींचकर खेत में ले जा रहे थे।

नीचे कूदकर त्रेत्याकोव उस तरफ दौड़ा और उधर से उसकी ओर गोरोदीलिन दौड़ता आ रहा था, दूर से ही उसने चिल्लाकर पूछा : 'अलावीद्ज़े कहाँ है?''

वह अन्त के 'दज़े' का उच्चारण ऐसे करता कि नाम 'अलावीद्ज्या सुनाई पड़ता।

''यहाँ है अलावीद्ज़े!''

''उसके साथ तोपों को उस सँकरी घाटी में ले जाओ। और उन्हें सड़क की ओर मोड़ दो। गोलाबारी का सेक्टर...''

उनके ऊपर से सनसनाता हुआ गोला मैदान में गिरकर फटा। फौरन कहीं पास से मशीनगनों की ठक-ठक सुनाई पड़ी। हो सकता है वह कब से ठक-ठक कर रही हों, बस ट्रैक्टर के इंजन की धड़-धड़ के कारण न सुनाई पड़ रही हों?..

''कमाण्डर, हुआ क्या?''

''प्रतिरक्षा पाँत बनाने का आदेश आया है। कहीं दायीं तरफ से जर्मन लड़ते हुए हमारी ओर पहुँचने का प्रयास कर रहे हैं।''

''पर हमारे टैंक?''

''टैंक—आगे हैं। अच्छा, सुनो : बैटरी मैं खुद तैनात कर दूँगा। वहाँ झाड़ियाँ देख रहे हो न? चलो, तुम गोलों से लदी ट्रकों को वहाँ ले जाओ। आड़ में खड़ी कर देना जल्दी!''

त्रेत्याकोव ट्रकों की ओर दौड़ पड़ा, भागते हुए वह अपने प्लाटून को आदेश दे रहा था :

''चबारोव! 'फोर्ड-आठ' को—वहाँ उन झाड़ियों में!''

खुद 'जीस' ट्रक के पायदान पर उछलकर चढ़ गया। दूसरी तरफ से ओबुखोव और कीतिन अपने स्टेनगनों से लैस चलती ट्रक पर छलाँग लगा रहे थे। 'जीस' ट्रक पुरानी थी, आधा युद्ध देख चुकी थी, उसका केबिन लकड़ी का था। हाथ से दरवाजा पकड़े हुए पायदान पर ऊबड़-खाबड़ जुते खेत में उछलते हुए त्रेत्याकोव ड्राइवर को रास्ता बता रहा था, खुद केबिन के पीछे उचक-उचक कर उस पूरे स्थान का निरीक्षण

करता जा रहा था। वह यह समझना चाहता था कि हो क्या रहा है। खेत में इधर-उधर फैलती बैटरियाँ दिखाई पड़ रही थीं। खेत में और कई धमाके हुए। गोलाबारी भारी तोपों से की जा रही है। कोई सड़क पर घोड़े को सरपट दौड़ाता गुजर गया, बस पीछे छूटती धूल ही दिखाई पड़ रही है। सब कुछ बदल गया है। जैसे लड़ाई के पहले होता है, और सूरज भी पूरे जोरों के साथ चमकने लगा है।

ड्राइवर की ओर झुककर त्रेत्याकोव ने बताया कि किस तरफ से वह जाये। उसने एक सीधी ढलान चुनी थी, ट्रक उसके पीछे खड़ा करना चाहिए—सबसे बढ़िया ओट है। ड्राइवर ने उसकी बात समझ कर सिर हिलाया, खुद पायदान से कूदकर पीछे दौड़ पड़ा : वहाँ दुश्मन से छीनी गयी 'फोर्ड' कीचड़ में फँस गयी थी।

वह सौ मीटर भी न दौड़ा था कि स्टेनगनों की गोलियों की एक के बाद एक बौछारें हुई। ट्रक खड़ी थी, उसके पायदान पर ओबुखोव हाथों में स्टेनगन को आगे किये खड़ा था, कीतिन स्टेनगन को ताने ट्रक से उल्टे कदम पीछे हटता बगल से धीरे-धीरे झाड़ियों की ओर ऐसे बढ़ रहा था मानो किसी चीज से बचकर जा रहा हो। त्रेत्याकोव उनकी ओर दौड़ रहा था, दौड़ते-दौड़ते उसने पिस्तौल निकाल ली, उसे पीले पड़े ओबुखोव की चिल्लाहट सुनाई पड़ी जो पिस्तौल के घोड़े पर उँगली टिकाये किसी परायी आवाज में चीख रहा था :

"हेंडे होख!"*

और दूर से स्टेनगन की नाल हिलाकर जल्दी करने का इशारा कर रहा है।

"श्नेल, श्नेल!"**

यह देखकर कि लेफ्टिनेण्ट उनकी ओर दौड़ता आ रहा है, खुशी से चिल्लाकर बोला :

"ये हमारे पहियों से कुचलते-कुचलते बचे!.. लेटे थे... सबको करीब-करीब कुचल देते!"

झाड़ियों में से जर्मनों के सिर उठ रहे थे, वे अनिश्चयपूर्वक अपने हाथ ऊपर उठा रहे थे। त्रेत्याकोव ने पिस्तौल हिला-हिलाकर जर्मनों को मैदान में खदेड़ दिया। ओबुखोव, कीतिन और कार्बाइन लेकर उतरा हुआ ड्राइवर, जो जर्मनों से नहीं डरा हुआ था, अपने अस्त्र तानकर उनके साथ चल रहे थे। दूसरी ट्रक से दौड़कर आये गुप्तचर झाड़ियाँ छान रहे थे। और भी कहीं से लोग दौड़े आ रहे थे।

"इन्हें कहाँ पकड़ा?"

* 'हाथ ऊपर करो!' (जर्मन)
** 'जल्दी-जल्दी' (जर्मन)

"देखो, देखो तो! हुँह, जानवर कहीं का! देख कैसे रहा है!..."

"क्या यहीं लेटे थे?"

"पहियों की चपेट में आते-जाते बचे।"

"यहीं, इन्हीं झाड़ियों में?"

"मैंने सुना—कहीं गोलियाँ चल रही हैं..."

चौदह भयभीत जर्मन झुण्ड में एक दूसरे से सटे हुए मैदान में खड़े थे, लोगों के चेहरों को देखकर यह भाँपने की कोशिश कर रहे थे कि उनके साथ क्या किया जायेगा, किसी को अपनी ओर देखता पाते तो डर के मारे नजरें झुका लेते। उन सबके चेहरों पर भय हावी था। वे चारों ओर नजरें दौड़ा रहे थे। मन ही मन पास से सुनाई पड़ती गोलाबारी को ध्यान से सुन रहे थे। कइयों पर सफेद पट्टियाँ नजर आ रही थीं।

चबारोव ने झाड़ियों में छिपे और दो को उठाया और उन्हें ठोकरें मारता हुआ हाँकता ला रहा था। हाथ में स्टेनगन उठाये वह उनके पीछे-पीछे दौड़ता आ रहा था, और कभी एक पैर से तो कभी दूसरे से उन्हें ठोकरें मारे जा रहा था। सैनिक प्रतिक्षा कर रहे थे, कोई हँसी के साथ तो कोई क्रोध से चमकती आँखों के साथ। जर्मन बेचैनी से एक दूसरे के साथ सट रहे थे। वे दोनों भी दौड़कर भीड़ में घुस गये, भीड़ हिल गयी। तभी उनके एक अफसर ने जो त्रेत्याकोव से अधिक दूर नहीं था, मुस्कराकर आज्ञा माँगी और अपने एक-मात्र ऊपर उठे हाथ को झुका दिया—दूसरा, पट्टियों में लिपटा उसकी छाती पर लटका था—वह बड़ी हड़बड़ी में अपने फील्ड बैग से कुछ निकालकर अपनी भाषा में न जाने क्या बोलता हुआ दूर से ही त्रेत्याकोव की ओर बढ़ रहा था। उसके चेहरे से, मानो अभी धोया गया हो, मटमैली बूँदें टपक रही थीं। जर्मन के हाथ में सेल्युलाइड का चाँदा और आर्टिलरी निद्रेशांक पैमाना था, वैसे नहीं जैसे कि सोवियत होते हैं, उनसे भिन्न, वह उसकी ओर बढ़ा रहा था, नजरों से स्वीकार करने को कह रहा था। त्रेत्याकोव अनायास पीछे हट गया। अचानक, खुद भी उसे आश्चर्य हुआ, जोर से जर्मनों से बोला :

"निख्ट श्लीसेन!" और इशारों से उन्हें समझाने लगा कि उन्हें गोली नहीं मारी जायेगी। "आर्बाइटन! नाख साइबेरिया!"*

बन्दी कानाफूसी करने लगे, उनके चेहरों पर मन्द-मन्द मुस्कान खेलने लगी। पास ही में कगार के ऊपर से उड़ता आया जर्मन गोला गिरकर फटा, त्रेत्याकोव ने भीड़ से अपने ऊपर पड़ती किसी की विद्वेषपूर्ण नजर पकड़ी।

बन्दियों को धकेलता हुआ चबारोव उनके हथियार छीन रहा था, जमीन पर एक

ही ढेर में वह उनके फील्ड बैग और बस्ते भी डाल रहा था।

"इन सबका क्या करेंगे?" उसने पूछा।

"क्या करना है?" और, आकस्मिक दया के लिए अपने पर क्रुद्ध होकर त्रेत्याकोव चिल्लाकर बोला ताकि सब सुन लें :

"इन सब में कितनी अश्वशक्ति होगी? चलो, दौड़ाओ इन्हें, 'फोर्ड' को धक्का देकर निकलवाओ इनसे।"

जवानों के ठहाकों के बीच ओबुखोव बन्दियों को जुते खेत में फँसी ट्रक के पास हाँककर ले गया :

"आर्बाइटन! आर्बाइटन!"

जर्मन शुरू में नहीं समझे कि उन्हें क्या करना है, वे ट्रक से चिपक गये, वे उसे धक्के इतने नहीं दे रहे थे जितने कि उससे लिपट रहे थे।

जवान चिल्ला रहे थे :

"जोर लगाओ हइसा! मिलकर बोला हइसा!"

"आगे-पीछे हिलाओ! धक्का दो!"

ऊपर सनसनाहट हुई, पास ही में कई विस्फोट हुए। ट्रक पर गोले लदे हैं। अगर उन पर कोई गोला गिरा तो ट्रक से लिपटे जर्मनों, चीखते-चिल्लाते जवानों की जगह बस एक गड्ढा बचेगा। जर्मन सोच-समझकर धक्का लगा रहे थे, उनका कोई अपना अफसर आदेश दे रहा था, और ट्रक, इंजन को घरघराती, जोर लगने के कारण थरथराती कई बार लगभग ऊपर चढ़ती और फिर निष्फल घूमते पहियों द्वारा खोदे गये गड्ढे में लुढ़क जाती। वे फिर धकेलने लगे, दरवाजा खोलकर ड्राइवर कुछ चिल्लाया, ट्रक फिर काँपती-थरांती ऊपर की ओर रेंगने लगी। आखिर में, जवानों से नहीं रहा गया, वे भी दौड़कर कन्धों, हाथों से धक्का देने लगे, बूट पैरों के नीचे से फिसलती जमीन पर टिके थे। पूरे जोर लगाने पर ट्रक काँपी और बाहर निकलकर आगे चलने लगी, और वे सब जोर लगाते हुए कुछ कदम आगे दौड़कर रुक गये। सामूहिक श्रम से मिली सबकी खुशी बुझने लगी।

"कीतिन, ओबुखोव! ले जाओ इन्हें..." उड़ते गोले की सनसनाहट सुनकर त्रेत्याकोव ने नाक-भौं सिकोड़कर आदेश दिया, "पिछवाड़े में... चलो... जल्दी करो!" वह बोलता जा रहा था और आहट हो रहा था कि गोला इधर ही आ रहा है। अन्य लोगों की तरह जर्मन को भी इसका अहसास था। धमाके सुनायी पड़ रहे थे।

ट्रक का पिछला हिस्सा बोझ के कारण इधर-उधर झूलता हुआ दूर जा रहा था,

* 'काम करोगे! साइबेरिया में!' (जर्मन)

मानो झाड़ियों में धँसता जा रहा हो। खेत में एक के बाद एक दो विस्फोट हुए, जिन्होंने उसे आँख से ओझल कर दिया। "खाली!" त्रेत्याकोव बस यही सोच पाया था। हालाँकि वह कठिनाई से खड़ा था, उसके बायें हाथ को एक तरफ उठाकर झटक दिया। बन्दी चीखते हुए बिखर गये। जमीन पर पड़ा जर्मन ऐंठ रहा था। त्रेत्याकोव ने हाथ उठाने का प्रयास किया, वह अजीब तरह से मुड़कर फटी आस्तीन से बाहर लटक जाता। जब दर्द शुरू हुआ तो मतली के साथ बेहोशी छाने लगी। आँखें मिचमिचाकर उसने दाँत भींच लिये, वह दर्द से दर्द को काटने का प्रयास कर रहा था। उसे दिखाई पड़ा कि चबारोव के ऊपर उठे हाथ में स्टेनगन का कुन्दा चमका, लम्बा जर्मन अपने चेहरे को हाथ से ढककर पीछे हट रहा था।

"नहीं मार!" त्रेत्याकोव चिल्लाया और निःशक्त होकर कराह उठा।

कोई एक डेढ़ घण्टे बाद रेजिमेण्ट के डाक्टर ने उसकी टूटी हड्डियाँ जोड़कर खपची के साथ उसक हाथ पर पट्टियाँ बाँध दीं।

"और ऊँचा कर दो," वह नर्स को हिदायत दे रहा था जो उसके हाथ रूमाल के जरिये उसकी गर्दन से लटका रही थी। "और थोड़ा, हाँ, अब ठीक है।"

और उसने अपने काम को मन ही मन सराहा।

"मेरा हाथ काट दिया जायेगा?" त्रेत्याकोव ने पूछा, वह अपने भय को न छिपा सका।

डाक्टर मुस्कराया, सदा की तरह अपने उत्साहवर्द्धक लहजे में बोला :

"अरे इस हाथ से तो तुम अभी जर्मनों की और धुनाई करोगे। हाँ, अगर युद्ध पहले ही न खत्म हो जाये।"

"शुक्रिया, डाक्टर!" त्रेत्याकोव ने कृतज्ञता प्रकट की। "तीसरी बार है और हर बार इसी हाथ में घाव लगता है।"

"तीसरी—मतलब आखिरी बार। इस जिन्दगी में सब कुछ तीन बार तक होता है।"

घायल अधिक नहीं थे, वे सब, जो चल-फिर या रेंग सकते थे, घर की धूपवाली तरफ आकर जमा हो गये थे, वे रवानगी का इंतजार कर रहे थे, और डाक्टर भी बाहर निकल आया था।

"क्या वहाँ बहुत ज्यादा जर्मन हैं?" कहीं पास से आती तोपों की गरज को सुनकर उसने पूछा। "क्या बड़ी संख्या में लड़ते हुए अपनी फौज तक जाने के प्रयास कर रहे हैं?"

अब त्रेत्याकोव को उसका स्वर कुछ चिन्तित-सा लगा।

"नहीं, लगता तो नहीं। पर फिर भी आप रात को पहरा लगवा दीजिये।"

"देगा कौन पहरा?"

"हल्के घायलों को ही खड़ा कर दीजिये जो सेनीटरी बटालियन में है।"

"घायलों का काम चंगा होना है," डाक्टर ने कहा, और उसकी तनी भवों के कारण चेहरे पर दार्शनिक जैसा भाव आ गया।

"जीना चाहते हैं, तो देंगे पहरा।"

त्रेत्याकोव ने अटपटे ढंग से कन्धा उचकाया और दर्द ने उसे आर-पार बींध दिया। नाक-भौं सिकोड़कर वह मूँछोंवाले हट्टे-कट्टे सार्जेंट को देख रहा था, जो घर में से निकला था और झुककर ड्योढ़ी पर झाड़ू लगा रहा था।

"अपने हरामखोरों पर दया मत कीजिये," त्रेत्याकोव ने डाक्टर से कहा। "याद रखिये, यहाँ जर्मन घूम रहे हैं। दिन में तो डरते हैं, हमारे पहियों के नीचे आते-आते बचे, झाड़ियों में छिपे हुए थे, पर रात को... आखिर चारों ओर तरह-तरह के हथियार बिखरे पड़े हैं।"

सेनीटरी छकड़ा आ गया, घायलों को उस पर बिठाया जाने लगा। यह सोचकर कि उसकी बारी अगली बार आयेगी, क्योंकि यहाँ और भी गम्भीर घायल थे, त्रेत्याकोव ग्रेटकोट से छाती को ढके, ड्योढ़ी की सीढ़ियों पर बैठा था। वहाँ से बैठा-बैठा वह देख रहा था कि छकड़े के पास एक जवान, रोबीली, दबंग चिकित्सा-निर्देशिका आदेश दे रही थी; गाड़ीवान हर बार उसकी आवाज से सिहर जाता, और झट से उसे पूरा करने दौड़ पड़ता पर हर बार उल्टी तरफ।

गम्भीर रूप से घायल सैनिक को चढ़ाया गया। उसे छकड़े के पेंदे पर पुआल पर लिटा दिया गया, वह धीमे-धीमे कराह रहा था। जो चल सकता था, वह असलियत से अधिक असहाय दीखने के लिए खुद लँगड़ाता, डगमगाता आ रहा था। जेब से लाइटर निकालकर त्रेत्याकोव ने सिगरेट सुलगायी और इत्मीनान से गहरा कश खींचा, वह अपने खून से सने ग्रेटकोट के पल्ले को देख रहा था। खून सूखकर जंग के रंग का हो गया था। उसने कपड़े को उँगलियों से मसलकर उसे छड़ाने का प्रयास किया। नोवोकेइन के इंजेक्शन से कम हुआ दर्द अब उसे ज्यादा नहीं सता रहा था, इतना दर्द तो सहा जा सकता है। अभी तो कई-कई बार कच्चे घाव पर चिपकी खून से तर पट्टियाँ उखाड़ी जायेंगी, जब वह पक जायेगा तभी वे आसानी से खुलेंगी। मन ही मन वह उस पूरे रास्ते को देख रहा था जो उसे तय करना था। इस बार शायद हाथ पर पलस्तर चढ़ा दिया जायेगा। उसे एंबुलेंस गाड़ीवाला जवान याद आ गया, जो छिपटी की मदद से अपने घाव से कीड़े निकाल रहा था। शायद पलस्तर के अन्दर

होती खुजली को बर्दाश्त करना सबसे मुश्किल काम है...

"लेफ्टिनेण्ट! आओ!"

छकड़े के पास खड़ा डाक्टर उसे हाथ हिलाकर बुला रहा था।

त्रेत्याकोव खुश हो गया, शुरू से ही यह सोचकर कि उसके लिए जगह नहीं बचेगी, वह अपने को इसके लिए तैयार कर चुका था। वह छकड़े के पास चला गया।

"बैठो," डाक्टर ने कहा। "जाओ।"

उसने विदा करते हुए सावधानी से पीठ थपथपायी।

अब, जब उसे पिछवाड़े में भेजा जा रहा था, उसे उन लोगों के समक्ष अपने अस्पष्ट-से दोष का आभास हुआ, जो पीछे छूटे जा रहे थे। तभी उसका ध्यान मकान की दीवार के पास बैठे एक अधेड़ उम्र के सिपाही की ओर आकर्षित हुआ। वह ताजी पट्टियों में लिपटे पैर को आगे फैलाकर जमीन पर बैठा था, उसने भद्दे ढंग से मुँह बनाया और फौरन नजरें झुका लीं। त्रेत्याकोव जरा ठहर गया।

"इसको ले जाइये," उसने डाक्टर को धीरे-से कहा। "मैं तो चल-फिर सकता हूँ।"

पर सिपाही ने फिर भी सुन लिया, वह हड़बड़ी के साथ जमीन से उठा और लाठी का सहारा लेकर, और झुकने से दोहरा होकर, एक टाँग पर उछलता हुआ छकड़े की ओर चल पड़ा। उसी तरह नजरें झुकाये वह छकड़े पर ऐसे चढ़ने लगा, जैसे कोई आदमी अपना हिस्सा ले रहा हो। फौरन गाड़ीवान से जल्दी करने को कहने लगा :

"क्यों खड़ा है? चला..."

"अरे, तू हुक्म नहीं चला!" सेनीटरी निर्देशिका उस पर बरस पड़ी। वह गाड़ीवान के पास बैठी थी। "बड़ा आया हुक्म चलाने वाला... अभी उतारकर भगा दूँगी।"

पर वह सुन ही नहीं रहा था, मानो इसका उससे कोई वास्ता ही न हो। वह आड़े जड़े तख्ते पर सरक गयी और गुस्से में त्रेत्याकोव से बोली :

"बैठ जाओ, लेफ्टिनेण्ट। हर कोई अपना हुक्म चलाने लगता है..."

त्रेत्याकोव ने डाक्टर से हाथ मिलाया, जाने क्यों, आखिरी बार मुड़कर देखा और चढ़कर निर्देशिका के पास बैठ गया। बस, हो गया। जिन्दगी ने अपना कोई चक्र पूरा कर लिया।

लो वह मोर्चे की ओर पीठ करके जा रहा है। उसका प्लाटून, युद्ध—सब पीछे छूटता जा रहा था। घोड़ों की पीठों से पसीने की बू आ रही थी, उनकी ललौंही खाल वसन्तकालीन स्वच्छता-सी चमक रही थी। सूर्य दमक रहा था, सलेटी स्तेपी में बादलों की परछाइयाँ विचर रही थीं, कहीं दूर, ऊँचे टीलों या पहाड़ों की नीली झलक दिखाई

पड़ रही थी। सिर के ऊपर ऊँचाई पर, ऊँचे चकाचौंध आकाश में सफेद बादलों की कतारें तैर रही थीं। हे भगवान, यह सृष्टि अच्छी है, कितनी व्यापक है! वह मानो पहली बार यह सब देख रहा था।

बादल की छाया घोड़ों की पीठों पर पड़ी, धूप में मिची आँखों से, अपने चेहरे से उसने फौरन महसूस किया।

"थोड़ा रुक," उसने गाड़ीवान से कहा और जब उसने लगाम खींच ली, वह उतरकर पैदल चलने लगा। हिचकोले खाकर उसके घाव में फिर टीस शुरू हो गयी। पर उसे मालूम था कि घाव थोड़ा दर्द करके शान्त हो जायेगा। उसका मन शान्त और प्रसन्न था। वह अपने चंगे हाथ से छकड़े को पकड़कर चल रहा था। सेनीटरी निर्देशिका ने उसकी ओर अर्द्ध निद्रित बोझिल आँखों से देखा, और तख्ते पर खाली हुई उसकी जगह पर सरक गयी।

"कब से फौज में हो?" उसने बातचीत के जरिये दर्द से ध्यान बँटाने के उद्देश्य से प्रश्न किया। उसने उबासी लेकर कहा :

"सिगरेट निकालो।"

वह बिल्कुल जवान थी, फूले-फूले होंठ और छोटा मुँह। एक आँख मींचकर उसने गाड़ीवान की सिगरेट से अपनी सिगरेट सुलगायी, और पहला कश खींचते ही खों-खों खाँसने लगी।

स्तेपी पर तैरती बादल की छाया ने खड्ड को ढक दिया। अचानक किसी चीज ने वहाँ त्रेत्याकोव को चौकन्ना कर दिया। उसे मालूम नहीं था कि क्या है, पर यह खतरे के पूर्वाभास की तरह था। वह पूरे समय अपनी आदत के अनुसार चारों ओर देखता चल रहा था : ऊपर से, छकड़े में बैठे-बैठे भी और अब पैदल चलते हुए भी।

घोड़े धीरे-धीरे सड़क पर चल रहे थे, गाड़ीवान लगाम फटकारकर उन्हें हाँक रहा था, जख्मी सैनिक सिगरेटें पी रहे थे। वह छकड़े को पकड़े साथ-साथ चल रहा था। और वे सब खड्ड के पास आते जा रहे थे। उसी गम्भीर दृष्टि से, जिससे खड्ड की तरफ देखा था, उसने नीचे से सेनीटरी निर्देशिका की ओर देखा; वह बेकार में उसे नहीं डराना चाहता था।

बादल की छाया सरकी और धूप ने खड्ड को आलोकित कर दिया। नहीं, बेकार ही वह आशंकित हुआ था।

"कब से फौज में हो?" त्रेत्याकोव ने फिर से पूछा, वह भूल गया था कि यह सवाल वह पूछ चुका है।

"अरसे से," उसने खाँसी के बाद साफ हुए स्वर में कहा। "हमारा पूरा परिवार

लड़ रहा है। बड़ी बहन, जैसे ही उसका पति मारा गया, फौरन फौज में चली गयी। भाई भी। सिर्फ माँ छोटों के साथ है, हमारे पत्रों की बाट जोहती हैं।

वह साथ-साथ चल रहा था और नीचे से नजरें उठाकर उसको देखता। अगर यह साशा होती? या ल्यालका? उस पर उसे वैसे ही तरस आ रहा था, जैसे उन दोनों पर।

उसे स्टेनगन की आवाज नहीं सुनाई पड़ी। उसे धक्का लगा, पैर में चोट आयी, उसका हाथ छकड़े से छूट गया और वह गिर पड़ा। क्षण भर में यह सब हो गया। और तभी स्टेनगन चलने की आवाज आयी। उसने देख लिया कि गोली कहाँ से चल रही है, यह भी सोचा कि वह सही स्थान पर नहीं लेटा है, सड़क पर, आँखों के सामने पड़ा है, नाली में लुढ़क जाना चाहिए। पर इसी क्षण सामने कुछ हिला।

सारा संसार सिमट गया। वह उसे अब पिस्तौल के छिद्र से देख रहा था। वहाँ, उसके आगे तने हाथ में पिस्तौल की मक्खी के आगे फिर कुछ हिला, और आकाश की पृष्ठ-भूमि में सलेटी धुएँ की तरह उठने लगा। त्रेत्याकोव ने गोली चला दी।

जब घोड़ों को रोककर सेनीटरी निर्देशिका ने मुड़कर देखा तो उस स्थान पर, जहाँ उन पर गोली चली थी और वह गिरा था, कुछ भी नहीं था। जमीन से विस्फोट का धुआँ उड़ रहा था।

और आकाश की ऊँचाई में, हवा में लहराती श्वेत-शुभ्र बादलों की कतारें तैरती-सी चली जा रही थीं।

■